

ئىدادقات انسان لا يىلىي دوسرول كوسىلىف ئى نچار يا بوتاب اورائت احساس كى نى بىن بوتا اسى بات كوئى نىظار كەنتى ئوئى سىرتىاب كاسى مى يى

محري وكاليف المحكية

اس كتاب ميس قرآن كريم اوراهاديث مُباركدكى روشنى مين اكابرك مُستندوا قعات كاساة مندرجد ذيل أموركا إهمام بحي كياكيا هـ-

- دوروں كوتكليف عيانے كاندازو فوائد
- دوكرس كوخوش ركف اوزحب خواى كى تدابير
- معاترت ومعاملات كى درستگى كى ترغيب
- برے اخلاق سے بچنے کے نصیحت الموزمضامین

یقیناایک ایس کتاب جس سے خوسش گوارزندگی کا داسته ملے۔

تقريظ مَصْرَتْ وَكُلانًا الْبِيلِ الْسَبِيِّ الْبِيلِيِّ التازالةُ وْزِيقِ شْرِيتصنيف الهاومة الفالاقية كرابى

جع وتاليف ا محكم مكل جما وزيل (قال تَالِيَمُ الْمَلِيَةِ الْمِرِيُّ الْمِنْ لَاسِ

مكتتب بيئ والعيام

G-30 ماسٹوڈنٹ بازار، نزدمقدی مجدء اُردوبازار، کراچی ۔فون: 2726509

جُلاعِقُوق بَقَ فَالْيُرْكِفُوْظُهِينَ

11020308

اسٹاکسٹ

مُكتبًا بينَ ولعِلم

نزد جائع مجد نبونا دُن كرايق

ون 8213802 بال 16690,2018342 و 0300-8213802

Sales@mbi.com.pk: J-U1+92-21-4914569.

كتاب كانام: مستحركة الليف ندويجيد الثاعث دوم: المستحركة الليف ندويجيد الثاعث دوم: المستحركة الليف المعام

ناش يك والعداديات

ST-9E باكر المجال الرابي 497-21-4976073 بيس: 492-21-4976073

www.mbi.com.pk

مِلنَّكُ لِي لِينَ

عنه مركز القرآن أريب القرآن المدوياز الركراجي -021-5392171 فون 5392171 من المرين الزوم مجديت السلام اليشن كراجي -منه كتب رحمات الدوياز ادالا بعور -

042-7243991 فيان المروم الأار الماجور في المروم الأراد المروم الأراد المروم الأراد المروم ال

الله على المادية في المادة المثان المادة المادة المثان المثان المادة المثان المثان المادة المثان المثان المثان المادة المثان المادة المثان ال

151-31/11/86 و 151-31/11/20 من 11/1/86 و 151-340/11/20 (151-340/11/20 (15

081-662263 فن 081-66263 ثن 081-662263 ثن 081-662263 ثن 071-5625850 ثن تأث بين 171-5625850 ثن الأسلام

271-5625850 فوك 071-5625850 منا القالية كوالميات ماركيك الواسيات المركية الواسيات المركية الواسيات المركية المواسيات المركزة المواسيات المركزة المواسيات المركزة المواسيات المركزة المركزة المواسيات المركزة المواسيات المركزة المركزة

المناط المائية فالدمروان

المارف الفارف الأراقى ويثاور

المَتَى كُوْتِكِا فِي خَدْ يَجِيعُ

فهرشت ميضامين

| ir | ······································ |
|-----|---|
| 10 | |
| 19 | کلیف ہے بیجاؤ کا پہلا راستہ |
| 19 | آواب معاشرت كالحاظ |
| P+ | الله والول كي صحبت |
| n | كى كوتكلف شديخ كافواكم |
| rr | ونياجت بن جائ كى |
| rr | المام غرالي رحمه الله كاخطاب |
| rr | انصاف، بحلائي اورصله رحي |
| PA | نگلیف ہے بچاؤ کا دومرارات ہے ۔۔۔۔۔۔۔ |
| řΑ | گریں وافل ہوتے وقت اجازت طلب کرنا |
| r. | اجازت طلب كرنے كى تحكمتيں اورائم مسلحتين |
| rr | اجازت طلب كرف كامسنون طريقه |
| 10 | اجازت ليت وت ابنانام بحى ظاهركرك |
| FY | وستک کے بعد خاموثی خلاف ادب ہے |
| 72 | درمیاتے اندازیں دمتل دے |
| 72 | اجازت کے لئے جدید طریقوں کا استعمال |
| FA. | ملاقات كالصرار نه كرب |
| 79 | انتظار كے بعد جواب ندآئے تو لوٹ جائے |
| m) | عالم یابزرگ کے دروازے پر بغیر دستک دینے انتظاد کرتا |

بشيرالله الزخسين الزجي

﴿ ضِرُورِي عِزارِشُ ﴾

السلاء عليث وركعت اللبوة وكالتها

حصرات علاء کرام اور معزّز قارئین کی خدمت میں نہایت ہی عاجزاندالتماس کی جاتی ہے کہتی الامکان ہم نے کتاب میں تشج وتخریٰ کی بوری کوشش کی ہے تاکہ ہر بات مُتنداور باحوالہ ہو پھر بھی اگر کہیں مضمون یا حوالہ جَات میں شقم وشعُف یا آغلاط نظر آئیں تو آزرا و کرم ناشر کو ضرور مطلع فرمائیں تاکہ آئندہ ایڈیشن میں وہ فلطی باقی مدرہ۔

مزیداس کتاب کے متعلق کوئی اصلاحی جویز ہو تو ضرور بتائیں۔ اس کتاب کی تھے اور کتابت پر آلے منٹ کوئی گائی محنت ہوئی ہے امید ہے قدر دان لوگ مسلمانوں کے لئے کی گئی اس محنت کو دیکھ کر خوش ہوں گے اور اللہ تعالیٰ ہے قبولیت کی دعا کرتے رہیں گے۔

جَزُ آکُرُ اللهُ خَيْرِ اُ آپ کی فیق آرادے شعر اهباء بیت العلم نارسٹ

| 4 | عَيْ رَبُولُ فِيكُ لِيكِيُّ * |
|------|--|
| ۸٠ | 🙃 تكليف كالتيسراسيب: گزرگا بول شي زُكاوث دُالنا |
| Ar | الكيف كا چوتحاسب: شامراءول يركميلنا |
| Ar | O تكلف كا يانج ال سب: فلط ياركنگ |
| 19 | و تكيف كا يمناسب غلط أرائع مك |
| 91 | ع تكليف كا ما توال سب: اوقات ضائع كرتا |
| 94 | نيان وقت فودگی ہے۔۔۔۔۔۔ |
| 9.4 | فيان وك المارات المارا |
| 99 | عييون بر . ن بات رئا السياد عشرك اشياد كا غلط استعال |
| 1-1 | شترك بية الخلاء كاستعال |
| 1•A | - 7 |
| 1+9 | الکیف کا نوال سب: پینے کی یو |
| IIF | العيف كاربوال سبب على اوارك كى طرف عيسر بهوليات كا فلا استعال الم |
| 112 | |
| 112 | و تكليف كا بار جوال سبب: عدم تعاول |
| IA | یو نمین کے ساتھ تعاون شاگر دے ساتھ تعاون |
| 14 | |
| rr | تکلیف کا تیرووال سب: د بوارول پر چاکگ |
| rr | 🕝 تكليف كاچود اوال سب : ب موقع سلام كرنا |
| | ⊕ علاوت قرآن کے وقت ملام کرنا |
| *1* | ® افغرطام کے معاقد کرنا |
| rr | بڑے بھائی کا ایک ول چپ واقعہ |
| ro | بعض جكه ملام كرنا محروه ب |
| ro, | سلام كى وجد ع فرض فما ذاؤ ث كل |
| ro | مصافح کآراب |
| ry _ | مجلس کے دوراان سلام کرتا , |

| - | 707 | - |
|------|--|---|
| **** | کلیف ہے بحاؤ کا تیسرارات | 7 |
| | | |
| | كى كانداق أزانے اور برے القابات ديے ہے بي | |
| | 1 - 10 - 1120 Bell - 126 Caller | 1 |
| | 一一一一一 | Š |
| | التحالقايات عيادكاست عيد المستسبب | |
| | | F |
| | | |
| | بدگانی اور فیبت کی ممانعت | |
| | • ترمت بوه ظن | |
| | -> 4/ 5 | |
| | | |
| г | 0 دمت مجس | |
| | | |
| | | |
| 2 | مسى كا فون سننا | |
| ۵ | € رست فیت | • |
| | | |
| 4 | | |
| * | سلمان کی عزت و حرمت کا مقام | |
| 1 | ميبت كا دُنيادى اور أخردى نقصان | |
| | 1 - 1 - 1 - 1 V 1 2 - 1 | 5 |
| | | |
| ۳ | بان اور باتحد کی حفاظت | j |
| 4 | بان سے تکلیف شدرینے کا مطلب | 1 |
| | 7 GV C+C -4 | |
| 4 | The state of the s | |
| (A | باك كي آفتين | 2 |
| 19 | بان بدی خرفاک چیز ہے | 2 |
| | الم كوفى اختيار كرنے كي طريق | |
| 4. | | |
| r | ◊ تكليف كالببلاسب: لا وَوُ البَّكِر كا غلداستعال | 0 |
| ۷۸ | تَكُلِيفَ كا دومراسب: تاجا رُزتجاوزات | 0 |
| - | Allementary and the second sec | |

| 1174 . 1174 . 1174 . | حاجت مند کی سفارش کر دو سفارش کے احکام اہائل کے لئے منصب کی سفارش سفارش، شہادت اور گوائی ہے پری سفارش گناہ ہے سفارش کا مقصد صرف توجید ولا تا |
|----------------------------|--|
| 1174 . 1174 . 1174 . | 🕦 ناالی کے لئے منصب کی سفارش 🕝 ناالی کے لئے منصب کی سفارش |
| 174 . 172 . | 🕝 سفارش، شہادت اور گوائی ہے |
| 1172 . | 🕝 بری سفارش گناه ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ |
| | |
| 100 | 🗨 نارش کامتصوص کے توروانا |
| .1175 | |
| 10'9 | 🕒 سفارش ایک مشوره ې |
| 10. | تکلیف ہے بیاؤ کا دسوال راستہ |
| 10+ | معاملات کی صفائی |
| 10+ | معاملات کی صفائی وین کاانهم رکن |
| 10+ | تين چوتمائی دين معاملات شن ہے |
| 101 | معاملات کی خرابی کا عبادت پراژ |
| 101 | معاملات کی تلاقی بهت مشکل نے |
| IDP | حضرت تحانوی رحمه الله تعالی اور معاملات |
| ior | ایک سبق آ موز داقعه |
| ior | حضرت تحانوي رحمه الله تحالي كاايك واقعه |
| 101" | معاملات کی فرانی سے زندگی حرام |
| 100 | حضرت مولانا محمد ليعقوب صاحب رحمة الله عليه كا چند مشكوك لقي كهانا |
| roi | حرام کی دوشمیس |
| IDY | باپ بیٹوں سے مشترک کار دیار |
| 102 | باپ کے انقال پر میراث کی تقسیم فورا کریں |
| ١٥٧ | مشترک مکان کی تغییر میں حصد داروں کا حصہ |
| 109 | حطرت مفتى صاحب رحمه الله تعالى اور ملكيت كى وضاحت |
| 109 | حضرت ذاكم عبدالني صاحب رحمدالله تعالى كى احتياط |

| غث! | ۸ ۸ |
|-------|---|
| 4 | كمان كمانے والے كوملام كرنا |
| 2 | الكليف كالتدر موال سب على المكادي وفش كوني |
| Ά. | الكيف كاسوادوال معب بمى كوذ منى تكليف عن ذالنا |
| 9 | دائی تکلیف میں جما کرنا حرام ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ |
| | لما دُم پر دُنِني بوجه و النا |
| -1 | تكليف سے بچاؤ كا چھٹارامة |
| 7 | |
| ۳۱ | آ جيوث کا پيلا و بال: فرشتول کی نفرت |
| rr | 🏵 جيوث کا دومراويال: گناه کييره کا ارتكاب |
| 77 | @ جوث كاتيراوبال: مال س يركت كاخاتمه |
| ro | ﴿ حِموتُ كَا جِوتِمَا وبِال: اللهُ تعالى كى نارانستكى |
| 10 | ﴿ جُموت كا يا نجوال ويال: حجوثي گوائل كا ارتكاب |
| 17 | 🕥 جبوث كا چمثا وبال: وعده خلافی كاارتكاب |
| IF7 | @ جبوث كاساتوال وبال: منافقت كى علامت |
| 174 | はないとはないがら |
| 179 | تكليف سے بچاؤ كا ساتوال راسته |
| 179 | لعن طعن سے پر تیسز |
| 101 | تکلیف سے بچاؤ کا آتھواں راستہ |
| iri | تبهت والزام رّاثی ب برتیز |
| IMP. | شہت لگانے والے کی سزا |
| ١٢٢ | خُواعَيْن اورتَقِيْس |
| Hele. | البيع عزيز اور يولي بجول كوتكليف سے بچائي |
| iro | تكليف سے بيچاؤ كا نوال راسته |
| 100 | بغيرد باؤك عائز سفارش |
| | - (يَيْنَ (لِعِيلَ أَرْبُ) |

| AIT | القم وضيط كى يابندى آكليف عن يخيخ كاايك على |
|------|---|
| 4 | تكليف ع بياد كابار موال راسته |
| 4 | گلوق خداے تعددی و فرخوای |
| | دين اور فيرخواي لازم وطروم |
| r | اللوق سے جدروی خالق سے میت کی علامت |
| PE . | حضرت بيت عليه السلام كي خيرخواني |
| 1 | نی اگر مسلی الله علیه وسلم کی اپنی اُمت کے ساتھ خیر خوابق وشفقت |
| 4 | قاموش فدمت |
| | حضرت عمر رضى الله تعالى عنه كا واقعه |
| | ایٹارو ہمدردی کی تین بہترین شالیس |
| 1 | لفيحت آموز پيلو |
| | تفرت گناوے ہوگناو کرنے والے ےشہو |
| | حیوانات کے ساتھ خیرخوای کی مثالیں |
| | باندی کے ساتھ بھلائی و خمرخوائی |
| | غیرمسلموں سے ہدردی و بھلائی |
| 4 | دوسو مخول کی جدروی |
| 2 | سوكن كاسبق آ موز قط |
| | ايثارو بهدردي کي جيتي جاگتي تصوير |
| ٢ | حاجت مندول کے ساتھ بھلائی و خیر خواتی |
| P. | منعفول کے ساتھ فحر خواتی |
| 3 | تحکیم الامت حضرت تفانوی وحمه الله تعالی |
| 1 | مفتى كُفِعْ صاحب رحمه الله تعالى كي اولا د كوشفقانه نصيحت |
| | رشتہ داروں کے ساتھ صلد رحی و جدروی |
| 9 | تمام انسان آپس میں رشتہ دار ہیں |

حماب اى دن كريس حقِقى مفلس كون؟ PH تكليف سے بحاؤ كا كيار ہوال رائة 140 خُرْثِ اخْلاتِي IMP دىن يش اخلاق كاورجه ITA اظاق کے مراحب 144 "حن اخلاق" کے کتے ہیں؟ AYL "بَدْلُ المَعْوُوف" كي صورتين 199 "كف الأذي" كي تفصيل 14. گريلوآ داب معاشرت كى رعايت ندر كفت كى مثالين بمينه كالفظ برداخطرناك ب 121 كفُّ الاذي كَامِّالِينكفُّ الاذي كَامِّالِين 145 عجمرسول المدسلي الله عليه وسلم كي خاص سنت بعض لوگول کے ندمسکرانے کی وجوہات محرانے کے فوائد مسكرانے كي معاشرتي اثرات ... IZA خنره پیشانی سے ملاقات کرنا "مدقه" ب 141 دومروں کو خوش رکھے 129 دومرول كوخوش كرنے كائتي 14+ مناه كاذر يع دومرول كوفوش شاكريل..... IAI نيقني شاعر كا واقعه IAL الله والع دومرول كوفوش ركت يل IAF امر بالمعروف كوند چوڑے IAF زم اعدازے نبی عن الحظر کرے IAM

نقريظ

حضرت مولانا ابن ألحن عباسي صاحب مرظله العالى

استاذ الحديث، جامعه فار وقيه، كراجي

بیت العلم کے احباب کو اللہ تعالی بہترین جزائے خیرعطا فرمائے کہ اُن کی تصانیف و تالیفات معاشرہ کے ہر فرد کے لئے مفید ہوتی ہیں اور یہ کتابیں ایک ہمدرد، مصلح وعربی استاذ کی حیثیت رکھتی ہیں جس میں عورتوںنو جوانوںاور

الدرون کی و حربی اسماد می سیسیت رسی بیل میں اور تول میں بوجوانوں بوجوانوں بچول کی تعلیم و تربیت کے ساتھ ساتھ مشتد اقوال و واقعات بھی ہوتے ہیں۔

اَلْحَمْدُ لِلَّهِ حال بى مِن ان كى ايك تصنيف" اساع حنى منظر عام برآ چكى عادب اسابق استاذ، جامعه فاروقيه)

کی نگرانی میں بیزی تالیف" کمی کو تکلیف ندد یجئے" منظرعام پر آرہی ہے۔ ایڈا مسلم بینی کسی مسلمان کو تکلیف واڈیت میں جتلا کرنا حرام اور گناہ کبیرہ ہے

حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہے کہ کائل مسلمان وہ ہے جس کی زبان اور ہاتھے کی تکلیف ہے دوسرے مسلمان محفوظ ہول جمارا آج کا معاشرہ جن آفتوں اور کمزی روں کا یک مدر سے مسلمان محفوظ ہوں جمارا آج کا معاشرہ جن آفتوں اور کمزی روں کا یک مدر سے میں مدر دوں ۔

میں تربیت کا ہے آئ آگر ہم اپنی نی نسل کی تربیت کی ذمہ داری کومحسوں کریں اور سی تربیت کا ہے آئ آگر ہم اپنی نی نسل کی تربیت کی ذمہ داری کومحسوں کریں اور

حقوق کی ادا لیکی سکون کا ذر نید ہے الله كے لئے اچھاسلوك كرو 174 شكريه اوريد كا انظارت كرو صله رحى كرتے والاكون ع؟ پمیں رحموں نے جکڑ لیا ہے.... تقريبات ين"نوء"دينا حرام ب تخذيم مقعد ك تحت ديا جائع؟ مقصد جانجيخ كاطريقه MAD دومرول كوتكيف ، يجافى كالتاابتمام!!! FITZ FFA خدمت سے کیا ماتا ہے rol حطرت مولانا غلام رسول يونثو ي رحمدالله تعالى كامقام ribi خدمت کے بارے میں حضرت تحانوی رقمة الله عليد کے چندارشادات...... rom مسلمانون کی خدمت ror خدمت کی تین شرط میں raa



(بين البدارين)

بسيراللوالرَّحْمُن الرَّحِيْمِ

مقدمه

تمام تعریفیں اُس ذات یاک کے لئے ہیں جس نے اس کا نتات کو عدم سے وجود بخشا ادرا سے انسان کے رہنے کے لئے عارضی میام گاہ میں انسان کی تعلیم و تربیت واصلاح کے لئے انبیا علیم الصلوت والتسلیمات مبعوث فرمائے۔

درود وسلام نازل ہواس عظیم ہستی پرجس نے اس کا نئات میں حق کا بول بالا کیا اور انسان کو تعلیمات ہدایت اور آ داب معاشرت کے نورے منور فرمایا۔
رحت کا ملہ نازل ہوائ عظیم اور پاک باز ہستیوں پرجنہوں نے اسلام کے لئے اپنا وقت، جان اور مال وقف کر دیا اور اسلام کی خاطر ہرتئم کی '' تکلیف'' کو برداشت کرتے رہے۔

دین اسلام کے پانچ شعبے ہیں: عقائد، عبادات، معاملات، معاشرت اور اخلاقیات جوان پانچول رعمل کرے گاوئی پورا دین دار کہلائے گا۔ دین کے ایک اہم شعبے "معاشرت" کی اہمیت کود یکھتے ہوئے یہ کتاب مرتب

القاع-

" کی کو تکلیف ند دیجے" ایک ایبا عنوان ہے جس بی ایک معاشرتی نظام کے تحت زندگی گزار نے کے تمام زرّی اصول آجاتے ہیں جو اسلام نے آج سے چودہ سوسال پہلے اس دنیا میں متعارف کرائے۔ اسلام کا یہ معاشرتی نظام جس نے مختلف طبقات میں بٹی ہوئی انسانیت کو اخوت اور بھائی چارگی کی دولت عطا کی، جس نے جاہلیت کی تمام خود ساختہ قدرین ختم کر ڈالیس، جس نے علاقائی و جغرافیائی، فی جاہلیت کی تمام خود ساختہ قدرین ختم کر ڈالیس، جس نے علاقائی و جغرافیائی،

اسلامی خطوط پران کی تربیت کی فکر اور اس سے لئے بنجیدہ کوشش میں لگ جا میں تو ان شاء الله معاشرے کی بیر کی دور ہو عتی ہے بید کتاب ای فکر اور کوشش کی ایک کڑی ہے، اللہ کرے بیر بار آور ہواور جس مقصد کے لئے بیر تب کی گئی ہے وہ اس سے حاصل ہو جائے۔ آمین

ابن الحسن عبای



الله تعالى في آدم كوشى عبداكيا إلى"

چناں چہ نی اگرم خِلِقَ عُلِينًا کا ارشاد ہے: "اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ." عَلَى تَتَحَرَهُمَدُ: "كامل مسلمان وى ہے جس كى زبان اور ہاتھ سے دوسرے مسلمان محفوظ رہیں۔"

اس مدیث میں نبی اکرم ﷺ نی کال مسلمان اُس شخص کوفر مایا جس کی زبان وہاتھ سے کمی کو تکلیف نہ دینا اور تکلیف سے بچانا اسلام کے کامل مونے کی نشانی ہے۔

نه ترمذی، تفسیر: ۱۹۳/۲ ته بخاری: ۱/۱، کتاب الإیمان رنگ ونسل کے درجات کی کمل نفی کی اور ایک ایسے معاشرے کوجنم دیا جس میں کسی عربی کو بھی ویا جس میں کسی عربی کو جی کربی کو تیت نہیں۔

يني لونكان في يحي

چنال چدالله تعالى كاارشادى:

﴿ لِلَا أَيْهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْناكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَّأَنْفِي وَجَعَلْناكُمُ مُنْ ذَكَرٍ وَّأَنْفِي وَجَعَلْناكُمُ مُنْعُوبًا وَقَبَابِلَ لِتَعَارَفُوا * إِنَّ اكْرَمَكُمْ عِنْدَاللَّهِ أَتْقَاكُمُ * إِنَّ اللَّهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴾ له الله عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴾ له

تَتَرَجَهَمَدُ: "ا الوَّواجم في تم سب كواليك (على) مرد وعورت بيدا كيا ب اوراس لئے كرتم آپس ميں ايك دوسرے كو بيچانو تبهارے قبيلے اور كنيے بنا ديتے جي ب خيك الله كنزد يك تم ميں سب سے زيادہ باعزت وہ ب جوسب سے زيادہ ڈر فے والا ہے۔ يقين مانو كداللہ تعالى وانا اور باخبر ہے۔"

جس انسان کو معاشرے میں ذکیل سمجھا جا رہاہے اور جو اُسے ذکیل سمجھ رہے میں دونوں ایک آدم غَلِیْ النِّنْ کِلِیْ این کی اولاد ہیں۔

البذاحقير مجھ كركمى كى بات پر توجہ ندوينا اور كمى كوابميت ندوينا انسانيت كاشيوہ نہيں۔

نی اکرم ﷺ نے اپ ارشاد مبارک میں بھی ای بات کی خوب وضاحت کی ہے آپ ﷺ کا ارشاد ہے:

"الله الله تعالى في تم لوكول سے زمانة جابليت كا فخر اورائي آبا و اجدادكى وجد سے تكبر كرنا دوركر ديا ہے، اب دو طرح كے لوگ ہيں۔
ايك وہ جو الله كے نزديك فيك متى اوركريم ہيں۔ دوسرے وہ جو الله كے نزديك بدكار، بد بخت اور ذيكل ہيں تمام لوگ آدم كى اولاد ہيں اور

ك الحجوات: ١٣ - (يَكَ العِيلِ الرَّامِيلُ

تکلیف سے بچاؤ کا پہلاراستہ

آداب معاشرت كالحاظ:

دین کے پانچ شعبول (عقائد، عبادات، معاملات، معاشرت، اخلاق) پیل ہے چوشے شعبہ بعنی معاشرت سے متعلق کی احادیث بیں ہدایات بیان فرمائی گئی ہیں۔ یوں تو معاشرت کے بے شار مسائل ہیں لیکن ان مسائل اور آ داب کی بنیاد ایک بنیادی اصول اور قاعدہ کلیہ ہے۔ اس قاعدہ کلیہ کے تحت بن سارے مسائل آ جاتے ہیں۔ اگر اس قاعدہ کلیہ بڑعل کیا جائے تو معاشرت کے تمام احکامات پڑعمل ہوجائے گا اور وہ قاعدہ بیہ جو اس حدیث ہیں بیان کیا گیا ہے۔

نی اکرم مِیْلِی ایکا کا ارشاد ہے: "تَکُفُ شَرَّكَ عَنِ النَّاسِ" ^{لَك} تَتَرَجَّمَدُ:"آپِ شَرُكُو دوسرے لوگوں ہے روكو." رسول اکرم مِیْلِی النِّیْلِی كا ارشاد ہے:

"جوونیا بین کسی مسلمان کی تکایف دور کرے گا آخرت میں اللہ تعالی اس کی تکالیف کو دور فرما دے گا۔"

صرف ای بنیاد پراس کی تکلیف کودور کیا جائے گا کداس نے دنیا بی لوگول کی تکلیف کودور کیا تھا۔

ایک اور حدیث میں فرمایا: جوشخص اپنے بھائی کی حاجت کے لئے چلے تو وہ اس کے لئے دس سال کے اعتکاف ہے بہتر ہے، جوشخص اللہ کی رضا کے لئے ایک

الايمان، باب بيان كون الايمان ١٢/١

ت ترمذي، باب ماجاء في الستر على المسلم: ١٤/٢

اور رسول کریم منظی علی کا یہ بھی ارشاد ہے: "اللہ کے بندول کو تکلیف مت پہنچاؤ اور نہ آئیں عار ولانا اور نہ بی اُن کے عیوب تلاش کرنا اس لئے کہ جو اپنے مسلمان بھائی کی پردہ دری کرتا ہے اللہ تعالی اس کی پردہ دری قرماتے ہیں یہاں تک کہ جیسے اس کور سینے اس کور سواکرتے ہیں۔"

ایسے بی ارشادات مبادکہ کے پیش نظر بندے نے کچھ مضامین ساتھیوں کو دیے اور پھر مولانا اختر علی صاحب (استاذ جامعہ فاروقیہ) کی زیر گرانی مولانا مجمد جاوید، مولانا ارشد محمود اور مولانا ارشد اقبال (زید مجد ہم) نے تھی وتر تیب، عنوانات کی تشہیل، حوالہ جات اور تخریخ احادیث میں تعاون فرمایا فَجَوَّا هُمُ اللَّهُ خَبْرَ الْجَوَاء۔

الله تعالی ہے دعا ہے کہ ہم سب کوایک دوسرے کاحق پہچائے اور اداکرنے کی توفق عطا فرمائے کہ کسی کو ہم سے تکلیف نہ پہنچے، اس کتاب کی تیاری کے سلسلے میں بندہ اپنے معاونین کا بھی بہت تھی ول سے شکر بیدادا کرتا ہے۔ اور دُعا ہے کہ الله تعالی اس کتاب کومؤلف، معاونین اور تمام مسلمانوں کے لئے صدقہ جاریہ بنائے۔ آمین یکا دَبَّ الْعلقیمین،

بُعُنْ فِنْ فِي الْمُحِيدِ الْمُوامِ عِلَمُ الْمُحِيدِ الْمُوامِ عِلَمُ الْمُحِيدِ الْمُوامِ عِلْمُ اللهِ



له مسند احمد ٢٧٩/٥، رقير: ١٦٨٩٦، ثوبان رضى الله عنه

الم يتنهارى طرف سے اپنے اوپر صدقد ہے ''۔ اگر آپ اپنے شرکو دومروں سے روكيس سے توبیہ خود آپ كا اپنی نفس پر صدقد ہے، گویا كه آپ نے نفس كی طرف سے صدقد ادا سر كے أسے مصائب و آفات سے بچاليا، دومروں كو تكليف نہ پہنچانے كا فائدہ خود اپنے آپ كو بوا۔

كى كوتكايف نددينے كے فوائد:

دوسروں کو تکلیف شہ دینے سے کون کون سے فوائد حاصل ہوں گے؟ بیر فوائد میں زیادہ ہیں: ؟

とればこしいいりんとれとれ

ا أخرت ك عذاب عن الم جاؤكم

جب اپنے آپ کوال گناہ سے روکنے کی کوشش کرد کے تو یہ خود ایک لیکی

مشریعت کا ایک قانون میر جھی ہے کہ آدی کے دل میں گناد کا ارادہ پیدا ہواور پھر اللہ کے خوف ہے اُسے چھوڑ وے تو بیہ خود ایک نیک عمل ہے۔ مثلاً بیہ خیال آیا کہ نامحرم کو دیکھوں لیکن اللہ کے خوف ہے نظریں نچی کرلیس تو صرف بینیس کہ گناو مہیں ہوا بل کہ اللہ کے خوف کی وجہ ہے اس گناہ کا چھوڑ نا خود ایک نیکی ہے جو نامہ اعمال میں کسی جائے گی۔

ای طرح آپ کے دل نے چاہا کہ آپ کسی کو گالی دیں لیکن اللہ کے خوف کی وجہ سے آپ نے اپنی زبان مبارک کو روک لیا تو یہاں دو فائدے حاصل ہوئے، ایک تو بید کہ بڑے کیے اور دوسرا فائدہ بید ہوا کہ تہبارے نامہُ اعمال میں ایک تیکی کا اضافہ ہوگیا۔

حضور فيال المان كردوية مكم اتناعيب وغريب بكدال يرجتنا بحى

دن اعتکاف کرے، اللہ تعالی اس فض اور جہنم کی آگ کے درمیان تین خدقیں بنا دیے ہیں، ہر خندق کے درمیان مشرق ومغرب کے فاصلے سے زیادہ فاصلہ ہے۔ معاشرت کے تمام احکام کا خلاصہ یہ ہے کہ آپ کے کسی قول وفعل سے دوسرے کو ادنی تکلیف نہ پہنچ۔ اس سے مراد ناحق تکلیف ہے یعنی کسی کو ناحق تکلیف نہ پہنچ۔ اس سے مراد ناحق تکلیف ہے یعنی کسی کو ناحق تکلیف نہ پہنچ۔ بعض مرتبہ حق کی وجہ سے دوسرے کو تکلیف پہنچتی ہے دہ اس میں داخل نہیں مثل قاضی مرائیں جاری کرتا ہے، عدالتوں میں ہاتھ کا فی جاتے ہیں اور قصاص کے فیصلے بھی ہوتے ہیں دفیرہ وغیرہ و

الله والول كي صحبت:

کی کو تکلیف سے بچانے کے لئے جتنی باتیں اس کتاب میں ذکور ہیں اگر افہاں میں اس کتاب میں ذکور ہیں اگر افہاں میں اس لانے کی کوشش نہ کی گئی تو بچھ عرصہ بعد بھول جائیں گی اور عمل کرنے کی عادت ایسے ماحول میں رہنے سے پڑتی ہے جہاں ان چیزوں کی پابندی کی جائے ،ای لئے کہا جاتا ہے کہ اللہ والوں کی صحبت میں رہا جائے کیوں کہ وہاں پڑھل کرنے کا ماحول ہوتا ہے۔اس لئے وہاں رہنے سے اس کی عادت پڑتی ہے، اور بید عادت بنانے سے زندگی خوش گوار بن جاتی ہے جب کہ اس کی رعایت نہ کرنے کی وجہ سے زندگی جہم بن جاتی ہے۔

تکلیف سے بچانا ایک ایساعمل ہے کہ اس میں پچھ کرنا نہیں پڑتا، بل کہ اس میں نہ کرنے کا تھم دیا گیا ہے اور نہ کرنے کے لئے نہ طاقت کی ضرورت ہے، نہ میسوں کی، نہ وقت کی اور نہ محت کی لیکن بیٹمل بہت بڑا ہے اور اس کی فضیلت نبی اکرم ظَافِقَ الْفَیْمَا نے یہ بیان فرمائی: "فَالِنَّهَا صَدَفَةٌ مِنْكَ عَلَى نَفْسِكَ اللہِ

الترغيب والترهيب، الترغيب في قضاء حواتج المسلمين: ٢٦٣/٣

عه املای تقریری: ١٥/٥٠

عه مسلم، كتاب الايمان، باب بيان كون الايمان ١٢/١

(بين وليدلي أويت

ردان ال حديث كابيجلب كد"ائة شركولوكول بروكو" الم عزالي رَجْمَهِ اللَّهُ تَعَالَى كا خطاب:

الم غزالي رَحْمَيْهُ اللَّهُ تَقَالَ السَّانِ عَاطِب مورفرمات مين ، حس كا عاصل ي ب: اے انسان! تم تو انسان تھے جہیں تو جانوروں سے بلندو بالا ہونا حاہے تھا، الله الرتم في السانية ع كركر جانورى بنا تحالة بحركات، بعيش اور بعير بكرى ك طرح بن جات كمة علوكول كوفائده بهيجة الكيفيس نديم في اوراكر بينيس بن عے تو مجرایے جانور بن جاتے جن سے ندانسان کوراحت مجنی ہے اور ندنقصان ہوتا ہے جسے جنگلوں میں رہے والے جانور کدانسانوں سے دور ہونے کی وجد سے انسان کو نقصان نہیں پہنچاتے لیکن اس سے کم درجے والے جانور لینی ڈیک مارنے والع جانور جيسان اور پچوتوند بنوك

ية المام غزال وخيمة المال تقال ك بات ب- ني اكرم الفي الله ك صديث كاس آخرى جمليكا عاصل يدب كداكرتم بيان كرده أصل اعمال عي على بعض عمل كنے سے عاجز مويا تمام برعمل كرنا وشوار بوت كم ازكم اتنا تو كروكد لوكول كوائي تکلیفوں سے بچاؤ، یہ خوش گوار زندگی گزارنے کا ایک بہترین نسخہ ہے۔ اللہ ربّ العزت بمیں اس بر عمل کرنے کی توفق نصیب فرمائے۔ (آمین)

انصاف، بھلانی اورصلدری

مجلائی کے کچھ کام ایسے ہوتے ہیں اگر انسان ان پر عمل بیرا ہو جائے تو تكليف ك اسباب و ذرائع خود بخودختم جو جاتے بين، كيوں كدانسان اگر مثبت المال میں مشغول ہوتو اس کا قیمتی وقت منفی المال میں ضائع ہونے سے نیج جاتا ب، انساف بحالی اور سارحی کے بارے میں اللہ تعالی کا ارشاد ہے:

له اصلاق تقریری: ۲۹/۲

الله كاشكركرين كم باس لي كداس بي محنت كي فيس كرني يردني، دولت بكوفيس لگانی برتی اور بھی کھے نیس کرنا برائین فاکدہ یہ ہوتا ہے کہ آدی گنا ہول سے نی جاتا إدرنيكيون من اضاف موتا جلا جاتا ب-

ونياجنت بن جائے كى:

اگر سب لوگ حضور بطیق القائل کے اس ارشاد پر عمل کر لیس تو یہ دنیا کی زندگی جنت بن جائے گی۔ ہر مخص اس بات کا اہتمام کرے کہ میرے کی قعل سے دوس کو تکلیف ند پہنچے۔ مارے معاشرے میں ہونے والے کتن جھڑے، فساد، معیبتیں، اذیتی اور پریشانیاں صرف ای وجہ سے کھڑی ہوتی ہیں کہ ایک سے دوسرے کو تکلیف پیچی، جھڑا کھڑا ہوا، وشنی پیدا ہوگئ، مقدمہ بازی کا سلسلہ چل پڑا يبال تك كول وغارت تك نوبت بنفي كي _

لیکن اگر شروع سے ہی ہر مخص اس بات کا اہتمام کرے کہ اس سے کی دوس کو تکلیف ند پہنچ تو یہ دنیا جنت بن جائے۔ جنت کے بارے میں بیشعر

- بہشت آنجا کہ آزادے نہ باشد کے راہا کے کارے نہ ناشد تُتُوجَهَنَدُ: "جنت وه جُله ب جہال کی کوکس سے تکلیف نہیں پہنچ گی اور كى كوكى دوسرے كوئى سروكارند ہوگا_"

سی کو تکلیف ندوینا ایساعظیم الشان عمل ہے کدا گرلوگ اس پرعمل کرنے لکیس تو ہرایک کواس کی وجہ سے الی راحت اور آرام ملے کداس سے پہلے الی راحت و آ رام کا تصور تیل کیا ہوگا۔ آج کل ہمارے راحت وآ رام کے اعدر ایک بہت بردی رکاوٹ اس حدیث برهل شركرنا ب، اور ورحقیقت بورے اسلامی معاشرے كاروح لفظ عدل کے اصلی معنی برابری کرنے کے ہیں، پھر مختلف نسبتوں سے اس کا

D عدل كا يبلامفهوم: انسان الي نفس اور الي رب كے درميان عدل كے، تواس كے معنى سيروں كے كداللہ تعالى كے حق كواسے خط نفس يراوراس كى رضا جوئی کو اپنی خواہشات پر مقدم جانے، اور اس کے احکام کی تعمیل اور اس کی ممنوعات ومحرمات عظمل اجتناب كرا

 عدل کا دوسرامفہوم: آدی خودائے نقس کے ساتھ عدل کا معاملہ کرے، وہ يب كدايے نفس كوالي تمام چيزوں سے بچائے جس ميں اس كى جسمانی يا زوحانی بلاكت موداس كى اليى خوابشات كو يوراندكرے جواس كے لئے انجام كارمعز بول، اور قناعت وصبرے كام لے بقس پر بلاوجہ زیادہ بوجھ نہ ڈالے۔

O عدل کا تیسرا مفہوم: اینے نفس اور تمام مخلوقات کے درمیان انصاف كرے، اس كى حقيقت يہ ب كد تمام محلوقات كے ساتھ خير خواش اور جدردى كا معالمد کرے، اور کسی اوٹی واعلی معالمہ میں کسی سے خیانت ندکرے، سب لوگوں کے لتے اپنانس ے انصاف کا مطالبہ کرے، کسی انسان کواس کے کسی قول وقعل ہے ظاهراً يا باطنأ كوئي ايذاه اور تكليف نديني

@ عدل كا چوتھامفہوم: جب دوفريق اين سى معاملہ كا محا كمداس كے ياس الني او فيصله مين كى طرف ميلان كے بغير حق كے مطابق فيصله كرے۔

🙆 عدل كا يانچوال مفهوم: هرمعامله مين افراط وتفريط كي راهول كو چيوز كر میاندروی اختیار کرے، ابوعبداللہ رازی رجعیب الله تفاق نے بی معنی اختیار کرے قرمايا ٢ كد لفظ عدل مين عقيده كا اعتدال، عمل كا اعتدال، اخلاق كا اعتدال سب

م التفسير الكبير: ٨٢/٢)، لحل: ٩٠

﴿إِنَّ اللَّهُ يَأْمُو بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَايْتَاكُّ ذِي الْقُرْبِي وَيَنْهِلَى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكُرِ وَالْبَغْيِ * يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ١

تَتَوْجَهَدُ: "الله تعالى انساف كا، بهلائي كا اور قرابت دارول كے ساتھ نیک سلوک کرنے کا حکم دیتا ہے۔ اور بے حیاتی کے کاموں، ناشائنت حركتول اورظلم وزيادتى سے روكتا ہے، وہ خود حميس تصحين كررہا ہے كمتم نفيحت حاصل كرور"

اس آیت میں حق تعالی نے تین چیزوں کا علم دیا ہے۔ (عدل ا احسان الل قرابت كو بخشش، اور تين چيزول ك منع فرمايا ك ال مخش كام ٢٠ بريرا کام (قلم وتعدی، ان کاشری مفہوم اور اس کے حدول کی تشریح سے:

يبلا علم جواس أيت مين ديا كياده "عَدْل" باس لفظ كاصلى اور لغوى معنى يرابركرنے كے يون اى كى مناسبت سے دكام كا لوگوں كے زراعى مقدمات ميں انساف كماته فيصله عدل كبلاتا ب،قرآن كريم من ﴿أَنْ تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ ﴾ ای معنی کے لئے آیا ہے، اور ای لحاظ سے منظ عدل افراط و تفریط کے ورمیان اعتدال کو بھی کہا جاتا ہے، اور ای کی مناسبت سے بعض ائم تنسیر نے اس جگہ لفظ عدل کی تنسير ظاہر و باطن كى برابرى ہے كى ہے، يعنى جوتول يافعل انسان كے ظاہرى اعضاء ے سرز د ہواور باطن میں بھی اس کا وہی اعتقاد اور حال ہو۔ اصل حقیقت یہی ہے کہ يبال لفظ عدل اين عام معنى من بي جوان سب صورتول كوشامل ب، جومختلف ائمة تفسيرے منقول ہيں،ان ميں كوئي تضاد مااختلاف تبيں۔

علامدان عربي وخِيمَاللَّهُ تَعَالَىٰ فرمات إلى:

اوراگر استحضار کا بید درجہ نصیب شد ہوتو اتنی بات کا یقین تو ہر شخص کو ہونا ہی جائے کہ حق تعالیٰ اس کے ممل کو دیکھ رہے ہیں۔ حق تعالیٰ اس کے ممل کو دیکھ رہے ہیں۔ کا کوئی ذرّہ خارج نہیں رہ سکتا۔ کرحق تعالیٰ کے علم وبھرے کا نئات کا کوئی ذرّہ خارج نہیں رہ سکتا۔

خلاصہ بیہ ہے کہ دومراحکم اس آیت میں احسان کا آیا ہے، اس میں عبادت کا احسان حدیث کی تشریح کے مطابق بھی داخل ہے، اور تمام اعمال، اخلاق، عادات کا احسان بعنی ان کومطلوبہ صورت کے مطابق بالکل میچے و درست کرتا بھی داخل ہے، اور تمام مخلوقات کے ساتھ اچھا سلوک کرتا بھی داخل ہے خواہ وہ مسلمان ہو یا کافر، انسان، ہول یا حوال نا۔

امام قرطبی وَخِعَبُدُالدُّلُ تَعَالَٰنُ نَے قربایا: جس فض کے گھر میں اس کی بلی کواس کی خوراک اور ضروریات نہ ملیں اور جس کے پنجرے میں بند پرندوں کی پوری خبرگیری نہ ہوتی ہوتے وہ کتنی ہی عبادت کرے محسنین میں شارنہیں ہوگا۔ ت

اس آیت بیں اوّل عدل کا تھم دیا گیا گھراحیان کا بعض ائر تغییر نے فرمایا: عدل تو یہ ہے کہ دوسرے کا حق پورا پورااس کو دے دے اورا پنا وصول کر لے، نہ کم نہ زیادہ، اور کوئی تکلیف تمہیں پہنچائے تو ٹھیک اتنی ہی تکلیف تم اس کو پہنچاؤ ند کم نہ زیادہ۔

احمان میہ ہے کہ دوسرے کواس کے اصل حق سے زیادہ دواور خود اپ حق میں ا چٹم پوٹی سے کام لود کہ بچھ کم ہو جائے تو بخوشی قبول کر لو، ای طرح دوسرا کوئی خمبیں ہاتھ یا زبان سے ایڈا، پنچائے تو تم برابر کا انتظام لینے کے بجائے اس کو معاف کر دو، بل کہ برائی کا بدلہ بھلائی سے دواتی طرح عدل کا تھم تو فرض و واجب کے درجہ میں مواا درا حسان کا تھم نعلی اور تبرع کے طور پر ہوا۔

امام قرطبی رَخِتَبِرُاللَّهُ تَعَالَیْ نے عدل کے مغیوم میں اس تفصیل کا ذکر کرکے فرمایا: یہ تفصیل بہت بہتر ہے، اس سے یہ بھی معلوم ہوا کہ اس آیت کا صرف لفظ عدل تمام اعمال واخلاق سے اجتناب کو عدل تمام اعمال واخلاق سے اجتناب کو حاوی اور جامع ہے۔

دومراحم جواس آیت بین دیا گیاده "آلاخسان" ہاس کے اصل انوی معنی اچھا کرنے کے ہیں، ادراس کی دوسمیں ہیں۔

🛈 فعل یاخلق و عادت کواپی ذات میں اچھااورکمل کرے۔

﴿ بَسَى دوسر فَ فَخْص كَ سَاتَهُ وَاحِمَا سَلُوكَ اورعَده معاملَهُ كَرَ فَ اور دوسر فَ معنى كَ سَاتَهُ وَرَف الله استعال بوتا ب، جبيها الله تعالى كالرشاد ب:

﴿ أَخْسِنُ كُمَّا أَخْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ ﴾ ع

تَرْجَمَدُ: ' بي كدالله تعالى في تيرك ساتحد احسان كيا ب تو بحى سلوك كري"

امام قرطبی رَخِعَبُواللَّهُ وَعَنَالِنَّ فِي فَرِها اِنَ آیت میں بدافظ اپنے عام مفہوم کے لئے مستعمل ہوا ہے، اس لئے احسان کی دونوں قسموں کو شامل ہے، چر پہلی فتم کا احسان بعنی کسی کام کو اپنی ذات میں اچھا کرنا یہ بھی عام ہے عبادات کو اچھا کرنا، اعمال داخلی کو اچھا کرنا، معاملات کو اچھا کرنا۔

حضرت جرئیل غلیفلانیکی مشہور حدیث میں خود آل حضرت بطیفی علیہ انے احسان عبادت کے لئے ہے، اس ارشاد کا احسان عبادت کے لئے ہے، اس ارشاد کا خلاصہ بیہ ب کہ اللہ تعالی کی عبادت اس طرح کرد کہ گویاتم خدا تعالی کو دیکھ رہے ہو،

ك القرطبي: ١٢١/٥ نحل: ٩٠

ك القصص: ٧٧

تیسراتھم جواس آیت میں دیا گیا ہے وہ ﴿ اِنْتَاتَیُ ذِی الْفُوْلِی ﴾ ہے، ایتاء
کے معنی اعطاء بعنی کوئی چیز دینے کے جی، اور لفظ فُوْلِی کے معنی قرابت اور رشتہ
داری کے جیں، ذی القربی کے معنی رشتہ دار، ذی رحم، اس جیلے کے معنی ہوئے رشتہ
دار کو چھے دیتا، یہاں اس کی تصریح نہیں فرمائی کہ کیا چیز دیتا ہے، لیکن ایک دوسری
آیت میں اس کی صراحت نہ کور ہے ﴿ وَابِ ذَا الْفُوْلِی حَقَّهُ ﴾ تَوْجَحَدَدُ "اور
رشتے داروں کا حق ادا کرتے رہو۔"

ظاہر یکی ہے کہ یہاں بھی یکی حقوق مراد ہیں، کدرشتہ دار کو اس کا حق دیا جائے، اس حق میں رشتہ دارکو اس کا حق دیا جائے، اس حق میں رشتہ دارکو مال دے کر مالی خدمت کرتا بھی داخل ہے، اور اگر چدلفظ خدمت بھی، بیار پری اور فجر گیری بھی، زبانی تسلی و ہمدردی کا اظہار بھی، اور اگر چدلفظ احسان میں رشتہ داروں کا حق اوا کرنا بھی داخل تھا مگر اس کو اس کی زیادہ اہمیت بتلائے کے لئے علیحدہ بیان فرمایا گیا۔

تکلیف سے بچاؤ کا دوسراراستہ گھر میں داخل ہوتے وقت اجازت طلب کرنا:

سمی کے گھر میں داخل ہونے سے پہلے یا کسی سے ملاقات کرنے سے پہلے اجازت لینا بہت ضروری ہے، تاکد کسی کو تکلیف نہ ہوقر آن کریم میں کافی تفصیل کے ساتھ اس مسئلے کو بیان فرمایا گیا ہے۔

الله تعالی کا ارشاد ہے:

﴿ لِنَا يُهُمَّا الَّذِيْنَ امْنُوا لَا تَدْخُلُوا لِيُوْتًا غَيْرَ لِيُوْتِكُمْ خَتَّى تَسْتَأْنِسُوا وَتُسَلِّمُوا عَلَى آهْلِهَا * دَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ لَعَلَّكُمْ

ك بنى اسوائيل: ٢٦

عه منارف القرآن: ٥/٢٨٩ تا ٢٩١١ نحل: ١٠

ترجیری این والومت جایا کردکمی گھریں اپ گھرے سوات جب تک اجازت ند لے او، اور سلام کر لو اُن گھر والوں پر بیر بہتر ہے تہارے حق میں تاکہ تم یادر کھو، پھراگر نہ پاؤاس میں کسی کو تو اس میں نہ جاؤ جب تک کداجازت ند لطح تم کو اور اگر تم کو جواب لطے کدلوث جاؤ تو لوث جاؤاس میں خوب سخرائی ہے تہارے گئے اور اللہ جوتم کرتے ہوائی کو جانتا ہے۔''

افسوں ہے کہ شرایت اسلام نے جس قدراجازت طلب کرنے کے معاملے کا اجتمام فرمایا کہ قرآن تھیم بین اس کے مفصل احکام نازل ہوئے اور رسول اللہ علیہ اس کے مفصل احکام نازل ہوئے اور رسول اللہ علیہ اس نے عاقل ہوگئے۔ لیے قول وعمل ہے اُس کی بردی تاکید فرمائی، اُنٹا ہی آج کل مسلمان اس سے عاقل ہوگئے۔ لکھے پڑھے نیک اوگ بھی شاس کو کوئی گناہ بچھتے ہیں شاس پر شل کرنے کی فکر کرتے ہیں۔ دُنیا کی دومری مہذب قوموں نے اس کو احتیار کرکے بیا۔ پہلے معاشرہ کو درست کر لیا گر مسلمان ہی اس بی سب سے بیچھے نظر آتے ہیں۔ اسلامی احکام بین سب سے پہلے سستی اس علم بین شروع ہوئی بہر طال اجازت اسلامی احکام بین سب سے پہلے سستی اس علم بین شروع ہوئی بہر طال اجازت طلب کرنا قرآن کریم کا وہ واجب التعمیل تھم ہے کہ اس میں ذرای ستی اور تبدیلی کو طلب کرنا قرآن کریم کا وہ واجب التعمیل تھم ہے کہ اس میں ذرای ستی اور تبدیلی کو سے بیل اور اب تو لوگوں نے واقعی ان احکام کو ایسا نظر انداذ کر دیا ہے کہ گویا اُن کے نزد یک بیرقرآن کے احکام ہی نہیں۔ إِنَّا لِللّٰهِ وَإِنَّا الِنَّهِ دَا جَعُونَ۔

ك النور: ٢٨ ، ٢٧

(بيك العالم أيث

تیسری مصلحت: فواحش اور بے حیائی کا انسداد ہے کہ بلا اجازت کسی کے مكان مين داخل موجائے سے يہ احمال ہے كه غير محرم عورتوں ير نظريزے اور شطان دل بل کوئی مرض پیدا کردے اور ای مصلحت ے احکام استیذان کوقر آن ريم مي حدزنا حدقذف وغيره احكام كمصل لايا كياب-

و چھی مصلحت: انسان بعض اوقات اپنے گھر کی تنبائی میں کوئی ایسا کام کررہا ہوتا ہے جس پر دوسروں کو اطلاع کرتا مناسب تہیں سجھتا۔ اگر کوئی شخص بغیر اجازت ك كرين آجائے تو دہ جس چيز كوروسرول سے پوشيدہ ركھنا جا بتا تھا أس يرمطلع ہو جائے گا۔ کی کے بیشیدہ راز کوزیردی معلوم کرنے کی فکر بھی گناہ اور دوسرول کے لے موجب ایذا ہے۔ اجازت طلب کرنے کی چند صلحتیں تو خود آیات ندکورہ میں آئی ہیں اب مجومزید حکمتیں ذکر کی جائیں گا۔

• بہلی حکمت: ان آیات میں ﴿ إِنَّا يُهَا الَّذِيْنَ امْنُوا ﴾ عظاب كيا كيا جومردول کے لئے استعال ہوتا ہے مرعورتیں بھی اس علم میں داخل ہیں جیسا کہ عام الكام قرآني جس طرح مردول كو خاطب كرنے كے لئے آتے ہيں عورتين بھى أس میں شامل ہوتی ہیں بجر مخصوص مسائل کے جن کی خصوصیت مردوں کے ساتھ بیان كردى جاتى ہے۔ چنال چەسحابركرام كى خواتين كالبحى يېيى معمول تھا كەكسى كے گھر جامي لو يبل أن ع اجازت طلب كرير حضرت أمّ اياس وفوالف العظا فرماتي الله: الم چارعورتي اكثر حضرت صديقه عائش وَفَالْكَالْفَقَا كَ ياس جايا كرتى مس اور کھریں جانے سے پہلے اُن سے اجازت طلب کرتی تھیں جب وہ اجازت ديني تواندر جاتي تحيس سله

ووسرى حكمت:اس آيت كے عموم سے معلوم ہوا كمكى دوسر في فق كے كحريس جانے سے پہلے اجازت طلب كرنے كا حكم عام ب مردعورت محرم غير محرم

ك تفسير ابن كثير: ٢/٢٧٤، النور: ٢٧

اجازت طلب كرنے كى حكمتيں اورائم صلحين

🕡 پہلی مصلحت: حق تعالیٰ جل شانہ نے ہرانیان کو جواس کے رہنے کی جگہ عطا فرمائی خواہ ما لکانہ ہو یا کرابیہ وغیرہ پر بہرحال اُس کا گھر اُس کامسکن ہے اور مسکن كالسلى مقصد سكون وراحت بقرآن عزيز في جهال اين ال فيمتى نعمت كا ذكر فرمايا

ہاں میں بھی اس طرف اشارہ ہفرمایا: ﴿جَعَلَ لَكُمْ مِنْ اللهِ وَيُكُمْ سَكَنّا ﴾ لعنى الله نے تبہارے كھرول س تمہارے کئے سکون وراحت کا سامان دیا۔ اور سیسکون وراحت جب ہی باتی روسکتا ب كدانسان دوسر ي مح محض كى مداخلت كے بغيرائي گھر ميں اپني ضرورت كے مطابق آزادی ے کام اور آرام کر سکے۔اس کی آزادی میں خلل ڈالنا گھر کی اصل مصلحت کوفوت کرنا ہے جو بری ایذاء و تکلیف ہے۔ اسلام نے کسی کو بھی ناحق تكليف كبنيانا حرام قرار ديا ب- اجازت طلب كرف ك احكام من ايك يدى مصلحت لوگوں کی آ زادی میں خلل ڈالنے اور اُن کی ایذاء رسانی سے بچتا ہے جو ہر شریف انسان کاعقلی فریضه بھی ہے۔

O دوسری مصلحت: خودال مخض کی ہے جو کسی کی ملاقات کے لئے اس کے یاس گیا ہے کہ جب وہ اجازت لے کرشائنت انسان کی طرح ملے گا تو مخاطب بھی اس کی بات قدر ومنزلت سے سے گا اور اگر اس کی کوئی حاجت ہے تو اُس کے پورا كرنے كا داعيه أس كے دل ميں پيدا ہوگا۔ بخلاف اس كے كه وحشانه طرز سے كى محض ير بغيراس كى اجازت كمسلط موكيا تو مخاطب اس كوايك احيا مك آف والى مصيبت مجدكر وقتى طورير نالنے سے كام لے كا خير خواتى كا داعيد أكر مواجمي تو كزور ہوجائے گا اور اس کوایذاء سلم کا گناہ الگ ہوگا۔

SE STANKE

جي ريان تاكه ده مهيل كسي اليمي حالت بين نه ديكيس جوان كو پيندند جويه ا

یا دروہ میں اور اس صورت میں طلب اجازت کا واجب نہ ہونا اس معلوم ہوتا ہے کہ اور اس صورت میں طلب اجازت کا واجب نہ ہونا اس معلوم ہوتا ہے کہ ابن جریج نے حضرت عطاء در خِبَبُرُاللَّالُ تَعَالَیٰ ہے دریافت کیا کہ ایک شخص کو اپنی بوری سے پاس جانے کے وقت بھی استیزان ضروری ہے اُنہوں نے فرمایا کہ نہیں۔ ابن کیشر نے اس روایت کوفل کر کے فرمایا ہے کہ اس سے مراد یمی ہے کہ واجب نہیں لیکن مستحب اور اولی وہاں بھی ہے۔ ع

اجازت طلب كرنے كامسنون طريقه

آیت میں جو طریقہ اللایا گیا ہے وہ ہے الدَّقْتَى تَسْتَأْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلَى أَهْلِهَا ﴾ لين كسى كريس ال وقت تك داخل ند موجب تك دوكام ندكر لوا اول استیاس، اس کے فظی معنی طلب اُنس کے ہیں۔ مراداس سے جمہور مفسرین ك زدد يك استيزان ليني اجازت حاصل كرنا ب- استيزان كو بلفظ استيناس ذكر كرنے ميں اشارہ اس طرف ب كدوافل مونے سے يملے اجازت حاصل كرنے مل مخاطب مانوس ہوتا ہے اس کو وحشت نہیں ہوتی۔ دوسرا کام بیہ ہے کہ گھر دالوں کو ملام كروراس كامفهوم بعض حضرات مضرين في توبيليا كديهلي اجازت عاصل كرو اور جب گھر میں جاؤ تو سلام کرو۔ قرطبی نے ای کو افتیار کیا ہے کہ اس مفہوم کے التنبارے آیت میں کوئی تقدیم تاخیر تیں پہلے اجازت طلب کی جائے جب اجازت مل جائے اور کھر میں جائیں تو سلام کریں۔ اور ای کو حضرت ابوابوب انصاری وصلا الفائد المعنف كالمقتضى قرار ديا ب- اور علامه ماوردى وهميداللان تعالق ن اس من يتفصل كى ب: اگراجازت لينے سے يملے كر كے كسى آدى ير نظر ير جائے تو پہلے سلام کرے پھراجازت طلب کرے ورند پہلے اجازت لے اور جب گھر

ف تفسيرابن كثير: ٢/٥٧٥، النور: ٢٧ ت تفسيرابن كثير: ٢/٥٧٥، النور: ٢٧ سب کوشائل ہے۔عورت کی عورت کے پاس جائے یا مرد کسی مرد کے پاس، سب کو اجازت طلب کرنا واجب ہے ای طرح ایک فخص آگرا پی ماں اور بہن یا دوسری محرم عورتوں کے پاس جائے تو بھی اجازت طلب کرے۔

امام مالک وَجَعَبُهُ اللّهُ تَعَالَنَّ فَ موطاء مِن مرسلاً عطاء بن يبار وَجَعَبُهُ اللّهُ تَعَالَنَّ فَ موطاء مِن مرسلاً عطاء بن يبار وَجَعَبُهُ اللّهُ تَعَالَنَّ فَكَ اللّهُ وَاللّهِ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللل

اس مدیث سے بی جی ثابت ہوا کہ آیت قرآن بیل جو ﴿ غَیْرُ بَیُوْنِکُمْ ﴾ آیا ہے اس میں بیکونکم انسان تنہا خود ہی رہتا ہو۔ والدین، بین بھائی وغیرہ اس میں ندہوں۔

تیسری حکمت: جس گھریں صرف بنی ہوی رہتی ہواس میں وافل ہونے کے لئے اگر چداجازت طلب کرنا واجب نہیں گرمتحب اور سنت طریقہ یہ ہے کہ وہاں بھی اجلائ کے اندرنہ جائے بل کدوافل ہونے سے پہلے اپنے باوں کی آ ہٹ سے یا کھنکار سے کسی طرح پہلے خبر کر دے پھر وافل ہو۔ حضرت عبداللہ بن مسعود وَفِعُ اللّٰهِ اَلَٰ اَلْمَا اَلَٰ اَلْمَا اَلْمَا کَ اَوْجِهُ مِرْ مَدِ فَرِمَا آتِ مِن کم مِرْالله بن مسعود وَفِعُ اللّٰهِ اَلَٰ اَلْمَا اَلْمَا اَلْمَا اَلْمَا اَلْمَا اَلْمَا اَلْمَا اَلْمَا اِللّٰمَ اِللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰمِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ ال

ا موطا امام مالك، باب في الاستيذان: ص٥٢٥

(بين العيل اون

میں جائے تو سلام کرے مگر عام روایات حدیث سے جوطریقہ مسنون معلوم ہوتا ہے وہ یہی ہے کہ پہلے باہر سے سلام کرے اکسید کھ عکید تکھڑاس کے بعد اپنانام لے کر کیے کہ فلال مخض لمنا جا ہتا ہے۔

امام بخاری نے الا دب المفرو میں حضرت ابو ہریرہ رکھ کالگائے ہے روایت کیا ہے کہ اُنہوں نے قرمایا: جو شخص سلام سے پہلے استیزان کرے اس کو اجازت نہ دو (کیول کد اُس نے مسئون طریقہ کو چھوڑ دیا)۔ ف

ابوداؤد کی حدیث میں ہے: بنی عامر کے ایک شخص نے رسول اللہ ﷺ اللہ اللہ ﷺ اس طرح استیزان کیا کہ باہر ہے کہا "أَلْبُ" کیا میں گھس جاؤں۔ آپ نے اپنے خادم سے فرمایا کہ بیشن استیزان کا طریقہ نہیں جانا باہر جا کراس کو طریقہ سکتا کہ یو خادم سے فرمایا کہ بیشن کیا میں داخل ہو سکتا سکھلاؤ کہ یوں کیے "السَّلاَمُ عَلَیْکُمْ أَأَدْ حُلُ" یعنی کیا میں داخل ہو سکتا ہوں۔ ابھی بی خادم باہر نہیں گیا تھا کہ اُس نے خود صنور ﷺ کی کمات من لئے موں۔ ابھی بی خادم باہر نہیں گیا تھا کہ اُس نے خود صنور ﷺ کی مانت من لئے اور اس طرح کہا "السَّلاَمُ عَلَیْکُمْ أَأَدْ خُلُّ . " تو آپ نے اندر آنے کی جازت وے دی۔ یہ دی۔ یہ دی۔ یہ دی۔ دی۔ یہ دی۔ یہ دی۔ یہ دی۔ دی۔ یہ دی۔ دی۔ یہ دی

بیکی فی شعب الایمان می صفرت جایر رَفِقَاللَّهُ النَّفَ وروایت کی ب: رسول الله مَلِلِ اللَّهُ مَلِلِ اللَّهِ مَلْ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللللِّهُ اللللِّهُ اللَّهُ اللللِّهُ اللللْمُواللَّالِمُ اللللِلْمُلِيَّةُ الللللِّهُ الللللِّلِي الللللِي الللللِّهُ الللللْمُولِمُ اللل

کی پہلے سلام کرنا چاہے۔ ﴿ اُس نے "اَدُخُلُ" کے بجائے "اَلَجُ" کا لفظ استعمال کیا تھا۔ بینامناسب تھا کیوں کہ "الکج، وکُوجٌ" ہے مشتق ہے جس کے معنی

محمی بیل بھر جا کہ آ بت قرآن میں بہتر یب الفاظ کے خلاف تھا۔ بہر حال ان روایات

یہ معلوم ہوا کہ آ بت قرآن میں جوسلام کرنے کا ارشاد ہے۔ بیسلام اجازت
طلب کرنا ہے جو اجازت حاصل کرنے کے لئے باہر سے کیا جاتا ہے تا کہ اندر جو
مخص ہے وہ متوجہ ہو جائے اور جو الفاظ اجازت طلب کرنے کے لئے کہ گا وہ من
لے گھر میں واخل ہونے کے وقت حسب معمول دوبارہ سلام کرے۔ کسی کے گھر
میں واخل ہونے سے قبل اجازت لینے کی حکمتیں اور صلحتیں بیان ہوچکی ہیں۔ اب
مزید بھی فوائد ذکر کئے جائیں گے جس میں اجازت کے فائدے، آ داب اوراس سے
متعلق تنہیہات بھی شامل ہیں۔

قَادِلُكُولَةُ مَنْ الْمِارَت لِية وقت الناتام بهي ظاهر كرد:

پہلے سلام اور پھر وافل ہونے کی اجازت لینے کا جو بیان اوپر احادیث سے طابت ہوا آئی میں بہتر یہ ہے کہ اجازت لینے والاخود اپنا نام لے کر اجازت طلب کرے جیسا کہ معزت فاروق اعظم کا عمل تھا کہ انہوں نے آل حضرت فیلا فیلی المینی کے دروازہ پر آکر بید الفاظ کے۔ "السّسلام عُلَیْكُ یَا رَسُولَ اللّٰهِ السّسلام کے بعد کہا کہ کیا عمر وافل ہوسکتا ہے۔ ا

می مسلم میں ہے کہ حضرت ابوموی اشعری رضی النظافی خطرت عمر رضی اشعری رضی النظافی خطرت عمر رضی النظافی کے باس کے تو اجازت طلب کرنے کے لئے یہ الفاظ فرمائے۔
"السَّلاَمُ عَلَیْکُمْ طَذَا اَبُوْ مُوسلی السَّلاَمُ عَلَیْکُمْ طَذَا الْاَشْعَوی" کے
"السَّلاَمُ عَلَیْکُمْ طَذَا اَبُوْ مُوسلی السَّلاَمُ عَلَیْکُمْ طَذَا الْاَشْعَوی" کے
اس می جمی پہلے اپنا نام ابوموی بتلایا پھر مزید وضاحت کے لئے اشعری کا ذکر ایس میں جمی جماحت کے لئے اشعری کا ذکر کیا۔ اور بیاس لئے کہ جب تک آدی اجازت لینے والے کو پہلے نہیں تو جواب کیا۔ اور بیاس لئے کہ جب تک آدی اجازت لینے والے کو پہلے نہیں تو جواب وسینے میں تشویش (زمنی تکلیف) ہوگی۔ اس تشویش سے بھی مخاطب کو بیانا جا ہے۔

ك ابوداؤد، كتاب الأدب: ٢٥١/٢

ت مسلم، باب الإستيدان: ٢١١/٢

له روح المعانى: ١٣٤/٠ النور: ٢٧ الادب المفرد: ص ٢١٧ ، وقعر ١٠٨٣

ع ابودارد، باب في الإستيدان: ٣٤٧/٢

ت فيض القديو: ١٩٩٨، رقم ٩٧١٨

روایات ندکورہ سے بیجی ثابت ہوا کہ اجازت طلب کرنے کا برطریقہ بھی جازے کدوروازہ پروستک دے دی جائے بشرطیکہ ساتھ ہی اپنا نام بھی ظاہر کرے بناوياجائ كالال مخص لمناحيات --

فَالْكُولَةُ فَيْلِينَ ﴿ وَرَمِيانَ الْدَارُ مِنْ وَسَكَ وَعِ:

لين أكروستك بوتو اتني زورے ندوے كدجس سے سننے والا كھيرا أشجے بل ك متوسط الداز ، و بس الدرتك آواز تو چلى جائد ككن كوئى تختى ظاہر ند ہو۔جو اوگ رسول اللہ طافق علی کے دروازہ پر دستک دیے تھے تو ان کی عادت بہتی كماخنون عددوازه يردستك دية تاكه صنور يتفاقين كوتكلف ندموك

جو مخص استیدان کے مقصد کو سجھ لے کہ اصل اُس سے استیال سے لیعنی مخاطب کو مانوس کر کے اجازت حاصل کرنا وہ خود بخو د ان سب چیزوں کی رعایت کو ضروری سمجے گا جن چزوں سے مخاطب کو تکلیف ہوائی سے بیجے گا۔ اپنا نام ظاہر كے اور وستك وے تو متوسط اندازے دے بياب چزيں أس بيل شامل ہيں۔ فَانِكُ لاَ مَنْ اللَّهِ الْمَارْت ك لئے جديد طريقوں كا استعال:

آج كل أكثر لوكوں كى تو اجازت طلب كرنے كى طرف كوئى توجه بى باتى تہيں ربی جوسری ترک واجب کا گناہ ہے اور جولوگ استیزان کرنا جا ہیں اورمسنون طریقہ کے مطابق باہرے پہلے سلام کریں پھراپنا نام بتلا کر اجازت لیں، اُن کے لے اس زمانے میں بعض دخواریاں ہوں بھی پیش آئی جی کرعموماً خاطب جس سے اجازت لیتا ہے وہ دروازہ سے دُور ہے، وہاں تک سلام کی آ واز اور اجازت لینے کے الفاظ كالبخينا مشكل باس لئے يهجو لينا جائے كدامل داجب بيربات ب كد بغير اجازت کے گھریس وافل ندہو۔

اجازت لینے کے طریقے برزمانے اور ہرملک میں مختلف ہو سکتے ہیں، اُن میں

ك قرطبى: 1777، النور: ٢٧

اس معاملہ بین سب سے براوہ طریقہ ہے جوبعض لوگ کرتے ہیں کہ باہرے اندر واقل ہونے کی اجازت مائلی اپنا نام طاہر نہیں کیا۔ اندر سے مخاطب نے پوچھا كون صاحب بين توجواب مين بدكهدديا كدمين بول، كيون كديد خاطب كى بات كا جواب میں، جس نے اوّل آواز سے نہیں پہیانا وہ میں کے لفظ سے کیا پہیانے گا۔ خطیب بغدادی نے اپنی جامع میں علی بن عاصم واسطی وَخِمَهُ اللَّادُ تَعَالَتُ سے

لقل كيا ب كه وه بصره محيّة تو حضرت مغيره ابن شعبه رَضِّوَاللَّهُ بَعَالُمَةٌ فَعَالِمَ عَنْهُ كَلَ ملاقات كو حاضر ہوئے۔ دروازہ پروستک دی، حضرت مغیرہ رَفِعَاللَا اِنْفَافِ فَاللَّا اِنْفَافِ فَاللَّا اِنْفَافِ فَاللَّا اِنْفَافِ الْمَالْدِ عَلَيْهِ فِي اللهِ كون بي جو جواب ديا"اتّا" (ليني مين جول)

تو حضرت مغیرہ نے فرمایا کہ میرے دوستوں میں تو کوئی بھی ایسانہیں جس کا نام "أنَّا" مو كير بابرتشراف لائ اورأن كوحديث سالى: أيك روز مغرت جاير بن عبدالله وَخُلْفَالِمَقَالِينَ أَل حفرت يَلْقَلْقَتِكَ كَي خدمت مِن حاضر بوع أور اجازت لینے کے لئے دروازہ پروستک دی۔ آل حفرت میلان فیا نے اندرے يوجها كون صاحب بين؟ تو جابر رَفِعَالِيَةَ مِنَا الْفِينَةُ فِي يَبِي افظ كبدويا "أَفَا" لَعِني مِن مول-آپ نے بطور زجر و عبید کے فرمایا "آنا آنا" لیعنی "آنا آنا" کہتے ہے کیا حاصل ےاس سے کوئی پیچانانیں جاتا۔ م

فَالْكُونَةُ مَنْ بِينَ ﴿: وسَلَ كَ بعد خاموتى خلاف اوب ع:

اس سے بھی زیادہ برا پیطریقہ ہے جو آج کل بہت سے لکھے پڑھے لوگ بھی استعال كرتے جي كدوروازه يروستك دى جب اندرے يو چيا كيا كدكون صاحب ہیں تو خاموش کھڑے ہیں کوئی جواب ہی نہیں دیتے۔ بیخاطب کوتشویش میں والے اور ایذاء بیجانے کا بدرین طریقہ ہے جس سے استیذان کی مصلحت ہی فوت ہوجاتی

ك بخارى، كتاب الاستيدان: ٩٢٣/٢

جی کے اسلام نے حسن معاشرت کے آ داب سکھانے اور سب کوایڈا و تکلیف خریجے ہے ہے ہے کا دوطرفہ معتدل نظام قائم فرمایا ہے اس آیت میں جس طرح آنے والے کو بید ہمایت دی گئی ہے کہ اگر استیڈان کرنے پر آپ کو اجازت نہ ملے اور کہا جائے کہ اس وقت لوث جاؤ تو کہنے والے کو معذور مجھوا ورخوش دلی کے ساتھ والیس اوٹ جاؤ برانہ مانو۔

ای طرح ایک حدیث میں اس کا دومرا رُخ اس طرح آیا ہے: رسول اللہ علیہ اس طرح آیا ہے: رسول اللہ علیہ اللہ علیہ اس کا دومرا رُخ اس طرح آیا ہے: رسول اللہ علیہ اس کا بھی آپ ہوتی ہے لیاں کا بیوس ہے کہ اس کا بھی آپ پر حق ہے یعنی اس کا بیوس ہے کہ اس کو اپنے پاس جاء یا بابر آکر اُس سے ملو، اس کا اکرام کرو، بات سنو بلا کی شدید مجودی اور عذر کے ملاقات سے انکار نذکرو۔

قَالِكَ لَا فَيْنِ ﴿ : انظار ك بعد جواب ندآ ع تو لوث جائے:

اگر کسی کے دروازے پر جاکراجازت طلب کی اوراندر ہے کوئی جواب نہ آیا تو سنت پر ہے کہ دوبارہ پھر اجازت طلب کرے اور پھر بھی جواب نہ آئے تو تیسری مرتبہ کرے۔ اگر تیسری مرتبہ بھی جواب نہ آئے تو اس کا تھم وہی ہے جو اِڈجِعُوا کا ہے۔ لیمنی لوٹ جانا جا ہے۔

کیوں کہ تین مرتبہ کئے سے تقریباً بیاتو متعین ہوجاتا ہے کہ آ وازی کی مگریا تو وہ فض الی حالت میں ہے کہ جواب نہیں دے سکتا مثلاً نماز پڑھ رہا ہے یا بیت الحکاء میں ہے یا خسل کر رہا ہے اور یا مجراس کواس وقت ملنا منظور نہیں وونوں حالتوں میں وہیں جے رہنا اور مسلسل دستک وغیرہ دیتے رہنا بھی موجب ایذا ہے جس سے بیخا واجب ہے، اور اجازت یا تکنے کا اصل مقصد ہی ایذا ہے بچتا ہے۔

حضرت الوسعيد خدرى رَفِي الفَاقِقَالِي الله على روايت ب كدايك مرتبدرسول الله

العليف ١٠٥/٢ باب حق الطبيف ٢/٥٠٨

ے ایک طریقہ دروازہ پر دستک دینے کا تو خود روایات حدیث سے تابت ہے ای طرح جو لوگ اپنے دروازوں پر مختی لگا لیتے ہیں اُس تحفیٰ کا بجا دینا بھی واجب استیزان کی اوائیگی کے لئے کافی ہے۔ بشرطیکہ تھنی کے بعد اپنا نام بھی ایسی آ واز سے ظاہر کردے جس کو تناطب من لے۔

اس کے علاوہ اور کوئی طریقہ جو کسی جگہ رائے ہواس کا استعمال کر لینا ہمی جائز ہوائی کل جو شناختی کارڈ کا رواج پورپ سے چلا ہے بیر سم اگر چدائل پورپ نے جاری کی مگر اجازت لینے کا مقصد اس میں بہت اچھی طرح پورا ہو جاتا ہے کہ اجازت دینے والے کا پورا نام و پندا پی جگہ بیٹے ہوئے بغیر اجازت دینے والے کا پورا نام و پندا پی جگہ بیٹے ہوئے بغیر کسی تکلیف کے معلوم ہوجاتا ہے اس لئے اس کو اختیار کر لینے میں کوئی مضا گفتہ بندی

فَالْأُنَّ لَا مَلْهِ بِهِ فَالْ إِنَّ فَاتَ كَا اصرار نه كري:

اگرایک محف نے دومرے محض سے اندرآنے کی اجازت ماتی اورائی نے جواب میں کہدویا کہ اس وقت ملاقات نہیں ہوسکتی لوٹ جائے تو اس سے برانہیں ماننا چاہئے کیوں کہ ہرفض کے حالات اورائی کے مقتصیات مختلف ہوتے ہیں بعض وقت وہ مجبور ہوتا ہے باہر نہیں آسکتا شآپ کو اندر بلاسکتا ہے تو ایسی حالت میں اُس کے عذر کو تبول کرنا چاہئے۔ آیت فذکورہ میں یہی ہدایت ہے ﴿ وَانْ فِیْلَ لَکُمُ مُولِ وَقَعَ وَانْ وَقِیلَ لَکُمُ مُولِ وَقَعَ وَقَعَ وَانْ وَقِیلَ لَکُمُ مُولِ وَقَعَ وَانْ وَقِیلَ اِنْ وَقَعَ وَقَعَ وَانْ وَقِیلَ کُمُ مُولِ وَقَعَ وَانْ وَقِیلَ کُمُ مُولِ ہِی ہوں تو جاکیں تو آپ کے دوہ فرماتے تھے لوٹ جاکیں تو آپ کو خوش دلی سے لوٹ جانا چاہئے اس سے برا ماننا یا وہیں جم کر بیٹ جانا دونوں چیز ہی دوست نہیں بعض حضرات ملف سے منقول ہے کہ وہ فرماتے تھے جانا دونوں چیز ہی دوست نہیں بعض حضرات ملف سے منقول ہے کہ وہ فرماتے تھے کہ جل میں اس علم قرآن کی تھیل کا تواب کہ کہ کے پاس جا کر اندرآنے کی اجازت طلب کروں اور دہ جھے یہ جواب دے کہ لوٹ جائا تو میں اس علم قرآن کی تھیل کا تواب مانسل کروں اور دہ جھے یہ جواب دے کہ جھے بھی بیاتھت نصیب نہ ہوئی۔

(بيك والعيد المرادث

اس سے بیستلہ ثابت ہوگیا کہ جمن مرتبداجازت طلب کرنے کے بعد جواب نہ آئے تو سنت سے کداوٹ جائے وہیں جم کر بیٹے جانا خلاف سنت اور مخاطب کے لے تکلف کاباعث ہے کدائ محفی کو باہر لگنے پر مجور کرنا ہے۔

محم اس وقت ہے جب کہ سلام یا وستک وغیرہ کے ذرایعد اجازت حاصل ك في كوشش تين مرتبه كرلى جوكداب وبال جم كر بينه جانا موجب إيذا ب-قَائِلَةُ لَا فَيْنِ عَالَم يَا بِرُدِكَ كَ ورواز ع ير بغير وستك وي ارتظار كرنا:

اگر کوئی مخص کسی عالم یا بزرگ کے دروازہ پر بغیر اجازت مائے اور بغیر ان کو اطلاع دیے ہوئے انتظار میں بیشارے کہ جب اپن فرصت کے مطابق بابرتشریف النيس كونو ملاقات موجائ كى بدآ داب كے خلاف نيس بل كديس ادب ب،خود قرآن كريم في الوكول كويد بدايت دى ب كدرسول الله والتا الله المنظمة تو اُن کوآ واز دے کر بااتا ادب کے خلاف ہے بل کداوگوں کو جائے کدا تظار کریں جس وقت آپ خود اپنی ضرورت کے مطابق باہر تشریف لأمیں أس وقت ملاقات

﴿ وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّى تَخُرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴾ ال تَتَحَجَمَدُ: "أكريدلوك يبال تك مبركرت كدآب (خود) ان ك ياس آجاتے تو بی ان کے لئے بہتر ہوتا۔"

معرت ابن عباس وفع الفي تعمل الفي المراح ين

میں بعض اوقات کی انصاری سحانی کے دروازہ پر بورے دو پہر انتظار کرتا رہتا محاكد جب وہ باہر تشریف لاكين تو أن سے سى حديث كى تحقیق كرون اور اكريس أن ے ملنے کے لئے اجازت مانگنا تو وہ ضرور مجھے اجازت دے دیتے مکر میں اس کو

ك العجرات

وَ اللَّهُ اللَّاللَّ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّا تَتَوْجَمَعَنَدُ "جب كونى آدى تين مرتبه استيذان (اجازت طلب) كرے اور كوئى جواب ندآ ع تواس كولوث جانا جائے۔"

منداحد مين حفزت الس رُفِخَالْفَالْتَقَالْفَيْهُ عَدوايت ب: ايك مرتبدرسول الله طَلِقَ عَلِي الله عَدى عباده وَفَوَلا إِنْفَالِكَ كَمَان يرتشريف لي كن اور سنت كے مطابق باہرے استيدان كے لئے سلام كيا السَّالام عَلَيْكُم معرت سعد بن عبادہ نے سلام کا جواب تو دیا مگر آ ہت کد حضور ندسین، آپ نے دوبارہ اور بجرسه باره سلام كيا-

حضرت سعد وَخَوَلْقَالِتُعَالِينَا عن اور آبت جواب وية رب عن مرتبدايا كرنے كے بعد آپ اوٹ كئے جب معد رَجُولَكُ اِتَّخَالَ اَنْ فَا د يكما كداب آ وار فيل آری او گھرے نکل کر چھے دوڑے اور بدعذر پیش کیا کہ یا رسول اللہ میں نے ہر مرتبدآب كى آوازى اور جواب بھى ديا مگرآ ستدويا تاكدزبان مبارك سے زيادہ سے زیادہ سلام کے الفاظ میرے بارے میں تکلیل وہ میرے کئے موجب برکت ہوگا (آب نے اُن کوطر ایقد سنت بتلا دیا کہ تمن مرتبہ جواب ندآ نے پراوٹ جانا جاہئے) ال ك بعد حفرت معدآ ل حفرت والفي الله كواية كرساته ل ك أنبول نے کچومہمانی کی،آپ نے اس کو تبول فرمایا۔

حضرت سعد رَضَوَاللَّهُ النَّفِيُّ كاليمل غلب عشق ومحبت كا الرُّ تَعَا كداس وقت ذبين اس طرف ند كيا كدمردار دوعالم دروازے يرتشريف فرما بين مجھے فورا جا كران کے قدم چوم لینے حاجئیں بل کہ ذہن اس طرف متوجہ ہوگیا کہ آپ کی زبان مبارک ے اَلسَّلامُ عَلَيْكُمْ جَنْتَى مرتبازياده فَكَ كَاميرے لِيّ زياده مفيد بوگا- بهرحال

ك بخارى، باب التسليم: ٢٣/١،

ك مسند احمد: ١٢٨/٢، رقم الحديث: ١١٩٩٨

تَرْجَمَى "اے ایمان والوا کوئی جماعت دوسری جماعت ے مخرابن ندكرے ممكن ب كديدال سے بہتر ہواور نہ عورتيں عورتوں سے ممكن ے کہ بیان سے بہتر ہول، اور آپس میں ایک دومرے کوعیب ندلگاؤ اور ند کسی کو برے لقب دو، ایمان کے بعد فسق برا نام ہے۔ اور جولوگ توبه ندكرين وبي ظالم لوك بين-"

ندكورة آيت من اشخاص وافراد كے باہمى حقوق وآ داب معاشرت كا ذكر ب ال يس تين چيزول كى ممانعت فرمائي كئى ہے۔

🛈 محمی مسلمان کے ساتھ شنخرواستہزاء کرنا۔

P سی رطعة زنی کرنا۔

P کی کوایے لقب سے ذکر کرنا جس سے اس کی توہین ہوتی ہویا وہ أسے برا

 کیلی چیزجس کی ممانعت اس آیت میں کی گئی ہے وہ سخریا شخر (کس کا نداق أزانا) ب- امام قرطبي نے فرمایا كمكى فخص كى تحقير والوبين كے لئے أس كے كى عیب وای طرح ذکر کرنا جس سے نوگ بینے لکیس اس کو سخرید جسخواور استہزاء کہا جاتا السيرام جيے زبان سے موتا ہے ايے بى باتھ ياؤں وغيرہ سے اس كى اقل أتارف يااشاره كرف ع بحى موتا باوراس طرح بحى كداس كا كام س كريطور محقیر کے بنی اُڑائی جائے اور بعض حضرات نے فرمایا کہ سخریہ و مسنو کی محض کے سلف اس کا ایی طرح ذکر کرنا ہے کد اُس سے لوگ بنس پڑیں اور بیاب چڑیں قرآن كريم كى وضاحت كى وجد عدام ين على

ك العجوات: ١١

ت فرطبي: ١١٠٢١٨ الحجوات: ١١

خلاف ادب مجمتا تقاس لئے انظار کی مشقت گوارا کرتا۔

تکلیف سے بچاؤ کا تیسراراستہ

كى كانداق أزان اور برے القابات دينے سے بيخ:

برانسان اسے بارے میں بیسوچتا ہے کہ کوئی بھی شخص اُسے برے لقب سے ند پکارے اور ند مذاق اُڑائے ، کیول کرانیا کرنے پراے بہت تکلیف ہوتی ہواور اس عمل کووہ اپنی تو ہیں سمجھتا ہے۔ بیالک فطری بات ہے۔ کیکن جب سیخص کسی ہے مخاطب ہوتا ہے تو اُسے بدیا تیں یاد مبیں رہتیں، ان باتوں کو وہ مجبول جاتا ہے کیوں ك برمخص صرف اين تكليف كومحسوس كرسكناب دوسرك كي تكليف كا اندازه نيس لكا

اگر ہر مخص ایک دوسرے کی تکلیف کومحسوں کرے، جو باعیں اپنے لئے پسند كرتا ب وه دوسرول كے لئے بھى پيندكرے اور جن باتول بيس اپني تو بين سجحتا ب ان میں دوسرول کی بھی تو ہین سمجھے تو اس سے ایک پاک صاف، صحت منداور ہندرد معاشرہ تھیل دیا جا سے گا۔ قرآن کریم میں اللہ تعالی نے ایک دوسرے کا غاق أرُان اور برے القابات لگانے سے منع فرمایا ہے۔

الله تعالى كا ارشاد ب:

﴿ لِنَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ امَّنُوا لَا يَسْخَرُ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسْى أَنْ يُّكُونُواْ خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآةٌ مِّنْ نِسَآءٍ عَسْى أَنْ يَكُنَّ خَيْرًا مِنْهُنَّ * وَلَا تَلْمِزُوْآ ٱنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْأَلْقَابِ * بِنْسَ الإسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيْمَانِ * وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَأُوْلَٰبِكَ هُمُ

عُه سُنن الدارمي، ياب الرحلة في طلب العلم: ١٥٧/١، معارف القوآن: ٣٨٦/٦ تا ٣٩١

مسعود وَفِعَالِفَائِنَفَالاَعْنَافِی فِر مایا که بین اگر کسی کتے کے ساتھ بھی استہزاء کروں تو جھے ور ہوتا ہے کہ بین خود کمیانہ بنا دیا جاؤں۔ ملک

ورمری چیز جس می ممانعت اس آیت میں کی گئی ہے۔ وو لَمُونے المزے معنی کسی میں میں ہے۔ وو لَمُونے المزے معنی کسی میں عیب نوط عندزنی کرنے کے جی آیت میں ارشاد فر بایا ﴿ لَا تَلْمِونُو اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ مَا لَهُ عَلَيْهِ اللّٰهِ اللّٰهُ ا

دونوں جگداہے آپ کوئل کرنے یا اپنے عیب نکالنے سے مرادیہ ہے کہ تم آپک میں ایک دومرے کوئل نہ کرو، ایک دومرے کوطعنہ نہ دو۔ اس عنوان سے تعییر

طه قرطبي: ١١/٨ الحجرات: ١١

ع مستد احمد: ١٠٥٧٦ ، وقع الحديث: ١٠٥٧٦

ع قوطبي: ١١٠٤/٨ العجوات: ١١

النسآء: 14

سخرے کی ممانعت کا قرآن کریم نے اتنا اہتمام فرمایا کہ اس میں مردول کو الگ مخطب فرمایا کہ اس میں مردول کو الگ مخاطب فرمایا ، کیول کہ اصل میں سے لفظ مردوں ہی کے لئے وضع کیا گیا ہے۔ اگر چہ مجازاً وتوسعاً عورتوں کو اکثر شامل ہو جاتا ہے اور قرآن کریم نے عموماً لفظ قوم مردوں عورتوں دونوں ہی کے لئے استعمال کیا ہے گریماں لفظ قوم فروں کے لئے استعمال کیا ہے گریماں لفظ قوم فروں کے لئے استعمال خرمایا۔

اس کے بالمقابل عورتوں کا ذکر لفظ نساء سے فرمایا اور دونوں میں سے ہمایت فرمائی کہ جومرد کسی دوسرے مرد کے ساتھ استہزاء وتمسخر (ہنمی، نماق) کرتا ہے اس کو کیا خبر ہے کہ شاید وہ اللہ کے نزدیک استہزاء کرنے والے ہے بہتر ہو، ای طرح جو عورت کسی دوسری عورت کے ساتھ استہزاء تمسخر کا معاملہ کرتی ہے اس کو کیا خبر ہے شاید وہی اللہ کے نزدیک اس سے بہتر ہو۔

قرآن میں مردول کا مردول کے ساتھ اور عورتوں کا عورتوں کے ساتھ استہزاء
کرنے اور اس کی حرمت کا ذکر فرمایا حالال کہ کوئی مرد کسی عورت کے ساتھ یا کوئی
عورت کسی مرد کے ساتھ استہزاء کرے تو وہ بھی اس حرمت میں داخل ہے مگر اس کا
ذکر نہ کرنے سے اشارہ اس طرف ہے کہ عورتوں اور مردوں کا اختلاط ہی شرعاً ممنون اور نہ موم ہے جب اختلاط نہیں تو تمسخر کا تحقق ہی نہیں ہوگا۔

حاصل آیت کابیہ ہے کہ اگر کسی شخص کے بدن یا صورت یا قد و قامت وغیرہ میں کوئی عیب نظر آئے تو نسی کو اس پر جننے یا استہزاء کرنے کی جرائت نہیں کرنی جاہئے کیوں کہ اے معلوم نہیں کہ شاید وہ اپنے صدق و اخلاص کے سبب اللہ کے نزویک اس سے بہتر اور افضل ہو۔

اس آیت کوئن کرسلف صالحین کا حال میہ ہوگیا تھا کہ عمرو بن شرحیل نے فرمایا: میں اگر کسی شخص کو بکری کے بختنوں سے مندلگا کر دودھ پینے دیکھوں اور اس پر جھے بنسی آ جائے تو میں ڈرتا ہوں کہ بیں میں بھی ایسا ہی نہ ہو جاؤں۔ حضرت عبداللہ بن

کیوں کہ اکثر تو ایہا ہوئی جاتا ہے کہ ایک نے دوسرے کومل کیا دوسرے کے حمایتی لوگوں نے اس کوقل کر دیا، اور اگر سے بھی ند ہوتو اصل بات سے ب کے مسلمان سب بھائی بھائی ہیں اپنے بھائی کو آل کرنا کو یا خود اپنے آپ کو آل کرنا اور بے دست و یا بنانا ہے کی معنی یہاں ﴿ لَا تَلْمِوْوْا الْفُسَكُمْ ﴾ میں ہیں كم جودوروں ك عیب نکالواورطعند دوتو یاد رکھو کہ عیب ہے کوئی انسان عادۃ خالی نہیں ہوتا،تم اس کے عيب نكالو كاتو وه تمبارے عيب فكالے كا جيها كه بعض علاء نے فرمايا: "وَفِيلْكَ عُيُوْبٌ وَلِلنَّاسِ أَغْيُنْ " يَعِيْمُ مِن بِهِي يَجِدِ عِيوب بِن اوراوكول كي آتكسين بين جو اُن کو دیکھتی ہیں تم کسی کے عیب نکالو کے اور طعنہ زنی کرو کے تو وہ تم پر یہی عمل كريس كاور بالفرض اكراس في صبر بھي كيا توبات وہي ہے كدائي الك بحائى كى بدنای اور تذکیل پرغور کریں تو اپنی ہی تذکیل وتحقیر ہے۔

علاء نے فرمایا ہے: انسان کی سعادت اور خوش تعیبی اس میں ہے کہ اسے عیوب پر نظر رکھے اُن کی اصلاح کی فکر میں نگا رہے اور جو اپیا کرے گا اس کو دوسرول کے عیب نکالنے اور بیان کرنے کی فرصت بی نہیں ملے گی۔ ہندوستان کے آخرى مسلمان بادشاه ظفرنے خوب فرمایا ہے

نہ تھی حال کی جب ہمیں اپنی خبر، رہے دیکھتے لوگوں کے عیب وہنر یرسی اینی برائیوں پر جو نظر، تو جہان میں کوئی برا نہ رہا 😙 تیسری چیزجس کی آیت میں ممانعت کی گئی ہے وہ کسی دوسرے کو ہرے لقب ے بکارنا ہے، جس سے وہ ناراض ہوتا ہو۔ جیسے کسی کولنگڑا، لوٹا، یا اندھا، کا نا کہا کہ يكارنا ياايس نام كمى كاذكركرنا جواس كى تحقيرك لئے استعال كيا جاتا ہويہ

ك قرطبي: ١٢٠٤/٨ الحجوات: ١١

£15.181.55 رے اقب میں شامل ہیں۔ حضرت ابوجیرہ انساری وَفَوَالْلَائِفَالِفَا فَالْفَائِفَا فَعَالِمَا فَا فَرِمالاً: بيد آے مارے بارے میں نازل ہوئی ہے کول کہ جب رسول اللہ علاق المديد من تشریف لائے تو ہم میں اکثر آدی ایسے تتے جن کے دویا تمن نام مشہور تتے اور ان میں _ بعض نام ایسے تھے جو اوگول نے اس کو عار دلانے اور تحقیر و تو ہین کے لے مشہور کر دیئے تھے۔ آپ شیفتان کی استعادم نہ تھا بعض اوقات وی برا نام المرتب المنظامة ال كوخطاب كرت تو صحاب عرض كرت كديا رمول الله وواس نام ے ناراش ہوتا ہے اُس پر بیآ یت نازل ہوئی۔

حضرت ابن عباس وفع الفائقة في فرمايا كدا يت من " تنابر بالالقاب" ے مرادیہ ہے کہ می شخص نے کوئی گناہ یا براعمل کیا ہواور پھراس سے تائب ہوگیا مواس کے بعداس کوأس برے عمل کے نام سے بیارنا، مثلاً چور، زانی یا شرابی وغیرہ۔ جس نے چوری، زنا، شراب سے توبیر کی ہواس کو اس بچھلے مل سے عار دلانا اور تحقیر ایے گناہ پرعار دلائے جس سے اُس نے توبر کرلی ہے تو اللہ نے اپنے ذمہ لے لیا ے کہ اس کوای گناہ میں جٹلا کر کے دُنیا و آخرت میں رُسوا کرے گا۔ ^{لا}

يجيان كى غرض سے بعض القابات سے بكارنا جائز ہے:

بعض لوگول كے ايسے نام مشہور ہوجاتے ہيں جو في نفسہ برے ہيں مكر وہ بغير أس لفظ كے پچانا بى نيى جاتا تو اس كواس نام سے ذكركرنے كى اجازت پرعلاء كا القاق ببرطيكه ذكركرف والعاكا قصداس عظيرو تذليل كاند بوجي بعض محران ك نام كم ساته اعرج يا احدب مشهور ب اورخود رسول الله يطلق عليها في ایک محانی کوجس کے ہاتھ نبتا زیادہ طویل تھے ذوالیدین کے نام سے تعبیر فرمایا

ك قرطبي: ٢٣٦/٨ الحجرات: ١١

تعالى كا ارشاد ب:

﴿ يُنَابُّهَا الَّذِيْنَ امْنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيْرًا مِّنَ الظُّنِّ لِ إِنَّ يَعُضَ الظَّنِّ اثْمُرْ وَّلَا تَجَسُّوا وَلَا يَغْتَبْ بِّعْضُكُمْ بَعْضًا ۖ أَيُحِبُّ ٱحَّدُ كُمْ اَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ الجِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهُ الله تواب الرَّحِيْمُ ١٠٠٠

تَتَرْجَمَدُ: "اے ایمان والو بہت بدگانیوں سے بچو، ایقین مانو کہ بعض بدر اور از نشولا کرو۔ اور نیم میں سے کوئی کسی کی غیبت كرے كياتم ميں ےكوئى بھى است مرده بعائى كا كوشت كھانا يبندكرتا ے؟ تم كوال ع كفن آئے كى، اور اللہ ع ورتے رہو، بے شك اللہ توبة قبول كرف والامبريان ٢-"

ندكورہ آيت ميں الله تعالى فے تين چزيں جن ے دوسرے انسان كو تكليف ہوتی ہے حرام فرمائی ہیں۔

ال ظن يعنى بدلكاني كرنا_

P تجس يعني كسي پيشده عيب كاسراغ لكانا_

🕏 فیبت یعنی کسی غیر حاضر آدی کے متعلق کوئی ایسی بات کہنا جس کواگر وہ سنتا تو ال كونا كوار موتى_

O حرمت سوءطن: ظن ع معنى كمانِ غالب ك بين، ال ع متعلق قرآن كريم نے اوّل تو يدارشاد فرمايا: "بهت على انون سے بچا كرو" مجرأس كى وجديد يان فرمائي: " بعض كمان كناه موت بين ، جس عمعلوم مواكه بركمان كناه نبيس موتا توبيارشاد سفنے والوں پراس کی تحقیق واجب ہوگئی کدکون سے مگان گناہ ہیں تا کہ أن سے بھیں اور جب تک سمی مگان كا جائز ہونا معلوم ند ہو جائے اس كے پاس ند

حضرت عبدالله بن مبارك ويختبه النفائق فال عدديات كيا كيا كداسانيد حدیث میں بعض ناموں کے ساتھ کچھ ایسے القاب آتے ہیں مثلاً حمید القویل، سلیمان الامش، مروان الاصفر، وغیرہ، تو کیا ان القاب کے ساتھ ذکر کرنا جائز ہے؟ آپ نے فرمایا:"جب تہارا قصداس کا عیب بیان کرنے کا شہوبل کاس کی پھیان يورى كرنے كا بوتو جائز بيك"

التجھے القابات سے یاد کرنا سنت ہے:

ایسے القابات جن سے کی کی پہلان بھی ہوتی ہواور عزت بھی ہوتی ہوتو ایسے القابات ك ورايع لى كو يكارنا عين سنت ب- رسول الله على الله على في فرمايا: مؤمن كاحل دومرے مؤمن يربيب كدائ كاايے نام ولقب سے ذكركرے جو أس كو زياده پيند وه اى كئ عرب مين كنيت كا رواج عام قفا اور آل حفرت عَلَيْنَ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ لِيسْدَفر ما ياله خود آن حضرت اللَّيْنَ اللَّهِ اللَّهِ عَالَى خاص محاب كو كجه لقب ديئ بن، صديق اكبركوشيق اور حضرت عمر رَضَّ وَالنَّهُ النَّفَ كُو قاروق اور حصرت حمره كواسدالله اورخالدين وليدكوسيف الله فرمايا ب-

تكليف سے بچاؤ كا چوتھاراستە

برگمانی اور غیبت کی ممانعت:

بدگمانی اور فیبت بیدوہ دو برائیاں ہیں جو دیگر کئی برائیوں کی جز ہیں ہے برائیاں جس طرح جم میں سرایت کر کے نقصان پہنچاتی ہیں ای طرح معاشرے میں بھی فساد پیدا کرتی ہیں۔ان برائول سے نیج کرانسان اپنے ایمان کو محفوظ کرسکتا ہے،اللہ

ك قوطبي: ٢٣٧/٨ الحجرات: ١١

الكري العالم (المن)

علاء وفقهاء في اس كى تفعيلات بيان فرمائى جين امام قرطبى رَخِعَبُرُاللَّهُ تَعُالَىٰ فَعَلَا مِن المام قرطبى رَخِعَبُرُاللَّهُ تَعُالَىٰ فَعَ اللَّهِ عَلَىٰ مِن المَعْرَكِي قوت وليل كے فرمايا كر تكن كا الزام لگانا۔ امام ابوبكر جساس رَخِعَبُرُاللَّهُ تَعُمَاكُ في احكام القرآن ميں ايك جامع تفصيل اس طرح لكھى ہے كر تكن كى چارفتميں جين ﴿ حرام القرآن مِن اليك جامع تفصيل اس طرح لكھى ہے كر تكن كى چارفتميں جين ﴿ حرام القرآن مِن اليك جامع تفصيل اس طرح لكھى ہے كر تكن كى چارفتميں جين ﴿ حرام القرآن مِن اليك جامع تفصيل اس طرح الكھى ہے كر تكن كى چارفتميں جين ﴿ حرام اللهِ وَاللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ ال

حدیث قدی ب الله تعالی فرماتے ہیں: "آنا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِی مِی " مین الله تعالی فرماتے ہیں: "آنا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِی مِی الله تعنی الله الله الله عندے کے ساتھ ویسا ہی برتاؤ کرتا ہوں جیسا وہ میرے ساتھ گمان رکھتا ہے اب اس کوافقیار ہے کہ میرے ساتھ جو جا ہے گمان رکھے۔

ظن كى كل پانچ اقسام بين:

ن فرض ﴿ حرام ﴿ واجب ﴿ مباح ﴿ مستحب. اَنْ خَلْنِ فَرضَ: اللهُ تعالَىٰ كے ساتھ حسن ظن فرض ہے اور بدگمانی حرام ہے۔

ابوداؤد، كتاب الجنائز، باب ما يستحب من حسن الظن بالله عند الموت
 ۸٤/٢

اله مسئد احمد: ٢/١٥/١ مسئد ابي هريره: ص٢٠٧

جی خلن حرام: وہ مسلمان جو ظاہری حالت میں نیک دیکھے جاتے ہیں اُن کے معلق باکسی قوی دلیل کے بدگمانی کرنا حرام ہے۔

معرت الوجريره وتفالل تقالف الدين عدراول الله المنظمة الله

قربالاً:
﴿ إِنَّا كُمْ وَالظَّنَّ فَإِنَّ الظَّنَّ أَكُذَبُ الْحَدِيثِ ﴿ يَعِيٰ كَمَان سَ بَحِو كِولَ
﴿ يَمَان جُولُ إِن سَهِ مِهِ إِللَّهُ أَكُدُبُ الْحَدِيثِ ﴿ لَكُن سَلَمَان كَمَاتُهُ اللَّكِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّلْمُ اللَّ

ا خلن واجب: شرایعت کے کام ایسے بیں کدائن میں کسی جانب برعمل کرنا شرما ضروری ہے اور اس کے متعلق قرآن وسنت میں کوئی دلیل واضح موجود نہیں، وہاں برخلن غالب برعمل کرنا واجب ہے۔

جیسے باہمی منازعات و مقدمات کے فیصلہ میں معتد گواہوں کی گواہی کے مطابق فیصلہ دیتا کیوں کہ حاکم اور قاضی جس کی عدالت میں مقدمہ دائر ہے اُس پر اس کا فیصلہ دیتا واجب ہے اور اس خاص معاطے کے لئے کوئی نفس قرآن و حدیث میں موجود نیس تو بااعتماد آدمیوں کی گواہی پڑھمل کرنا اس کے لئے واجب ہے اگر چہ سے امکان واحتمال وہاں بھی ہے کہ شاید کسی بااعتماد آدمی نے اس وقت جھوٹ بولا ہواس اسکان واحتمال وہاں بھی ہے کہ شاید کسی بااعتماد آدمی ہے اس وقت جھوٹ بولا ہواس کے لئے اس وقت جھوٹ بولا ہواس

ای طرح جہال ست قبلہ معلوم نہ ہواور کوئی ایسا آدی بھی نہ ہوجس ہے معلوم کیا جائے وہاں اپنے قبل عالب پر عمل ضروری ہے ای طرح کمی شخص پر کسی چیز کا معمان دینا واجب ہوا تو اس ضائع شدہ چیز کی قیمت میں ظمن غالب ہی پر عمل کرنا

الم المن مباح: ظن مباح الياب جيے نماز كى ركعتوں ميں شك ہوجائے كه تين

ک مسئل احمل: ۲/۷۸۲، وقعر: ۲۲۹۷

(بين العالمانية)

العاديث يس من كاعيب علاش كرنے كى سخت ممانعت آكى ب اورايما كرنے والم المدين وعيد أنى عدرول المدين كارشادع: "لَا تَغْنَابُوا المُسْلِمِيْنَ وَلَا تَتَّبِعُوا عَوْرًاتِهِمْ فَإِنَّهُ مَنْ يَتَّبِعُ عَوْرَةَ أَخِيْهِ يَتَبِعُ اللَّهُ عَوْرَتَهُ حَتَّى يُفْضِحَةً فِي بَيْتِهِ." كَ تَوْجَمَعَ المانول كي فيب شركوه اور أن كي عيوب كي جيتو ندكره سیوں کہ جو مخص ایے بھائی کے عیوب علاش کرتا ہے اللہ تعالی اُس کے عیب کی طاش کرتا ہے بہاں تک کدأس کواس کے گھرے اندر بھی رُسوا

بیان القرآن میں ہے: جیب کرسی کی باتیں سننایا اسے کوسوتا موابنا کر باتیں سن بھی جس میں داخل ہے البت اگر کسی سے نقصان چینے کا احمال مواور اپنی یا ووس سے اس مسلمان کی حفاظت کی غرض سے نقصان پہنچانے والے کی خفید تدبیرول اورارادول كالمجس كرے توجائز ب

كى كاخط بلااجازت ديكهنا:

مجس میں می کا خط و کیا بھی شامل ہے چنال چہ حضرت عبداللہ بن عباس والمان المراب المراب المرابع المنافق المارم المنافق المار المالة "مَنْ نَظُرَ فِي كِتَابِ أَخِيْهِ بِغَيْرِ إِذْنِهِ فَإِنَّمَا يَنْظُرُ فِي النَّارِ." تفرح منذ "جس نے این بھائی کا خط اس کی اجازت کے بغیر دیکھا (ليعنى پرها) تو گويا ده جهنم ديکيدر با ي-" معرت مولانا شرف على تعانوى صاحب رَجْعَبْدُاللَّهُ تَعْمَالْ عَالَى عَانوى صاحب رَجْعَبْدُاللَّهُ تَعْمَالك عَالَى

ك مسند احمد: ١٩٢٠٢ وقم الجديث: ١٩٢٠٢

ت بيان القرآن: ٣/١٤٤٠ الحجرات: ١١

عد ابوداؤد، الوتر، باب الدعاء، رقع: ١٤٨٥

یوچی ہیں یا جارتو اپنے تھن غالب پرعمل کرنا جائز ہے۔اور اگر ووظن غالب کو چھوڑ کا امریقی پڑھل کرے یعن تین رکعت قرار دے کر چوتی پڑھ لے تو یہ بھی جائز ہے۔ طن مستحب: ظن مستحب ومندوب بدے کہ ہرمسلمان کے ساتھ نیک گلن ر کے کدار پر ثواب ملا ہے۔

امام قرطبی رَخِعَبُدُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ قرمات مين: الله تعالى كا ارشاد ب: ﴿ لَوْكَ اوْ سَمِعُنُمُونُهُ ظُنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ﴾ تَرْجَمَدَ: "ات سنتے ہی مؤمن مردول اور عورتول نے اسپے جن میں نیک مگانی کیول ندکی۔" ال آیت میں صن ظن بالمؤمن كى تاكيد آئى ہے۔

يمشهور ب: "إِنَّ مِنَ الْحَزَمِ سُوءُ الظَّنَ" يعن احتياط كى بات بيب كيم سخص سے بدگانی رکھے اس کا مطلب سے کے معاملہ ایسا کرے جیسے بدگانی کی صورت میں کیا جاتا ہے کہ قوی اعماد کے بغیر اپنی چیز کسی کے حوالہ نہ کرے نہ ہے ک اس کو چور سمجھے اور اس کی تحقیر کرے۔ خلاصہ بیہ ہے کہ کسی مخض کو چوریا غدار سمجے بغے ات معاملے میں احتیاط برتے۔ شخ سعدی وَجِعَبُدُاللّٰهُ تَعَالَيْ كاس قول كا بھى جا

نگ دار و آل شوخ در کیسر ور ک داند جمد خلق راکیس بر O ترمت بحس: دومری چزجس اس آیت میں مع کیا گیا ہے بحس لعنی کسی کے عیب کی تلاش کرنا اور مراغ لگانا ہے۔ آیت کے معنی یہ ہیں کہ جو پیز تمبارے سامنے آجائے اس کو پکڑ سکتے ہواور کسی مسلمان کا جوعیب ظاہر نہ ہواس فی جبتو اور تلاش كرنا جائز فييل-

له احكام القرآن للجصاص: ٢/٦٠٤ الحجوات: ١٢

عه قرطبي: ١٢٣٩/٨ الحجرات: ١٢

له معارف القرآن: ١٢٠/٨ الحجرات: ١٢

كسي كافون سننا:

تجس بی میں بیاسی واقل ہے کہ کسی کا فون اس کی الملمی میں سن لیا۔ کوئی انسان اب راز كا اظهار كيندنيس كرتاليكن بعض اوقات باتون عي باتول عي آدى غرشعوری طور پر داز کی باتیں بھی زبان پر لے آتا ہے یا اینے گھر والول سے الی التنگوي بوجاتي ب كدووس اوگول كے سامنے وہ بداظهار نبيل كرنا حاجتا، اى لئے اگر کوئی این گھریا دوستول سےفون پر بات کررہا ہوتو جیب کر کسی ایک فیخ وغیرہ ہے اس کی باتوں کا خواہ مخواہ کھوج لگانا اور اُن کی باتیں سننا شرعاً بھی ناجائز ہے۔ ى كرىم ينتي الله كارشادمبارك ب:

"مَن اسْتَمَعَ إِلَى حَدِيْثِ قَوْمٍ وَهُمْ لَهُ كَارِهُونَ أَوْ يُفِرُّونَ مِنْهُ صُبِّ فِي أَذُٰنِهِ الْآنَكُ يَوْمَ الْقِيلَمَةِ. "كَ

تَوْجَمَدُ: "جِو فَض كن قوم كى باتين (جيب كر) سے اور وہ لوگ اس بات كوناليندكرت مول تو الله تعالى قيامت ك دن ال مخض ك كانول من كيمال مواسيسال بل دي كي" (معاذ الله)

@ جرمت فيبت: تيرى ييز جس ال آيت يل نع فرمايا كيا ب دولتى كى فيب كرنا ب، يعنى اس كى غير موجود كى مين اس كے متعلق كوئى الى يات كبنا جس كودوسنتا تواس كوايذا موتى اگريدوه تجي بات عي موكيول كه جوغلط الزام لكائ وہ تہت ہے جس کی حرمت الگ قرآن کریم سے ثابت ہے اور فیبت کی تعریف میں اس مخص کی خیر موجودگی کی قیدے بیانہ سمجھا جائے کہ موجودگی کی حالت میں اليكاريج وه بات كبنا جائز ب_ كيول كدوه غيبت تونيس مكر "لُمُو" (طعدز في عيب جونی این داخل ہے جس کی حرمت اس سے پہلی آیت میں آ چی ہے۔ له بحارى، كتاب التعبير، باب من كذب في حُلُعِم: رقم ٧٠٤٢ اجازت و یصفے کے بارے میں سوال کیا تو انہوں نے فرمایا:

ودكسي كا خط با اجازت و يكنا جائز نبيس بيمريداس صورت يس جب كهان ے خط لکھنے والے کو نقصال پہنچ رہا ہو کیوں کہ حدیث شریف میں ہے، مسلمان وو ہے جس کے ہاتھ اور زبان سے مسلمان محفوظ رہیں اور کسی کے پوشیدہ رازوں کو ظام كرنا ال كوتكليف دي عرادف بكى كاخط ديكين سيتكليف شرور بوق ہے اور دوسری وجہ بیہ ہے کہ بغیر اجازت کسی کی تحریر دیکھنا ایک فضول اور افو کام ہے جس ے اللہ تعالی منع فرمار ہے ہیں۔

قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿ وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّهُو مُعْرِضُونَ ﴾ ٢٠ تَرْجَمَيَّةُ "(ايمان والے) وہ بین جولغویات سے مندموز ليتے ہیں۔"

کیکن اگر کسی کا خط دیکھنے میں کا تب کو نقصان پہنچانے کا ارادہ نہ ہواور شال مل كسى خفيه بات كا اختال ہواور نه ديكھنے والے كا نفع مقصود ہومگر كاتب عى كى كوئى مصلحت ہوتو مجر جائز بل كمستحب مؤكا جيسے مال باب كا اولاد كے خطوط كى تكرانى رکھنا، استاذ، اتالیق اور مربی کا طلباء کے خطوط کو دیکھنا یا حاکم کا رعایا کے اقوال و افعال كى خرركه نا توبيب كبيل جائز بي كبيل ضرورى -

حضور طَافِقُ عَلَيْكُ فِي فَ حاطب بن الى بلتعد كا خط لے جانے والى عاز يروى چھنوالیا تھا اگر بغیرعذر کے خطاکو دیکھنا مطلقاً منع کیا جائے تو یہ بھی ہزاروں مفاسد؟ فتح باب موتا ہے جس كا خلاصة زادى وخودسرى ب-

مال باپ اولا د کومنع نه کریں، استاذ طلبه کی باتوں میں دخل نه دیں، حاکم رعایا كالكراني ندكر عاقو ترميت وسياست وكحدثه موسكات

- له بخارى، باب المسلم من سلم المسلمون: ١/١
 - ت المؤمنون: ٣
 - مسلم، فضائل الصحابة: رقم ٢٤٩٤
 - ع مجالس الحكمت: ص١٨٢ ثا ١٨٥

بہادری کا کام میں۔
اس آیت بیں ظن اور تجس اور فیبت تین چیزوں کی حرمت کا بیان ہے گر
فیبت کی حرمت کا زیادہ اہتمام فرمایا کہ اس کوکسی مردہ مسلمان کا گوشت کھانے ہے
تشجید دے کر اُس کی حرمت اور خفت و ذلت کو واضح فرمایا، حکمت اس کی ہے ہے کہ کسی
کے سامنے اُس کے بیوب ظاہر کرنا بھی اگر چدایذ ارسانی کی بنا پر حرام ہے گراس کی
روک تھام وہ آدی خود بھی کرسکتا ہے اور روک تھام کے خطرہ سے ہرایک کی ہمت بھی
نہیں ہوتی اور وہ عادۃ زیادہ ویر رہ بھی نیس سکتا۔

اسی طرح فیبت حرام بھی ہے اور خفت و ذلت بھی کہ چینے پیچھے کسی کو برا کہنا کوئی

بخلاف فیبت کے کہ وہان کوئی روک تھام والانہیں ہر کمتر سے کمتر آدی بڑے سے بڑے کی فیبت کرسکتا ہے اور چوں کہ کوئی روک تھام ٹیس ہوتی اس لئے اس کا سلسلہ بھی عموماً طویل ہوتا ہے اور اس میں اہتلاء بھی زیادہ ہے اس لئے فیبت کی

ك الحجرات: ١٢

(بين دايد المرادث

خی در بینده مؤکد کی گئی۔ عام مسلمانوں پر لازم کیا گیا کہ جو نے وہ اپنے غائب جوت زیادہ مؤکد کی گئی۔ عام مسلمانوں پر لازم کیا گیا کہ جو نے وہ اپنے غائب بھائی کی طرف سے بشرط قدرت روک تھام کرے اور روک تھام پر قدرت نہ ہوتو کم از کم اس کے سننے سے پر بیبز کرے کیوں کہ فیبت کا ارادے اور اختیارے سننا بھی ایسانی ہے جو دفیبت کرنا۔

فيبت كرنے والے كے لئے وعيديں

پہلی وعید: زبان اللہ تعالی کی ایک عظیم نعمت ہے، لیکن جس طرح بیا لیک بے بہانعت ہے، اس طرح بیا لیک بے بہانعت ہے، اس طرح بیا لیک خطرناک اور نبایت نقصان دہ آفت کا سبب بھی ہے، جیسا کہ حدیث پاک میں ہے، جس کا مفہوم ہے: ''لوگ اوندھے منہ جہم میں ای زبان کے باعث ڈالے جائیں گے۔'' ک

حضرت ميمون ريختيمُ اللهُ تَعَالَقُ نے فرمايا كداكي روز خواب يس ميل نے دیکھا کہ ایک زقل (حبثی) کا مردہ جسم ہے اور کوئی کہنے والا ان کو تفاظب کرے سے كدرا بكاس كو كماؤر على في كما كدات خداك بندے على اس كو كول كاؤل إلى أس محض في كباس لئ كدتون فلال محض ك زنكي غلام كي فيبت كي ج۔ میں نے کہا کہ خدا کی متم میں نے تو اس کے متعلق کوئی اچھی بری بات کی ہی میں تو اس مخص نے کہا کہ ہاں، لین تو نے اس کی غیبت سی تو ہے اور تو اس پر رائس رہا۔ حصرت میمون رجھ بالله تعکال کا حال اس خواب کے بعدیہ ہوگیا کہ نہ ا المراجي الى كالميب كرت اور ندكى كواتي مجلس عن كى كالميب كرنے ديے الله ورمرى وعيد: حفرت الس بن مالك وفقالة تقالظة كى روايت بكدشب معران کی حدیث میں رسول الله ظافی الله ظافی نے فرمایا که مجھے لے جایا گیا تو میرا کزر الك الى قوم ير بواجن كے ناخن تائي كے تھے اور وہ اپنے چرول اور بدان كا مك يخارى، باب حفظ اللسان: ١٥٩/٢ 2 التفسير المظهري ١١٥٥، الحجرات: ١٢

اس حدیث سے ثابت ہوا کہ فیبت ایک ایسا گناہ ہے جس میں حق تعالیٰ کی بھی مخالف کی بھی مخالف کی بھی مخالف ہے جس کی فیبت کیا گئا ہے ہوتا ہے اس لئے جس کی فیبت کیا گئا ہے اس سے معاف کرانا ضروری ہے۔اگر وہ شخص مرگیا ہے جس کی فیبت کی تھی اور زندگی میں معافی نہیں ما تگ سکا یا اس کا پید نہیں تو اس کا کفارہ حضرت انس رکھواللہ اللہ مخالفہ انتہا ہے فی حدیث میں بیہ ہے کہ رسول اللہ مخالفہ انتہا ہے فی مایا:

"إِنَّ مِنْ كَفَّارَةِ الْغِيْبَةِ أَنْ يَّسْتَغْفِرَ لِمَنِ اغْتَبْتَهُ تَقُولُ اللَّهُمَّ اغْفِرُ لَنَا وَلَهُ" ** اللَّهُمَّ اغْفِرُ لَنَا وَلَهُ" **

یعنی فیبت کا کفارہ ہے کہ جس کی فیبت کی گئی ہے اس کے لئے اللہ تعالی سے اللہ تعالی سے اللہ تعالی سے کا اللہ تعالی سے کا اللہ تعالی سے کا اللہ تعالی سے کا اللہ تعالی سے کہا تا جوں کو مدانہ فی ا

ك سنن أبي داؤد، بأب في الغيبة: ٢١٣/٢

ع المسطوف في كل فن مستظوف: ١٧٣/١

ك مشكّوة المصابيح، باب حفظ اللسان: ص٤١٥، رقم: ٤٨٧٧

پی چی وعید: حضرت عبدالله ابن عباس وَ اَلَّا اَلَا اَلَ مروی ہے: نبی اَلَا مِلْ اِللَّهُ اللَّهُ اللَّلِمُ الللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللِّهُ الللللِّلِمُ الللللْمُولِلللللِّلْمُ الللِّلِمُ اللللْمُولِلِلللْمُ الللِّلِ

حضرت حذیفه رَوْفَاللَّهُ فَالنَّفِظُ فَرِماتَ مِين: مِن فَ حضور نِي كريم عَلَقَالْمَ فَالنَّهُ عَلَيْهِ النَّهُ كويد كتب موت سنا كه چغل خور جنت شن نبين جائ گارت

فَی اَوْنَ لَا : بِی مِجنون اور کافر ذی کی فیبت بھی حرام ہے کیوں کدان کی ایذ ابھی حرام ہے اور جو کافر حربی بیں اگر چدان کی ایڈ احرام نہیں مگر اپنا وقت ضائع کرنے کی وجہ ہے بھر بھی فیبت مکروہ ہے۔

نیبت جیے تول اور کلام ہے ہوتی ہے ایسے ہی فعل یا اشارہ ہے بھی ہوتی ہے جیسے کسی لنگڑے کی جال بنا کر چلنا جس ہے اُس کی تحقیر ہور^{سی}

بعض روایات سے ثابت ہے گہ آیت میں جو نیبت کی عام حرمت کا حکم ہے بعض صورتوں میں اس کی اجازت ہوئی ہے مثلاً کسی شخص کی برائی کسی ضرورت یا مصلحت سے کرنا پڑے تو وہ نیبت میں داخل نہیں بشرطیکہ وہ ضرورت و مصلحت شرعاً معتبر ہو بیسے کسی ظالم کی شکایت کسی ایسے شخص کے سامنے کرنا جو ظلم کو دفع کر سکے، یا کسی اولاد و بیوی کی ظالم کی شکایت اُس کے باپ اور شوہر سے کرنا جو اُن کی اصلاح کر سکے، یا مسلمانوں کو سی کا حال ہنا تا ہیا مسلمانوں کو کسی شخص کے دینی یا دُنیوی شرسے بیانے کے لئے صورت واقعہ کا اظہار یا مسلمانوں کو کسی شخص کے دینی یا دُنیوی شرسے بیانے کے لئے کسی کا حال بتلانا، یا مسلمانوں کو کسی شخص کے دینی یا دُنیوی شرسے بیانے کے لئے کسی کا حال بتلانا، یا مسلمانوں کو کسی شخص کے دینی یا دُنیوی شرسے بیانے کے لئے کسی کا حال بتلانا، یا کسی معاسطے سے متعلق مشورہ لینے کے لئے اس کا حال ذکر کرنا، یا جو شخص سب سے کسی معاسطے سے متعلق مشورہ لینے کے لئے اس کا حال ذکر کرنا، یا جو شخص سب سے

مله بخاری، باب من الکبالر ان لا یستتر من البول: ۲٤/۱ من ترمذی، باب ماجاء فی النمام: ۲۲/۲

ك معارف القوآن: ١١٣/٨ قا ١٢٢

"كُلُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ حَوَامٌ دُمَّةً وَمَالُهُ وَعِرْضُهُ." لله تَوْجِهِمَا: "لِعِنى مسلمان كامسلمان برسب كي حرام إلى كاخون بعى، ال بھی، اوراس کو بي آ بروكرنا بھى-"

بہت سے لوگوں کا ذریع دمعاش بی سے ہوتا ہے کہ دوسروں کی عنبتیں کیا کریں اورلوگوں پر کیچڑ اچھالا کریں۔ساسی جماعتوں اور صحافت سے تعلق رکھنے والوں کا تو فیصوصی مشغلہ اور پیشہ ہے اور بہت سے لوگ در باری ہوتے ہیں۔اس ریس کے يهال كئے تو اس سے يرخاش ركھنے والے كى فيبت كركے رونى كھالى اوراس امير کے بیاں گئے تو اس کے بہال کسی پر کمچڑ اچھالی اور برانی شیروانی اس کے عوض لے اڑے،صرف دنیا سامنے ہے آخرت کی فکر ہوئی تو ایسا نہ کرتے۔

حضور اقدس طَيْقَ عَلِينًا فِي ارشاد فرمايا: "جس محض في مسلمان كي غيبت ك ذريعة كوئى لقمة كهايا - تو الله تعالى اس كو دوزخ سے اتنا عى لقمة كهلائ كا اورجس می کوسی مسلمان کی غیبت کی وجہ ہے کوئی کیڑا بہنا دیا گیا تو اللہ تعالی اس کو اس قدرجہم ے (کیڑا) بہنائے گا اور جو محض کی مخص کی وجہ سے شہرت یا ریا کاری ك مقام ير كفرا موا (ليني كسي كويوا برزگ اور في ظاهر كرے اور اس كوا في اغراض كا فراید بنا لے) تو الله تعالى قيامت كے دن اس كو (رسوا كرنے كے لئے) ديا اور شہرت کے مقام پر کھڑا کرے گا۔ (تاکہ لوگوں کومعلوم ہو جائے کہ سیخض ایسا

عيبت كا دُنياوي اور أخروي نقصان:

حماد بن مسلمه وَيَحَالِقُ بِتَعَالِيَةَ فَرِماتِ بِين الكِ فَحْص في فلام فروفت كيا اور كما كرچفل خوري كرسواس مي كوئي عيب نبيس، ال مخض في كها مجھے قبول إاور

سامنے تعلم کھلا گناہ کرتا ہے اور اپنے فسق کوخود ظاہر کرتا پھرتا ہے اس کے اعمال بد کا ذكر بھى فيبت ميں داخل نبين مكر بلاضرورت اے اوقات كوضائع كرنے كى بناء ير مروہ ہے اور ان سب باتوں میں قدر مشترک سے ہے کہ کسی کی برائی اور عیب ذکر کرنے سے مقصوداس کی تحقیر ند ہو بل کہ سی ضرورت و مجبوری سے ذکر کیا گیا ہو^ا

مسلمان كى عزت وحرمت كامقام

حفرت ابویرزه اسلی وضواللاً الفاق سے روایت ب حضور اقدی فیلی الفاق نے ارشاوقرمایا: "اے وہ اوگو! جوزبانی طور پرسلمان ہوئے ہواوران کے داول میں المان واظل نمیں ہوا مسلمانوں کی عبیتیں نہ کرواوران کے میبول کے پیچھے نہ بڑو۔ كيوں كہ جو تحض ان كے بيبوں كے يہي يڑے كا اللہ تعالى اس كے بيبوں كے بيجھ پڑے گا۔ (لیتن ان کو کھول دے گا) اور اللہ تعالی جس کے بیبوں کا پیچیا کرے گا۔ اس کورسوافر مادے گا اگرچہ وہ اسے گھر کے اتدر ہو۔ است

غور كرنے كى بات ہے كه جو لوگ مسلمانوں كى فيبت ميں جتلا ہوں اور ان کے میبوں کے پیچے کلیں۔ان کوحضور اقدی التفاقی اللہ نے یوں خطاب قرمایا کہا۔ وہ لوگوا جو زبانی طور برمسلمان ہوئے اور ان کے داول میں ایمان واخل نہیں ہوا۔ مسلمانوں کی غیبت ند کرو۔

اس انداز بیان بی اس طرف اشارہ ہے کہ مسلمانوں کی غیبت کرنے والا اور ان کے بیبوں کے بیچھے بڑنے والا (مینی بیبول کی تلاش اور توہ میں رہنے والا) مسلمان نہیں ہوگا بل کدالی حرکت منافق ہی سے سرزد ہوعتی ہے جو زبان سے مسلمان ہوتا ہو دل سےمسلمان نہیں ہوتا۔

حضور اقدس عَلَقَ اللَّهِ فَي ارشاد فرمايا:

ك روح المعانى: ١٩١/١٢، الحجرات: ١٢

ك ابوداؤد، كتاب الأدب، باب في الغيبة: ٢٩١٢/١ رقم: ٨٨١

مك مسلم: كتاب البروالصلة، باب تحويم ظلم المسلم، وقم: ١٥٤١ ع البوداؤد، كتاب الأدب، باب في الغيبة: ٢١٣/٢، رقم: ٤٨٨١

تكليف سے بچاؤ كا پانچوال راسته

زبان اور باته كى حفاظت:

ہرانان این روز مرہ کے معاملات میں زبان اور ہاتھ کو سب سے زیادہ وستعال میں اناتا ہے اور جو چیز سب سے زیادہ استعال ہوئی ہے اس کے فائدے ع ساتھ ساتھ نتصان کا بھی اندیشہ ہوتا ہے بالکل ای طرح زبان اور باتھ جس طرح انسان كوفائده كبنجات وي اكرانيين محيح استعال ندكيا جائ توانسان كوفقسان بھی پہنچا دیتے ہیں۔ اور بینقصان اُس مخص کے لئے تکلیف کا ذراید بنمآ ہی ہاور بھی بھی دوسروں کی تکلیف کا ذرایع بھی بن جاتا ہے۔

ائل وجدے احادیث مبارکہ میں ان دواعضاء کو بیجے استعمال کرنے اور ان کے فديد دورول كوتكيف سے بچانے كى تاكيد آئى ب-्रार्न्या हार्या निर्मा

"ٱلْمُسْلِعُر مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ." كَ تنفیجمیکند " کامل مسلمان وای ہے جس کی زبان اور ہاتھ سے مسلمان سالمريل"

عيم الامت معرت مولانا اشرف على قانوى وَيَحْتَبُ النَّالُةُ فرمات جين ال مخفر مر نبایت جامع حدیث میں ایک ضروری فائدہ بیان کیا گیا ہے جومصالح شرميدو تدنيدودون كوشامل ب،شريعت كى غرض تدن كومحفوظ ركهنانبير، بل كداس كى مله بحادى: باب المسلم مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ: ١/٦ خريدكر لے كيا۔ غلام اپنے نے مالك كے پاس كچددن رہے كے بعد ايك دن اس كى يوى سے كينے لگا:

" تيراشو برتم ع مجت مين كرتا اور دوتم ع جان چيزانا جابتا عيدتم ايما كرد كداستره كررات كوسوتے ميں اس كى كدى كے بچھ بال كاث لاؤ ميں ان يرسحر كردول كا، جى سے دوقم سے جت كرنے كے كا۔"

ادهرجا كراس كم شومر بكها: "تمهاري يوى كالك مخف عد معاشقة جل ربا ہے اگر انتبار ندآ ئے تو نیند کی حالت بنا کرد کھے لؤ، چنال چیشو ہرنے ایک دن نیند كى حالت بنائى تو بيوى استره لے آئى، شوہر نے سمجھا واقعى يد مجھے كل كرنا جائتى ہے، چناں چہ وہ اٹھا اور اس نے اپنی بیوی کوئل کر دیا، استے میں بیوی کے گھر والے آئے انہوں نے شوہر کوئل کر دیا، یوں دوقبیلوں کے درمیان جنگ چیز گئی۔

حضور اکرم فیلی فیلی نے فرمایا: الله تعالی کے بندول میں بدرین وہ لوگ میں جو چغل خوری کرتے ہیں اور دوستوں کے درمیان فساد ڈلواتے ہیں اور ب گناہ اوگوں کے عیب عاش کرتے رہتے ہیں۔

ایک اور حدیث یں ہے: حضور اکرم فیل علی اے ارشاد فرمایا: "جو محض مجھے ائی زبان اور اپنی شرم گاہ کی حفاظت کی منانت وے دے، میں اس کے لئے جنت كى شانت ديتا بول-"عه

زبان کی مثال دو دهار مکوار کی تی ہے، اگر قرآن وسنت اور احکام اللی کے مطابق حدود شرعيدين رہتے موے اس سے بھے كام ليا جائے تو اللہ تعالى كرقرب اوررضا كالبهترين ورتيدب اوراكر إس حدووشر بعدك خلاف جلايا جائت تحريجل

ك سميرالمؤمنين: ١٧٩ بحواله روضة العقلاء: ١٧٩

الترغيب والترهيب، الترهيب من النميمة: ٢٢٥/٣

ت بخارى، باب حفظ اللسان: ١٩٥٨/٣

ترویسی در محقیق تمبارے خوان تمبارے مال اور تمباری آ برو کمی تم پر حرام بیل شک تمباری اس ون کی حرمت کے۔'' ایعنی آ آئیں میں ندایک دومرے کوئل کرے ﴿ ندنا حِنّ مال لے ﴿ اور ند آ برور یہ ی کرے۔

یں یہ تین تم کے حق ہیں، گر فور کرنے سے معلوم ہوتا ہے کہ مال و جان کے حق تو اکثر ہاتھ سے ضائع ہوتے ہیں اور عزت اکثر زبان سے، مال کا حق مثلاً علی کا مال لوٹ لیا، کسی کولکھ ویا یا لوٹ کے لئے اس کا آلہ یکی ہاتھ ہوگا، اب رہا جان کا حق مثلاً ہوتے ہیں ہوتا ہے، اور اگر کسی کو زبان سے آل کرنے کو کہا تو ہے جی جان کا حق ہوتا ہے، اور اگر کسی کو زبان سے آل کرنے کو کہا تو ہے جی پر اہتھ ہی ہاتھ ہی جاتی ہے اور اکثر زبان سے، کو یہ حقوق تین قتم کے ہیں، گر انہی دو صور تول میں واخل ہیں "مِنْ فِیان کو تکلیف فی جان کو تکلیف فیسے شال کو ندا ہر کوکھ ہوا کہ کوئی مسلمان ندکی کی جان کو تکلیف وسے شال کو ندا ہر وکول

خلاصہ بیہ ہوا کہ بمیں حقوق العباد کی بھی رعایت کرنا جاہے، مثلاً اکثر لوگ مجد کے اندر بھی دیوار ہے لی نگلنا جاہے کے اندر بھی دیوار ہے لی کرنیت باندھتے ہیں، اگر اب وہاں ہے کوئی نگلنا جاہے فیصلی کا در گناہ ہے بچے تو نگل نہیں سکتا اسے نظیم کا تو گئے گا تو گئی بخرش برعمل میں اس کا لحاظ رکھنا جاہے۔ ک

کیکی حدیث میں دو نکتے قابل ذکر ہیں۔ (حدیث میں ہاتھ اور زبان کا بطور خاص ذکر کیا گیا حدیث میں ہاتھ اور زبان کا بطور خاص ذکر کیا گیا ہے۔ لیکن اس کا بید مطلب نہیں کہ ہاتھ اور زبان کے سواکسی الد ذریعے سے تکلیف بہنچان جائز ہے، ظاہر ہے کہ اصل مقصد ہر فتم کی تکلیف پہنچانے سے روکنا ہے، لیکن چوں کہ زیادہ تر تکلیفیں ہاتھ اور زبان سے پہنچی ہیں، اس کے ان کا بطور خاص ذکر کر دیا گیا ہے۔ (کا حدیث کے الفاظ یہ ہیں کہ زبان

الله كف الاذى: ص ٢٤، ٢٥، بحواله حقوق العباد: ص ٢٢، ٢٤ م

غرض صرف بیہ ہے کہ رضائے خداوندی حاصل ہواور اللہ تعالی و بندہ کے درمیاں سی مخص تعلق پیدا ہو، سیکن حق تعالی کی عنایت ہے کہ اس نے احکام اس طور پر مقرر فرمائے کہ ان پر مصالح تندنی بھی مرتب ہوجاتے ہیں۔

حدیث کے جملے "من سَلِعَ الْمُسْلِمُونَ " وجس سے مسلمان محفوظ رہیں" کا یہ مطلب نہیں ہے کہ غیر مسلم کی رعابیت ضروری نہیں کیوں کہ ایک اور روایت میں ہے آپ مُلِین عَلَیْنَ الْمَارِقُر مایا:

"اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ النَّاسُ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ، وَالْمُؤْمِنُ مَنْ أَمِنَهُ النَّاسُ عَلَى دِمَانِهِمُ وَامُوَالِهِمْ "اللهُ

تَتُوجَهَدَ: "كامل مسلمان وه ب جس سے ہاتھ و زبان (كى تكليف) سے لوگ محفوظ ہوں، اور كامل مؤمن وه ب جس سے لوگوں كى جانيں اور اموال محفوظ ہوں۔"

لبدًا تمام اوگوں کی رعایت ضروری ہوئی خواہ مسلم ہوں یا کافر، ان سب سے حقوق بھی لازم ہوئے، البتہ حربی اس محکم جس واخل نہیں، اور مسلمون جو جمع کے سید سے ہوتا ہے، تو جمع سے بھی جموعہ مراد ہوتا ہے کہ سے بہتر واحد ظاہرتو یہ معلوم ہوتا ہے کہ یہاں ہر ہر واحد مراد لیا جائے کہ ہر مسلمان اس کی ایذا سے محفوظ رہے۔

"مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ" اس كى زبان اوراس كے باتھ ہے،اس ميں دوشم سے حقوق كى طرف اشارہ ہے كويہ تين شم كے مالى، جانى،عرضى حقوق چيزانے سے جي جس كواس حديث ميں صاف فرما ديا:

"إِنَّ دِمَّاءً كُمْ وَآمُوَالَكُمْ وَأَعْرَاضَكُمْ عَلَيْكُمْ حَرَامٌ، كَخُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هَذَا" عَلَيْكُمْ حَرَامٌ،

ك مستداحمد: ٢٧٩/١ رقم الحديث: ١٢١٢

ع بخارى، كتاب المناسك، باب الخطبة ايّام منى: ٢٣٤/١

(الميك العيال أيات

(يَيْنَ والمِيلِ الرابِينَ)

كربات كبددى اور يه طعندالي چيز ب جودلول من زخم ذال ديتا ب،عربي شاعر كا

جَرَاحَاتُ السِّنَانِ لَهَا التِّيَامُ وَلاَ يَلْتَامُ مَاجُرَحَ اللِّسَانُ "لعنی نیزے کا زخم تجرجاتا ہے۔لیکن زبان کا زخم نہیں بحرتا۔" اس لئے اگر کسی کی کوئی بات آپ کونا گوار لگی ہے تو صاف صاف اس سے کہہ ووكدفلال بات آب كي جحے يسد تبيل الله تعالى كا ارشاد ب: ﴿ يَاۤ اَيُّهَا الَّذِيْنَ امْنُوا اتَّقُوا اللَّهُ وَقُوْلُوا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴾ تُ تَتَوْجَمَدُ:"ا الله الله والوالله عن ورواورسيدي بات كرو-" آج كل فقره بازى ايك فن بن كيا ب، فقره بازى كا مطلب يد ب كدالي

بات کی جائے کہ دوسر المحض من کر تلملاتا تی رہ جائے۔ براہ راست اس سے وہ بات نہیں کمی، بل کہ لپیٹ کر کہدوی۔ ایک یا تیس کرنے والوں کی لوگ خوب تعریف مجھی كرتے بيں كدي يخص تو برا زبروست انشاء پرواز ب، اور برا اطيف غماق كرتے والا

زبان کے ڈنگ کا ایک قصہ:

حضرت مولانا مفتى محر شفيع صاحب وَدِحَبَهُ اللَّائَ تَعَالَى فرمايا كرتے سے اجمَ لوگوں کی زبان میں ڈیک ہوتا ہے، چنال چدا سے لوگ جب بھی کسی سے بات کریں ك ذك ماريس كم ، طعنداور طنزكى بات كريس ك- ياسى يراعتراض كى بات كريس کے طالاں کہ اس اتدازے بات کرنے سے دل میں کر ہیں پر جاتی ہیں۔ پھر

اور ہاتھ سے دوسرے"مسلمان" محفوظ رہیں، اس کا بھی بیمطلب نہیں ہے کہ می غیرسلم کوتکلیف پہنچانا جائز ہے، چول کہ بات ایک اسلامی معاشرے کی ہورہی ہے جس میں زیادہ تر واسط مسلمان بی سے برتا ہے، اس لئے "مسلمان" کا ذکر بطور خاص کر دیا گیا ہے، ورن قرآن وحدیث کے دوسرے ارشادات کی روشی شل ب اصول تمام فقباء ك نزديك مسلم ب ك جو غيرمسلم افرادسى اسلامي ملك مين اس ك ساتھ قانون كے مطابق رجے مول جس كا ذكر دوسرى حديث ميل آچكا ب، بیشتر معاشرتی احکام میں ان کو بھی وہی حقوق حاصل ہوتے ہیں جو ملک کے مسلمان باشندوں کو حاصل جیں، البذاجس طرح نسی مسلمان کو کوئی ناروا تکلیف پہنچانا حرام ہے، ای طرح مسلمان ملک سے کسی غیرمسلم باشندے کو بھی ناحق تکلیف دینا حرام،

زبان سے تکلیف نیردینے کا مطلب

اس حديث من وو لفظ استعال فرمائه ١٠٠ من ليسانيه " اويده" بعنی دوسرے مسلمان دو چیزوں سے محفوظ رہیں، ایک اس کی زبان سے اور دوسرے اس کے ہاتھ سے۔ زبان سے محفوظ رہنے کا مطلب سے ب کدوہ کوئی ایسا کلمدنہ کے جس سے سننے والے کا ول تو فے یاس کو تکلیف پہنچے اور اس کی ول آ زاری ہو۔ اگر بالفرض دوسرے مسلمان کی کسی بات پر تقید کرنی ہے تو بھی ایسے الفاظ استعال كرے جس سے اس كى دل آزارى بالكل شدود، ياكم سے كم جو مثلا اس سے

يه كبدوين كدآب كى فلال بات مجھے الجھى تبين كى ، يا آپ فلال بات يرغور كرليس ، ده بات اصلاح کے لائق ہے اور شرایت کے مطابق نبیں ہے۔ لیکن کوئی ایسا طریق اختیار کرنا جس سے اس کوتکلیف ہو، مثلاً گالی گفتار اختیار کرنا، یا گالی گفتار سے بردھ كرطعنه وينا_" طعنه كا مطلب بير ب كه براه راست تؤكوني بات نيين كي كيكن ليب

ر شرح جامی: ۱۲

ت الاحزاب: ٧

ت اصلاحی خطبات: ۱۱۲،۱۱۱۵/۸

فرمایا: ایک صاحب سی عزیز کے گھر گئے تو دیکھا ان کی بہو بہت غصے بی ہے اور زبان سے اپنی ساس کو برا بھلا کہدرتی ہے اور ساس بھی پاس بیٹھی ہوئی تھی دان صاحب نے اس کی ساس سے بوچھا کہ کیا بات ہوگئی؟ اتنا غصر اس کو کیوں آ رہا ہے؟ جواب بیں ساس نے کہا:

بات بی دی میں تیں سے صرف دو بول بولے سے اس کی خطاء میں کی رہی ہے۔ان کی رہی ہے۔ان صاحب نے بوجھا کہ وہ دو بول کیا ہے؟ ساس نے کہا کہ میں نے تو صرف یہ کہا تھا کہ باپ تیرا غلام اور مال تیری اونڈی، بس اس کے بعد سے یہ ناچی ناچی ناچی کی مجردی

اب دیکھنے: وہ صرف دو بول تھے۔لیکن ایسے دو بول تھے جو انسان کے اندر آگ لگانے والے تھے۔ لہذا طعنہ کا انداز گھروں کو برباد کرنے والا ہے، داوں میں بغض اور نفر تیں پیدا کرنے والا ہے، اس سے بچنا چاہئے، ہمیشہ صاف اور سیدھی بات کہتی جائے۔

زبان کی آفتیں:

ابندا اگر ہم کمی کے ول کوخوش نہیں کر سکتے تو اس کے دل کورنج بھی نہیں پہنچایا کریں۔ یاد رکھے کہ بیار یول میں ہے سب سے بری دل کی بیاری ہے اور ول کی بیار یوں میں سے سب سے بری ول آزاری ہے۔ مگر ہم بڑی ویدہ ولیری سے دوسروں کی دل آزاری کررہے ہوتے ہیں۔

خاوند بیوی کوکوئی اٹسی بات کر دیتا ہے کہ وہ بے چاری سارا دن روتی رہ جاتی ہے ادر بیوی خاوند کواٹسی بات کہدو بتی ہے کہ اس بے چارے کا سکون ہر باد ہو جاتا

ك اصلاحي خطبات: ١١٨/٨

جدای لئے کہتے ہیں کہ تلوار کے زخم تو مندل ہوجاتے ہیں گرزبان کے زخم مندل ہوجاتے ہیں گرزبان کے زخم مندل نہیں ہوا کرتے۔ یہ زبان ان رشتوں کو بھی توڑ دیتی ہے جن رشتوں کو انسان تلوار سے زمیع نہیں توڑ سکتا۔ آج ہمیں زبان چلانے کی بردی عادت ہے، ہروقت ہی بولتے رہتے ہیں، سننے کی عادت ہے۔ اوقت اللہ اللہ کا عادت ہے۔ ا

زبان برسی خوفناک چیز ہے:

چوں کہ زبان بڑی خوفتاک چیز ہے۔ زبان سے جس قدر تکلیفیں دوسرول کو پہنچتی ہیں، ہاتھ سے اس قدر تربیس پہنچتیں اور شدی پہنچائی جاسکتی ہیں۔ ہاتھ سے تو صرف وہاں تک تکلیف پہنچا کتے ہیں جہاں تک ہاتھ پہنچ گا اور اگر ہاتھ میں انگی ہے تو جہاں تک انگی پہنچ گی اور اگر ہاتھ میں بندوق ہے تو جہاں تک بندوق کی گولی پہنچ گی وہاں تک بندوق کی گولی پہنچ گی وہاں تک بندوق کی گولی پہنچ گی وہاں تک بندوق کی گولی ہے، کہنے گی وہاں تک بندوق کی گولی امریکہ تک پہنچ گی وہاں تک بندوق کی گولی ہے، کہنے گی وہاں تک بندوق کی گولی امریکہ تک پہنچ جاتی ہے، کہنے کی وہاں تک جاتک ہے۔ اس کی رہنے امریکہ تک پہنچ جاتی ہے، امریکہ میں بیٹے ہوئے تک ہے۔

پھریہ کہ ہاتھ سے آکلیف پہنچانے کے لئے طاقت کی بھی ضرورت ہے، اگر

آپ اپنے سے زیادہ طاقت ور آدی کو ہاتھ سے آکلیف پہنچانا چاہیں گے تو اولاً تو

ہمت بی نہیں ہوگی اور اگر پہنچائیں گے تو بہت مبنگی پڑجائے گی، لیکن زبان کے

ذریعے کرورے کرور آدی بڑے سے بڑے طاقت ور آدی کو تکلیف پہنچا دیتا ہے۔

زبان سے جرائم بھی بڑے برے برے ہوتے ہیں۔ زیادہ تر جھڑے اور جرائم زبان
کی وجہ سے ہوتے ہیں، ہاتھ کی وجہ سے کم ہوتے ہیں، گالی دیتا، فیبت کرنا، تہمت

لگانا وفیرہ یہ سب گناہ زبان سے ہوتے ہیں۔ ای لئے رسول کر بم شیف گئیسیا نے

استے ارشاد میں زبان کو ہاتھ سے پہلے ذکر کیا۔

اگر آدى زبان پر قابو پالے تو معاشرت كة و صال حل موجاتے بين

الله خطبات فقير: ١٤٧/٨

ضرورت فيش آئة فريالو

كم كوئى اختياركرنے كے طريقے

اس اصول برعمل بیرا کرنے کے لئے بڑے بڑے مجاہرے اور ریافتیس کرافیا جاتی ہیں کیوں کہ جس شخص کو زیادہ بولنے کی عادت ہوتی ہے، اس سے سے عادت جیٹر انا بردامشکل ہوتا ہے۔

نی اکرم ﷺ کے دل میں دومروں کو تکلیف سے بچانے کی می اللہ

ك اصلاحي تقريرين: ١١/٧ تا ٢٢

و الناس کا انداز وان بات سے لگائے کہ آپ طاب ایک مرتبہ جھ کے این فطبہ دے رہے تھی، است میں آپ طاب اللہ مرتبہ جھ ک دن فطبہ دے رہے تھی، است میں آپ طاب اللہ نے ویکھا کہ ایک صاحب اللی منوں تک ویکھا کہ ایک صاحب اللہ منوں تک ویکھی کے لئے لوگوں کی گردنیں مجل تلتے ہوئے آگے بڑھ دے ہیں،

منوں تک ویکھی نے منظر دکھے کر خطبہ روک دیا اور اُن صاحب سے خطاب کرتے

ہوے فرمایا: "بیٹے جاؤتم نے لوگوں کو افریت پہنچائی ہے۔" سان

نی اکرم میلی ایک نے خود ای مجد کی پہلی صف میں نماز پڑھنے کی بری افسیات بیان فرمائی ہے، بل کہ یہاں تک فرمایا ہے کداگر لوگوں کو معلوم ہوجائے کہ پہلی صف میں جگہ پانے کے لئے قرعدا تدازی کی سف میں جگہ پانے کے لئے قرعدا تدازی کرنے اگلیں ہے۔

الیمن میں ماری فضیلت ای وقت تک ہے جب تک پہلی صف میں فوضی کے۔
الے تکی دوسرے کو تکلیف ویٹی نہ پڑے، لیکن اگر اس سے تک کو تکلیف مینیخے گئے تو
میاسول سامنے رکھنا ضروری ہے کہ پہلی صف تک پہنچنا مستحب ہے، اور دوسرول کو
تکلیف سے بچانا واجب ہے، لبندا ایک مستحب کی خاطر کسی واجب کو چھوڑا نہیں جا
سکتا۔

معجد حرام می طواف کرتے ہوئے جراسودکو بوسد دینا بہت اجر و اواب رکھتا ہادراجادیث میں اس کی نجانے کئی فضیلتیں بیان کی گئی ہیں، لیکن ساتھ می تاکید ہے کہ اس فضیلت کے حصول کی کوشش اس صورت میں کرنی چاہئے جب اس سے کمی دوسرے کو تکایف نہ پہنچ ہے چناں چہ دھکے دے کر اور دھینگا مشتی کر کے ججر امود تک وینچ کی کوشش کرنا نہ صرف میں کہ اواب نہیں ہے بل کہ اس سے الٹا گناہ

ك من ابن ماجه، باب ماجاء في النبي عن تخطى الناس: ٧٨/١ - توملك. ١٩٨/٥ - ١٩٨٠ - توملك. ١٩٨٠

ت ترمذي، بأب ماجاء في تقبيل الحجر: ١٧٤/١

をごかに

تكايف كايبلاسبب: لاؤڈ الپيكر كاغلط استعال

"ایذا رسانی" کی ان بے شارصورتول میں سے ایک انتہائی آکلیف دوصورت لاؤڈ اسپیکر کا ظالمانداستعمال ہے۔

لاؤڈ اپلیکر کو اگر سیج استعال کیا جائے تو باعث تواب ہے لیکن اگراہے اپنے مقاصد ہے مثل اگراہے اپنے مقاصد ہے مثلاً اذان ، نماز اور دیگر ضرورت کے مواقع پر لاؤڈ اپلیکر کا استعال اس کے مقاصد میں ہے ہواراس کا بے جا استعال بغیر ضرورت کے او فیجی آ واز میں تعتیں ، اور دیگر نظمین وغیرہ مخلوق خدا کی تکلیف کا باعث ہیں۔

انجی چندروز پہلے ایک اگریزی روزنامے ٹی ایک صاحب نے شکایت کی ایک صاحب نے شکایت کی ہے کہ بعض شادی ہالوں ٹیل رات ٹین ہے تک لاؤڈ انٹیکر پرگانے بجائے کا سلسلہ جاری رہتا ہے، اور آس پاس کے بسنے والے بے چینی کے عالم میں کروٹین بدلتے رہے ہیں، اور ایک شادی ہال پر کیا موقوف ہے ہر جگد و کیھنے میں ایک آتا ہے کہ جب کوئی شخص کہیں لاؤڈ انٹیکر نصب کرتا ہے تو اُسے اس بات کی پروائیل ہوتی کہ اس کی آ واز کو صرف ضرورت کی حد تک محدود رکھا جائے، اور آس بائی کے اُن ضعیفوں اور بیاروں پروم کیا جائے جو بیآ واز سنانیس چاہے۔

گانے بجانے کا معاملہ تو الگ رہا، کہ اُس کو بلند آ واز سے پھیلانے میں ڈہری
برائی ہے، اگر کوئی خالص دینی اور ندنہی پروگرام ہوتو اُس میں بھی لوگوں کو لاؤڈ انٹیکر
کے ذریعے ذیروئی شریک کرنا شرقی اختبار سے ہرگز جائز نہیں ہے، لیکن افسوں ہے
کہ ہمارے معاشرے میں سیاسی اور ندئی پروگرام متعقد کرنے والے حفزات بھی
شریعت کے اس اہم تھم کا بالکل خیال نہیں کرتے۔ سیاسی اور ندنہی جلسوں کے
لاؤڈ انٹیکر بھی دور دور تک مار کرتے ہیں اور اُن کی موجودگی میں کوئی شخص اسے گھر

ہونے کا اندیشہ ہے، اگر کسی شخص کو تمام عمر تجرِ اسود کا بوسد مندل سکے تو ان شاہ اللہ اس سے بید باز پرس نہیں ہوگی کہ تم نے تجرِ اسود کا بوسہ کیوں نہیں لیا؟ لیکن اگر بوسے لینے کے لئے کسی کمزور شخص کو دھکا دے کر تکلیف پہنچا دی تو بیدایسا گناہ ہے جس کی معافی اس وقت تک نہیں ہوسکتی جب تک وہ شخص معاف نہ کر دے۔

غرض اسلام نے اپنی تعلیمات میں قدم قدم پر اس بات کا خیال رکھا ہے کہ ایک انسان دوسرے کے لئے تکلیف کا باعث ند ہے، اسلام کی بیشتر معاشرتی تعلیمات ای محور کے کرد گھومتی ہیں جس کا خلاصہ بیہے:

- تمام عمر ای احتیاط میں گزری یہ آشیاں کسی شاخ چن پہ بار نہ ہو

ظلم صرف بيدى نبين ہے كہ كى كا مال چين اليا جائے ، يا اسے جسمانى الكيف پہنچانے كے لئے اس پر ہاتھ الله الله جائے ، بل كدعر بى زبان ميں "ظلم" كى اتعريف بيد كى گئى ہے: "وَصْعُ النَّسْيَى فِي غَيْدٍ مَوْضِعِهِ ظُلْمٌ " " "كسى بحى چيز كو بے جگہ استعال كرنا ظلم ہے " چوں كه كسى چيز كا بے كل استعال يقينا كسى نه كسى كو تكليف بين واض پہنچانے كا موجب ہوتا ہے ، اس لئے ہر ايسا استعال "ظلم" كى تعريف ميں داخل بين بين كا موجب ہوتا ہے ، اس لئے ہر ايسا استعال "ظلم" كى تعريف ميں داخل ہے ، اور اگر اس سے كسى انسان كو تكليف پنجى ہے تو وہ شرقى اعتبار سے كناه كبيرہ بھى بين جي دوائل طرح روائ ہے۔ ليكن جمارے معاشرے ميں اس طرح كے بہت سے گناه كہيرہ اس طرح روائح ہے۔ ليكن جمارے معاشرے من اس طرح كے بہت سے گناه كہيرہ اس طرح روائح بيا گئے ہيں كداب عام طورے ان كے گناه ہونے كا احساس بھى باتى خيوں رہا۔

اب ہم أن اسباب كو ذكر كريں كے جن كے ذريعے ہے كسى بھى انسان كو تكليف تكليف بوسكة ان سے بچا جائے تاكه مسلمان كو تكليف دينے كے گناہ سے بچا جائے تاكه مسلمان كو تكليف دينے كے گناہ سے بچا جا سكے۔

ك ذكروفكر: ص١٦ تا٢٢

كتاب التعريفات، باب الطاء: ص١٠٦

(بایک دلید کم دریت

یہ کام نہیں کر سکتے ، لیکن ایسا اُن مسجدوں میں ہوتا ہے جہاں کا انتظام علم دین ہے بادافف حفرات پوری نیک بیتی ہے یہ کام کرتے ہیں، وہ اے دین کی تبلیغ کا ایک ڈرید تجھتے اور اے دین کی خدمت قرار دیتے ہیں۔ کام کرتے ہیں، وہ اے دین کی تبلیغ کا ایک ڈرید تجھتے اور اے دین کی خدمت قرار دیتے ہیں۔ لیکن ہمارے معاشرے ہیں ہید اصول بھی بہت غلط مشہور ہوگیا ہے کہ نیت کی اچھائی ہے کوئی غلط کام بھی جائز اور سجھ ہو جاتا ہے، واقعہ ہے کہ کسی کام کے درست ہونے کے لئے صرف نیک نیتی ہی کافی نمیں، اس کا طریقہ بھی درست ہونا ضروری ہے۔ اور لاؤڈ انٹیکر کا ایسا طالمانہ استعمال نہ صرف ہے کہ دوعت و تبلیغ کے بیادی اصواوں کے خلاف ہے، بل کداس کے اُلئے نتائج برآ بدہوتے ہیں۔ بیادی اصواوں کے خلاف ہے، بل کداس کے اُلئے نتائج برآ بدہوتے ہیں۔

جن جعزات کو اس سلسلے میں کوئی فلط فہی ہو، اُن کی خدمت میں وردمندی اور ول سوزی کے ساتھ چند نکات ذیل میں پیش کرتا ہوں:

D مشہور محدث حضرت عمر بن شب و تحقید الذائ تفال ف مدید منورہ کی تاریخ یہ جار جلدول میں بڑی مفصل کاب السی ہے جس کا حوالہ بڑے بڑے علماء محمثین بیشددیے رہے ہیں۔ اس کتاب میں انہوں نے ایک واقعداری سندے روایت کیا ب كدائيك واعظ صاحب معفرت عائش رَفِحُالِقَابَتَغَالِكُفَا كَعُمكان ك بالكل سامن ببت بلند آوازے وعظ كماكرتے تھے، ظاہر بكدوه زماند لاؤؤ التيكركانيل تھا، ليكن أن كى آواز ببت بلند هى، اوراس عد معرت عائشه رَضَوَاللَا إِتَعَالَ عَفَا كَل يكسولَى ين فرق آتا تها، يه حفرت فاروق المقم رَفَعَالِينَا فَكَالِفَ كَا خلافت كا زبانه تها، اس لے معرت عائث وفالله وقال علاق الحالات عر وفالله والله على ك يد صاحب بلند آواز س مير ع تحرك ما من وعظ كهتر رج بي، جي س مجھ تكليف بوتى ب، اور جھے كى اوركى آواز سائى تبين وين دعفرت مر رفي كالفظافي نے اُن صاحب کو بیغام بھیج کر اُٹیس وہاں وعظ کہنے سے منع کیا۔ لیکن پھی عرصے بعد واعظ صاحب نے دوبارہ وی سلسلہ شروع کر دیا۔ حضرت عمر رفع النظاف کو (必必必必)

یں نہ آ رام سے سوسکتا ہے، نہ یکسونی کے ساتھ اپنا کوئی کام کرسکتا ہے۔

لاؤڈ اٹیکیر کے ذریعے اذان کی آ واز دور تک پہنچانا تو برخل ہے، لیکن مسجدول پی جو وعظ اور تقریریں یا ذکر و تلاوت لاؤڈ اٹیکیر پر ہوتی ہیں، اُن کی آ واز دور دور

یک پہنچانے کا کوئی جواز نہیں ہے۔ اکثر دیکھنے ہیں آتا ہے کہ مسجد ہیں بہت تھوڑے ہے لوگ وعظ یا دری سننے کے لئے بیٹھے ہیں جن کو آ واز پہنچانے کے لئے اور اور دائر اور انہیں ہے، یا صرف اندرونی اٹیکیر سے باسانی لاؤڈ اٹیکیر کی سرے سے ضرورت بی نہیں ہے، یا صرف اندرونی اٹیکیر سے باسانی کام چل سکتا ہے، لیکن بیرونی لاؤڈ اٹیکیکر پوری قوت سے کھلا ہوتا ہے، ادر اس کے متاز شرح بیل سے متاز ہوں ہے۔ کوئی شخص اس سے متاز شرح بیل ہوتا ہے، ادر اس کے متاز شرح بیل بینی ہے کہ کوئی شخص اس سے متاز شرح بیل ہوتا ہے، ادر اس کے دینے بیل ہیں ہوتا ہے، ادر اس کے دینے بیل ہوتا ہے، ادر اس کے دینے ہوتا ہے دینے ہوتا ہے دینے ہوتا ہے، ادر اس کے دینے ہوتا ہے، ادر اس کے دینے ہوتا ہے، ادر اس کے دینے ہوتا ہے، اس کے دینے ہوتا ہے دینے ہوتا ہے، ادر اس کے دینے ہوتا ہے دینے ہوتا ہے، ادر اس کے دینے ہوتا ہوتا ہے، ادر اس کے دینے ہوتا ہے دینے ہ

حضرت مفتی آتی عثانی صاحب فرماتے ہیں: "فیصے یاد ہے کہ ہیں ایک مرتبہ فاہور گیا، جس مکان ہیں میرا قیام تھا، اُس کے تین طرف تھوڑے تھوڑے فاصلے ہے تین مبحد ہیں مکان ہیں میرا قیام تھا، اُس کے تین طرف تھوڑے تھوڑے فاصلے ہے تین مبحد ہیں تھیں، جعد کا دن تھا، فیر کی نماز کے فوراً ابعد سے تینوں مبحدوں کے لاؤڈ ائٹیکر پوری قوت سے کھل گئے، اور پہلے دراں شروع ہوا، پیراں تیک کہ فیر کے شروع کر دی، پیر نظمین اور نعین پڑھنے کا سلسلہ شروع ہوا، یہاں تک کہ فیر کے وقت سے جمعد تک یہ اُندہ ہی پروگرام "اس طرح ہے تکان جاری رہے کہ گھر میں کسی وقت کوئی کے اس میں موج دہا تھا کہ اگر فواننو استہ کوئی شمس میں موج دہا تھا کہ اگر فواننو استہ کوئی شخص بیار ہوتو اُس کوسکون کے ساتھ لٹانے کا اس ماحول میں کوئی راستہ نہیں۔"

بعض مسجدوں کے بارے میں یہ سننے میں آیا ہے کہ دہاں خالی مسجد میں الاؤڈ اسپئیکر پر شیپ جلا دیا جاتا ہے، مسجد میں سننے والا کوئی نہیں ہوتا، لیکن پورے محلے کو بیہ میپ زبردی سننا پڑتا ہے۔

دين كى سجح فهم ركحته والے اہل علم خواد كمي مكتب فكر سے تعلق ركھتے ہول المحلى

(بين العراديث)

سیسمارے آ داب در حقیقت خود حضور سرور کوئین بیلی تیکی نے اپ قول و فعل سے تعلیم فرمائے ہیں۔ مضبور واقعہ ہے کہ آپ میلی تیکی تیکی خطرت فاروق اعظم رفعن النظم فرمائے ہیں۔ مضبور واقعہ ہے کہ آپ میلی تیکی تعلق النظم کے پاس سے گزرے، وہ تجد کی نماز میں بلند آ واز سے تعاوت کر سے منتقد

آپ فَيْكَ فَيْكَ فَيْكَ الله فَ لِهِ جِهَا كدوه بلند آواز سے كيول علاوت كرتے بين؟ حضرت عمر وَفَعَالَ الله فَالْكَ فَ جواب ديا: "مِن سوت كو جگاتا بول، اور شيطان كو بهكاتا بول" آن حضرت فَيْكَ فَيْكَ اللّه الله فَيْمَال الله الله الله الله والله كرفهورا لهت كر يك،

ا نبی احادیث و آثار کی روثن میں تمام فقہا وامت رَجِّعَبُهُاللّاَاُتُعَاَلَا اس بات پر منتق میں کہ تبجد کی نماز میں اتن بلند آواز سے تلاوت کرنا جس سے کسی کی فیندخراب موں ہرگز جائز نہیں۔فقہاء نے لکھا ہے کہ اگر کوئی شخص اپنے گھر کی حیست پر بلند آواز سے تلاوت کرے جب کہ ٹوگ سورہے ہول او تلاوت کرنے والا گناہ گارہے۔

ایک مرتبہ ایک صاحب نے بیسوال ایک استفتاء کی صورت بیس مرتب کیا تھا کہ بعض مساجد میں تراوی کی قر اُت لاؤؤ انٹیکر پراتی بلند آ وازے کی جاتی ہے کہ اس سے محلے کی خواجین کے لئے گھروں میں نماز پڑھنا مشکل ہوجاتا ہے، نیز جن مریضوں اور کمزورلوگوں کوعلاجا جلدی سونا ضروری ہو وہ سونبیں سکتے ، اس کے علاوہ باہر کے لوگ قر آن کریم کی خلاوت اوب سے سننے پر قادر نہیں ہوتے۔ اور بعض مرتبہ ایسا بھی ہوتا ہے کہ خلاوت کے دوران کوئی سجدے کی آیت آ جاتی ہے، سننے والوں پرسجدہ واجب ہوجاتا ہے، اور یا تو ان کو بعد ہی نہیں چلنا، یا وہ وضو سے نہیں ہوتے ، اس لے سجدہ نہیں کرات کے دوران کو بعد ہی نہیں چلنا، یا وہ وضو سے نہیں ہوتے ، اس لیے سجدہ نہیں کر سکتے ، اور بعد بین بھول ہوجاتی ہے۔ کیا ان حالات

ك تومدى، باب ماجاء في القواء ة باللهل: ١٠٠/١

ك خلاصة الفناوى: ١٠٣/١ شامى: ١/٣٠١ تا ١١٤٤

اطلاع ہوئی تو انہوں نے خود جا کر اُن صاحب کو پکڑا، اور اُن پرتعزیری سزا جاری کی ملک

بات صرف بینبین تنمی که حضرت عائشہ وَ وَاللّهُ اللّهُ قَالَ بِي آكلیف کا ازاله کرنا چاہتی تھیں، بل که دراسل وہ اسلامی معاشرت کے اصول کو واضح اور نافذ کرنا چاہتی تھیں کہ کسی کو کسی ہے کوئی آگلیف نہ پہنچے، نیز یہ بتانا چاہتی تھیں کہ وین کی وعوت و تبلیغ کا پروقار طریقہ کیا ہے؟

چناں چدامام احمد وَجِعَبَهُ اللّهُ تَعْقَالَتُ فَ اپنی مندیس روایت نقل کی ہے: ایک مرتبه اُمّ الموثنین حضرت عائش وَحَقَالَاللَّهُ النَّقَالَةِ عَلَى اللّهُ وَعَظَا وَ وَعَظَا وَ مَا اللّهُ عَلَى اللّهُ وَعَظَا وَ وَعَظَا وَ اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّ

"اپنی آ واز کو انہی لوگوں کی حد تک محدود رکھو جو تنہاری مجلس میں بیٹے ہیں، اور انہیں بھی اُسی وقت تک دین کی باتیں ساؤ جب تک ان کے چبرے تنہاری طرف متوجہ ہوں، جب وہ چبرے بھیر لیس، تو تم بھی رک جاؤاور ایسا بھی نہ ہونا چاہئے کہ لوگ آ بھی ش با تیں کر رہے ہوں اور تم ان کی بات کاٹ کر اپنی بات شروع کر دو، بل کہ ایسے موقعہ پر خاموش رہو، پھر جب وو تم سے فرمائش کریں تو آئیس وین کی بات ساؤ۔ است

صحرت عطاء بن الى رباح رَجْعَبُ اللهُ تَعْمَالِنَهُ مَعْمَالُهُ بِرْ او تَحْجُ ورج كَ تابعين ميں سے جيں علم تغيير وحديث جي ان كا مقام مسلم ب، ان كا مقولہ ب: "عالم كو جائے كداس كى آ وازاس كى الى مجلس سے آگے ند بر سے""

اخبار المدينة لعموين شبع: ١٥/١

ع مجمع الزوالد: ١٩١/١

ك ادب الاملاء والاستملاء للسمعاني: ص٥

تعلق حقوق العباد كے اس تقين شعبے ہے ہے، ہمارے علاء نے فقد كى كتابول بيل اس مسئلے پر بحث كى ہے كہ جس شخص كا مكان سؤك كے كنارے واقع ہو، وہ اپنی كوركى پر سائبان لگا سكتا ہے يانبيس؟ اور اگر نگا سكتا ہے تو زيادہ سے زيادہ كتا لمبا چوڑا؟ حالال كرسائبان لگانے ہے زيان كے كسى جھے پر تبضي ہوتا، بل كرفضا كا بہت تحوز اسا حصد استعال ہوتا ہے۔

نیز یہ مسئلہ بھی فقہاء کے بہال زیر بحث آیا ہے کہ جس شخص نے عام لوگوں کی گزرگاہ پر داستہ روک کر دکان لگا کی ہواس سے کوئی چیز خرید تا جائز ہے یا نہیں؟ بعض فقہاء کہتے ہیں کدائ شخص نے چوں کہ توام کا حق فصب کر رکھا ہے البندا اس سے سودا خرید تا اس کی خاصبانہ کارروائی ہیں تعاون ہے، اس لئے اس سے کوئی چیز خرید تا جائز نہیں، بعض دوسر نقہاء اگر چہ اس حد تک ٹبیس گئے، لیکن انہوں نے بیہ کہا کہ اگر سیامید ہوکہ سودا نہ ترید نے سے اس کوائی خلطی کا احساس ہوگا اور وہ اپنی اس حرکت سیامید ہوکہ سودا نہ ترید نے سے اس کوائی خلطی کا احساس ہوگا اور وہ اپنی اس حرکت سے باز آجائے گا تو اس سے واقعی سودا خرید تا نہ جائے، اس سے بیا تدازہ لگایا جا سکتا ہے کہ اسلامی قانون تجاوزات کے بارے ہیں کتا حساس ہے؟

ہارے معاشرے میں تجاوزات کوئی قابل و کرعیب ہی نہیں رہے جس کا جی چاہتا ہے وہ اپنے مکان یا دکان کے گردیا پوری سرکاری زمین پر قبضہ جاتا ہے، علی کہ جمارے گرد و پیش میں جس طرح سے تجاوزات تھیلے ہوئے ہیں ان میں ایک نہیں کئی گئاہ بیک وقت جمع ہیں۔

🛈 عوامی زمین برناجائز قبضه بی برانتگین گناه ہے۔

﴿ دوسرے عموماً ان تجاوزات سے راستہ چلنے والوں کو بڑی تکلیف ہوتی ہے، اور راہ گیرول کے رائے جس پر حدیث بیں راہ گیرول کے رائے جس پر حدیث بیں سخت وعید آئی ہے۔

ا ہمارے ماحول میں یہ تجاوزات رشوت خوری کے فروغ کا بہت بڑا ذریعہ بنی برا دریعہ بنی برا دریعہ بنی برا دریعہ بنی

ين تراور كا ك دوران بيروني لاؤۋا تا يكرزور ي كولنا شرعاً جائز ب؟

یہ سوال مختلف علماء کے پاس بھیجا گیا، اور سب نے متفقہ جواب یہی دیا کہ ان حالات میں تراوت کی تلاوت میں بیرونی لاؤڈ اٹھیکر بلاضرورت زورے کھولنا شرعاً جائز شیس ہے، بیفتوی ماہنامہ'البلاغ'' کی محرم بے ممالے کی اشاعت میں شالکع ہوا ہے۔ اور واقعہ بیہ ہے کہ بیکوئی اختلافی مسئل نہیں ہے، اس پرتمام مکا تب فکر کے علماء متفق ہیں۔

رمضان کا مہینہ عبادات اور برکات کا مہینہ ہے، یہ مہینہ ہم سے شرقی احکام کی سختی کے ساتھ پابندی کا مطالبہ کرتا ہے، یہ عبادلوں کا مہینہ ہے، اور اس میں نماز، الاوت اور ذکر جتنا بھی ہوسکے، باعث فضیلت ہے۔ لیکن ہمیں چاہئے کہ یہ ساری عبادتی اس طرح انجام دیں کہ اُن سے کسی کو تکلیف نہ پنچے، اور ناجائز طریقوں کی بدولت ان عبادلوں کا تواب ضائع نہ ہو۔ لاؤڈ انٹیکر کا استعمال صرف بوقت ضرورت بدولت ان عبادلوں کا تواب ضائع نہ ہو۔ لاؤڈ انٹیکر کا استعمال صرف بوقت ضرورت اور بھتدرضرورت کیا جائے، اس سے آ مے نہیں۔

ندگورہ بالا گزارشات سے اندازہ لگایا جا سکتا ہے کہ شرایعت نے دوسروں کو
الکیف سے بچانے کا کتنا اہتمام کیا ہے؟ جب قرآن کریم کی تلاوت اور وعظ الھیجت جیے مقدس کاموں کے بارے میں بھی شریعت کی ہدایت ہیہ ہے کہ ان کی
آ واز ضرورت کے مقامات سے آ گے نہیں بڑھنی چاہئے، تو گانے بجانے اور دوسری لغویات کے بارے میں خود اندازہ کر لیجئے کہ ان کو لاؤڈ اپٹیکر پر انجام دینے کا کس قدر دہراویال ہے؟ سال

🕜 تكليف كا دوسرا سب: ناجائز تجاوزات

ای طرح سرکاری زمینوں پر تجاوزات ای متم کی غاصباند کاروائی ہے جس کا

ا ذکروفکو:ص۱۲تا۲۹

2010

موئی میں کیوں کدائیں باتی رکنے کے لئے متعلقہ المکارکو" بحت" ویتا براتا ہے، اور سے بجت ایک مرتبه دینا کافی نہیں ہوتا، بل که ہفتہ وار یا مابان مخوّاه کی طرح اس کی ادا لیکی ضروری ہوتی ہے جس کا نتیجہ سے ہوتا ہے کدائ قتم کے المکارول سے یہی جا ہے ہیں اوراس کی بوری کوشش بھی کرتے ہیں کدیہ تجاوزات حتم ند ہول، تا کدان کی "آ مدنی" كايدة ربعد بندنه مونے يائے ، البذان كواسية فرائض سے غافل كرنے بل كدفرائض کے برنکس کام کرنے کا گناہ بھی اس میں شامل ہوتو بعید نہیں۔

🕝 تكليف كالتيسراسب: كزرگامول مين رُكاوث دُالنا

اس طرح ہمارے ملک میں بیا بھی عام رواج ہوگیا ہے کہ جلسوں اور تقریبات کے لئے چکتی ہوئی سڑک روک کرشامیانے اور قناتیں لگالی جاتی ہیں، اور اس کے متیج میں آئے جانے والی گاڑیوں کو مشکلات کا سامنا کرنا برتا ہے، اور ٹریفک کے نظام میں بعض اوقات شدیدخلل وقع ہوجاتا ہے، سے بات ہرمسلمان جانتا ہے کدا کر کوئی تحض نماز پڑھ رہا ہوتواں کے مامنے سے گزرنا جائز نیل ۔

ا حادیث میں اس بات کی سخت تا کید کی گئی ہے کہ کوئی بھی مخف کسی تمازی کے سامنے سے نہ گزرے ملے لیکن ساتھ جی شریعت نے نماز پڑھنے والے کو یہ بھی ہدایت کی ہے کہ وہ ایسی جگہ نماز پڑھنا شروع نہ کرے جہاں لوگوں کو گزرنے میں دشواری ہو،مثلاً مجد کا محن اگر کھلا ہوا ہے تو محن کے بیول کے یاس کے آخری سرے برنماز کے لئے کھڑے ہو جانا اس صورت بیں جائز نہیں جب سامنے لوگوں کے گز دنے کی جگہ ہواور نماز شروع کرنے کی دجہ ہے آئیں لیبا چکر کاٹ کر جانا پڑتا ہو۔

للة الحكم بدديا ميا ب كدايس جكه فماز يرهو جهال يا تو سامنے كوئى ستون وغيره ہو جس کے چھیے سے لوگ گزر عیس یا سامنے تماز ہی کی صفیں ہوں۔ اگر کوئی محف

له ترمذی، باب ماجاء فی کراهیة المرور بین المصلی: ۷۹/۱ که ترمذی، باب ماجاء فی سترة المصلی: ۷۸/۱

اس بدایت کا خیال ندر کھے اور محن کے نتوں چ نماز بڑھنے کھڑا ہو جائے تو یہاں تک کہا گیا ہے کہ الی صورت میں کوئی محض نمازی کے سامنے سے گزرنے پر مجبود موجائے تو اس كررنے كا كناه تمازيد عن والے ير موكا سامنے سے كزرتے

غور فرمائي كه مجدين عموماً يبت بزي نبيس موتيس، اور اگر كسي تحض كو چكر كاث كر تكانا يزے أو اس كے ايك دومنے سے زيادہ خرج نہيں ہوتے، ليكن شريعت نے اس ایک دومن کی تکلیف یا تا خرکویمی گوارائیس کیا، اور تمازی کوتا کیدفر مائی ہے کہ وولوگوں کواس معمولی آلکیف ہے بھی بچائے، ورند گناہ گار وہ خود ہوگا۔

ایک مخص نماز پڑھ رہا ہے آپ کوائی سے کچھ کام ہے۔اب آپ اس کے بالكل قريب جاكر بين كئے اوراس كے ذہن يربية قرسواركر دى كديس تمهارا انظار كرربا مول يتم جلدي سايق تماز يورى كروتا كديش تم علاقات كرول-اوركام كراؤل _ چنال جدآب ك قريب بيضن كى وجد ال كى نماز بين خلل واقع موكيا _ اوراس کے دماغ برید بوجھ بیٹھ گیا کہ سیخفس میرے انتظار میں ہے، اس کا انتظار متم كرنا جائة _ اورجلدى عافرة حم كركاس عداقات كرفى جائة والال كد یہ بات آ داب میں داخل ہے کہ اگر آپ کوئسی ایسے مخص سے ملاقات کرنی ہے جو اس وقت تمازیس مصروف ہے تو تم دور بیٹے کر اس کے فارغ ہونے کا انتظار کرو، جب وہ خودے فارغ ہوجائے تو پھر ملاقات کرد کیکن اس کے بالکل قریب بیٹے کر بيتأثر ويناك ين تههارا انتظار كررما مول البذائم فماز جلدي يوري كرو ابيا تأثر وينا اوب کے خلاف ہے۔اس سے نمازی کو ذہنی طور پر بھی تکلیف ہوگی۔

جب شرایت کو بیا بھی گوارائیس کدکوئی محض حاری وجدے اس معمولی تکلیف یں جتا ہوتو سڑک کو بالکل بند کرے لوگوں کو دور کا راستہ اختیار کرنے پر مجبور کرتا

له اصلاحی خطبات ۱۳۳/۸

بالخصوص آج کی مصروف زندگی میں اگر کسی محض کو اپنی منزل مقصود تک کنیخے
میں چند من کی تاخیر بھی ہو جائے تو بعض اوقات اس کو نا قابل تلافی نقصان بینی جاتا ہے، کسی بیار کو اسپتال پہنچانا ہو یا کسی بیار کے لئے دوالے جانی ہو یا کوئی مسافر ریلوے اشیشن یا ہوائی اڈے پہنچنا چاہتا ہو، اور ہمارے جلنے یا تقریب کی وج سے اے پہنچ یا دس من کی تاخیر ہوجائے تو کہنے کو بیتا خیر پانچ واس من کی ہے، لیکن اس تاخیر کے بیتے مسافر اپنے سفر سے بالگلید محروم اس تاخیر کے بیتے مسافر اپنے سفر سے بالگلید محروم بھی ہوسکتا ہے مسافر اپنے سفر سے بالگلید محروم بھی ہوسکتا ہے مسافر اپنے سفر سے بالگلید محروم بھی ہوسکتا ہے مسافر اپنے سفر سے بالگلید محروم بھی ہوسکتا ہے مسافر اپنے سفر سے بالگلید محروم بھی ہوسکتا ہے مسافر اپنے سفر سے بالگلید محروم

جن جن لوگول کواس طرح کا نقصان پہنچا ہو جمیں شان کا نام معلوم ہے نہ پہنا اور نہ نقصان کی نوعیت، لہذا اگر اس گناہ کی خلافی کرنا بھی چاہیں تو اس کا کوئی راستہ افتیار میں نہیں اس طرح کے جلے جلوسوں کا شرعی جواز بھی مشکوک معلوم ہوتا ہے جو گھنٹوں کے لئے آید و رفت کا نظام درہم برہم کرکے عام لوگوں کو نا قابل بیان اؤتیوں میں جنلا کر دیتے ہیں، کیوں کہ بیرساری خرابیاں ان میں بھی بدورجہ اتم موجود

الكيف كاجوتفاسب: شابرامول بركهيلنا

سے مناظر بھی بکٹرت و کیجئے ہیں آتے ہیں کہ سڑکوں کو کرکٹ کا میدان بنالیا جاتا ہے، اور سڑک کے بچوں نے وکٹ یا وکٹ نما کوئی چیز نصب کرکے با قاعدہ تھیل شروع ہو جاتا ہے، آس پاس کی ہر کھڑی یا چلتی ہوئی گاڑی ہیشسین کے چوکوں کی زد ہیں ہوتی ہے، اور گیند کے پیچھے دوڑتے ہوئے فیلڈر آنے جانے والی گاڑی کی زوجی، بیدمنظر گلیوں اور چھوٹی سڑکوں پر تو نظر آتا ہی رہتا ہے، لیکن پھے عرصہ سے بید دیکھا گیا ہے کہ بین روڈ پر با قاعدہ تھے ہوتے ہیں جہاں عام طور سے گاڑیاں ساتھ

یہ کاویسٹر فی سکھنے کی رفتار سے دوڑتی ہیں، یہ عوامی سرئک کا سراسر ناجائز استعمال تو ہے ہی خود کھیلنے والوں کے لحاظ ہے بھی اقدام خودکشی ہے کم نہیں، گیند کے پیچھے دوڑنے والے کے تمام تر ہوش وحواس گیند پر سرکوز ہوتے ہیں، اور وہ ایکا یک چیش آ جانے والی کسی صورت حال کی وجہ ہے اپنے جسم کو کنٹرول کرنے پر قادر نہیں ہوتا، لہٰذا اچا تک کوئی گاڑی سامنے آ جائے تو کوئی بھی حادثہ چیش آ سکتا ہے، اور اس شم سے حادثات چیش آ بھی چکے ہیں، اور جب اس کھیل کے بیتیج بیں جائیں تک چلی گئی ہیں تو گاڑیاں اور ان کے شیشے ٹو شنے کا کیا شار؟

اس صورت حال کی ذ مدداری ان نوعمر کھیلنے دانوں سے زیادہ ان کے دالدین ، سر پرستوں اور ان سرکاری کارندوں پر عائد ہوتی ہے جو انہیں اس خطرناک کھیل ہیں مصروف دیکھتے ہیں، اور اس سے باز رکھنے کی کوشش نہیں کرتے، دوسری طرف برے شہروں میں کھیل کے میدانوں کی کمی بھی اس صورت حال کا سب ہے جس کی طرف حکومت کو توجہ دیے کی ضرورت ہے۔

@ تكليف كا يانجوال سبب: غلط باركنگ

مڑکوں پر بے جگہ گاڑیوں کی پارٹگ بھی ایک ایسا مسئلہ ہے جس میں ہم انتہائی بے حسی کا شکار ہیں۔ پچوٹی گاڑیاں تو ایک طرف رہیں بڑی بردی ویکنیں اور بسیں بھی ایسی جگہ کھڑی کر دی جاتی ہیں کہ آنے جانے والوں کا راستہ بند ہو جاتا ہے، یا گزرنے والوں کو خت مشکلات کا سامنا کرنا پڑتا ہے، چوں کہ ہم نے دین کو صرف نماز روزے ہی کی حد تک محدود کر رکھا ہے، اس لئے بیٹمل کرتے وقت کسی کو سے وصیان نہیں آتا کہ ایسا کرنے والا محض ہے قاعدگی کا نہیں بل کہ ایک ایسے بڑے وصیان نہیں آتا کہ ایسا کرنے والا محض ہے قاعدگی کا نہیں بل کہ ایک ایسے بڑے برے گناہوں کا مرتکب ہورہا ہے جس کا تعلق حقوق العبادے ہے۔

(يَكِينَ (المِيلُ (المِينَ

ناجائز استعال ب، جوفصب كالناهين واقل بـ

ا عاكم كالك جائز علم كى خلاف ورزى بـ

P اس ب قاعد كى كے متيج ميں جس جس مخض كو تكليف يہنے كى، اسے تكليف پنجانے کا گناہ الگ ہے اس طرح بیمل جو غفلت اور بے دصیانی کے عالم میں روز مره ہوتا ہے، بیک وقت کی گناہوں کا مجموعہ ہے، جن پر دنیا میں جالان ہو یا نہ ہو، آخرت يل ضرور بازيرى موكى-

ای طرح بعض جگه یار کنگ قانونا ممنوع نہیں ہوتی الیکن گاڑی اس انداز ہے كفرى كردى جاتى بكرة على يحيى كاثريال سرك نبيل سكتين، يا كزرف والول كو کوئی اور تکلیف چیش آتی ہے، پینل بھی دینی اعتبارے سراسر ٹاجائز اور گناہ ہے۔ ہاری فقد کی قدیم کتابیں اس زمانے میں لکھی گئی ہیں جب خود کار گاڑیوں (آ ٹوموبائلز) کا رواج نہیں تھا، اور سفر کے لئے عموماً جانور استعمال ہوتے ہتے، اس لے ٹرافک کا نظام اتنا و بجیدہ نیس تھا جتنا آئ ہے، اس کے باوجود مارے فقہائے كرام نے سر كول ير چلنے اور گاڑيوں كے تشہرائے كے بارے ميں شرى احكام كى تفصیل نہایت آسان تشریح کے ساتھ بیان کی ہے، اور اس سے اسلامی تعلیمات کی ہم۔ گیری کا بھی اندازہ ہوتا ہے، اور اس بات کا بھی کد اسلام بیں نظم و ضبط اور حقوق العباد كي متنى ابهيت ٢٠

اس كا تقاضا بدے كه بحيثيت مسلمان جارانظم وضبط اور جارى تبذيب وشائقكى . مثانی ہو، کیکن افسوں ہے کہ اپنی غفلت اور بے دھیانی کی وجہ سے ہم اس فتم کے بے شار گناہ روزانداین نامة اعمال میں شامل كرے اپنى آخرت بھى خراب كررہے ہيں، اور دنیا مجرکواین بارے میں وہ تأثر بھی دے رہے ہیں جوند صرف ہم سے نفرت کا باعث بنآ ہے بل كداسلام كى چىكتى موئى تعليمات پر مارى برملى كا نقاب ۋال ديتا

ے جس کی وجہ سے دورین کا سی حسن دیکھنے سے محروم رہ جاتے ہیں۔ حضرت مفتى تقى عثاني صاحب مظله فرمات مين: آج ع تقريباً بعده سال بلے جب میں پہلی بارجونی افراقة كيا تؤكسى جديد ترقى يافته ملك كى طرف وه ميرا ببلا سفرتها، اب توجنونی افریقه براس طور پرآزاد جوچکا ہے، اور وہال سلی امتیاز کی یالیسی ایک قصهٔ پاریند بن چکی ہے، سین ان دنوں وہاں سفید فام ڈی محکمرانوں کا راج تھا، اور نسلی امتیاز کے قوانین پوری آب و تاب پر تھے، چنال چہ بڑے شہرول میں مستقل رہائش کا حق صرف گوروں کو حاصل تھا، دوسری تسلوں کے لوگوں کے لئے الگ الگ آبادیان قائم محص، جوان بوے شہرون سے کافی فاصلے پر واقع محس، جو بانسرگ سے تقریباً تمیں میل دور آیک ایسی بی خوب صورت آبادی" آزاد ویل" ك نام سے بسائي كئي تھى جوتمام تر ہندوستاني نسل كے باشندوں كے لئے مخصوص تھى، مارے میزبان چوں کدای آبادی میں رہتے تھے، اس لئے مارا قیام بھی وہیں ہوا، یہ بری برفضائستی تھی، جوزیادہ تر رہائٹی مکانات پر مشتل تھی۔ تھوڑی آبادی کے لئے اكرايك وسي رقع رقبي يرمضوبه بندى كے ساتھ مكانات بنائے جاكيں تو ظاہر ب كريستى ين كشادكى كا احساس موگا، يهي صورت يبال بهي تقى كه بيستى بهت خوبصورت كنتي تھی، کھلی تھلی، پرسکون، اور حدورجہ صاف ستھری۔ یبال کے مکینوں میں سے تقریبا ہر مخص کے یاس اپنی اپنی کارتھی، لیکن سر کوں پر جوم کا سوال ہی نہیں تھا، پیدل چلنے

سراك يراكا وكا علنه والے نظر آجاتے ، اور وہ بھى زيادہ ترفث پاتھ پر، ورنه سر کیس زیادہ تر سنسان بڑی رہتی تھیں، لیکن ان سنسان سر کول پر بھی ہر چھوٹے ہے چھوٹے موڑ کے کنارے زمین پر ایک سیاہ لائن مینجی نظر آتی تھی، اور بعض مقامات ير مور ك بغير بهي، ين في كارين سفركرت ويكا كدكار جلاف والااس

ك ذكرو فكو: ص١٢٣ تا ١٣٨

الأن پر پہنچ کر چند کھوں کے لئے رکتا، اور دائیں بائیں دیکھنے کے بعد پھر آگے بردھتا،
میرے لئے جیرت انگیز بات بیتھی کہ سڑک دور دور تک سنسان پڑی ہے، اور کس
آنے جانے والا کا نام ونشان نہیں ہے، اس کے باوجود ڈرائیورخواہ کتنی جلدی ہیں ہو،
یا باتوں میں کتنا مشغول ہو، اس لکیر پر پہنچ کر رکتا ضرور ہے، اور اس کی گردن خود بخود دائیں بائیں اس طرح مر جاتی ہے جیسے کوئی خود کار مشین کسی ریموٹ کنٹرول کے دائیں بائیں اس طرح مر جاتی ہے جیسے کوئی خود کار مشین کسی ریموٹ کنٹرول کے ذریعے مر رہی ہو۔

پہلی پہلی باریس سے مجھا کہ ڈرائیوکرنے والے کو اچا تک کوئی شہ ہوگیا جس کی وجہ سے اس نے گاڑی روکی الیکن جب بار باریس منظر نظر آیا تو بیس نے لوگوں سے اس کی وجہ پوچی ، انہوں نے بتایا کہ ہمارے ملک بیس بیٹر یفک کا قاعدہ ہے کہ ہر موڈ پر جہاں زمین پر بید لائن کھینی ہوئی ہوگی ، گاڑی کو روک کر وائیس بائیس و کھینا ڈرائیور کے ڈے لازم ہے ، اب جمیس اس قاعدے پر عمل کرنے کی ایسی عادت پڑگئی ہے کہ کوئی موڈ و کھے کریا زمین پر تھینی ہوئی بید کیسر د کھے کریا وال ہے ساختہ بریک پر پہنی جاتے ہیں اور گاڑی کے رکتے ہی گرون دائیس بائیس مرم جاتی ہے۔

اس کے بعد جتنے دن وہاں میرا قیام رہا، میں روزانہ بار بار یہ منظر دیکھتا رہا،
کوئی ایک شخص بھی مجھے ایسا نہیں ملاجس نے اس قاعدے کی خلاف ورزی کی ہو،
مجھے اپنی قیام گاہ ہے میں روڈ تک روزانہ کئی بارجانا پڑتا، اور ہر بار میں بید دیکھتا کہ کار
ڈرائیو کرنے والا مین روڈ پر پہنچنے ہے پہلے کئی مرتبہ ان سنسان مڑکوں پر رکتا تھا،
حالاں کہ مجھے اس پورے عرصے میں ٹریفک پولیس کا کوئی سپائی ان سڑکوں پر نظر
مبیس آیا جو اوگوں ہے اس قاعدے کی پابندی کرا رہا ہو، نہ صارے ملک کی طرح
ایسے سپیڈ بریکر نظر آئے جنہیں کار بریکر کہنا زیادہ مناسب ہے۔

به نظاره پیلی بارجنوبی افریقه میں دیکھا تھا، اور اس کے اچنجا (عجیب سا) معلوم ہوا تھا کہ آنکھیں پاکستان کی آزاد اور بے مہارٹر یفک دیکھنے کی عادی تھیں،

بعد میں یہ منظر مشرق ومغرب کے بہت ہے ترقی یافتہ ملکوں میں بھی دیکھا، یہاں کک کداب نگاہیں اس کی بھی عادی ہوگئیں، لیکن جب اپنے ملک میں ٹر افک کا حال ویکھوتو وہ نہ صرف وہیں کا وہیں ہے، بل کدائیا گلٹا ہے کدائی ست میں سفر کر رہا ہے، تفصیل بیان کرنے کی ضرورت اس کے نہیں کدوہ برخض کے سامنے ہے۔

اس صورت حال کا سبب سرکاری انتظام کا ڈھیلا پن اور تعلیم و تربیت کا فقدان تو ہے ہی، لیکن ایک بردا سبب بیجی ہے کہ ہم نے زندگی کے ان روز مرہ کے مسائل کو دین ہے باہر کی چیز سمجھ رکھا ہے، اور بیہ بات ذبین بیس بھا رکھی ہے کہ دین اور اسلام کا تعلق تو صرف مسجد اور مدرے ہے، دینوی کاروبار اور اس سلسلے کے تمام امور دین کی گرفت ہے (معاذ اللہ) باہر ہیں، لبذا ٹریفک کے مسائل کا دین ہے کیا واسلا ہی کا تیجہ بیہ ہے کہ ٹریفک کے قواعد کی خلاف ورزی کرتے ہوئے واسلا ہی کو بیٹ کے دین کا کہ ویک کے دوری کرتے ہوئے کسی کو یہ خیال ٹیمیں آتا کہ وہ کسی گناہ کا ارتفاب کررہا ہے۔

بل کہ اب تو قاعدوں کو تو زنا ایک بہادری کی علامت بن گئی ہے، جو محض جینے قاعدہ تو رہے اتنا ہی وہ اپنے آپ کو بہادراور جیالا جھتا ہے، اور ای غلامون کا بقیجہ یہ بھی ہے کہ اچھے بھلے وین دار اوگ جو تماز روزے کے پابند ہیں، اور جموئی استبار سے حلال وحرام اور جائز و ناجائز کی فکر بھی رکھتے ہیں، ٹریفک کے تواعد کی دھڑ لے سے خلاف ورزی کرتے ہیں، اور ندان کے ضمیر پر کوئی ہو جو جوتا ہے، نداس طرز عمل کو غلاف یا گناہ توجہ جیں، چنال چہ غلط جگہ پر گاڑی کورینا، مقررہ و فقارے زیادہ تیز گاڑی چلانا، غلط سمت میں سفر کرنا، رکنے کے سرخ اشارے کو تو ڈ دینا جہال اوور تیزگری منوع ہے وہاں گاڑیوں کی با قاعدہ رئیں لگانا، روزہ مرہ کا کھیل بن کررہ گیا

مالال كديدمارے كام صرف ب قاعدگى كنرمرے بى يمنيس آتے، بل كددي اختبارے بہت سے كنا مول كامجود يحى بيں- اس سے دوسروں کو ذہنی تکلیف پہنچی ہے، اور یہ بات بار بارگزر چکی ہے کہ کسی مجی مخض کو بادوجہ تکلیف پہنچانا اتنا تقلین گناہ ہے کہ اس کی معافی صرف توب سے تہیں ہوتی، جب تک دو مخص معاف ندکرے۔

🕜 تكليف كالجيمثا سبب: غلط ذرائيونگ

اسلامی فقد کی بر کتاب میں ساصول لکھا ہوا ہے کہ عام راستوں پر چلنا اور کوئی سواري چلانا اس شرط كي ساتحد جائز ب كد چلنے والا دوسرول كي "سلامتى" كى ضانت وے، یعنی ایے برکام سے اجتناب کرے جو کسی دوسرے محض کے لئے تکلیف یا خطرے کا باعث بن سکتا ہو، اس احتیاط کے بغیراس کے لئے سڑک کا استعال ہی جائز نہیں ہے، جو تمام باشندوں کی مشتر کد ملکیت ہے، اور اگر اس بے احتیاطی کے نتيج ميس كسي مخص كوكوئي جاني يا مالي نقصان بيني جائے تو اس كا سارا تاوان شرعي اعتبار ے اس تحق کے وے عائد ہوتا ہے جس نے ب احتیاطی کے ساتھ سوک کو

اب غور فرمائي كداكراك مخص عنل تو وكر كادى آكے لے كيا، ياس نے كى اليي جكد سامن والى كارى كواوور فيك كياجهان ايسا كرناممتوع تفاء بظاهرتو سيمعمولي ی ب قاعد کی ہے، لیکن درحقیقت اس معمولی حرکت میں جار بوے گناہ جمع ہیں، D قانون محتنى، اور حاكم كے جائز علم كى نافر مانى () وعده خلافى (كى كى كوتكليف بہنیانا ﴿ سُرُك كا ناجائز استعال، بيكناه جم دن رات سى تكلف كے بغيرائ وامنوں میں سیت رہے ہیں، اور خیال مجی نہیں آتا کہم سے کوئی گناہ سرزد ہورہا .

پھر بعض اوقات کسی ایک شخص کی بے قاعد کی سینکاروں انسانوں کا راستہ بی بالكل بندكرديق ب، مثلاً مؤك كالك جع بين الرحمي وجد فريقك رك كياتو D يبلا گناه: تو اس لئے كد فريقك كے تمام قواعد دراسل تمام انسانوں كى مصلحت کے تحت بنائے گئے ہیں، اور چوقوانین حکومت کی طرف ہے عموی مصلحت ك لئے بنائے جائيں ان كى پابندى شركى اعتبار سے بھى واجب ہے، اور ان كى خلاف ورزى ناجائز ،قرآن كريم كاارشاد ب:

﴿ أَطِينُعُوا اللَّهُ وَأَطِيْعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنْكُمْ عَ ﴾ ك تَتُوجِهَمَدُ: "الله كي اطاعت كرواور رسول كي اورايين ومدوار حاكمول كي

اس اطاعت سے مراد مجی ہے کہ حکام عموی مصلحتوں کی بنیاد پر جو قاعدے مقرر کریں (بشرطیکہ وہ شریعت کے خلاف نہ ہو) ان کی یابندی کی جائے، اس یا بندی کا تھم اللہ اور رسول کی اطاعت کے ساتھ دیا گیا ہے جس کا مطلب میہ ہے کہ اليے قواعد كى بابندى شرعاً بھى ضرورى موجاتى ہے۔

€ دوسرا گناہ: جب کوئی محض سڑک یر گاڑی چلائے کا السنس لیتا ہے تو وہ حكام سے زبانی ، تحريرى ياكم از كم عملى وعده كرتا ب كدوه مروك بر كارى چلاتے وقت تمام مقررہ قواعد کی مایندی کرے گا، اگر لائسنس کی درخواست دیتے وقت ہی وہ متعلقہ حکام کو بدیتا دے کہ وہ ٹرافک کے اصولوں کی رعایت نہیں رکھ سکے گا، تو اے مجھی السنس ندویا جائے، لبذا اے السنس ای وعدے کی بنیاد پر دیا گیا ہے، چنال چاس کے بعد اگر وہ ٹریفک کے قواعد کو تو اس جنو اس میں وعدے کی خلاف ورزی کا بھی گناہ ہے۔

🙃 تبسرا گناہ: ان تواعد کوتوڑنے ہے عموماً کسی نہیں انسان کو تکلیف ضرور پہنچی ہے، بعض اوقات تو ای بنا پر کوئی حادثہ پیش آ جاتا ہے، اور کسی بے گناہ کی جان چلی جاتی ہے، یا اے کوئی اور جسمانی نقصان تنج جاتا ہے، یا کم از کم انتا تو ہوتا تن ہے کہ

مِنْ كُورُ فِلْمُ فِينَ مِنْ مِنْ مِنْ

اشارہ کرنا پر تا ہے موٹر سائنگل والے کے لئے تو اور خطرناک بات ہے۔ گاڑی کی بریک لائٹ بھی درست کر لینی چاہئے اس لئے کہ آپ کی بریک لینے کی خبر پھیلی گاڑی والے کو ہونا ضروری ہے ورند ہر وقت حادثے کا خطرہ رہتا ے۔

الكيف كاسالوال سبب: اوقات ضائع كرنا

سب سے بوی چیز جے آج کل ایک رواج کی شکل دے دی گئی ہے اور گناہ نہیں سمجھا جاتا وہ ہے دوسروں کے اوقات ضائع کرناء کسی کے اوقات ضائع کرنے کی مختف شکلیں ہیں۔

م میں ہے ہاں جا کر وقت ضائع کیا جاتا ہے اور بھی کسی کو بلا کر وقت ضائع

جب سکی کے ہاں جائے تو فضول باتوں میں اپنا اور میز بان کا وقت ضائع نہ کرے، میز بان کو اپنے آنے کے بارے میں جو وقت بتائے اُک پر پہنچ دیر نہ کرے، کیوں کہ اس سے میز بان کو تکلیف ہوتی ہے اور یہ وعدہ خلافی کے ڈمرے میں بھی آتا ہے۔ جب کسی کو اپنے ہاں بلائے تو مہمان کو انتظار نہ کروائے بل کہ مہمان کو وقت پر فارغ کرنے کی کوشش کرے تا کہ آپ کا اور مہمان کا فیمتی وقت

حضرت مفتی تقی عثانی صاحب فرماتے ہیں: '' پھے عرصہ قبل بیں اپنے ایک عزیز کے بیاں شادی کی تقریبات کے بیاں شادی کی تقریبات متعدد وجوہ سے نا قابل برداشت ہوتی جا رہی ہیں، اس لئے بیس بہت کم تقریبات میں شرکت کرتا ہوں، اور رشتہ داری کا یا دوئی کا حق کسی اور مناسب وقت پرادا کرنے میں بیشے کرتا ہوں، اتفاق ہے اس روز ای وقت میں پہلے سے بہار کا لونی بیس ایک کی کوشش کرتا ہوں، اتفاق ہے اس روز ای وقت میں پہلے سے بہار کا لونی بیس ایک

بعض جلد باز لوگ تھوڑے ہے انتظار کی زحمت گوارا کرنے کے بجائے سڑک کے اس حصے ہے آگے برخصے کی کوشش کرتے ہیں جو آنے والے ٹریفک کے لئے تخصوص ہے، اس کا بھیجہ بیہ ہے کہ آنے والی گاڑیوں کا راستہ رک جاتا ہے، اور گھنٹوں تک کے لئے ٹریفک اس طرح جام ہو جاتا ہے کہ نہ جائے ماندن نہ پائے رفتن ۔ تک کے لئے ٹریفک اس طرح جام ہو جاتا ہے کہ نہ جائے ماندن نہ پائے رفتن ۔ اور اس حتم کی بے قاعد گی در حقیقت 'فساد فی الارش' کی تعربیف میں آئی ہے، اور سینکٹروں انسانوں کو کرب وعذاب میں جتلا کرنے کا گناہ اس خض پر ہے جس نے خلاصت میں گاڑی لے جا کراس صورت حال سے لوگوں کو دوجار کیا۔ اس

ڈرائیو کرتے ہوئے دوسروں کو تکلیف ہے بچانا چاہئے اس لحاظ ہے گئی چیزوں اخبال رکھنا جاہئے۔

کیچڑ نہ اُڑاکیں: سڑک پر جہاں کہیں بھی بارش کا یا کوئی اور پائی جمع ہوتو
گاڑی نہایت احتیاط سے اور آرام سے جلانی چاہئے، کہیں ایسا نہ ہو کہ پائی کی
چھیٹی اُڑ کر پیدل چلنے والوں اور موڑ سائیل چلانے والوں کے کیڑوں پر لگ
جائیں۔اس طرح ان کو تکلیف بھی ہوگی اور بعض اوقات کیڑے بھی ناپاک ہوجاتے
ہائیں۔اس طرح ان کو تکلیف بھی ہوگی اور بعض اوقات کیڑے بھی ناپاک ہوجاتے
ہیں۔

کاڑی چیک کرلیں: اپنی گاڑی کو کمل چیک کرنے کے بعد دو پر نکالیں، اگرایا ندکیا گیا تو رائے میں کوئی بھی پریشانی گھیر عتی ہے، مثلاً پڑول، بریک، کلج وغیرہ۔

گاڑی کی انتوں کا خاص خیال رکھا جائے ورندرات کے وقت گاڑی کی لائٹ نہ ہونے گاڑی کی لائٹ نہ ہونے کی وقت کا رہی ہے وقت کا دی ہے ہے وقت کا دی ہے ہے وقت کا دی ہے ہے ہے وقت حادثہ ہوسکتا ہے۔ اس طرح گاڑی کے اینڈی کیٹر (اشارے) بھی دُرست ہونے چاہیس ورندگاڑی کے مڑتے وقت کافی پریشانی کا باعث ہوتا ہے، ہاتھ باہر نکال کر

ك ذكرو فكر: ص ١٨٨٢ تا ١٨٨

بيئ ولعِيار أوت

من البازت لے کر چلا آیا، لیکن آ و مصر تھنے بعد بارات کے آئے کا مطلب میں تھا کہ سوا بارہ بجے رات کو بارات کی تھی ہوگی، ساڑھے بارہ کے وقت نکاح ہوا ہوگا، اور کھانے سے فارغ ہوتے ہوتے بقیناً لوگوں کوڈیڑھن کی کیا ہوگا۔

بياتواكك تقريب كا واقعد تها، شهركى بيشتر شادى كى تقريبات كاليمي حال ہے ك والول كا اراده بھى يكى موتا ہے كہ ہم ان اوقات كى يابندى تيس كريں كے، البقاجن معزات کو دعوت نامه کانچا ہے، وہ مجمی آئی بات تو یقین سے جانتے ہیں کہ دعوت نامے میں اکھے ہوئے اوقات برعمل فہیں ہوگا، لیکن تقریب سے واقعی اوقات کیا ہوں 2؟ چوں كەس كے بارے ميں يقينى بات كوئى نيس بنا سكنا، س لئے برخص اپنا الك اندازه لكاتا ب، شروع شروع مين لوكول في بياندازه لكانا شروع كيا كمقرره وقت ہے آ دھے بون کھنے کی تاخیر ہو جائے گی،لیکن جب اس حساب سے وعوت یں پہنچ کر گفتوں خوار ہوتا پڑا تو انہوں نے تا خبر کا اندازہ اور بڑھا لیا، اور اس طرح وق موت بات يهان تك بين ك ي كدنداب تاخير كى كوئى صد مقرر ب، ند اندازوں کا کوئی حماب، ایے واقعات بھی فنے میں آئے ہیں کدرات کو ایک بج ك بعد نكاح جواء اور اوك دو بج ك بعدائي كحرول كارخ كر سك، بر مخض ك یاس این سواری مجی نہیں ہوتی، اور رات سے سواری کا انتظام جوئے شیر لانا تو ہے الله شرك موجوده حالات كے چش نظر جان كاجوا كھينے كے مترادف بحى ہے۔

اس صورت حال کے متیج میں کئی آیک تقریب میں شرکت کا مطلب ہے ہے
کہ انسان کم از کم چار پانچ گھنے خرج کرے، بے مقصد انتظار کی کوفت برداشت
کرے، دات سے تیکییوں کا کئی گنا زیادہ کراہادا کرے، اور پھر بھی سارے دائے
مکن خطرات سے سہارہ، دات کو بے دفت سونے کے متیج میں شیخ کو دیرہے بیدار
ہوکر فیمرکی نماز غائب کرے یا تو اگلے روز آ دھے دان کی چھٹی کرے، یا نیم غنودگی کی

جگہ تقریر کا وعدہ کر چکا تھا، جب کہ شادی کی یہ تقریب پیشنل اسٹیڈیم کے متصل ایک لان میں منعقد ہور ہی تھی، بعنی دونوں جگہوں کے درمیان میلوں کا فاصلہ تھا، اس لئے میرے پاس ایک معقول عذرتھا، جو میں نے تقریب کے متظمین سے عرض کر دیا، اور پر گرام یہ بنایا کہ میں بہار کالونی جاتے ہوئے اہل خانہ کو تقریب میں چھوڑتا جاؤں گا، اور جب بہار کالونی کے پروگرام سے واپس ہوں گا تو اس وقت تک تقریب ختم ہو چکی ہوگی، میں منتظمین کو مختر مبارک باددے کر گھر والوں کو ساتھ لے جاؤں گا۔ چناں چہ ای نظم کے مطابق میں نے عشاء کی نماز بہار کالونی میں برجی، نماز جناں چہ ای نظم کے مطابق میں نے عشاء کی نماز بہار کالونی میں برجی، نماز جناں چہ ای نقلم کے مطابق میں نے عشاء کی نماز بہار کالونی میں برجی، نماز جناں چہ ای نقلم کے مطابق میں نے عشاء کی نماز بہار کالونی میں برجی، نماز

ككافى وير بعد وبال يروكرام شروع بوا، مجه سے يبلے ايك اورصاحب في خطاب كيا، پھرميرا خطاب بھى تقريبا آيك گھند جارى رہا، اس كے بعد عشائيكا انظام تھا، یں نے اس میں بھی شرکت کی، تجروبان سے روانہ ہوا، اور جب اسٹیڈ یم پہنچا تو رات كے ساڑھے گيارہ ني رہے تھے، خيال بي تھاكد اگرچد دوت نام پر نكاح كا وفت آئھ بجے اور کھانے کا وقت غالبًا ساڑھے آئھ بجے درج تھا، لیکن اگر چھ دریر موئي موگي، حب بھي ساڙ ھے گيارہ بج تک ضرور تقريب ختم موني موكي، ليكن جب من تقريب والے لان من پنجاتو معلوم مواكر البحي تك بارات بي نبيس آئي ، لوگ يجاركى كے عالم ميں إدهر أدهر أبل رہے تھے، بعض او كال كے كند حول سے بي كلے موے تھے جو بھوک یا نیند کے غلبے کی وجہ سے روٹے روٹے سونے سا تھے، پکی اوگ بار بار گھڑی و کھے کرنکاح میں شرکت کے ابغیر واپسی کی سوچ رہے تھے، اور بہت ے افراد منتشر ٹولیوں کی شکل میں وقت گزاری کے لئے بات چیت میں مشغول تھے، اور بہت سے ساکت و صامت بیٹے آنے والے حالات کا انتظار کر رہے تھے، منتظمین نے لوگوں کے بوچھنے پر انہیں "اطمینان" دلایا کد انجی فون سے پند چلا ہے ك بارات روانه مورى ب، اوران شاء الله آوه ع كفظ تك يبال بني جائ ك!! می تو خیر پہلے بی معدرت کر چکا تھا، اس لئے چندمن بعد منظمین ے

ے لئے گھڑا ہے، لین اس متم کے قصی بھی ای قوم کے بارے میں گھڑے جا کتے بیں جس نے اپ عمل سے وقت کی قدرو قیت بہجائے اور محنت کرنے کی مثالیں قائم کی ہوں، ہمارے ملک کے بارے میں اس متم کا کوئی قصہ جھوٹ موث مجی نہیں گزا جا سکتا، اس لئے کہ ہمارا مجموعی طرز عمل سے بتاتا ہے کہ وقت ہمارے نزویک ب ناده بوقعت چزے، اور اگر شادی کی سی ایک ری تقریب میں شرکت

کے لئے جمارا پورا دن بر باو ہوجائے تو بھی جمیں کوئی پروائیس ہوتی۔ ستم ظریقی کی بات سے ہے کہ ہم وقت کی بیناقدری اس دین اسلام کے نام لیوا ہونے کے باوجود کرتے ہیں جس نے ہمیں یہ تعلیم دی ہے کہ برخض کوائن زندگی سے ایک ایک کھے کا حساب آخرت میں دینا ہوگا، جس نے پانچ وقت کی باجماعت نماز مقرر کرے اس کے ہرون کوخود بخود یا می حصوں میں انسیم کردیا ہے، اور اس کے ذر يع شب وروز كالجبترين نظام الاوقات طح كرنا آسان بناديا ہے۔

یوں تو وقت ضائع کرنے کے مظاہرے ہم زندگی کے ہر شعبے میں کرتے ہیں، ليكن اس وقت موضوع كفتكوتقريبات اور وعوتي تحيين جن مين وقت كى يابندى نه كركي بهم اپنا بجى، اورسينكروں مدعوين كا بھى وقت بربادكرتے ہيں، لوگوں كو دعوت میں بلا کر انہیں غیر محدود مدت تک انتظار کی قید میں رکھنا ان سب کے ساتھ الی زیادتی ہے جس کے خلاف ایسے خوشی کے مواقع پر کوئی احتجاج کرنا بھی آسان نہیں ہوتا، کیوں کہ لوگ مروت میں اس زیادتی پرزبان بھی نہیں کھولتے ،لیکن جو مخص بھی انسانوں کی اتنی بری تعداد کو بلاوجہ تکلیف چیجانے کا سب بے، کیا وہ گناہ گار نہیں جوگا؟ برعود معزات میں سے بہت سے ایسے ہوتے ہیں کد اگر ان کا وقت بچتا تو ملک وملت كي مفيد كام مين خرج موتاء الساوكون كا وقت ضائع كرك انبيس كهنول ب مقصد بھائے رکھنا صرف ان پڑئیں، ملک ولمت پر بھی ظلم ہے، پدھیقت میں وعوت میں عداوت ہے۔

خالت مين الناسيدها كام كرے، سوال بيے كد:

الانتان على بين كا بي الله الله

دینا کا کوئی نظام قکر ایمانیس ہے جس میں وقت کو انسان کی سب سے بڑی دولت قرار دے کراس کی اہمیت پر زور نہ دیا گیا ہو۔ انسان کی زندگی کا ایک ایک لحد فیتی ہے، اور جو تو میں وقت کی قدر پھیان کرائے تھیک ٹھیک استعمال کرتی ہیں، وہی وناش رق كى مزليل كرتى بي-

مجھے بھی جایان جانے کا اتفاق نہیں ہوا، لیکن میرے ایک دوست نے (جو خاصے معتدین) ایک صاحب کا بیقصہ سایا کہ وہ اپنے کسی تجارتی مقصد سے جایان كئے تھے، وہال ان كايك ہم پيشتاجر ياصنعت كارنے انبيل دات كے كھانے ير اینے یہاں وعوت دی، جب بیصاحب کھانے کے مقررہ وقت بران کے کھر پینچے تو ميزبان كهان كي ميزير بين حج تحده اوركهانا لكايا جاجكا تحاءان صاحب كوكسي فتم كے تمبيدى تكافات كے بغيرسيد سے كھانے كى ميزير لے جاكر بھا ويا حمياء اور كھانا فوراً شروع موگیا، کھانے کے دوران باتیں مولی رہی، لیکن ان صاحب نے ایک عجیب ی بات بیاوث کی کدمیز بانوں کے یاول کھانے کے دوران ایک خاص انداز ے وکت کردے تھے، شروع میں انہوں نے سے مجلا کر شاید بیاس انداز کی حرکت ہے جیسے بعض لوگ بے مقصد یاؤں بلانے کے عادی و جاتے ہیں، لیکن تحوری ور بعدانبول في محسول كياك ياول كى حركت يل بجدالي باقاعدكى ب جو بمقصد حركت مين عموماً نبيس مواكرتي، بالأخرانبول في ميز بانول سے يو چوبى ليا، اوران صاحب کی جرت کی انتہائیں رہی جب انہیں بدمعلوم موا کدوراصل میز کے فیج کوئی مشین رکھی ہوئی ہاور وہ کھانے کے دوران بھی اپنا یاؤں استعال کرے کوئی باکا کھلکا" پیداواری کام" جاری رکھے ہوئے ہیں۔

الله ای بہتر جانا ہے کہ بیقصد عا ہے یا کسی"جہال دیدہ" نے زیب واستان

ضیاع وقت خود کشی ہے:

تج بہے کہ وقت ضائع کرنا ایک طرح کی خود کتی ہے، فرق صرف اتنا ہے کہ خود سی میشد کے لئے زندگی سے محروم کرویتی ہاور تصنیع اوقات ایک محدود زمانے تک زندہ کو مردہ بنا دیتی ہے، یکی منٹ گھنٹہ اور دن جوغفلت اور بے کاری میں گزر جاتا ہے، اگر انسان حساب كرے تو ان كى مجموعى تعداد مبينوں بل كد برسوں تك بيتيتى ب، اگر کسی سے کہا جائے کہ آپ کی عمر سے دس پانٹی سال کم کردیے گئے تو یقینا اس كويخت صدمه بوگا، كين وه معطل بيشا بوا خوداين عمر عزيز كوضائع كررباب، مكراس کے زوال براس کو پکھافسوں تیں ہوتا۔

اگرچہ وقت کا بے کار کھونا عمر کا کم کرنا ہے، لیکن اگر یک ایک نقصان ہوتا تو کوئی عم نہ تھا، لیکن بہت بڑا نقصان اور خسارہ یہ ہے کہ بے کار آ دی طرح طرح کے جسمانی وروحانی عوارض میں مبتلا موجاتا ہے حرص وطحے بظلم وستم، قمار بازی، زنا کاری اورشراب نوشی عموماً وی لوگ كرتے ہيں جو معطل اور بے كار رہے ہيں، جب تك انسان كى طبيعت، دل و د ماغ نيك اورمفيد كام مين مشغول نه ، وگااس كا ميلان ضرور بدی اورمعصیت کی طرف رہے گا ایس انسان اسی وقت سیج انسان بن سکتا ہے، جب وواینے وقت بر تکران رہے ایک لمحہ جمی ضائع ندکرے ہر کام کے لئے ایک وقت اور ہروقت کے لئے ایک کام مقرر کردے۔

وقت خام مصالح كى ماند بجس ت آپ جو كچھ جايى بنا كے ين، وقت وہ سرمایہ ہے جو ہر مخض کو اللہ تعالیٰ کی طرف سے مکسال عطا کیا گیا ہے اس سرمایہ کو مناب موقع بر کام میں لاتے ہیں۔ جسمانی داحت اور روحانی مسرت ان بی کو نعیب ہوتی ہے، وقت بی کے مجھے استعال ہے ایک وحثی مہذب بن جاتا ہے، اس كى بركت سے جال، عالم، مفلس، تو مكر، ناوان، وانا بنتے ہيں، پر وقت اليى وولت

كها جاتا ہے كہ چوں كدائك فلط زوش معاشرے ميں چل يوى ہے، اس لئے اگر کوئی مخف اے غلط بچھ کراس کی اصلاح کرنا بھی جا ہے تو اب اصلاح اس کے بس من نيس راي ليكن مجهداس نقط نظر المحلى الفاق نبيس موا سوال يد بكرآب ال متم كى فلط الل كمملك روش كاكب تك ساتھ ديں كے ؟ كب تك رواج عام كو فلطيون كا بهانا بنايا جاتار بكا؟ جرفاط روش كآ كے بتصار وال كراس كے بهاؤي بين كاسلما تركهان جاكررك كا؟

واقعہ یہ ہے کہ اصل ضرورت صرف ایک پختہ اور نا قابل فکست ارادے کی ب، ای ماحول میں جہال مقررہ وقت پر کسی دعوت میں بینچنے والا بے وقوف سمجھا جاتا ب،خود میں نے ایسے بہت سے لوگ دیکھے ہیں جنہوں نے وعوت نامے پر پابندی وقت کی خصوصی بدایت لکھی، اور اس پر عمل کر کے بھی دکھایا، اور کھانے کا جو وقت دیا حمیا تھا، اس پر کھانا واقعی شروع کر دیا، اور اس بات کی پروائیس کی کہ حاضرین کم ہیں یا زیادہ؟ سوال میہ ہے کہ اگر کچھ لوگوں نے پابندی وقت کے خصوصی التماس کے باوجود آنے میں دیر کی ہے تو اس کی سزاان لوگوں کو کیوں دی جائے جو بے جارے وقت برآ گئے تھے؟ جب تک کچھالوگ ان باتوں کو شجیدگی سے سوج کر پابندی وقت كا تهيينيس كرين مح ال وقت تك تقريبات كابيب وحب سلسار كى حد برنيين

''آج بھی جو تقریبات ہوٹلوں میں ہوتی ہیں، اور جہاں تھنٹوں کے حساب ے بکنگ ہوتی ہے، وہاں سارے کام من طرح وقت پر ہوجاتے ہیں؟ معلوم ہوا كەخرورت صرف بختة ارادے كى ہے، اگر چندافراد بھى يەپتة اراده كركيس اوراس پر ممل کرے دکھا دیں تو تبدیلی جیشہ افراد ہی ہے آئی ہے، اور پھر رفتہ رفتہ وہ مموی رواج کی شکل اختیار کر لیتی ہے ""

ك ذكروفكر: ١٠٨٥ تا ١١٢

المين (العالم اليث) —

آج کل موبائل کا مرض عام ہو چکا ہے، اس کی ضرورت ہے کسی کو انکار نہیں لیکن اس کا خلط استعمال لوگوں کے اوقات کا ضیاع اور تکلیف کا سب بن رہا ہے، بعض اوگ بلاضرورت ملی جھیج دیتے ہیں اور س کالیں کرنا اور را تک فمبر ملانا تو بعض لوگوں کی عادت بن چی ہے، وولوگ پنیس و کھتے کہ جس کومس کال کی جارہی ہے

جس کے موبائل پر باعضرورت مس کالیں اور میں آئیں وہ مخص بھی پریشان ہو جاتا ہاور يكسونى كوئى كام نيس كرياتا۔

◊ تكليف كا آ تهوال سبب: مشترك اشياء كا غلط استعمال

معاشرے میں بعض أمورا سے ہوتے ہیں جن کو چندلوگ مشتر كه طور پركرتے بیں بالکل ای طرح میجواشیاء بھی الی ہوتی ہیں جن کومشتر کہ طور پر استعمال کیا جاتا -ہے خواہ وو کیے بعد دیگرے ہول یا ابتاعی طور پر ہول۔

الی اشیاء کو استعمال کرتے وقت تمام آواب اور دیگر لوگوں کا خیال رکھنا بہت ضروری ہے کیوں کہ اس کے استعمال کا حق سب کو ہے۔ تھوڑی ی بے احتیاطی دوسرے کی تکلیف کا باعث بن سکتی ہے اور اس کا وبال اور گناہ احتیاط نہ برشنے والے پر ہوگا۔ احادیث مبارکہ میں مشترک اشیاء کے سیج استعال اور آ داب کا خیال ر کے کی تاکید آئی ہے۔

"عَنْ جَبِلَةَ بْنِ سُحَيْمٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ- قَالَ أَصَابَنَا عَامُ سَنَةٍ مَعَ ابْنِ الزَّبَيْرِ، فَرَزَقَنَا تَمْرًا، فَكَانَ عَبْدُاللَّهِ بُنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يُمُرُّينَا وَنَحْنُ نَأْكُلُ، فَيَقُوْلُ: لَا تُقَارِنُوْا، فَإِنَّ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنِ الْقِرَانِ، ثُمَّ يَقُوْلُ، إِلَّا أَنْ يُسْتَأْذِنَ الرَّجُلُ أَخَاهُ." كُ

ك صحيح بخارى، كتاب الاطعمة باب القِرَّان في التمو: ١٩٩/٢

ہے جوشاہ وگدا، امیر وغریب، طاقت وراور کمزورسب کو بکسال ملتی ہے۔ اگر آپ غور کریں سے تو نوے فیصد لوگ سیح طور پر بینبیں جانتے کہ وہ اپنے وقت كا زياده حصركهال اور يول صرف كرت بي، جو مخص دونول باته اين جيبول من ڈال کر وقت ضائع کرتا ہے تو وہ بہت جلد اینے ہاتھ دوسروں کی جیب میں

آپ کی کامیانی کا واحد علاج ہیہ ہے کہ آپ کا وقت بھی فارغ نہیں ہونا جا ہے، ستی نام کی کوئی چیز نہ ہوای گئے ستی نسوں کو اس طرح کھا جاتی ہے جس طرح اوے کوزیک، زندہ آدی کے لئے بے کاری زندہ در کور موتا ہے۔

حضرت مفتى مفتى صاحب وريحتيه الله تقال فرمايا كرت محد "اب ايذاء رسانی کا ایک آل بھی ایجاد ہو چکا ہے۔ وہ ب "فیلیفون" بیالک ایسا آلہ ہے کدائل ك ذرايد جتنا جا مودوس كوتكليف كم بيان درآب في كسى كوليليفون كيا اور اس ہے لمی گفتگوشروع کر دی اوراس کا خیال نہیں کیا کہ وہ محض اس وقت کسی کام كاندرمصروف ب-ال ك ياس وقت ب ياليس-"

ٹیلیفون کرنے کے آ داب میں یہ بات داخل ہے کداگر کی ہے کمی بات کرنی موتو يہلے اس سے يو چواوك مجھے ذرا لمي بات كرنى ب، جاريا كى من لكيس كے۔ اكر آپ اس وقت فارغ بول تو الجمي بات كرلول اور اگر فارغ شه بول تو كوفي مناب وقت بنا دیں، اس وقت بات کر لول گا۔ اجازت طلب کرنے کے آ داب " تكليف سے بيجنے كا دومرا راستا" كے عنوان كے تحت گزر سچكے بيں و كي ليا جائے، اورخود حصرت مفتى شفيع صاحب وجهبه الذائ تفال يحى ان يرهمل فرمايا كرتے تھے۔

اله اصلاحی خطبات: ۱۳۹/۸

" حضرت جلة بن حم رَجَوَالْ أَفَعَالْ عَنْ فرمات بين:

حضرت عبدالله بن زبیر و و و کالفائلگالی کی حکومت کے زمانے میں جمارے اوپر قبط پڑا، قبط کی حالت میں الله تعالی نے کھانے کے لئے پچو کھجوریں عطا فرما دیں، جب ہم وہ مجھوریں کھارہ بتھ۔ اس وقت حضرت عبدالله بن عمر وضحالفائلگا النظام الله عمارے باس سے گزرے، انہوں نے ہم سے فرمایا کہ دو دو کھجوریں ایک ساتھ مت کھاؤ، اس لئے کہ حضور اللہ س ظافی النظام نے اس طرح دو دو کھجوریں ایک ساتھ ملاکر کھائے، اس طرح دو دو کھجوریں ایک ساتھ ملاکر کھانے، اس طرح دو دو کھجوریں ایک ساتھ ملاکر کھانے، اس طرح دو دو کھجوریں ایک ساتھ ملاکر کھانے ہے منع فرمایا ہے۔

دو دو مجودی ایک ساتھ ملاکر کھانے کو عربی جی "قران" کہتے ہیں۔ حضور اقدال خلاف کی ایک ساتھ ملاکر کھانے کو عربی جی "قران" کہتے ہیں۔ حضور اقدال خلاف کی ہیں اس کے منع فرمایا کہ جو مجودی کھانے کے لئے رکھی ہیں اس جی سب کھانے والوں کا برابر مشترک حق ہے، اب اگر دوسرے لوگ تو ایک ایک محجود اٹھا کر کھانی شروع کردیں تو ابتم دوسروں کا حق مارنا جائز نہیں۔ البتہ اگر دوسرے الب آم دوسروں کا حق مارنا جائز نہیں۔ البتہ اگر دوسرے لوگ بھی دو دوا تھا کر کھا لو، لہذا سمج طرایقہ یہ کو گھا رہے ہیں تب تم بھی دو دوا تھا کر کھا لو، لہذا سمجے طرایقہ یہ کہ جس طرح دوسرے لوگ کھا رہے ہیں۔ تم بھی ای طریقے سے کھاؤ، اس حدیث سے یہ بتلانا مقصود ہے کہ دوسروں کا حق مارنا جائز نہیں۔

فَ الْمِنْ فَا: نَدُورہ حدیث میں صفور فَلِیْنَ فَلَیْنَا نَے ایک اصول بیان فرما دیا کہ جو چیز مشترک ہو، اور سب لوگ اس سے فائدہ اٹھاتے ہوں، اس مشترک چیز سے کوئی شخص دوسرے لوگوں سے زیادہ فائدہ اٹھانے کی کوشش کرے تو بیہ جائز فہیں۔ اس کے کداس کی وجہ سے دوسروں کا حق فوت ہوجائے گا، اس اصول کا تعلق صرف مجود سے نہیں، بل کہ حقیقت میں زندگی کے ان تمام شعبوں سے اس کا تعلق ہے جہاں چیزوں میں اشتراک پایا جاتا ہے، مثلاً آج کل کی دعوتوں میں 'سیاے سروی'' کا چیزوں میں اشتراک پایا جاتا ہے، مثلاً آج کل کی دعوتوں میں 'سیاے سروی'' کا رواج ہے کہ آدی خود المحد کر جائے، اور اپنا کھانا لائے اور کھانا کھائے، اب ای

کھانے میں تمام کھانے والوں کا مشترک جن ہے، اب اگر ایک فخص جاکر بہت سارا کھاٹا اپنے برتن میں ڈال کر لے آیا، اور دوسرے لوگ اس کو دیکھتے رہ گئے۔ تو یہ بھی اس اصول کے تحت نا جائز ہے، اور اس 'قر ان' میں داخل ہے جس سے حضور اقدس میں ایک ایک نے منع فرمایا۔

اس اصول کے ذریعہ امت کو پی تعلیم دینی ہے کہ آیک مسلمان کا کام یہ ہے کہ وہ ایٹ مسلمان کا کام یہ ہے کہ وہ ایٹارے کام لیے ہوتا سا وہ ایٹارے کام لیے وہ وہ وہ دوسروں کے حق پر ڈاکہ ڈالے، چاہے وہ حق جوٹا سا کیوں شد ہو، لبذا جب آدمی کوئی عمل کرے تو دوسروں کا حق بد نظر رکھتے ہوئے کام کرے، یہ نہ ہوکہ بس مجھل جائے، چاہے دوسروں کو ملے یا نہ لیے۔

حضرت مفتی تقی عثانی صاحب فرماتے ہیں: "میرے والد ماجد حضرت مولانا مفتی محد شفع صاحب رَخِتَمَبُدُاللَّهُ مَتَعَالَیٰ نے دستر خوان پر بیٹے کر بہی مسئلہ بیان کرتے ہوئے فرمایا کہ جب کھانا دستر خوان پر آئے تو یہ دیکھو کہ دستر خوان پر کتنے آدی کھانے والے ہیں اور جو چیز دستر خوان پر آئی ہے دہ سب کے درمیان برابرتقیم کی جائے تو تہارے جھے ہیں کتنی آئے گی؟ بس ای حساب ہے وہ چیز تم کھا اوہ اگر اس سے زیادہ کھاؤ گے تو یہ 'قر ان' میں داخل ہے جو ناجا ترزہے۔''

نیز فرماتے ہیں: میرے والد ماجد قدس اللہ سرہ فرمایا کرتے تھے: گھر ہیں بعض اشیار مشترک استعال کی ہوتی ہیں، جس کو گھر کا ہر فرد استعال کرتا ہے، اور ان کی ایک جگہ مقرر ہوتی ہے کہ فلاں چیز فلاں جگہ پر رکھی جائے گی، مثلاً گلاس فلال جگہ رکھا جائے گا، مثلاً گلاس فلال جگہ رکھا جائے گا، مسابن فلاں جگہ رکھا جائے گا، ہمیں فرمایا کرتے ہے کہ رکھا جائے گا، ہمیں فرمایا کرتے ہے کہ رکھ دیتے ہو، ہمیں معلوم کرتے ہے گئے رکھ دیتے ہو، ہمہیں معلوم نہیں کہ تہمارا یا مثل گرنا کہ بیرہ ہے، اس لئے کہ وہ مشترک استعال کی چیز ہے، جب دور سے خص کو اس کے استعال کی جگہ پر تلاش دور ہے ہوگا تو وہ اس کو اس کی جگہ پر تلاش دور ہے ہوگا تو وہ اس کو اس کی جگہ پر تلاش

ك اصلاحي خطبات: ص١٧٥ تا ١٧٧

"حفرت بدلة بن تيم وَفَكَ لَمُكَالِكُ فَراح بِن

حضرت عبدالله بن زبیر وضح الله تعالی کی حکومت کے زمانے میں ہمارے اوپر قبط بڑا، قبط کی حالت میں الله تعالی نے کھانے کے لئے پچھے مجودیں عطا فرما دیں، جب ہم وہ مجبوری کھارہ بتھے۔اس وقت حضرت عبدالله بن عمر رَضِحَالِیَا تَعَالَیْ اَلَّا اَلْتُنْ اَلْتُنْ اَلْتُنْ اللَّهِ اللَّهُ الل

دو دو تجودی ایک ساتھ طاکر کھانے کو عربی عیں "بقران" کہتے ہیں۔ حضور
اقدی شافی ایک نے اس لئے منع فرمایا کہ جو تھجوریں کھانے کے لئے رکھی ہیں اس
میں سب کھانے والوں کا ہرابر مشترک حق ہے، اب اگر دوسرے لوگ تو ایک ایک
سمجود اٹھا کر کھارہے رہیںاور تم نے دو دو تھجوری اٹھا کر کھانی شروع کردیں تو
اب تم دوسروں کا حق مار رہے ہو، اور دوسروں کا حق مارنا جائز نہیں۔ البند اگر دوسرے
لوگ بھی دو دو تھجوری کھا رہے ہیں تب تم بھی دو دواٹھا کر کھالو، للفاضیح طمریقہ سے
ہے کہ جس طرح دوسرے لوگ کھا رہے ہیں۔ تم بھی ای طریقے سے کھاؤ، اس
حدیث سے یہ بنانا مقصودہ کہ دوسروں کا حق مارنا جائز نہیں۔

قَادِينَ لَا : بَدُورہ عديث على حضور عَلِيقَ اللّهِ اللهِ السول بيان فرما ديا كہ جو چيز مشترك ہو، اور سب لوگ اس سے فائدہ اٹھاتے ہوں، اس مشترك چيز سے كوئى مشترك ہو، اور سب لوگ اس سے فائدہ اٹھانے كى كوشش كرے تو يہ جائز خيل ۔ اس لئے كداس كى وجہ سے دوسروں كاحق فوت ہوجائے گا، اس اصول كاتعلق صرف تحجور لئے كداس كى وجہ سے دوسروں كاحق فوت ہوجائے گا، اس اصول كاتعلق صرف تحجور سے نہيں، بل كر حقیقت میں زئدگی كے ان تمام شعبوں سے اس كاتعلق ہے جہاں چيز دوں میں اشراك پايا جاتا ہے، مثلاً آج كل كى وعوقوں ميں اسيلف سروس كا ورائى اب اى رواج ہے كد آدى خود اٹھ كر جائے، اور اپنا كھانا لائے اور كھانا كھائے، اب اى

کھانے میں تمام کھانے والوں کامشترک حق ہے، اب اگر ایک محفق جاکر بہت سارا کھانا اپنے برتن میں ڈال کر لے آیا، اور دوسرے لوگ اس کو دیکھتے رہ گئے۔ تو ہی بھی اس اصول کے تحت ناجائز ہے، اور اس' بھر ان' میں داخل ہے جس سے حضور اقد س وَالْقَائِمَةِ عَلَيْهِ فَيْ مَايا۔

اس اصول کے ذریعیدامت کو پی تعلیم دینی ہے کہ ایک مسلمان کا کام ہیہ ہے کہ وہ ایٹارے کام لیے ہوئا سا وہ ایٹارے کام لیے ، نہ بید کہ وہ دوسرول کے حق پر ڈاکہ ڈالے، چاہ وہ حق چھوٹا سا کیوں نہ ہو، لبتدا جب آوئی کوئی عمل کرے تو دوسرول کاحق مد نظر رکھتے ہوئے کام کرے، بیدنہ ہوکہ اس مجھے مل جائے، چاہے دوسرول کو ملے یا نہ ملے۔

حضرت مفتی تقی عثمانی صاحب فرماتے ہیں: "میرے والد ماجد حضرت مولانا مفتی محرشنج صاحب وَخِفَرُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللللّهُ الللللّهُ الللللّهُ اللللللللللللللّهُ اللّهُ الللللللل

نیز قریاتے ہیں: میرے والد ہاجد قدس اللہ سروفر مایا کرتے تھے: گھر ہیں بعض اشیاء مشترک استعمال کی ہوتی ہیں، جس کو گھر کا ہر فرد استعمال کرتا ہے، اور ان کی ایک جگہ مشرر ہوتی ہے کہ فلال چیز فلال جگہ پررکھی جائے گی، مشلا گلاس فلال جگہ رکھا جائے گا، مشلا گلاس فلال جگہ رکھا جائے گا، جمیں فرمایا کھا جائے گا، جمیں فرمایا کرتے ہے گئے رکھا جائے گا، جمیں فرمایا کرتے ہے گئے رکھا جائے گا، جمیں معلوم کرتے ہے گئے رکھ ویتے ہو جہیں معلوم خرین کے تہمارا یا گل گانا کی چیز ہے، جب خب کہ وہ مشترک استعمال کی چیز ہے، جب وہر کے جب جگہ رکھ وہ اس کی جگہ پر تلاش مورے خوس کو اس کے استعمال کی ضرورت ہوگی تو وہ اس کو اس کی جگہ پر تلاش

ا اصلاحی خطبات: ص۱۷۵ تا ۱۷۷

حضرت منتى تقى عنانى دا منت كل المنت كالفيال الية فرمات إلى:

تقریباً دوسال ملے میں برطانیہ کے ایک سفر کے دوران بر معظم سے ٹرین کے زريع الدُنبرا جاربا تما، رائع مين مجهد عمل خاند استعال كرنے كى ضرورت بيش آئی، میں اپنی سیٹ سے اٹھ کر حسل خانے کی طرف چلاتو دیکھا کہ وہاں ایک انگریز خاتون پہلے سے انتظار میں کھڑی ہیں جس سے اندازہ ہوا کے عسل خاند خالی نہیں ب، چنال چه میں ایک قربی سیٹ پر بیٹے کر انظار کرنے لگا، جب کچے در گزرگی تو اجا تک عسل خانے کے دروازے پر میری نگاہ پڑی، دہاں (Vacant) کی مختی صاف نظرة راي تحي جس كا مطلب بيتما كيسل خانه خالى ب، اوراس ميس كوئي تبيس ب، اس کے باوجود وہ خاتون برستور دروازے کے سامنے کھڑی ہوئی تھیں، اس سے مجھے اندازہ ہوا کہ شایدان کو کوئی فلط جمی ہوئی ہے، میں نے قریب جا کران سے کہا کہ مسل خاندتو خالى ب، اگر آپ اندر جانا جايين تو چلى جائين، انبول نے جواب ديا كددراسل على خان كا الدريس بي تحيى اليكن جب ميس بيشاب عن فارغ مولى توريل پليث قادم بررك كل اور يس كمود كوفلش نيين كرسكى، (يعني اس برياني نهيس بہاسكى) كيوں كەجب گاڑى بليك فارم يركھرى موتوفلش كرنا مناسب نبين، اب یں باہرآ کراس انتظار میں ہوں کہ گاڑی چلے تو میں اندر جا کر کموڈ کوفلش کروں، پھر اینی سیٹ پر جا کر بیٹھوں گی۔

یہ بظاہر ایک چیوٹا سامعمولی واقعہ تھا، نیکن میرے ذہن پرایک نقش چیوڑ گیا، یہ
ایک انگریز خاتون تھیں، اور بظاہر غیر مسلم، لیکن انہوں نے جوطرز ممل اختیار کیا، وہ
دراصل اسلام کی تعلیم تھی، مجھے یاد ہے کہ میر ہے بچپن میں ایک صاحب سے ایک
دراصل اسلام کی تعلیم تھی، مجھے یاد ہے کہ میر ہے۔

ایک اصلاحی محطبات ص ۱۸۲۰۱۸۱

کرے گا، اور جب جگہ پراس کو وہ چیز نہیں ملے گی تو اس کو تکلیف اور ایڈا ہ ہوگی ، اور کسی بھی مسلمان کو تکلیف پہنچانا گناہ کبیرہ ہے۔ ہمارا ذہن کبھی اس طرف گیا بھی خیس تھا کہ ریجی گناہ کی بات ہے، ہم تو سیھتے تھے کہ بیاتو دنیا داری کا کام ہے۔ گھر کا انظامی معاملہ ہے۔ یادر کھو، زندگی کا کوئی گوشد ایسانہیں ہے، جس کے بارے بھی دین کی کوئی ہدایت موجود نہ ہو۔ ہم سب اپنے اپنے گریبان بیں جھا نک کر دیکھیں کہ کیا ہم لوگ اس بات کا اہتمام کرتے ہیں کہ مشترک استعال کی اشیاء استعال کے بعد ان کی متعین جگہ پر رکھیں ، تا کہ دومرول کو تکلیف نہ ہو؟

اب میر چیوٹی می بات ہے جس میں ہم صرف بے دھیائی اور بے تو جمی کی وجہ سے گنا ہوں میں ہتا ہوں کے خیال سے گنا ہوں میں ہتا ہو جاتے ہیں۔ اس کئے کہ ہمیں دین کی فکر نہیں، دین کا خیال نہیں، اللہ تعالیٰ کے سامنے پیش ہونے کا احساس نہیں، دوسرے اس کئے کہ ان مسائل ہے جہالت اور ناوا تفیت بھی آج کل بہت ہے۔

بہرحال، بیرسب باتیں''قران'' کے اندر داخل ہیں۔ ویسے تو یہ چھوٹی می بات ہے کہ دو تھجوروں کو ایک ساتھ ملاکر نہ کھانا چاہئے۔لیکن اس سے بیداصول معلوم ہوا کہ ہروہ کام کرنا، جس سے دوسرے مسلمان کو تکلیف ہو، یا دوسروں کا حق پامال ہو، سب''قران'' میں داخل ہیں۔

مشترك بيت الخلاء كااستعال

بعض اوقات اليما بات ہوتی ہے، جس کو بتاتے ہوئے شرم آتی ہے، کیان وین کی باتیں ہوئے شرم آتی ہے، کیان وین کی باتیں ہوئے سے الخلاء گئے، اور کی باتیں ہوئے کے بعد غلاظت کو بہایا نہیں، ویسے ہی جیمور کر چلے آئے۔ حضرت منتی شخیع صاحب ریج بیران گائی تفال فرمایا کرتے تھے کہ بیمل گناہ کبیرہ ہے، اس لئے کہ جب و سرا شخص بیت الخلاء استعمال کرے گا تو اس کو کراہیت اور تکایف ہوگی اور اس

(بَيْنَ (لعِلْمُ الدِنْ

مرتكب ہوئے ہيں، جس كا ہميں جواب دينا بڑے گا۔

ہمارے ملک میں بھی ریاوں کے ہر مشل خانے میں سے ہدایت درئ ہے کہ جب تک گاڑی کمی اشیش پر کھڑی ہو، بیت الفلاء استعال ند کیا جائے، لیکن عملا صورت حال ہے ہو کوئی آشیش مشکل ہی ہا ایسا ہوگا جس کی ریاوے لاگن پراس ہمایت کی خلاف ورزی کے مروہ مناظر نظر ند آتے ہوں، ای طرح ہوائی جہازوں کے ہر شسل خانے میں سے ہدایت درئ ہوتی ہے کہ بیت الخلاء میں کوئی شھول چیز نہ بھینکی جائے، نیز یہ کہ منہ ہاتھ وجونے کے لئے جو بیس لگا ہوتا ہے استعمال کرنے کے بعد آنے والے مسافر کی سہولت کے لئے جو بیس لگا ہوتا ہے استعمال کرنے کے بعد آنے والے مسافر کی سہولت کے لئے اسے کافذ کے تولید سے صاف کر دیا جائے، لیکن ان ہدایات پر بھی کماحقہ عمل نہیں کیا جاتا۔

چناں چہ ہمارے ہوائی جہازوں کے منسل خانے بھی اب ہمارے مجموعی تو می مزاج کی نہایت بھدی تصویر چیش کرتے جیں، حالال کداکران ہمایات پڑمل کرکے ہم دوسروں کے لئے راحت کا سامان کریں تو بیخش ایک شائنگی کی بات ہی نہیں ہے بل کہ یقینا اجروثواب کا کام ہے۔

نی اکرم ظین ایک ایک ارشادا تنامشہور ہے کہ بہت ہے مسلمانوں کو معلوم ہے، آپ ظینی ایک نے فر مایا: "ایمان کے ستر ہے بھی زیادہ شعبے ہیں، اور ان بیس ہے اونی ترین شعبہ سے کدرائے ہے گندگی یا تکلیف دہ چیز کو دور کر دیا جائے۔"
اس ارشاد نبوی ظینی تکینی کی روشنی میں مؤمن کا کام تو یہ ہے کداگر کسی دوسرے شخص نے بھی کوئی گندگی بھیلا دی ہے اور اندیشہ ہے کدلوگوں کو اس سے تکلیف پنجے گی تو وہ خودا ہے دور کر دے نہ یہ کہ خودگندگی بھیلاتا بھرے، اگر گندگی دور کرنا ایمان کا شعبہ ہوگا؟ ظاہر ہے کہ ہے ایمانی کا، یا کفرونسق شعبہ ہے تا گئر دے رکھا ہے کہ صفائی ستحرائی در حقیقت

ال مسلم ، باب عدد شعب الايمان: ١/٧٤

مرتبہ بید منطقی سرزو ہوئی کہ وہ فنسل خاند استعمال کرنے کے بعد الے نش کئے بغیر باہر
آگئے تو میرے والد ماجد (حضرت مولانا مفتی محد شفع صاحب رَخِتَبُهُ الدَّامُ اَتَعَالٰتٌ)
نے اس بر انہیں سخت حمید کی ، اور فر مایا کہ ایسا کرنا اسلامی تعلیمات کے مطابق سخت
گناہ ہے، کیوں کہ اس طرح گندگی پھیلانے سے آنے والے شخص کو تکلیف ہوگی،
اور کسی بھی شخص کو تکلیف پہنچانا گناہ ہے۔

دوسری طرف جب گاڑی بلیٹ فارم پر کھڑی ہوتو اس وقت منسل حانے کا
استعال یا اسفاش کرنا ربلوے کے قواعد کے تحت اس لئے منع ہے کہ اس کے نتیج
میں ربلوے اشیشن کی فضا خراب ہوتی ہے، اور بلیٹ فارم پر موجودلوگوں کور بلوے
لائن پر پڑی ہوئی گندگی ہے ذہنی کوفت بھی ہوتی ہے، اور دو گندگی بیاریاں پھیلنے کا
ذراجہ بھی بن سکتی ہے، اس خاتون نے بیک وقت دونوں باتوں کا خیال کیا، ٹرین
کے کھڑے ہونے کی حالت میں پانی بہانا بھی گوادانہ کیا، اور پانی بہائے بغیرسیٹ پر
آگر جینسنا بھی پسندنیس کیا، تا کہ کوئی محض اس حالت میں جاکر تکلیف شدا تھا ہے۔

ہم مسلمان ہیں، اور ہماری ہر دین تعلیم کا آغاز ہی طہارت سے ہوتا ہے، جے
آل حضرت منظی علی اللہ نے ایمان کا آ دھا حصہ قرار دیا ہے نیز آپ منظی علی النہ نے
اختائی بار کیا بنی ہے ہراس کام سے منع فرمایا ہے جو ناحق کسی دوسرے کی تکلیف کا
باعث ہو، کیکن یہ بات کہتے ہوئے بھی شرم آئی ہے کہ ہمارے مشترک طسل خانے،
خواور یل بی بول یا جہاز بی، بازار میں ہول یا مبحدول ہیں، تعلیم گاہول بی ہول
یا شفا خانوں میں، ہر جگہ تمونا گندگی کے ایسے مراکز ہے ہوئے ہیں کدان کے قریب
میا شفا خانوں میں، ہر باکہ تمونا گندگی کے ایسے مراکز ہے ہوئے ہیں کدان کے قریب
آزرائش سے کم نہیں۔ اس سورت حال کی بردی وجہ یہ ہے کہ ان کا استعال ایک شدید
آزرائش سے کم نییں۔ اس سورت حال کی بردی وجہ یہ ہے کہ ان معاملات میں ہم
نے دین کی تعلیمات کو بالکل نظر انداز کیا ہوا ہوا ورمشترک استعال کے مقامات پر
گندگی بھیلانے کے بعد ہمیں یہ خیال بھی تہیں آتا کہ ہم اذبت رسانی کے گناہ کے

جارانہیں، بل کہ غیرمسلم مغربی اقوام کاشیوہ ہے۔

یہاں بچھے پھراپ والد باجد کا سنایا ہوا آیک اطیفہ یاد آگیا، وہ فرماتے بھے کہ ایک مرتبہ ہندوستان بیں آیک اگر ہزمسلمان ہوگیا، اور اس نے پانچوں وقت نماز پڑھنے کے لئے مسجد بیں آ نا شروع کر دیا، جب بھی اے وضو خانے بیں جانے کی ضرورت پیش آئی تو یہ دکھی کراس کا ول گڑھتا تھا کہ نالیوں بیں گندگی پڑی رہتی ہے، کناروں پر کائی جمی رہتی ہے، نہ لوگ ان بیں گندگی والئے سے پر ہیز کرتے ہیں نہ ان کی صفائی کا کوئی انتظام ہے، آخر ایک روز اس نے یہ طے کیا کہ اس مقدال عباوت گاہ کوصاف رکھنا چوں کہ بڑے تواب کا کام ہے، اس لئے وہ خود بی یہ طدمت انجام وے گا، چناں چہ وہ کہیں سے جھاڑو وغیرہ لاکراپ ہاتھ سے اس طفر سے اس کے دہ خود بی یہ صاف کرنے لگا، جنال چہ وہ کہیں سے جھاڑو وغیرہ لاکراپ ہاتھ سے اس مقدال صاف کرنے لگا، جنال جہ وہ کہیں ہے جھاڑو وغیرہ لاکراپ ہاتھ سے اس مقدال کو ایک صاحب نے اس پر تبھرہ کرتے ہوئے فرمایا کہ ''یہ انگریز مسلمان تو ہوگیا، لیکن اس کے دماغ ہے انگریز مسلمان تو ہوگیا، لیکن اس کے دماغ ہے انگریز یت کی خو بو (عادت، خصلت) نہیں گئے۔''

جن صاحب نے بیدافسوں ناک تجرہ کیا، انہوں نے تو کھل کرصرت کفظوں ہی اس بید بات کہد دی، لیکن اگر جمارے مجموقی طرز عمل کا جائزہ الیا جائے تو محسوں بیہ ہی جوتا ہے کہ ہم نے صفائی سخرائی کو 'انگر بزیت کی خوبؤ' قرار وے رکھا ہے، اور شاید گندگی کو اپنی خوبوء حالاں کہ اسلام نے، جس کے ہم نام لیوا ہیں صفائی سخرائی ہے ہمی بہت آگے بڑھ کر طہارت کا وہ تصور پیش کیا ہے جو ظاہری صفائی ہے کہیں بلند و برتر ہے اور جہم کے ساتھ ساتھ روح کی پاکیزگی کے وہ طریقے سکھا تا ہے جن سے بیشتر فیراسلامی اقوام محروم ہیں۔

ای کا بتیجہ یہ ہے کہ جن مغربی اقوام کی ظاہری صفائی پیندی کا ذکر چھے آیا ہے، ان کا میدون صرف اس صفائی کی حد تک محدود ہے، جو دوسرے کونظر آئے، الکان جہال تک ذاتی اور اعدونی (Intrinsic) صفائی کا تعلق ہے، اس سے ان اقوام

کی محروی کا تحورا سا اندازہ ان طریقوں کو کھے کر لگایا جا سکتا ہے جو وہ بیت الخلا استعمال کرنے کے بعد اپنے جسم کی صفائی کے لئے اختیار کرتے جیں، جب تک استعمال کا ان عمل کے بعد نبانا شد ہوہ جسم ہے گندگی دور کرنے کے لئے پانی کے استعمال کا ان کے بیماں کوئی تصور نہیں، اس بات کا تو ان کے بیماں بردا اہتمام ہے کے خسل خانے کے دائش پر یاک پانی کی بھی کوئی چھینٹ پرئی نظر شد آئے، لیکن جسم سے نباست اور گندگی کو دور کرنے کے لئے صرف ٹاکیلٹ پیچر کوگائی سمجھا جاتا ہے، حالاں کہ پانی گارنہیں ہے۔ خیر گندگی کو دور کرنے کے لئے صرف ٹاکیلٹ پیچر کوگائی سمجھا جاتا ہے، حالاں کہ پانی اجزاء جسم یا کیٹرے پراس طرح باتی رہ جائیں کہ وہ نظر شد آئیں تو ان کے از الے کی اجزاء جسم یا کیٹرے پراس طرح باتی رہ جائیں کہ وہ نظر شد آئیں تو ان کے از الے کی ایک کرنے ہوئے کے بیمان کی بیمان کی بائدہ جھوٹے کے بیمان کی بائدہ جو بیمان کے بائی بائدہ جھوٹے کے بین کہ پائی کی تا ہوتا ہو بائی بائدہ جھوٹے ہیں کہ پائی کے اخراج کا کوئی راستہ نہیں ہوتا، اور نجاست کے باقی بائدہ جھوٹے ہیں۔ ہیں کہ پائی کی ناز ایک کر سکتے ہیں۔ این کو تایاک کر سکتے ہیں۔

یہ تمام طریقے اس لئے افتیار کئے گئے ہیں کہ سارا زور صرف اس ظاہری مفائی پر ہے جو دوسرے کونظر آئے، ذاتی اور اندرونی صفائی جس کا نام ' طہارت' ہے۔ اس کا کوئی تصورتہیں، اللہ تعالیٰ کے فضل و کرم ہے اسلام نے ہمیں ظاہری صفائی ستحرائی (نظافت) کے ساتھ ساتھ ' طہارت' (پاکی) کے بھی مفصل احکام دیے ہیں، اس لئے اسلام میں صفائی کا تصور کہیں زیاوہ جامع، ہمد گیراور بلند و برتر ہے، اسلام کو ' طہارت' بھی مطلوب ہے اور نظافت بھی، طہارت کا مقصد ہے کہ دوائی گندگی انسان بذات خود و تھی پاک صاف رہے، اور نظافت کا مقصد ہے کہ دوائی گندگی سے دوسروں کے لئے تکلیف کا باعث نہ ہے۔ ساتھ

ك ذكروفكو: ١٩٩٥ تا ١٩٩

4-4

کایف کا دسوال سبب: بلا اجازت کی چیز استعال کرنا اسلام می ممنوع کی چیز استعال کرنا اسلام می ممنوع کی بین استعال کرنا اسلام می ممنوع ہے۔ اگر بھی ضرورت بھی پڑے تو مالک ہے اجازت لے کر اُس چیز کا استعال کرے، بغیراجازت کے کسی کی چیز استعال کرنے پر حدیث میں بخت وحید آئی ہے اورای فعل کوحرام قرارویا گیا ہے۔ چنال چیآل معنوت طبق المشال کو تا استعال کو تا معنوت طبق المشال کو تا استعال کو تا استعال کو تا ہوئی ہوئی کا فرمان ہے:

اورای فعل کوحرام قرارویا گیا ہے۔ چنال چیآل تحید بعقید حقق، وَدَالِكَ لِمَا حَدَّمَ اللهُ مَالَ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ، وَاَنْ یَا اُحُدَ عَصَا حَدَّمَ اللهُ مَالَ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ، وَاَنْ یَا خُدَ عَصَا حَدَّمَ اللهُ مَالَ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ، وَاَنْ یَا خُدَ عَصَا

اس حدیث بی آرم ظیفی کی ایس بی در بات بھی واضح فرما دی ہے کہ دوسرے کی کوئی چیر لینے یا استعمال کرنے کے لئے اس کا خوش سے راشی ہونا ضروری ہے، البندا اگر اجازت کسی دباؤ کے تحت یا شرما شرمی میں دے دی ہے، اور وہ ول سے اس پر راضی نہیں ہے، تو ایسی اجازت کو اجازت نہیں سمجھا جائے گا، بل کہ اس کا استعمال بھی دوسرے فخص کے لئے جائز نہیں ہوگا۔

نی اکرم طابق ایک ان ارشادات کو بدنظر رکھتے ہوئے ہم اپنے حالات کا جائزہ لیں تو نظرا کے گا کدند جانے کتنے شعبوں میں ہم شعوری یا فیر شعوری طور پر

ك ذكروفكو:ص٠٠٠

ت مجمع الزوائد، باب الغصب وحرمة مال المسلم: ١١٨/٤ رقم الحديث: ١٨٥٩

(بين والعيد الرايث)

الكيف كانوال سبب: ييين كى بو

انسان کوجس طرح آلودہ ماحول اور گندگی سے تکلیف ہوتی ہے ای طرح پہینے کی بدیو سے بھی تکلیف ہوتی ہے۔ ہر شخص کو چاہئے کہ وہ ہمیشہ صاف ستحرا رہے، ایسی حالت ہیں بھی کسی سے نہ ملے کہ اُس کے بدن یا کپڑوں سے پہینے کی یوآ رہی ہو۔ کیوں کہ اس سے دوسرے انسان کو آکلیف ہوگی۔ ہرا یسے کام سے بچنا جا ہے جو دوسروں کے لئے زبنی کوفت واذیت کا باعث ہو۔

نی اکرم علاقات کے عبد مبارک میں مجد نبوی اتن زیادہ کشادہ میں تی عام طور ے سحابہ کرام رَفِوَاللَّهُ النظافا منت پیشہ تھے، اور موٹے کیڑے سینتے تھے، کری كموسم بن جب ليدرة تا توكير علي عرتم موجات ، اور جعد كاجتاع بين اس لیسنے کی وجہ سے بو پیدا ہو جانے کا اندیشہ تھا، آل حضرت اللی ایک نے سحابہ كرام وَفَوَالْفَالْتَغَالِقُفُمُ كُوناكِيدِ فرمانى كه جعد ك روز سب دعزات عسل كرك، حى الامكان صاف كيرے يمن كراور فوشيولكا كرمىجد مين آيا كري يا اب ظاہر بك طبارت كاكم ے كم تقاضا تو اس طرح بھى پورا بوسكتا تھا كدلوگ وضوكر ك أجايا كري، اوران كے كيڑے طاہرى تجاست سے پاك ہوں، كيكن تى اكرم والقاعظا نے اس پراکٹفا کرنے کے بجائے ندکورہ بالا احکام نظافت کی انہیت کی وجدے عطا فرمائے، تاکہ کوئی مخض محمی دوسرے کے لئے انکیف کا باعث نہ بنے ،اس چھوٹی می مثال بن سے بد بات واضح ب كرطبارت كساتھ ساتھ نظافت بھى اسلام يى مطاوب ہے، اور کوئی بھی ایسا اقدام جائز تبیں ہے جس کی وجہ سے ماحول میں گندگی م الما الم الم الم الم الم وفي المد وارى ب جس كى ادا كيكى ك لئ بنيادى ضرورت توجد كى ب، يه توجد پيدا مو جائ تو و يجيعة على و يجيعة ماحول سدهم جاتا

ك مسلم، كتاب الجمعة باب الغسل ومس الطيب ٢٨٠/١

(يَيْنَ (ليسلي أولي

وہ زبان سے نو انکارٹیس کر سکے گا، لیکن دینے پر دل سے راہنی بھی نہ ہوگا، اور دے گا نو محض شرما شری اور بادل نخواستہ دے گا، نویہ بھی فصب میں داخل ہے، اور الیکی چیز کا استعمال حلال نہیں، کیوں کہ دینے والے نے خوش دلی کے بجائے وہ چیز دیاؤ میں سک سے ب

کسی محض ہے کوئی چیز عارضی استعمال کے لئے کی گئی اور وعدہ کر لیا گیا کہ فلاں وقت اوٹا دی جائے گی ، لیکن وقت پر لوٹانے کے بجائے اے کسی عذر کے بغیر اپنے استعمال میں باقی رکھا تو اس میں وعدہ خلافی کا بھی گناہ ہے ، اور اگر وہ مقررہ وقت کے بعد اس کے استعمال پر ول ہے راہنی نہ جو تو غصب کا گناہ بھی ہے۔ بہی حال قرض کا ہے کہ واپسی کی مقررہ تاریخ کے بعد قرض واپس نہ کرنا (جب کہ کوئی شدید عذر نہ ہو) وعدہ خلافی اور غصب واول گناہوں کا مجموعہ ہے۔

ک سی شخص سے کوئی مکان، زمین یا دوکان ایک خاص وقت تک کے لئے کرائے پر لی گئی، تو وقت گزر جانے کے بعد مالک کی اجازت کے بغیراے اپنے استعال میں رکھنا بھی ای وعدہ خلافی اورغصب میں داخل ہے۔

عارضی کی ہوئی چیز کو ایس بے دردی سے استعال کیا جائے جس پر مالک راضی ف ہو، آتو یہ بھی خصب کی فدکورہ تعریف میں داخل ہے، مثلاً کسی شخص نے آگرا پی گاڑی آدوہ سرے کو استعال کرنے کی اجازت وے دی ہے، تو اس کا سیمطلب نہیں ہے کدوہ اس کے ساتھ '' ال مفت ول بے رخم'' کا معاملہ کرے، اور استوں پر اس کے ساتھ درات خراب راستوں پر اس طرح دوڑ اتا بھرے کداس کے سارے پرزے بناہ ما تکنے گئیس، آگر کمی نے ابنا فون استعال کرنے کی اجازت دی ہے تو اس کا ناجائز فائدہ اشا کراس پرطویل فاصلے کی استعال کرتے کہ اجازت دی ہے تو اس کا ناجائز فائدہ اشا کراس پرطویل فاصلے کی کایس دیر دریت کرتے رہنا ہے بینا خصب میں داخل اور حرام ہے۔

ک بک اسالوں میں کتابیں، رمالے اور اخبارات اس لئے رکے جاتے ہیں کہ ان کی اس اللہ اور اخبارات اس لئے رکھے جاتے ہیں کہ ان کی ان میں ہے جو پہند ہول، لوگ انہیں خرید سکیں، پہند کے تعین کے لئے ان کی ان میں ہے جو پہند ہول، لوگ انہیں خرید سکیں، پہند کے تعین کے لئے ان کی ان میں ہے۔

ان ادکام کی خلاف ورزی کررہ ہیں، ہم چوری اور خصب ہیں بہی بیجے ہیں کہ کوئی افت کا با قاعدہ شخص کسی کے گھر میں جیب کر داخل ہواور اس کا سامان چرائے، یا طاقت کا با قاعدہ استعمال کرے اس کا مال چینے، حالال کہ کسی کی مرضی کے خلاف اس کی ملکیت کا استعمال کرے اس کا مال چینے، حالال کہ کسی کی مرضی کے خلاف اس کی ملکیت کا استعمال کسی بھی صورت میں ہو، وہ چوری یا خصب کے گناہ میں داخل ہے، اس مشمل کی چوری اور خصب کی جو مختلف صورتیں ہمارے معاشرے میں عام ہوگئی ہیں، اور ایجھے فاضے پڑھے لکھے اور بظاہر مہذب افراد بھی ان میں مبتلا ہیں، ان کا شار مشکل ہے جن سے بچنا انتہائی ضروری ہے، تاہم مثال کے طور پر اس کی چند صورتیں درخ فرل جن درخ

● آج یہ بات بڑے فخر سے بیان کی جاتی ہے کہ ہم اپنا سامان ریل یا جہازیں کرایہ ویے بغیر نکال لائے، حالال کہ اگر بیدگام متعلقہ اضروں کی آنکھ بچا کرکیا گیا تو اس میں اور چوری میں کوئی فرق نہیں، اور اگر ان کی رضا مندی سے کیا گیا، جب کہ وہ اجازت دینے کے مجاز نہ نتے، تو ان کا بھی اس گناہ میں شریک ہونا لازم آیا، بال اگر کسی افسر کو ر بلوے یا ایئر لائنز کی طرف سے بیا تقتیار حاصل ہو کہ وہ زیادہ سامان بغیر کرائے کے چھوڑ دے، تواس کی گنجائش ہے۔

ک ٹیلی فون ایکیچنج کے کسی ملازم ہے دوئی گانٹھ (نگا) کر دوسرے شہرول میں فون پر مفت بات چیت ند صرف مید کہ گوئی عیب نہیں مجھی جاتی، بل کہ اے اپنے وسیج تعلقات کا شہوت قرار دے کرفخر میہ بیان کیا جاتا ہے، حالال کہ میابھی ایک گھٹیا در ہے کی چوری ہے، اور اس کے گناہ عظیم ہونے میں کوئی شک نہیں۔

ک جلی کے سرکاری تھم ہے کئٹن لے کر مفت بجلی کا استعمال چوری کی ایک اور فتم ہے، جس کا رواج بھی عام ہوتا جا رہا ہے، اور بید گناہ بھی و کے کی چوٹ کیا جاتا

م ہم کی شخص سے اس کی کوئی چیز ما تلتے ہیں جب کہ ہمیں غالب گمان سے کہ

کے پاس چوں کداپنی کوئی گاڑی نہیں تھی، اس لئے وہ یہ سیولیات حاصل نہیں کر کئے تھے، بیس نے اپنی گاڑی ان کے نام رجسٹر کراوی، اور انہوں نے اسپنے محکمے بیس اے اپنی گاڑی فلامر کرکے وہ سیولیات حاصل کرلیس، مدتوں میری گاڑی ان کے نام پر درج رہی، اور وہ اس کے نام پر سالہا سال یہ سیولیات حاصل کرتے رہے، بیس نے ان سے بع چھا کہ '' آپ نے ایسا کیوں کیا؟''

وہ فریائے گئے کہ '' ہمارے درمیان تعلقات ہی ایسے بھے'' مجھے بیتین تھا کہ گاڑی ان کے نام رجسٹر ہونے کے باوجود وہ میرے ہی استعمال میں رہے گی، اور مجھی ہمارے درمیان کوئی جھٹڑ انہیں ہوگا، البذا اگر صرف نام درج کرانے سے کسی کا مجملا ہوتا ہوتو میں کیوں اس میں رکاوٹ ہول؟''

آیک اور صاحب نے آیک مرتبہ اپنے آیک دوست کے ساتھ ''حسنِ سلوک'' کا ذکر کرتے ہوئے بتایا کہ''ہمارے درمیان استے ایجھے تعلقات ہیں کہ جب وہ خود یا ان کے گھر کا کوئی فرد بتار ہوتا ہے تو میں ڈاکٹر سے اپنے نام کا نسخہ بنوا کر اپنے محکمے کے خرج پر دوائیں لے آتا ہوں، اور اپنے دوست کو فراہم کر دیتا ہوں، اور اس طرح علاج معالجے پر میرے دوست کا بھی پچھ خرج نہیں ہوتا۔''

دونوں صاحبان نے اپنا بیٹل بڑے فخر کے ساتھ اس طرح بیان کیا جیسے بیان کی جیت کی کشادہ ولی اور بلند جوسکنگی کی علامت ہے، اور اس کے ذریعے انہوں نے بہت بری اُنہی انجام دی ہے جس پر وہ دنیا جی تعریف اور آخرت جی تو ہی واست کے مستحق بیں، یہ دونوں جی ہے کئی نے نہیں سوچا کہ اس طرح اپنے پڑوی یا ووست کے ساتھ، 'نہیں دوگ' کر کے وہ مخلفے کے ساتھ کنتی ہے وفائی اور بددیا تی کا معاملہ کر رہے بیں، اس 'نہیں ددگ' کا آغاز تو جھوٹ ہولئے ہے ہوا، یعنی پہلے صاحب نے اپنی کار خلاف بیانی سے واقعہ اپنے بڑوی کے تام درج کرائے قلط بیانی سے کام لیا، بل کہ فلط بیانی وہ صاحب اپنی اس فرضی گاڑی کی ایک طویل سلسلہ شروع کرا دیا، کیوں کہ ہر مہینے وہ صاحب اپنی اس فرضی گاڑی

معمولی ورق گردانی کی بھی عام طور سے اجازت ہوتی ہے، لیکن اگر بک اسال پر کھڑے ہوکر کتابوں، اخبارات یا رسالوں کا با قاعدہ مطالعہ شروع کر دیا جائے، جب کہ خریدنے کی ثبیت نہ ہو، تو سی بھی ان کا غاصبانہ استعمال ہے، جس کی شرعاً اجازت مبیں ہے۔۔

یہ چند سرسری مثالیں ہیں جو بے ساخت تلم پر آگئیں، مقصد یہ ہے کہ ہم سبل کر سوچیں کہ ہم کہاں کہاں چوری اور فصب کے گھٹیا جرم کے مرتکب ہورہے ہیں یہ اس کا گیار ہواں سیب: کسی اوارے کی طرف سے

ميسرسهوليات كاغلط استعال

تکایف کا بیسب تمام اسباب سے اہم ہے کیوں کداس سے ایک فردنہیں بل کہ ایک مکمل ادارہ متاکر ہوتا ہے۔ اگر ادارے نے اپنے کسی ملازم کوکوئی سہولت فراہم کی ہے اور وہ اپنی اس سہولت کو ادارے کی اطلاع کے بغیر کسی غیر متعلقہ فخص کو منتقل کر رہا ہے تو یہ بددیائتی اور جبوٹ میں شامل ہے۔ اور معاشرے میں اسے جدردی اور صادر حی کے طور پر جانا جاتا ہے حالال کدید جرم ہے۔ حضرت مفتی بھرتنی حالی صاحب مدفلہ فریاتے ہیں:

ایک صاحب ایک مرتبہ جی سے اپنے ایک پڑدی کا تذکرہ کرتے ہوئے یہ بتا رہے تھے کہ ان کے آپن میں کتنے خوشگوار تعلقات ہیں، اور وہ کس طرح ایک دوسرے سے اپنائیت اور ''حسن سلوگ'' کا معاملہ کرتے رہتے ہیں، اس ''حسن سلوگ'' کی تفصیل بیان کرتے ہوئے وہ کہنے لگے کہ''میرے پڑدی جس مجلے میں کام کرتے ہیں وہ اپنے ملاز مین کو ان کی ذاتی گاڑی کے لئے بہت می سہولیات فراہم کرتا ہے، (مثلاً پیٹرول کا خرچ، سروی اور مرمت وغیرہ کا خرچ) میرے پڑوی

ك ذكروفكو: ص١٢١ تا ١٢٥

ك لئة بيرول ك فرضى بل وافل كرتے تھے۔

جن میں سے ہرفرضی بل ایک مستقل جھوٹ تھا، ای طرح اس فرضی گاڑی کی سروی اور مرمت کے بھی ای طرح فرضی بل بنائے جاتے ہوں گے، کیوں کہ گاڑی تو برستور پہلے صاحب ہی کے استعال میں تھی، اس طرح اس ہدرد کی بدولت وہ سالہا سال تک جھوٹ کا میہ پلندہ اپنے نامیرا تھال میں درج کراتے رہے، ای طرح دوسرے صاحب اپنے دوست کی بیاری کے موقع پرخود اپنے آپ کو بیار ظاہر کرنے دوسرے صاحب اپنے دوست کی بیاری کے موقع پرخود اپنے آپ کو بیار ظاہر کرنے کے لئے فرضی شیخ بنواتے رہے، اور ڈاکٹر صاحب کو بھی اس غلط بیائی میں ملوث کرتے رہے۔

یددو واقعات تو مثال کے طور پر ذکر کر دیے گئے، ورنداپے گرد و پیش میں نظر دوڑا کر دیکھئے تو معلوم ہوگا کہ ہمارا معاشرہ ال جتم کے واقعات سے مجرا ہوا ہے، کوئی سرکاری یا غیر سرکاری محکمہ اپنے مالا معان کو جو سولیات دیتا ہے، بعض لوگ انہیں ہر قیمت پراپنے حق میں نچوڑنے کی کوشش کرتے ہیں، خواہ اس کے لئے جھوٹ بچ ایک کرنا پڑے، یا تواعد وضوابط توڑنے پڑیں، یا کسی اور بدعنوانی کا ارتکاب کرنا پڑے، مثلاً بعض تحکموں میں بیہ قاعدہ ہے کہ وہ اپنے ماز مین کو گاڑی میں استعال پڑے، مثلاً بعض تحکموں میں بیہ قاعدہ ہے کہ وہ اپنے ماز مین کو گاڑی میں استعال کرنے ہیں۔

ہوں ہوں ہے۔ اس اور ہر مہینے است پیٹرول کے بل داخل کرکے ہے رقم ہر حال میں وسول کرنا ضروری ہیجھتے ہیں خواہ واقعۃ اس مہینے میں اتنا پیٹرول استعمال ہوا ہویا نہ ہوا ہو، اس طرح بعض طاز مین کو محکے کی طرف سے اجازت ہوتی ہے کہ وہ ایک خاص مابانہ کرایے کی حد تک کوئی مکان اپنی رہائش کے لئے لئے کے سکتے ہیں، اب خواہ مکان کم کرائے پر ملا ہو، کیکن وہ زاکد کرائے کا بل بنوا کر پوری رقم وصول کرنا ضروری سمجھتے ہیں، اسی طرح بعض مرتبہ مکان کی مرمت یا و کھے بھال (Maintenance) کا خرج محکے ہیں، اسی طرح بعض مرتبہ مکان کی مرمت یا و کھے بھال (Maintenance) کا خرج محکے ہرواشت کرتا ہے، چنال چہنس لوگ مرمت کے فرضی بل بنوا کر بیر تھیں وصول کرتے رہے ہیں، یہی محالمہ علاج معالمے کے اخراجات کے ساتھ کیا جاتا وصول کر لیا جاتا ہے۔ کہ خواہ واقعۃ کسی علاج کی ضرورت نہ پڑی ہو، کیکن جعلی بل بنوا کر علاج کا خرج وصول کر لیا جاتا ہے۔

یہ میں میں ہوئی ہوئی گھٹیاتتم کی بددیاتی میں شامل ہیں، ال سلسلے میں ایک اہم شرعی اصول کی وضاحت مناسب معلوم ہوتی ہے جو بہت کم حضرات کو معلوم ہوتا ہے، اس لئے بعض اوقات اچھے خاصے دیانت دار حضرات بھی غیر شعوری طور پر اس تشم کی بددیانتی میں جتلا ہو جاتے ہیں۔

وہ اصول یہ ہے کہ کسی چیز کی ملکیت اور چیز ہے، اور استعال کی اجازت اور چیز ، چر چیز اپنی ملکیت میں آ جائے اے تو انسان جس طرح چاہے استعال کرسکتا ہے خواہ خوداس سے فائدہ اٹھائے یا کسی اور کو عارضی یا مستقل استعال کے لئے دے دے اس پر کوئی پابندی نہیں لیکن جو چیز اپنی ملکیت میں نہ ہویل کہ مالک نے اس استعال کرنے کا حق یا اس کی اجازت دی ہو (جے اسلامی فقہ میں ''اباحت'' سے استعال کرنے کا حق یا اس کی اجازت دی ہو (جے اسلامی فقہ میں ''اباحت'' سے تعبیر کیا گیا ہے) اس پر ہر طرح کے مالکانہ حقوق حاصل نہیں ہوتے، اس اجازت کا مقصد صرف یہ ہوتا ہے کہ انسان اپنی ضرورت کی حد تک اے جس قدر استعال کرنا حاسے کرلے۔

کین اے بیاجازت نہیں ہوتی کدوہ مالک کی اجازت کے بغیر اپنا بیدی کئی اور کوختل کر دے یا دوہروں کو دعوت دے کہ اس ے فائدہ اٹھانے میں وہ بھی اس کے ساتھ شریک ہو جائیں نیز اے بیا بھی حق نہیں ہوتا کہ اگر کئی وجہ ہے وہ خود اس اجازت سے فائدہ نبیں اٹھا سکا تو اس کی قیت وصول کرے۔

اس کی ایک سادہ می مثال ہیہ کہ اگر کمی شخص نے ہمارے کھر کھانا پکا کر بھی دیا ہے ۔ اور کو تھنے بھیج دیں، یا دیا تو یہ کھانا ہماری ملکیت ہے، خواہ ہم اسے خود کھائیں یا کسی اور کو تھنے بھیج دیں، یا صدقہ کردیں، بل کہ جائز ہی ہی ہے کہ کسی کو بچ کراس کی قیمت وصول کر لیس، لیکن اگر کسی شخص نے اپنے گھر میں ہماری وعوت کی تو جو کھانا وہاں موجود ہے وہ ہماری ملکیت نہیں، البتہ مالک کی طرف سے اجازت ہے کہ ہم اپنی ضرورت یا خواہش کے مطابق جتنا جاہیں کھالیں۔

کیکن ظاہر ہے کداس اجازت کا بید مطلب نہیں کہ ہم اس کھانے پراپنے مالکانہ حقوق جنا نے لگیں، لہذا بیہ جائز نہیں ہے کہ ہم مالک کی مرضی کے بغیراس پر کمی اور کو دعوت و بینے لگیں، ابی طرح اگر کوئی فخض دعوت کا کھانا اپنے ساتھ باندھ کر گھر لے جانے گئے تو اے کتنا گھٹیا آدی تجھا جائے گا، اور اس ہے بھی زیادہ کھٹیا اور شرم ناک بات بیہ ہوگی کہ کوئی فخض اگر خود کی وجہ سے کھانا نہ کھا سکا تو میز بان سے بیر مطالبہ کرے کہ میرے کھانے کے بیمے ادا کر دو۔

بالكل يجي صورت ملازمت سے حاصل ہونے والى سبوليات كى بھى ہے، جبال سك نفر تخواد كالعلق ہے وہ ملازم كى ملكيت ہے، اس وہ جس طرح چاہے استعمال كر سكا ہے يا جوالا ونس كى رقيس كيست محكے كى طرف سے ادا كر دى جاتى جي اوران كى وصوليا لى كے لئے بل چيش كرنے نہيں پڑتے ان كا بھى يہى تھم ہے، ليكن جو دوسرى سبوليات ملازم كو فراہم كى جاتى جي مثلاً پيرول، علاج معالي اور كرائے وغيرہ كے بلول كى اوائيكى، وہ محكے كى طرف سے ایك اجازت ہے، لبذا اس كا مطالبہ

ای حد تک جائز اور درست ہے جس حد تک اس اجازت سے واقعی فائد و اٹھایا گیا ہے اس سے زیادہ نہیں، اس فائدے ایس اپنے کسی عزیز، دوست یا پڑوی کوشریک سرنا بھی جائز نہیں۔

ای طرح اگر خود کواس اجازت سے فائدہ اٹھانے کی ضرورت بیش نہیں آئی یا اس کا موقع نہیں ملاتو اس کا غلط بل پیش کرکے پیے وصول کرنا بھی سراسر ناجائز ہے اور اس کی مثال بالکل ایسی جی ہے کہ کوئی شخص وعوت بیس شریک نہ ہواور واغی (وعوت وینے والے) کے پاس اس وقت کے کھانے کا بل بھیج دے کہ بیس چوں کہ وعوت سے فائدہ نہیں اٹھا سکا اس لئے یہ بل تم ادا کرو۔

ظاہر ہے کہ کوئی گھٹیا ہے گھٹیا آدمی بھی الی حرکت ٹیس کرے گا، ندگورہ سہولیات سے فائدہ اٹھائے بغیران کا بل محکے کو بھیج دینا بھی الی ہی شرم ناک حرکت ہیں السوس ہے کہ اس کی برائی عام طور سے محسوس ٹیس کی جاتی، بل کہ اے اپنا حق سمجھا جاتا ہے، حالال کہ اس میں جھوٹ اور فریب کا گناہ بھی ہے، اور دوسرے کا مال ناحق کھانے کا گناہ بھی ۔ لاہ

الكليف كابار موال سبب: عدم تعاون

تعاون آیک ایس چیز ہے جس کے بغیر معاشرے کا ترقی کرنا نامکن ہے اور انسانی حیات واجعا کی معاملات میں تعاون ریزہ کی بڈی کی مانند ہے۔ہم معاشرے کے اندرایک دوسرے سے تعاون کرکے ہی دوسروں کو تکلیف سے بچا کتے ہیں۔

یونین کے ساتھ تعاون:

فلیت میں رہتے ہوئے متعلقہ یونین کو مینگنیس وقت پر ادا کرنا جائے۔ اپنی زمدواری کو وقت پر بورا کرنا بھی تعاون کی آیک شکل ہے۔ اور وقت سے ٹال دینا اور سل ذکر و لمکنو: ص ١٤٦ نا ١٤١

المنكاوليسل أوس

@ سمجانے كاروبيزم اور دُهنگ ميذباندا پنائے۔

نام شاگردوں کے درمیان انساف سے برتاؤ کرے۔

خوش کائ اختیار کرے اور بدکائی ہے ہے۔

🕥 شاگردول سے عمادات کی پابندی کردائے۔

ای طرح شاگرد بھی اسا تذہ کے ساتھ تعاون کریں۔ان کی بات مانیں ان کا احرّ ام کریں۔علم کے حصول کے لئے کارآ مداور فائدہ مند اصول اپنائے اور ضرر رساں امور سے اجتناب کرے۔

🕡 تكليف كاتير موال سبب: ديوارول برجاكتك

مفتی تقی عثانی صاحب مظافر ماتے ہیں: ہمارے معاشرے ہیں دیواروں پر
اشتہارات نعرے اور اعلانات تکھنے یا چیاں کرنے کا رواج اس قدرتشویش ناک حد
اشتہارات نعرے اور اعلانات تکھنے یا چیاں کرنے کا رواج اس قدرتشویش ناک حد
علک بڑھ گیا ہے کہ اے وکچے کرشرم محسوں ہوتی ہے، ہیں نے ونیا کے تقریبا چالیس
ملک دیکھے ہیں، لیکن پر صغیر کے سوا کہیں دیواری تحریروں کا بیرطوفان و کھنے ہیں نہیں
آیا جو ہمارے ملک میں تیزی سے بوحتای جا رہا ہے، ملک بحر میں شایدی چھے خوش
قسمت ویواریں ایس ہوں جہاں کوئی ندکوئی تحریر درج نہ ہو، ورند ملک بحر میں تقریبا
ہرقابل ذکر ویواریر پھھونہ کچھ کھایا چیکا ہوا ضرور ملتا ہے۔

ڈاکٹروں اور حکیموں کے اشتہارات، سیای اور ندہی جلسوں کے اطانات، سیای اور ندہی جلسوں کے اطانات، سیای چندے اور قربانی کی کھالوں کی ایملیس، سیای اور ندہی جلسوں کے اطانات، سیای لیڈروں کی تعریف با ندمت، انتقاب لانے کے پر جوش ارادے، انتخابی امیدواروں کی قابلیت اور خدمات کا تعارف، انتخابی منشوروں کے اہم نکات، سیای قائدین کے وجوے اور وعدے، حکومت اور خافین کو وحمکیاں، کارخانوں اور محکموں میں ہونے والی زیاد تیوں کے خلاف احتجاج، یہاں تک کدؤاتی مخافین کے خلاف گالی گفتار،

بلا عذر کے تاخیر کرتا تکلیف کے زُمرے میں آتا ہے۔ جب مین اور دہائتی ہے خین کے ساتھ تعاون کریں گے تو ہوئین بھی ان کے سائل کے حل میں ول چپی لے گل اور حاصل شدہ فنڈ استعمال کرے گل۔ ای طرح اگر بیت الخلا کی جو رہا ہوتو اُسے بھی فورا ٹھیک کروانا چاہئے ، کیوں کہ اس پانی سے تکلیف پہنچانے کے ساتھ ساتھ ناپا کی اور گندگی پھیلانے کا جرم بھی ہورہا ہے۔

متعلقہ یونین کو بھی چاہے کہ وہ مکینوں کے اجتماعی وانفرادی مسائل کا خیال رکھے۔ اگر کسی مکین کو کوئی تکلیف ہے جس کا حل یونین کا فرض بنتا ہے کہ اُس مسئلے کوفورا حل کروائے ورنہ یونین کو تکلیف دینے کا گناہ ہوگا۔

یقیناً ایک دوسرے کے ساتھ تعاون تی تکلیف سے بچنے کا واحد ذرایعہ ہے عام طور پر دیکھا گیا ہے کہ ایک جانب سے بھی عدم تعاون دونوں کو تکلیف میں مبتلا کر دیتا ہے۔

شاگرد کے ساتھ تعاون:

استاذ پڑھانے سے پہلے نیت کرے ایک نیت جس کوعزم مصم (پکاارادہ) کہتے بیں کہ دمیں اپنے قول، فعل ہے کسی کو کوئی تکلیف نہیں پہنچاؤں گا'' اس نیت و اراوے کے ساتھ ساتھ وعا بھی کرتا رہے کہ اے اللہ! مجھے ایسا مسلمان بنا دے جس کے ہاتھ اور زبان سے لوگ محفوظ رہیں۔

ایک استاذ شاگرد کے ساتھ س طرح تعادن کرسکتا ہے۔ اس کی کی صورتیں

-01

● استاذ اس بات كا خيال ركے كدأس كى مى مل كى شاكردكو تكليف ند

🕜 شاكردول پر بلاوجدة الى بوجدندة الـ

(بين والعدال أول

(نیک الیالی این

التي وتكليف لينجي

غرض دنیا بجری با تی د بواروں پر دری ہوتی ہیں، اور ایسا لگتا ہے کہ ملک کی د بوار ہیں اور ایسا لگتا ہے کہ ملک کی د بوار ہی این کمینوں کو شخط دینے کے لئے نہیں، بل کہ ''آ زاد کی تحریر'' کا مظاہرہ کرنے کے لئے بنی ہیں، اور ہر د بوار ایک ایسا مفت توش بورڈ ہے جس کے استعمال کی تہ کوئی فیس ہے، نہ اس کے لئے کسی اجازت کی ضرورت ہے، اور شداس پر سفر کی کوئی بایندی ہے، بل کہ لوگوں کو صلائے عام ہے کہ وہ جب چاہیں، جو چاہیں اور جشنی بایندی ہے، بل کہ لوگوں کو صلائے عام ہے کہ وہ جب چاہیں، جو چاہیں اور جشنی کی محدی تحریر بی چاہیں اس مفت نوش بورڈ پر اپنے جذبات کا اظہار کرنے کے لئے کے لئے جائیں اور کسی بلدی پینظری (خرج) کے بغیر اپنی پہلٹی کو حیات دوام عطا کر دیں، کیول کہ جو بات اس نوش بورڈ پر لکھ دی گئی وہ ایسا ''نوشتہ' دیوار'' بن گئی کہ وقت گزر جانے کے بعد بھی اس کی آب و تاب ہیں فرق نہیں آتا۔

چناں چہ انیکشن میں جن خادمان قوم کی حاسیں منبط ہوئے بھی زمانہ گزرگیا،
ان کے ''واحد نمائندہ'' ہونے کی گوائی آئ بھی دیواروں پر شبت ہے، جن جلسوں کو
حاضرین کی کی وجہ سے فرو برد (ناکام) ہوئے بھی مذخیں بیت گئیں، ان کے
''تاریخی اجتماع'' ہونے کی شہادت آخ بھی''ریکارڈ'' پر ہے، جومعالج حضرات اپنے
اٹھال کا حماب دینے کے لئے اللہ تعالیٰ کے پاس پہنچ بچے، ان کی مسجاتی (مہارت)
کا تذکرہ آئ بھی زعدہ وجاوید ہے، غرض اس نوش بورڈ پر لگے ہوئے اطابات کے
لئے کوئی مدت مقرر نہیں، جب تک ان کی تحریرا پی محرطبی کو نہ بہنچ جائے یا ویوار کا
مالک اس پر چونا سفیدی کراکر کسی دوسرے اطابان کے لئے جگہ صاف نہ کر دے وہ
ہردور میں تازہ اور سدا بہار رہے ہیں۔

د بواری تحربروں کے اس اندھا دھند استعال سے پوری قوم کی تہذیب اور شائنگی کے بارے میں جو برااثر قائم ہوتا ہے، وہ تو اپنی جگدہے ہی، لیکن اس بات کا احساس بہت کم لوگوں کو ہے کہ بیمل و بنی اعتبار سے ایک بڑا گناہ بھی ہے جو چوری کے گناہ میں داخل ہے، طاہر ہے کہ اکثر و بیشتر میتحربریں ایسی ویواروں پر لکھی جاتی

ہیں جو تکھنے والے کی ملکیت میں نہیں ہوتی اور نہ دیوار کا مالک اس بات پر راہنی ہوتا ہے کہ اس کی مخارت پر سے مینا کاری کی جائے، البغاعموماً بیتح بریس مالک کی مرضی کے بغیر، بل کہ اس کی شدید نارائسگی کے باوجود لکھی جاتی ہیں اور اس طرح دوسرے کی ملکیت کو ناجا تز طور پر اپنے کام کے لئے استعمال کیا جا تا ہے۔

تکلیف کے دمویں سبب میں نبی اکرم بیلی الکی استادات گزر کے استعمال میں جن میں آپ بیلی الکی بین اکرم بیلی الکی خوش دل کے بغیر استعمال کرنے کی سخت ممانعت فرمائی ہے اور اس کو حرام قرار دیا ہے، لیکن چول کد دین کو ہم نے سرف نماز روزے کی حد تک محدود کر کے رکھ دیا ہے، اس لئے بیکام کرتے وقت ہمیں بیر خیال نہیں آتا کہ ہم کتنے بڑے گناہ کا ارتکاب کررہے ہیں؟

جن گزاہوں کا معاملہ براہ راست اللہ تعالی اور بندے کے باہمی تعلق سے ہے اور اس بیس کسی دوسرے کے جن کا مسئلہ پیدائیس ہوتا، ان کا حال تو بیہ کہ جب کہ جب کبھی انسان کو ندامت ہو، اور تجی تو یہ کی توفیق ہو جائے، وہ معاف ہو جائے ہیں، لیکن جن گناہوں کا تعلق حقوق العباد سے ہے، اور ان کے ڈر لیے کسی بندے کا حق پال کیا گیا ہے، وہ صرف تو بہ سے معاف ٹیس ہوتے، جب تک متعلقہ حق وار معاف نہر کے شرکے۔

لبذاہم اعلان واشتہار کے جوش میں اللہ تعالیٰ کے جن جن بندوں کا حق پامال کرکے ان کی املاک میں ناجائز تصرف کرتے ہیں، جب تک وہ سب معاف نہ کریں اس گناہ کی معافی ممکن نہیں۔

جوتکم دیواروں پرتحریر لکھنے کا ہے، وہی پوسٹر چپانے کا بھی ہے، اگر قرائن سے اندازہ ہو کہ دیوار کا مالک اپنی دیوار پر پوسٹر چسپال کرنے کو پیندنیس کرے گا تو اس دیوار پراشتہار لگانا بھی شرعاً جائز نہیں ہے، ہاں اگر کوئی جگہ اعلانات اور اشتہارات بی کے لئے مخصوص ہے، جیسے مساجد میں یا بعض عوامی مقامات پر اس کا انتظام کیا گھر والوں کے زخمی ہونے اور شیشوں کے ٹوٹنے سے بہتر ہے، کہ دیوار کی بدنہ ہی گوارا کر لی جائے، چنال چہدوہ چپ ہوکر بیٹے گئے، اور''نوشتہ دیوار'' پڑھ لیا۔ ظاہر ہے کہ اگر ان حالات میں لوگ چپ رہیں تو ان کی خاموثی کورضا مندی سمجھنا ان پر دوھراظلم ہیں تو اور کیا ہے؟ ک

الكيف كاچود موال سبب: بموقع سلام كرنا

سلام كرنا مسلمانوں اور اسلام كى پيچان ہے اور شعارُ اسلام بيں ہے ہيں ہے اور شعارُ اسلام بيں ہے ہيں ہے اگر ليكن بعض مواقع اور مقامات اليے ہوتے ہيں جہاں سلام نہ كرنا بہتر ہوتا ہے، اگر اس موقع پر سلام كرليا تو "السلام عليكم" جوايك دعائيكلہ ہے اس كى ہے او بى ہو جاتى ہے۔ يا آپ كا سلام كى كى تكليف كا سبب بن جاتا ہے۔ ویل میں مختصراً وہ مواقع ذكر كئے جاتے ہيں جہاں سلام كرنا جائز نہيں۔

ا تلاوت قرآن کے وقت سلام کرنا:

بعض اوقات انسان کو پتا بھی نہیں چاتا کہ میں زبان سے تکلیف پینچار ہا ہوں، بل کہ وہ سجھتا ہے کہ میں تو تواہ کا کام کر رہا ہوں، نیکن حقیقت میں وہ گناہ کا کام کر رہا ہوتا ہے اور اس کے ذراعہ دوسرے کو تکلیف پینچا تا ہے۔

مثلاً سلام كرناكتنى بنرى فضيات اور ثواب كا كام ہے۔ ليكن شرافت فے دوسرے كى تكليف كا اتنا خيال كيا ہے كہ دوسرے كى تكليف كا اتنا خيال كيا ہے كہ سلام كرنے كے بھى احكام مقرر فرما دي كہ ہر وقت سلام كرنا جائز نہيں، بل كہ بعض مواقع پر سلام كرنے پر ثواب كے بجائے گناہ ہوگا۔ كيوں كہ سلام كے ذرايع تم فے دوسرے كو تكليف با جيائى ہے۔

مثلاً ایک فخض قرآن کریم کی حلاوت یس مشغول ہے، اس کو سلام کرنا جائز نہیں۔اس لئے کہ ایک طرف تو تمہارے سلام کی وجہ ہے اس کی خلاوت میں خلل

له ذكروفكر: ١٣١٠ ١٣١

جاتا ہے، یا کسی و بوار کے مالک سے اجازت لے لی گئی ہے، یا اس بات کا بھین ہے کہ وہ پوسٹر چہاں کرنے کی بخوشی اجازت دے دے گا تو بے شک بات دوسری سے۔

حدیث کی کتابوں میں بیہ واقعہ مشہور و معروف ہے کہ ایک مرتبہ نی اکرم بین کوشرین کی کتابوں میں بیہ واقعہ مشہور و معروف ہے کہ ایک مرتبہ نی اکرم بین کوشرین چلے ہوئے تیم کرنے کی ضرورت چین آئی آپ بین کا او فقتها ہے ایک قریبی دیوار پر جا کرتیم فرمایا، اس واقعے پر بحث کرتے ہوئے علاء و فقتها ہے بیہ سوال اٹھایا ہے کہ آپ بین کا گئی گئی گئی گئی کے کسی دوسرے فنص کی دیوار سے تیم کیے فرما لیا؟ پھراس کا جواب دیا ہے کہ تیم کرنے سے دیوار کوکوئی نقصان نیس پہنچتا، اور بیہ بات واضح تھی کہ کوئی بھی فض اپنی دیوار سے تیم کرنے کوشع نہیں کرسکتا۔ اس لیے بات واضح تھی کہ کوئی بھی قض اپنی دیوار سے تیم کرنے کوشع نہیں کرسکتا۔ اس لیے اس کی بات بیہ ہو اجازت لینے کی ضرورت نہیں تیمی، بیہ جواب تو اپنی جگہ ہے، لیکن سوچنے گی بات بیہ ہو کہ جب تیم جسے بے ضرد کام کے بارے پی بیس موال بیدا ہو رہا ہے تو دیواروں کو جان ہو جو کر فراب کرنے کی اجازت کسے ہو سکتی ہے؟

یہ شہر نہ ہونا چاہئے کہ معاشرے بیں ان دیواری تحریوں کا اتنا روائ عام اور
الوگوں کا اس سے منع شہر کرنا اس بات کی علامت ہے کہ لوگ اپنی دیواروں کے اس
استعمال پررامنی ہو گئے ہیں، حقیقت یہ ہے کہ لوگ رامنی نہیں بل کہ بے بس ہیں،
حضرت مفتی تقی عثانی صاحب فرماتے ہیں: ہمارے ایک دوست نے اپنے مکان کی
چار دیواری پر تازہ تازہ رنگ کرایا تو پچھ صاحبان اس نادر موقع سے فائدہ اٹھائے
کے لئے اس دن بہنچ گئے، اور اس صاف شفاف دیوار پر اپنی خوشنو کی کا مظاہرہ
شروع کر دیا، ہمارے دوست نے ان سے التجا کی کہ بیددیوار آج ہی سفید ہوکر تیاد
ہوئی ہے، کم از کم پچھ دن کے لئے اسے معاف کر دیں، لیکن اس کا بیجہ بید نکلا کہ گھر

ك مسلو، باب التيقع: ١٦١/١

کے کرآ واز دی، پیچے مؤکر و یکھا تو اس نے کہا اکسٹلام عَلَیْکُنْدُ (سرف سام اور مصافحہ کرنا مقصود تھا) ان سے سلام کرنے کی دیریس بس فکل گئی۔ بتاہے ایسے شخص کے سلام کا جواب دیا جائے یا اُسے تھیٹر مارا جائے۔ سلف

بعض جگه سلام کرنا مکروه ہے:

فقہاہ کرام نے لکھا ہے کہ بہت ہمواقع ایسے ہیں، جہال سلام کرنا کروہ ہے مشاا کوئی شخص کھانا کھارہا ہے تو اُس سلام مہ کیا جائے ، کوئی چیز پی رہا ہے تو سلام مت کرو، کسی کا وعظا اور تقریرین رہا ہے تو سلام نہ کرو۔ بعض لوگوں کی عادت ہوتی ہے کہ جب کسی مجلس میں چینچے ہیں تو سب سے پہلے سلام کرتے ہیں اور پھر ہرایک سے مصافی کرتے ہیں، بیفلط طریقہ ہے کہ اس سے گویا آئی دیر تک مجلس کو ہے کار اور معطل کر دیا۔

سلام کی وجہ سے فرض نماز اوٹ گئی:

حضرت مفتی محدوقع عثانی صاحب فرماتے ہیں: "میرے ساتھ ایک مرتبہ بیہ قصہ پیش آیا کہ میرے ماتھ ایک مرتبہ بیہ قصہ پیش آیا کہ میرے ذمہ مجدہ میں فقالہ بیل کے بعد ملام پھیرا تو ایک صاحب نے وہیں ہے ہاتھ پکڑ کر سلام کر ڈالا، بے خیالی ہیں ہیں نے بھی وہیکم السلام کہدویا۔ اب نماز بھی گئی، دوبارہ چار رکعت پڑھنی پڑی۔ اس کا تو مصافحہ ہوا، میری جار رکعت فرض نماز چلی گئی۔ "

مصافحہ کے آ داب

مصافی کے بھی آ داب ہیں اگر ایک مخص مصروف ہے اور اس کے دونوں ہاتھ مصروف ہے اور اس کے دونوں ہاتھ مصروف ہیں تو اس مصافی نے برحاد دی تو اسلامی تفریویں: ۲۰۱۳ مصافی نے اسلامی تفریویں: ۲۰۱۳ مصافی نے اسلامی تفریویں: ۲۰۱۳ مصافی نے اصلاحی تقریویں: ۲۰۱۳

ہوگا اور دوسری طرف اس کو تلاوت چیوز کرتمہاری طرف مشغول ہونے میں تکلیف ہوگا اور دوسری طرف اس کو تلاوت چیوز کرتمہاری طرف مشغول ہوں، ان کو مجد میں بیٹے کر ذکر میں مشغول ہوں، ان کو مجد میں واقل ہوتے وقت سلام کرنا جائز نہیں کیوں کہ وہ اللہ تعالیٰ کی یاد میں مشغول ہیں۔ اللہ تعالیٰ کے ساتھ ان کا رشتہ جزا ہوا ہوا ہوا کی زبان پر ذکر جاری ہے۔ تمہارے سلام کی وجہ سے ان کے ذکر میں خلل واقع ہوگا، اور اس کو توجہ ہٹانے میں تکلیف بھی ہوگا۔

ابغيرسلام كمصافحه كرنا:

آج کل مصافحوں کا بہت زور ہے، سلام کریں یا نہ کریں مصافحہ ضرور کیا جاتا ہے، اس سے دوسروں کو تکلیف پہنچتی ہے۔ بزرگوں سے مصافحہ کرنے کو بڑے ادب کی بات سمجھا جاتا ہے، اس کے لئے نجانے کیا کیا گناہ کے جاتے ہیں، اس کو کہنی ماری، اوھر دھکا دیا، اس کی گردن تھلا گی اور مصافحہ کے لئے پہنچ گئے، یہ سب ناجائز ہے، ب شک بزرگوں سے مصافحہ کرنا برکت کی چیز ہے اور مستحب بھی ہے لیکن اس کے بھی آ داب ہیں، ان کا خیال از حدضروری ہے۔ آج کل ان آ داب کا عام طور پر خیال نہیں رکھا جاتا۔

بڑے بھائی کا ایک دل چسپ واقعہ:

حضرت مفتی محمد دفیع عثانی صاحب فرماتے ہیں: میرے بڑے بھائی صاحب (ذکی کیفی رَحِیَبَهُاللّهُ لَتَعَالَیؒ) جن کا اب انقال ہوگیا ہے۔ایک مرتبہ ابنا واقعہ سنانے لگے۔فرمایا کہ بہت ویرے بس کے انتظار میں کھڑا تھا جھوم بہت زیادہ تھا، کائی دیر کے بعدمطلوبہ بس آگئی، جیزی ہے اس کی طرف بڑھنے لگے تو چھیے ہے کسی نے نام

ك اصلاحي خطبات: ١١٤/٨

(بيك والإساع أوات

ہوگی۔اب دیکھے کہ وہ تو کھانا کھانے میں مشتول ہے، نہ تو وہ عبادت کر رہا ہے، نہ ذکر کہ عنہ نہ در کہا ہے، نہ ذکر کرنے میں مشغول ہے، اگرتم سلام کر لو گے تو اس پر پہاڑ نہیں ٹوٹ پڑے گا۔ لیکن سلام کے نتیج میں اس کو تشویش ہونے اور اس کو ناگوار ہونے کا اندیشہ ہے۔ اس لئے اس وقت سلام نہ کرے۔

اس طرح ایک شخص این کسی کام کے لئے تیزی سے جارہا ہے، آپ کو انداہ مواکد بیشخص بہت جلدی ہیں ہے، آپ نے آگے بڑھ کراس کوسلام کرلیا اور مصافحہ کے لئے ہاتھ بڑھا دیا ہے، آپ نے آگے بڑھ کراس کوسلام کرلیا اور مصافحہ کے لئے ہاتھ بڑھا دیا ہے، آپ نے اچھانیس کیا۔ اس لئے کہ آپ کواس کی تیزی سے اندازہ لگانا چاہئے تھا کہ بیشخص جلدی ہیں ہے بیسلام کرنے اور مصافحہ کرنے کا مناسب وقت نیس ہے۔ ایسے وقت بیس اس کوسلام نذکرہ، بل کہ اس کو جانے دو۔ بیس سب باتیں زبان کے ذرایع تکلیف پہنچانے ہیں واطل ہیں۔ ل

@ تكليف كايندر موان سبب: كالم كلوج وفخش كوئي

حنور يتفاقي كارثادب:

"الْمُسْتَبَّانِ مَا قَالًا فَعَلَى الْبَادِي مَالَمْ يَعْتَدِ الْمَظْلُوْمُ." " تَرْجَهَكَ: "حضرت الوهريه وَفَظْلَالْاَتَعَالْفَ عَلَى روايت ب كه صفور اقدى مَلِقَالْفَتَ اللهِ الشاد فرمايا:

دوآدی جوآپس میں ایک دوسرے کوگالیاں دیں سب کا وبال ای پر ہوگا جس نے گالیاں دین میں پہل کی ہے جب تک کدمظلوم زیادتی ند کرے ''

زبان کے گناہوں یس گالی دیتا بھی ہے بدایک الی بری چیز ہے جو کسی طرح سے بھی مؤمن کے شایان شان نہیں ہے، ایک حدیث میں ارشاد ہے: "سِبابُ

له اصلاحی خطبات: ۱۲۵/۸

ت مسلم، كتاب البروالصلة، باب النبي عن السباب: ٢١١/٢

وہ بے چارہ کس طرح جواب دے گا، ای طرح آگر کوئی نماز کے لئے جا رہا ہے اور جماعت کھڑی ہو چک ہے تو اس ہے بھی مصافی نہیں کرنا چاہئے، میرے ساتھ ایسا ہوتا رہتا ہے کہ جماعت کھڑئی ہوگئی، میں مسجد کی طرف جا رہا ہوں، کسی نے دیکھا، تو بجائے مسجد جانے کے میر کی طرف آگیا اور سلام کرکے مصافحہ کے لئے ہاتھ بڑھا دیے ، ایسے موقعوں پر میں مصافحہ نہیں کرتا تا کہ اُسے معلوم ہو کہ بید وقت مصافحہ کرنے کا نہیں۔ ای طرح اور کوئی شخص کسی اور جلدی میں جا رہا ہے تو اسے سلام تو کر لیا جائے کیوں کہ سلام تو کر ایسا موقع کی اور جندی میں جا رہا ہے تو اسے سلام تو کر جندی ہوتا کیکن مصافحہ نہ کیا جائے کیوں کہ سلام کرنے میں اس کا کوئی مستقل وقت خرج نہیں ہوتا کیکن مصافحہ کرتے ہیں اس کا کوئی مستقل وقت خرج نہیں ہوتا کیکن مصافحہ کرتے میں اُسے تکلیف اور اذبرت پہنچے گی۔

مجلس کے دوران سلام کرنا:

فقباء کرام نے لکھا ہے کہ ایک فخض دوسرے اوگوں سے کوئی کبی بات کر دہا ہے۔ اور دوسرے اوگ ہوں بات کر دہا ہے۔ اور دوسرے اوگ توجہ ہے اس کی بات من دہے ہیں اگرچہ وہ و نیاوی باتیں ہوں اس حالت میں بھی اس مجلس میں جا کرسلام کرنا جائز نہیں۔ اس لئے کہ وہ لوگ باتیں سفنے میں محروف تھے۔ آپ نے سلام کے وُر بعدان کی باتوں میں خلل وُال دیا اور جس کی وجہ ہے باتوں کے درمیان میں بدمزگی پیدا ہوگئی اس لئے اس موقع پر سلام کرنا جائز نہیں۔ اس لئے تکم ہے کہ جب تم کمی مجلس میں شرکت کے لئے جاؤ اور وہاں پر بات شروع ہو چکی ہوتو وہاں پرسلام کے بغیر بیٹے جاؤ اس وقت سلام کرنا زبان سے تکلیف پہنچانے کے مشرادف ہوگا۔ اس سے اندازہ لگا ہے کہ شرایعت اس بارے میں کنتی حماس ہے کہ دوسرے فخص کو ہماری وَات سے اور فی تکلیف نہ پہنچے۔

كانا كهانے والے كوسلام كرنا:

ایگ شخص کھانا کھانے میں مشغول ہے،اس وقت اس کوسلام کرنا حرام تو نہیں۔ البتہ مکروہ ضرور ہے جب بیراندیشہ ہو کہ تمہارے سلام کے نتیجے میں اس کوتشویش کے جیلام کے نتیج میں

بيك لايسالم أوبات

المن المنظمة المنظمة

بہت ہے مردول اور عورتول کو گالی دینے کی عادت ہوتی ہے اور بعض لوگ تو اس کو بڑا کمال جھتے ہیں حالال کہ یہ جہالت اور جاہلیت کی بات ہے، اس میں بخت مناه بھی ہے اور اس کی وجہ سے آپس میں تعلقات بھی خراب ہوتے ہیں اور گالی ملوج كرت كرت مردول تك وفي جاتے بين ايك في كوكال دى دوسرے في اس کے باب کو گالی دی چر سلے والے نے جواب میں باپ کے ساتھ داوا کو بھی لپیٹ لیا، ای طرح سے اسے مال باپ کو گالیاں واوانے کا ذراید بھی بن جاتے ہیں۔ حضور طَالِقَ عَلَيْنَا فِي فِر ماليا: بوت بوت كنامول من س ايك سي مجى ب ك كولى محض اين مال باب كو كالى وسيد معاب وتفولفة التفقة في غرض كيا يا رسول الله! كياكوني مخص اين مال باب كو بهي كالى دے كا؟ آب في مايا بال! لسي آدى

فَالْوَكُ لَا: لَفَظِ "سَبّ" كا رَجم جَل جَل م في كالى ع كيا عالى كالي مطلب نيين ك فحش بازارى كالى دى جائے وي كالى بىل كركسي كوكسى بھى طرح برے لفظوں ے باد کرنا گالی میں شامل ہے۔خوب سمجھ لیس اگر ماں، بہن کی گالی شددی بل ک ب موده، گدها، كمينه كيدويا بي بحى ان احاديث كم مغبوم مين آجاتا ب_ جن مين مب وستم كى ممانعت وارد بونى -

كے باب كو كالى دے كا تو وہ اس كے باب كو كالى دے كا؟ اور كى كى مال كو كالى دے

🛈 تكليف كا سولهوال سبب: كسى كو ذہنى تكليف ميں ڈالنا

جس طرح كسى كوجسماني تكليف ببنجانا حرام اور كناه باى طرح كسى كوذبني

له بخارى، كتاب الأدب، باب ما ينهى من السباب: ١٩٣/٢ م عه مسلم، كتاب الايمان، باب الكبائو: ١٩٤١، رقم: ٢٦٢

گاتو دواس کی ماں کو گالی دے گا۔

تکلیف دینا بھی حرام اور گناہ ہے، بل کہ جسمانی تکلیف سے بردھ کر گناہ ہے۔ کیول کہ بسا اوقات وہن تکافف سے انسان کے تمام امور معطل موکررہ جاتے ہیں اور وہ انسان کوئی کام ٹیس کر یا تا اور ایک لامحدود سوج و بچار میں مبتلا ہو جاتا ہے، جس سے اس کی صحت پر بھی برااٹر پڑتا ہے۔

بسا اوقات کی کمزور انسان کو آئی زیادہ ذبنی تکلیف پہنچتی ہے کہ وہ ذبتی طور پر وہمی ہو جاتا ہے اور آئندہ کی زندگی تاہ ہو جاتی ہے ایک مسلمان جس طرح بد جاہتا ے کہ اُس سے کسی کوجسمانی تکلیف ندینچے ای طرح اُسے اس بات کا بھی خیال ر کھنا جا ہے کد اُس سے می کوؤئن آکلیف بھی ند پہنچے جو کہ جسمانی آکلیف سے کہیں

بسا اوقات انسان كومعلوم نيس موتا دوسرے انسان سے معاملات مل يا باقول باتوں میں ایک بات کبدریتا ہے کہ سننے والے کا دل بل جاتا ہے، کسی سے کوئی معاملہ کرتے وقت ایسا روبیہ اختیار کیا جاتا ہے جیسے دوسرے کا اس معاملے میں کوئی

يادر كهنا جائي كداي وجن، الي سوج اورائي عادات جن كا اختيار كرنا شرعي الشبارے لازمی شہوان کو دومرول پر یا اپنے ماتخول پر زبردی مسلط کرنا بھی ذہنی تکلیف کے زُمرے میں آتا ہے۔

وجنی تکلیف میں مبتلا کرنا حرام ہے:

حضرت تعاوى وَجِعَيِّهُ اللهُ تَعَالَتْ قرائ إلى "أَلْمُسْلِعُ مَنْ سَلِعَ الْمُسْلِمُونَ " کی حدیث مین زبان اور ہاتھ کے ذریعہ ظاہری افعال کی طرف اشارہ فرمایا ہے۔ لین اگر آپ نے اپنی زبان یا ہاتھ سے کوئی ایسا کام کیا جس سے دوہرے کو ز بن تکلیف ہوئی تو وواس حدیث میں واقل ہے۔ مثلاً آپ نے کسی سے قرض لیا اور

بيك (العدار أون)—

اس سے اندازہ لگائے کہ حضرت والا کی نگاہ کتی دور رس تھی۔ اسلا آپ گھر والوں کو بتا کر چلے گئے کہ فلاں وقت آگر کھانا کھاؤں گا۔ لیکن اس کے بعد اطلاع کئے بغیر کہیں اور چلے گئے کھانا بھی وہیں کھالیا اور وہاں پر گھنٹوں گزار دیے اور وقت پر گھر والیس نہیں پہنچے۔ اور گھر پر آپ کی زوی کھانے پر آپ کا انظار کر رہی ہے۔ اور پر بیٹان ہورہی ہے کہ کیا وجہ پیش آگئی کہ والیس نہیں آئے ، کھانا لئے بیٹھی ہے۔ آپ کا بیٹل کناہ کبیرہ ہے اس لئے کہ آپ نے اس ممل کے وابس نہیں آگئی کہ والیس نہیں آگئی کہ والیس نہیں آگئی کہ وابس کے کہانا گئے کہ آپ نے اس ممل کے وابست کو رہا تھا۔ آپ کو ذات ہے وابست کر دیا تھا۔ آپ کو اُل کھانا کسی اور جگہ کھانا تھا تو آپ اس کو اطلاع کر کے اس کے وابست کر دیا تھا۔ آپ کو فارغ کر دیے ۔ اس کو انظار اور پر بیٹانی کی تکلیف میں جتلا شرکر تے۔ لیکن آپ ہم لوگ اس بات کا وصیان نہیں کرتے ، اور یہ سوچے ہیں کہ وو تو ہماری بنوی ، می اور جاری ماتوں کہ بیٹل گناہ کبیرہ اور جاری ماتوں ہے۔ اگر انتظار کر رہی ہوتوں کرے حالاں کہ بیٹل گناہ کبیرہ اور جاری ماتوں ہے۔ اگر انتظار کر رہی ہوتوں کرے حالاں کہ بیٹل گناہ کبیرہ اور جارا مے اور ایڈ ایوسلم ہے۔ اگر انتظار کر رہی ہوتوں کرے حالاں کہ بیٹل گناہ کبیرہ اور حال مادر ایڈ ایوسلم ہے۔ اگر انتظار کر رہی ہوتوں کیے اور کے حالاں کہ بیٹل گناہ کبیرہ اور درام ہوا درایڈ ایوسلم ہے۔ اگر انتظار کر رہی ہوتوں کیا کہ کھر گناہ کبیرہ اور درام ہور ایڈ ایوسلم ہے۔

تکلیف ہے بچاؤ کا چھٹاراستہ

جھوٹ سے پہیز:

ا جھوٹ کا پہلا وہال: فرشتوں کی نفرت:

"وَعَنِ ابْنِ غُمَرَ رَضِي اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُمَا قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا كَذَبَ الْعَبْدُ تَبَاعَدَ عَنْهُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا كَذَبَ الْعَبْدُ تَبَاعَدَ عَنْهُ اللّٰهِ صَلَّى مِيْلًا مِنْ نَتْنِ مَاجَآءَ بِهِ." عَالَمُ اللّٰهِ مِيْلًا مِنْ نَتْنِ مَاجَآءَ بِهِ."

ك اصلاحى خطبات: ١٣٢/٨ ك اصلاحى خطبات: ١٠٩/٨٠ وقد ١٩٧٢ عن ترمذى، ابواب البر والصلة، باب ماجاء في الصدق والكذب: ١٠٨/٠، وقد ١٩٧٢ -

ملازم پرذہنی بوجھ ڈالنا:

حضرت تفانوی وَخِعَبُنالاَلُاتَقَالَانُ نَے فرمایا: آپ کا ایک نوکراور ملازم ہے، اب
آپ نے چار کام ایک ساتھ بتا دیے کہ پہلے یہ کام کرو۔ پھر یہ کام، پھر یہ کام کرتا،
پھر یہ کام کرنا۔ اس طرح آپ نے چار کاموں کو یادر کھنے کا بوجھ اس کے ذہن پر
وال دیا، اگر ایسا کرنا بہت ضروری فیض ہے تو ایک ساتھ چار کاموں کا بوجھ اس کے
وہن پر فیس و النا چاہے، بل کہ اس کو پہلے ایک کام بتا دو۔ جب وہ پہلا کام کر چھے تو
اب دوسرا کام بتایا جائے، وہ اس کو کر چھے تو پھر تیسرا کام بتایا جائے۔ چنال چہ فود لیا
طریقہ بتایا کہ بین اپنے توکر کو ایک وقت بین ایک کام بتاتا ہوں۔ اور دوسرے کام جھ
اس سے کرانے بین ان کو یادر کھنے کا بوجھ اپنے مر پر دکھتا ہوں۔ اوکر کے سر پر فیمنی
رکھتا، تاکہ وہ وہنی یوجھ بین جتا نہ ہو جات ، جب وہ ایک کام کر کے قار خ ہو جات

بي تو يجر دومراكام يتاتا مول-

ك اصلاحى خطبات: ۱۳۲/۸ ريك رابيل أرمث بچوں کو بھی بچے بی سکھلائیں اور بچے ہی کی عادت ڈالیں ان کے بہلانے کے لئے بھی جو وعدو کریں وہ وعدہ بھی سچا ہونا چاہئے۔ جیسا کہ آئندہ حدیث میں اس پر تھبیہ آری ہے، البتہ جن مواضع میں جبوث کی گفجائش حدیث میں اصلاح کرائے کے لئے جبوٹ بولنا (ایک فریق کی جانب ہے دوسرے فریق کو اچھی بات پہنچانا اگر چہ اس نے بھی ہی نہ ہو)۔ اور جیسے ضدی ہوی کو رامنی کرنے کے لئے وعدہ کر لینا وغیرہ وغیرہ۔

🌪 حجوث کا دوسرا وبال: گناه کبیره کا ارتکاب

"قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى الله عَلَيْه وَسَلَّمَ الْكَعَبَانِوُ الإِشْوَاكُ بِالله وَعَقُولُ الْكَبَانِوُ الإِشْوَاكُ بِالله وَعُقُولُ الْمَعْمُونُ الْغُمُوسُ وَالْيَمِيْنُ الْغُمُوسُ وَفَي رواية آنَسِ وَشَهَادَةُ الزَّوْدِ بَدُلَ الْيَمِيْنِ الْغُمُوسِ"، " وَفِي رواية آنَسِ وَشَهَادَةُ الزَّوْدِ بَدُلَ الْيَمِيْنِ الْغُمُوسِ"، " تَرَجَحَمَّى: "معزرت عبدالله من عمر وَعَالِقَهُ تَغَالِطُهُ اللهُ اللهُ مَا عَم وَعَالِقَهُ الْعُفَا عَد روايت م كه حضوراقد سَ مَلِيَا اللهُ عَلَيْهِ اللهُ ال

الله ك ساته شرك كرنا - ﴿ مال باب كوستانا - ﴿ كَلَ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّ

سمبیرہ گناہ تو بہت ہے ہیں لیکن اس حدیث میں چندایسے گناہ و کر فرمائے جو بہت ہوں اور جن میں عام طور ہے لوگ جنٹلار ہے ہیں چول کداس موقع پر ہم زبان کی آفتیں و کر کررہ ہیں اس لئے بید حدیثیں جھوٹی فتم کی مناسبت ہے یہاں نقل کی جیں۔اللہ کے ساتھ کسی کوشریک کرنا سب سے بردا گناہ ہے جس کی بھی بھی جھش نہیں ہے ۔۔۔۔۔ والدین کی نافرمانی اور ان کو ستانا اور تکایف وینا بھی بڑے

ك زبان كي حفاظت: ص١١٦

ع بخارى: كتاب الأيمان والنذور، باب اليمين الغموس: ١٩٨٧/١ رقم: ٩٨٧/١

تَنْرَجَمَرَیَّ: "حضرت عبداللہ بن عمر فَضَالفَارِتَفَالِقَا ہے روایت ہے کہ
حضور اقدس طِلِقَافِیَتِیْلُ نے ارشاد فر مایا: "جب بندہ جموث بولنا ہے تو
گرشتہ اس کی بات کی بدیو کی وجہ ہا ایک میل دور چلا جاتا ہے۔"
اس حدیث سے جموث کی سخت ندمت معلوم ہوئی اور پیتہ چلا کہ فرشتوں کو جموث سے بہی گھن آتی ہے کہ جول ہی
میں کے منہ سے جموث فکانا ہے فرشتہ وہاں سے چل دیتا ہے اور ایک میل تک دور
چلا جاتا ہے، واضح رہے کہ اس سے اعمال کھنے والے فرشتوں کے علاوہ دوسرے

فرشتے مراد ہیں۔ تا گواری اور نفرت تو سجی فرشتوں کو ہوتی ہے لیکن جوفر شتے اندال لکھنے پر مامور ہیں وہ مجبوراً نا گواری کو برداشت کرتے ہیں۔ اللہ کی بیاری مخلوق کو تکلیف پہنچانا کتنا براعمل ہے اس کوخور سجھ لیں اور جوجھوٹ کا گناہ ہے وہ اس کے

علاده ہے۔

حضوراقدس فيطنى المارشاد ہے: "تم یح کو لازم پکڑو کيوں کہ تح يکی کی راہ دکھاتا ہے اور نیکی جنت کی راہ دکھاتی ہے۔ اور انسان کچ بولٹا رہتا ہے اور کچ اور انسان کچ بولٹا رہتا ہے اور کچ اور انسان کے بولٹا رہتا ہے اور کچ اور انسان کہ خوب دھیان رکھتا ہے بیہاں تک کہ اللہ کے نزد يک صديق (بعنی بہت بچائی والا) لکھ ديا جاتا ہے۔ (پھر فرمايا کہ) جموث ہے بچو۔ کيوں کہ جموث فجو ر (بعنی منابوں ميں کھس جانے کی) راہ بتاتا ہے۔ اور فجو ر دوز خ کی راہ دکھاتا ہے۔ انسان مرابر جموث بولٹا رہتا ہے اور جموث بولٹ کا دھيان رکھتا ہے۔ (بعنی جموث جان بوجو کر بولٹا ہے اور جموث کے مواقع سوچتا رہتا ہے) يہاں تک کہ اللہ کے نزد يک بہت بڑا جمونا لکھ ديا جاتا ہے۔ ع

ابدا مؤمن بندول پر لازم ہے کہ بعیث تج بولیں اور تج بی کو اختیار کریں،

له زبان کی مقاعد: س

المسلم، كتاب البروالصلة، باب قبح الكذب: ٢٢٢١/١ وقع: ٢٦٢٧

ب-(اور) يركت كوفتم كرديق ب-

﴿ حِموتُ كَا جِوْتِهَا وِبِالَ: اللَّهُ تَعَالَىٰ كَي ناراْضَكَي

حعرت عبدالله بن معود رَفِحَ اللَّهِ اللَّهِ على عبد رسول الله وَالمَالِيُّ اللَّهِ على الله وَالمَالِيُّ اللَّهِ نے ارشاد قرمایا: "جو محص کسی مسلمان کے مال پر تبعنہ کرنے سے لئے جھوٹی مشم کھاتا بت توسیخص الله تعالی کے دربار میں اس طرح حاضر ہوگا کہ الله تعالی اس سے سخت יוטיט מעט בייי

ایک اور حدیث میں حضور اکرم شیق علی کا ارشاد ہے: "جو جھی کسی مسلمان کا حق دبانے کے لئے جوئی متم کھاتا ہے تو اللہ تعالی اس پر جنت حرام فرماتے ہیں اور جہم اس کے لئے واجب کرویتے ہیں۔" کسی مخص نے پوچھا: اے اللہ کے رسول! اكرچەدەمعمولى ى چز بوجى كى دجەس وقىم كھاتا ؟ يارے رسول كالتاليكا نے ارشاد فرمایا: "بال! اگرچه ده بیلو (لکڑی) کی مسواک بی کیول ند ہوت "

@ جھوٹ کا پانچواں وبال: جھوٹی گواہی کا ارتکاب

تيسرا بوا كناه جوحديث بالامين ندكور ب ده جموني كواى دينا ب جس طرح ابنامال بیجنے یا دوسرے کاحق مارنے کے لئے جھوٹی مسم کھانا حرام ہے اس طرح مسی دوسرے کو کسی کا مال ناحق ولائے کے لئے یا مقدمہ جمانے کے لئے یا کسی بھی وجہ ے جھونی گوائی دینا ترام ہے۔

بہت سے لوگ سی کی ووتی ہیں یا رشتہ داری کے تعلقات کی وج سے جموتی گوائی دے دیتے ہیں۔ چھوٹی گوائی خود ہوا گناہ ہے پھراس کے ساتھ حاکم قتم بھی

ك ابوداؤد، كتاب البيوع، ياب كواهية اليمين في البيع: ١١٨/١، وقع: ٢٢٢٥ ابن ماجه ايواب الأحكام، باب من حلف على يمين فاجوة: ١٦٨/٢

ت حواله مذكوره

گناہوں میں ہے اور اس حدیث میں اس کوشرک کے بعد ذکر قرمایا ہے جس سے اس کی قباحت خوب ظاہر موری ہے۔

جھوٹی قتم کا تعلق گزشتہ زمانہ کے واقعات ہے ہوتا ہے۔ جو کوئی واقعہ ہوا نہ ہو اس کے بارہے میں کو دیا کدائیا ہوا اور اس رقتم کھالی اور کسی نے کوئی کام نہیں کیا اس كے بارے ميں كبرويا كراس في ايماكيا ہاوراس رضم كھالى، اى طرح اين سن فعل کے کرنے یا نہ کرنے پر جھوٹی فتم کھالی ہے بہت بڑا گناہ ہے، اوّل او جھوٹ مچراوپر سے جھوٹی قتم لینی اللہ کے نام کوجھوٹ کے لئے استعال کرنا گناہ در گناہ ہو

بہت سے مرداور مورت جھوتی قسم سے بالکل پر پیز جیس کرتے، بات بات میں متم کھائے ہلے جاتے ہیں اور اس کا گناہ اور وبال جو دنیا اور آخرت میں ہے اس کی طرف اوجشیں کرتے۔ بعض اوگوں میں تیری میری برائی کرنے کی عادت ہوتی ہے خواہ تخواہ لا انی جھکڑوں میں اینے آپ کو پھنساتے ہیں پھر جب کوئی موقع آتا ہے تو عرجاتے ہیں اور صاف انکار کردیتے ہیں کہ میں نے نہیں کہا۔ بہت سے لوگ مال يجية وقت جهوني فتم كهات بين كديدات كالياب اورات كالإاب اوربعض مرتبه الیا ہوتا ہے کی چیز کے بارے میں جھوٹی فتم کھا جاتے ہیں کہ بدمیری ہے حالال كدان كى نبيل موتى، بدسب باتيل اس كئے سرزد موتى بيل كدآ خرت كى پيشى كا

@ جھوٹ کا تیسراوبال: مال سے برکت کا خاتمہ

حضرت الديرية وتفالفينت الفظ عدوايت بكدرسول اكرم فالتفاعيل في ارشاد فرمايا: "الْحَلَفُ مَنْفَقَةٌ لِلسِّلْعَةِ مَمْحَقَةٌ لِلْبَرَكَةِ" "دفتم مال كو بكوادين

سله زبان کی شاعت اس ۵۵

کھنلوا تا ہے۔ اس لئے گناہ در گناہ ہوتا ہے۔ اور حرام پر حرام ہوتا چلا جاتا ہے۔ تعجب کے اور آخرت کے عذاب کی طرف کے اور گرائی کو دیکھتے ہیں اور آخرت کے عذاب کی طرف وصیاتی نیس کرتے، بہت سے لوگوں نے تو جھوٹی گوائی کو پیشہ ہی بنار کھا ہے، پولیس اور وکیل الفاظ رٹا دیتے ہیں اور اس وقت نفذ گوائی دے کر نفذ دام لے آتے ہیں، اور اس کا یہ چیشہ حرام ہے اور آ مدنی ہمی حرام ہے قرایعہ حرام کماتے ہیں۔ اس میں بعض بڑے اور آ مدنی ہمی حرام ہے قرایعہ حرام کے ذرایعہ حرام کماتے ہیں۔ اس میں بعض بڑے بڑے آدی جتا ہیں۔

🏵 جھوٹ کا چھٹا وبال: وعدہ خلافی کا ارتکاب

بعض کام ایسے ہیں جن کولوگ زبان کے ذریعہ تکلیف دینے کے اندر شار نہیں کرتے، حالال کہ وہ کام زبان سے تکلیف دینے کے تکم میں داخل ہیں، مثلاً وعدہ خلافی کرنا۔ آپ نے کسی سے مید وعدہ کر لیا کہ فلال وقت آپ کے پاس آؤں گا یا فلال وقت ہیں آپ کا کام کردوں گا لیکن وقت پر وعدہ پورا نہیں کیا۔ جس کے منتج میں اس کو تکلیف مینچی، اس میں ایک طرف تو وعدہ خلافی کا گناہ ہوا۔ دوسری طرف میں دوسرے شخص کو تکلیف مینچانے کا بھی گناہ ہوا یہ زبان سے تکلیف مینچانے کے تھم میں داخل ہے۔

حَصِوتُ كَاسَاتُوالِ وَبِالَ: مَنَافَقَت كَى عَلَامَتُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ الْمُنَافِقِ "قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ الْمُنَافِقِ تَعَلَّمُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ المُنَافِقِ تَعَلَّمُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ ا

تَتَوَجَّمَنَدُ "حضرت الوجريره وَخَلَقَالَتَغَالِفَكَ يَ ووايت بي كد حضور عليقة المُقَالِقَة المُقَالِقَة المُقالِقَة المُقالِقَة المُعالِم الله المُعالِم الله الله المُعالِم الله الله المُعالِم المُعالِم الله المُعالِم الله المُعالِم المُعالِم

ك بخارى، كتاب الإيمان، باب علامات المنافق: ١٠/١ رقم: ٣٣ -

قرض خواه كو تكليف يهجيانا

بہت سے لوگ وقتی ضرورت کے لئے دوکاندار سے ادھار لے لیتے ہیں، یا کسی
سے نفقد رقم قرض لے لیتے ہیں۔ بعد ہی قرض دینے والے کو متاتے ہیں، وعدہ پر
وعدہ کئے جاتے ہیں لیکن قرض کی اوا ٹیگی نہیں کرتے۔ دوسرے کا مال بھی لیا اور اس
کو وعدہ خلافی کے ذراعہ ایڈ ابھی دے رہے ہیں، برخض کو بیسوچنا چاہئے کہ ہیں
اس کی جگہ ہوتا تو اپنے لئے کیا پیند کرتا، جو اپنے لئے پیند کرے وہی دوسرے کے
لئے پیند کرنا لازم ہے۔

جس شخص کے پاس قرض کی ادائیگی کے لئے مال موجود ند ہو وہ قرض خواہ سے

ك مستد احمد: ١١٢٥/٢ وقع: ١١٩٧٥

ت بخارى، كتاب الايمان، باب علامات المنافق: ١٠/١، وقم ٢٠٠٠

(بَيْنَ (لِيلِ الْمِرْنِينَ)

اس جموت کے اختیار کرنے کا باعث بہت برسی ناتھی ہے کداگر کام شدلیا تو پھر کام کمبال ہے آئے گا۔ حالال کہ کار مگر بھی فارغ نہیں رہتے کام آتا ہی رہتا ہے۔اور اللہ روزی رسال ہے، کچے یولنے ہے بھی اتنا ہی رزق طے گا جننا مقدر میں ہے اور اس میں برکت بھی ہوگی۔ چول کہ پیشہ ورلوگ جموٹ میں جتلارہتے ہیں اس لئے ان کے ہاں برکت نہیں دیکھی جاتی۔ خوب کماتے رہتے ہیں لیکن پیسے جی نہیں

جس طرح جموثی قتم سے تجارت کی برکت جاتی رہتی ہے۔ای طرح جموئے وعدوں کی وجہ سے کاریگروں اور پیشہ وروں کی کمائی میں برکت نہیں ہوتی، تمام پیشہ وراگر حدیث برعمل کریں اور کی افتیار کریں تو و نیا اور آخرت میں آرام سے رہیں۔

تكليف سے بچاؤ كا ساتوال راسته

لعن طعن سے پرہیز:

"قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا تُلَاعِنُوْا بِلَعْنَهِ اللهِ وَلَا بِعَضَبِ اللهِ وَلَا بِالنَّادِ" لَا

تَوَجَهُمَا: "حضرت سمرہ بن جندب وَخَالَا اَتَفَالَ عَالَا اَلَٰهُ والله كالعنت به حضور اقدس فَالِقَالِيَ اِلله كالعنت به والده اور آئيس ميں يوں نه كبوكه تجھ پر الله كا غضب نازل ہو۔ نه آئيس ميں ايك دوسرے كے لئے يول كبوكه جنم ميں جائے اور آئيس ميں ايك دوسرے كے لئے يول نه كبوكه أگر ميں جلے۔"

اس مدیث مبارک میں بیاضیحت فرمائی ہے کہ آپس میں ایک دومرے پر

ك ابوداؤد، كتاب الأدب، باب في اللعن:٢١٦/٢، رقم: ٢٠٩١

معذرت كرے اور مہلت مائل اور اس تاريخ پر ادائيكى كا وعده كرے جس وقت كه اس كے پاس ہوجود ہوفورا قرض خواه كا حق اس كے پاس مال موجود ہوفورا قرض خواه كا حق اواكرے نال منول بالكل فدكرے حضور اقدس فطاق المائين كا ارشاد ب "مَطُلُ الْعَنْيِّي ظُلْمَةً " يعنى جس كے پاس مال موجود ہواس كا نال منول كرناظم ب-

یں صدیث میں ان لوگوں کو عبیہ فرمائی ہے جوادا نیگی کا انتظام ہوتے ہوئے صاحب من کو آج کل پر نالتے رہے ہیں، پید کموتے ہوئے جموئے وعدہ کرنے والے کو حضور ظالف کی انتظام قرار دیا ہے۔

عموماً پیشہ وراوگ وعدے کرنے میں بہت ماہر ووتے ہیں۔ وہ یہ جانتے ہوئے
کام لے لیتے ہیں کہ جس وقت پر دینے کا وعدہ کر رہا ہوں اس وقت نہیں دے سکول
گا۔ کام لے کر رکھتے ہیں اور جھوٹے وعدے کرتے رہتے ہیں۔ جن کا کام ایا ہے
جب وہ آتے ہیں اور نقاضا کرتے ہیں، تو صبح شام اور آن کل کے جھوٹے وحدول
کی کثرت ہے ہے چارے کی جان آفت میں کر دیتے ہیں، اس جھوٹ اور وعدہ
خلافی کو کاریگر اور پیشہ ور لوگ گویا کہ گناہ بچھتے ہی نییں۔ حالال کہ حضور اقدی خلافی کو کاریگر اور پیشہ ور لوگ گویا کہ گناہ بچھتے ہی نییں۔ حالال کہ حضور اقدی احادیث شریف ہیں بھی آیا ہے۔ حضور اقدی خلاف کے جھوٹ کا تذکرہ
احادیث شریف ہیں بھی آیا ہے۔ حضور اقدی شافی بتایا ہے، بعض پیشہ ورول کے جھوٹ کا تذکرہ
احادیث شریف ہیں بھی آیا ہے۔ حضور اقدی شافی بتایا ہے، بعض پیشہ وردل کے جھوٹ کا تذکرہ
احادیث شریف ہیں بھی آیا ہے۔ حضور اقدی شافی بتایا ہے، بعض پیشہ وردل کے جھوٹ کا تذکرہ
احادیث شریف ہیں بھی آیا ہے۔ حضور اقدی شافی والصقوا عُون اُن اُن

یعنی لوگوں میں سب سے جھوٹے رنگ کا کام کرنے والے اور سنار کا کام کرتے والے ہیں (کیوں کدوعدے اور ٹال مثول بہت کرتے ہیں)۔

رنگ ریز اور سنار کے علاوہ درزی، لوہار، برحمیٰ حتیٰ کہ کتابت کرنے والے اور پرلیس چلانے والے بھی آج کل وعدہ خلافیوں کی انتہاء کر دیتے ہیں۔

ك يخارى، كتاب الاستفراض والديون، باب مطل الغنى ظلم: ٢١٣/١، وقم: ٣٤٠٠

ع ابن ماجه، ابواب التجارات، باب التوقي في التجارة ص١٥٦

(باین الایسالیات)

لعنت ندكروالله تعالى كى رحمت ب دور جونے كى بددعا كولعنت كها جاتا ہے۔ كسى كويہ كہنا كہنا كہلا الله كى بحثكار ہ، كہنا كہلا كہنا كہلا كا الله كى بحثكار ہ، ياسب الفاظ لعنت كے مقبوم ميں داخل جيں اور كسى پرلعنت كرنا بہت بحت بات ہے۔ ليسب الفاظ لعنت كے مقبوم ميں داخل جيں اور كسى پرلعنت كرنا بہت تحت بات ہے۔ لعنت اللہ كى رحمت سے دور كى كا نام ہے اس ليخ صرف اس شخص پرلعنت كرنا جائز ہے جو اللہ كى رحمت سے دور كرنے والے كامول ميں ملوث ہو، اور وہ كام كشر، علم اور جھوٹ ہيں ۔

مصرت ابن عبال وصفاعات سے روایت ہے انہ بیت میں مورد میں میں مورد کیا تھا۔ اس میں مورد میں میں مورد میں میں مورد کیا میں مورد کیا نے جوار اور جو نے فرمایا: ہوا پر لعنت نہ کرو کیوں کہ وہ اللہ کی اطرف سے بی حکم دی ہوئی ہے۔ اور جو مختص کسی ایسی چیز پر لعنت کرے جولعنت کے مستحق نہیں ہے تو لعنت ای پر لوٹ آتی ہے۔ جس نے اعنت کی۔ اس

ایک مرتبه حضور اقدس مُلِقَ فَتَقِیْنَا عیدالاضی یا عیدالفطر کی نماز کے لئے تشریف فی عیدالفطر کی نماز کے لئے تشریف فی جارہ متعاورتوں پر آپ کا گزرہوا۔ آپ نے فرمایا: اے عورتوا صدقہ کرو کیوں کہ ججھے دوز شخیس تم سب سے زیادہ دکھائی گئی ہو، عورتوں نے عرض کیا کیوں یا رسول اللہ؟ آپ نے فرمایا: "تُنگیوُن اللَّعْنَ وَتَکُفُونَ الْعَشِیْوَ" یعنی تم احت بہت کرتی ہوادر شوہر کی ناشکری کرتی ہو۔ علی بہت کرتی ہوادر شوہر کی ناشکری کرتی ہو۔ علی

ك تخاسد العلماء: ص١٧٨

البوداؤد، كتاب الأدب، باب في اللعن: ٢١٦/٢، وقعر: ١٩٠٨

ت يخارى، كتاب الحيض، باب ترك الحائض الصوم: ١٠٤/٠ وفم: ٢٠٤

عورتی احدت بہت کرتی ہیں ایعنی کوسنا، پیٹنا، برا بھا کہنا، اور الٹی سیدسی یا تیمی زبان سے تکالنا بیعورتوں کا آیک خاص مشخلہ ہے، شوہر اولا داور بھائی، بہن، گھر، جانور چوپاید، آگ پائی، ہر چیز کو کوئتی رہتی ہیں۔اس آگ گئے، بیدنال چی ہے، اس کا ناس ہو، وہ اللہ مارا ہے، اس پر چینکار ہو۔ای طرح کی ان گئت با تیمی عورتوں کی زبان پر جاری رہتی ہیں، اس بیل بودعا کے کلمات بھی ہوتے ہیں، اس بھی اقد ماری رہتی ہیں، اس بیل بددعا کے کلمات بھی ہوتے ہیں گالیاں بھی ہوتی ہیں۔ بیہ یات اللہ کو نا پسند ہے، حضور اقد سی خطور کی دیات بھی ہوتے ہیں گالیاں بھی ہوتی ہیں۔ بیہ یات اللہ کو نا پسند ہے، حضور اقد سی خطور کی سیب بتایا۔

تكليف سے بياؤ كا آ تھوال راستہ

تہمت والزام تراثی سے پر ہیز:

"وَعَنْ آبِي هُرَيْرَةً رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُوْبِقَاتِ قَالُوْا يَا رَسُولُ اللّٰهِ وَالسِّحُرُ وَقَتْلُ رَسُولُ اللّٰهِ وَالسِّحُرُ وَقَتْلُ النِّهِلَ اللّٰهِ وَالسِّحُرُ وَقَتْلُ النَّهُ اللّٰهِ وَالسِّحُرُ وَقَتْلُ النَّهُ اللّٰهِ وَالسِّحُرُ وَقَتْلُ النَّهُ اللّٰهِ وَالسِّحُرُ وَقَتْلُ النَّهُ اللّٰهِ اللّٰهِ وَالسِّحُرُ وَقَتْلُ النَّهُ اللّٰهِ اللّٰهِ وَالسِّحُرُ وَقَتْلُ النَّهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللللّٰه

تَوَجَهَدَ: "حضرت الوجريه وَحَوَلَقَالَقَالَقَا عَنَ روايت ب: حضور القدس عَلَيْنَ الله إلى الماك كرف والى سات جزول ع اقدس عَلَيْنَ الله إلى أن ارشاد فرمايا: "بلاك كرف والى سات جزول عن (خصوصيت اور ابتمام ك ساته) بجوا حضرات سحابه وَحَوَلَقَالِقَالَقَا العَنَا المَّنَا الله عن ال

ك بخارى، كتاب الوصايا، باب قول الله تعالى إنَّ اللَّهِينَ يَأْكُلُونَ آمُوَالَ النَّه تعالى إنَّ اللَّهِينَ يَأْكُلُونَ آمُوَالَ النَّالَا

فرشتہ یا تو اے دوزخ میں داخل نہ ہونے وے گا ادر اگر وہ داخل ہو گیا تو اس کو عذاب نہ ہونے دے گا) اور جس کسی نے مسلمان پر کوئی تہت نگا دی اللہ تعالی اس کو دوزخ کے بل پر تشہرائے گا۔ یہاں تک کے وہ اپنی کہی ہوئی بات سے صاف ستحرا ہوکر نگل جائے۔ ک

خواتين اورجمتين

جہاں ساس بہو میں الزائی ہوئی جب سے کہددیا کدرنڈی ہے۔ سوکنیں الزنے الکیس او ایک نے دوسری کو زانیہ کہددیا۔ تند بھادی میں الزائی ہوئی تو کہددیا کہ یار گیس او ایک نے دوسری کو جور بتا دیا کسی کے بارے میں کہددیا کہ شرائی زائی ہے، اور شہت لگانے میں ان لوگوں تک کوئیس بخشا جاتا جن ہے بھی ملاقات نیس ہوئی بل کہ جولوگ مر گئے دنیا ہے جا بچے ان پر بھی ہمتیں دھرتے ہیں، یہ بہت خطرتاک بات ہے جس کی سرا بہت خطرتاک بات ہے جس کی سرا بہت خطرتاک

حالال كه حديث شي مسلمانول كى آبروريزى كوسب سے بردا سود قرار دیا ہے نبی آگرم ﷺ كا ادشاد ہے:

"إِنَّ مِنْ أَرْبَى الرِّبُو الإِسْتَطَالَةُ فِي عِرْضِ الْمُسْلِمِ لِغَيْرِ حَقْرِ"

سودكتنا برا كناه باسيسب اي جانع إلى-

ابوداؤد، كتاب الأدب، باب الرجل يذب عن عرض أخيه، رقم: ٣٨٨٤
 ابوداؤد، كتاب الأدب، باب في الغيبة، وقم: ٢٨٧٩

مور (جس كوعلا اور شركى قاضى جانة مجية بين) @ سود كهانا- @

یتیم کا مال کھانا۔ ﴿ میدان جبادے پشت بھیر کر بھاگ جانا۔ ﴿ اِلَّا اِللَّهِ اِللَّا اِللَّا اِللَّهِ اِللَّا اللَّا اللَّا اللَّا اللَّا اللَّا اللَّا اللَّلَّا اللَّلَّا اللَّلَّا اللَّا اللَّلَّا اللَّلِيْنِ اللَّلَّا اللَّلِيْنِ اللَّلَّةِ اللَّلِيْنِ اللَّلَّا اللَّلِيْنِ اللَّلِيْنِ اللَّلِيْنِ اللَّلِيْنِ اللَّلِيْنِ اللَّلِيْنِ اللَّلِيْنِينِ اللَّلِيْنِ اللَّلِيْنِينِ اللَّلِيْنِ اللَّلِيْنِ اللَّلِيْنِ اللَّلِينِ اللَّلِيْنِ اللَّلِيْنِ اللَّلِيْنِ اللَّلِيْنِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ اللَّلِينِ اللَّلِينِ اللَّلِينِ اللَّلِينِ اللَّلْمِينِ اللَّلِينِ اللْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ اللَّلِينِ اللَّلِينِ اللَّلِينِ اللَّلِينِ اللَّلِينِ اللَّلِينِ اللَّلِينِ اللَّلِينِينِ اللْمُعَلِّينِ اللَّلِينِ اللْمُعَلِّينِ اللْمُعَلِّينِ اللَّلِينِ اللْمُعَلِّينِ اللَّلِينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ اللْمُعَلِّينِ اللَّلِينِ الْمُعَلِّينِ اللْمُعَلِّينِ اللْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ اللَّلِينِ اللَّلِينِينِ اللَّلِيْمِ اللَّلِينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعِلِّينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعِلِّينِ الْمُعِلِّينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعَلِّينِ الْمُعِلِّينِ الْمُعِلِّيلِينِ الْمُعِلِّيلِينِ الْمُعَلِّيلُ

تہت لگانے والے کی سزا

حضرت معاذ بن النس رَجَعَاكَ بَعَنَالِ عَنَا اللهِ عَلَيْنَا اللهِ عَلَيْنَا اللهِ اللهِ عَلَيْنَا اللهُ اللهِ نے ارشاد فرمایا:

جس نے کسی مؤمن کو منافق سے بچایا۔ (لیٹنی فیبت کرنے والے کی تر دید کی اور جس کی فیبت ہو رہی ہو اس کی حایت کی) تو اللہ تعالی تیامت کے دن آیک فرشتہ جیجیں سے جوجایت کرنے والے کے گوشت کو دوزخ سے بچائے گا۔ (لیٹنی سے

قرآن مجيدين ارشاد ب:

﴿ فَإِنْ لِنَّهُ تَفْعَلُواْ فَأَذَنُواْ بِحَرْبِ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ ﴾ المُعَلَّوُا فِأَذَنُواْ بِحَرْبِ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ ﴾ المُعَلَّى تَرَورُ العِنْ سودنه چورو) تو الله تعالى المُرورُ العِنْ سودنه چورو) تو الله تعالى الدوراس كرسول كرنے كے لئے تيار موجاؤد"

اس مضم ان کوسا منے رکھ کراب حدیث بالا کے مضمون پر غور کریں حضور اقدی فرائی ہے گئی گئی ہے ارشاد فرمایا: سب سے بڑا مودیہ ہے کہ ناحق کسی مسلمان کی بے آبروئی کرنے کے لئے زبان دراز کی جائے۔اللہ تعالی کے نزدیک مؤمن کی آبرہ بہت زیادہ ہے اوراس کی بڑی حرمت ہے، بہت سے لوگ دوسرے کا مال ناحق لینے سے تو پر بیز کرتے ہیں اور اس کوحرام سجھتے ہیں لیکن مسلمان کی آبروریزی کرنے کو ذرا بھی گناہ نیس سجھتے حالاس کہ آبروکا مرتبہ مال سے زیادہ ہے۔ مال ہاتھ کا میل فررا بھی گناہ نیس سجھتے حالاس کہ آبروکا مرتبہ مال سے زیادہ ہے۔ مال ہاتھ کا میل ہے۔ آبی جانی کا چلا جانا آتی بڑی مصیبت نیس ہے جتنی بڑی مصیبت ہے۔ آبی جانی کا چلا جانا آتی بڑی مصیبت نیس ہے جتنی بڑی مصیبت ہے۔ آبرو بوجانا ہے۔

است عزیز اور بیوی بچول کو تکلیف سے بچاہے

مشترک رہائش میں بی سروری ہے کہ جن اوگوں کے ساتھ رہائش پذیر ہیں ان کو آپ سے تکایف ند ہو اور قریبی رشتہ دار، بیوی، ہیچہ، بہن بھائی سب اس ہی خصوصی طور پر وافل ہیں۔ آج ہم لوگ اینے ان قریبی رشتہ داروں کو تکلیف بینچ کا احساس نہیں کرتے۔ بل کہ بیسوچے ہیں کہ اگر ہمارے ممل سے بیوی کو تکلیف پیچ کا رہی ہوتی ہوتی کہ اگر ہمارے ممل سے بیوی کو تکلیف پیچ کا رہی ہوتی کرے۔ بیر ہماری بیوی ہی تو ہے، یا اولا دکو یا بہن بھائی کو تکلیف پیچ کا رہی ہے تو بہنی کرے۔ بیا ماری اولا دہی تو ہے، ہمارے بہن بھائی تو ہیں۔ ارے اگر وہ ہماری بین بھائی تو ہیں۔ ارے اگر وہ تھیاری بہن یا کوئی خاتون وہ تہیاری بہن یا کوئی خاتون وہ تہیاری بہن یا کوئی خاتون

تمہاری ہوی بن گئی ہے۔ یا یہ بچ تمہاری اولاد بن گئے ہیں تو انہوں نے کیا خطا کر لی ہے کہ اب ان کوتم تکلیف پہنچارہے ہو؟ حالال کد حضور اقدی ﷺ کا تو یہ حال تھا کہ تہجد کے وقت صرف اس خیال سے ہر کام بہت آ ہستہ آ ہستہ کرتے کہ کہیں حضرت عائشہ رَفِحَالِقَائِقَالَیْقَا کی آ کھ نہ کھل جائے۔ لبندا جس طرح فیروں کو تکلیف پہنچانا حرام ہے۔ ای طرح اپ گھروالوں کوا ہے بہن بھائیوں کوا ہے ہوی بچوں کو بھی تکلیف پہنچانا حرام ہے۔ ا

تكليف سے بچاؤ كا نوال راسته

بغیر دباؤ کے جائز سفارش:

آج ناجائز سفارش معاشرے میں ایک لعنت بن گئی ہے۔ آج کوئی کام ناجائز سفارش کے بغیر پورانہیں ہوتا۔ اس لئے کہ لوگوں نے سفارش کے احکام جملا دیے ہیں، شریعت کے نقاضوں کوفراموش کر دیا ہے لہذا جب ان احکام کی رعافتوں کے ساتھ سفارش کی جائے گی جب جائز ہوگی ورٹ نیش ۔

حاجت مندكي سفارش كردو:

حضرت ابدموی اشعری وضطالفات کافیا سروایت ہے: بی کریم میلی تا کا کہ میں میں اسلام کی کہ میں میں اسلام کی خدمت ہیں جب کوئی حاجت مند اپنی ضرورت لے کر آتا، اور اپنی ضرورت پوری کرنے کے لئے کوئی ورخواست کرتا تو اس وقت آل حضرت میلی تا تھا کی مجلس میں جو لوگ بیٹھے ہوتے تھے، آپ میلی کا کی طرف متوجہ ہو کر فرماتے کہتم اس حاجت مند کی مجھ سے سفارش کردو کہ 'آپ اس کی حاجت پوری کردیں' تا کہ جہیں حاجت مند کی مجھ سے سفارش کردو کہ 'آپ اس کی حاجت پوری کردیں' تا کہ جہیں جبی سفارش کا اجرو او اب ل جائے۔ البتہ فیصلہ اللہ تعالی این نبی کی زبان پروہی

ا اصلاحی خطبات: ۱۰۸/۸

ك البقرة: ٢٧٩

کرائے گا جس کو اللہ تعالی پیند فرمائیں گے۔ بعثی تعباری سفارش کی وجہ ہے کوئی غلط فیصلہ تو میں ہوگا۔ لیکن فیصلہ تو میں گروں گا جو اللہ کی مرضی کے مطابق ہوگا۔ لیکن تم جب سفارش کرد گے تو سفارش کرنے کا ثواب تم کو بھی مل جائے گا۔ اس لئے تم سفارش کرد گے

مفارش کے احکام

سفارش کرنے کے پچھادکام ہیں، کس موقع پر سفارش کرنا جائز ہے اور کس موقع پر سفارش کرنا جائز ہے اور کس موقع پر سفارش کا نتیجہ کیا ہونا چاہئے؟ کس مطلب کیا ہے؟ سفارش کا نتیجہ کیا ہونا چاہئے؟ کس طرح سفارش کرنی چاہئے؟ بیرساری یا تیں بچھنے کی وجہ سے سفارش، جو بہت اچھی چیز بھی تھی۔ قائمہ و مند اور باعث اجر واثواب چیز تھی۔ النی یاعث گناہ بن رہی ہے۔ اور اس سے معاشرے ہیں فساد پھیل رہا ہے۔ اس لئے ان ادکام کو بھینا ضروری ہے۔

1 ناائل کے لئے منصب کی سفارش:

میلی بات یہ ہے کہ سفارش ہمیشہ ایسے کام کی ہونی چاہئے جو جائز اور برخق ہو۔ کسی ناجائز کام کے لئے یا ناخق کام کے لئے سفارش کسی حائز ہوں کی جائز ہیں۔ ایک شخص کے بارے بی آپ جائے ہیں کہ وہ فلال منصب اور فلال عبدے کا اہل نہیں ہے۔ اور اس نے اس عبدے کے حصول کے لئے درخواست دے رکھی ہے۔ اور آپ نے اس عبدے کے حصول کے لئے درخواست دے رکھی ہے۔ اور آپ کے پاس سفارش کے لئے آتا ہے، لیکن آپ نے صرف یہ دیکھ کر کہ بیضرورت مند ہے، سفارش لکھ دی کہ اس کو فلال منصب پر فائز کر دیا جائے ، یا فلال ماند میں اس کو وے دی جائے ، تو بیسفارش ناجائز ہے۔

اله بخاري كتاب الأدب، باب قول الله تعالى ﴿مَنْ يُشْفَعْ شَفَاعَةُ) وقد: ١٠٣٧

🕜 سفارش، شہادت اور گواہی ہے:

سفارش جس طرح اس مخض کی ضرورت بوری کرنے کا آیک وربعہ ہے، وہاں ساتھ ساتھ ایک شہادت اور گوائی بھی ہے۔ جب آپ کی مخص کے حق میں سفارش كتے بي تو آپ اس بات كى گوائى ديے بين كديمرى نظر يس يحض اس كام ك جائے۔ تو بدایک کواعی ہے، اور گوائی کے اندراس بات کا لحاظ رکھنا ضروری ہے کہ وہ واقعد کے خلاف نہ ہو، اگر آپ نے اس محض کے بارے میں لکھ دیا اور حقیقت میں وہ ناال بي تو كوانى حرام موتى - اور باعث واب مونى كى بجائ النا باعث كناه بن منی، اور بیابیا گناہ ہے کداگراس کی ناایل کے باوجودآپ کی سفارش کی بنیاد پراس كواس عبد _ ير ركه ليا كيا، اوراين ناايلي كي وجه اس في لوكول كونقصان يبخيايا، یا کوئی غلط کام کیا۔ تو سارے تقصان اور غلط کاموں کے وہال کا ایک حصد سفارش كرنے والے ير بھى آئے گا۔ كوں كدائ ناال كاس عبدے تك ينج ين يہ سبب بنا ب- البداي سفارش بحى ب اور كوائى بحى ب- اور ناجائز كام ك لي سفارش كرنا اور كواتى ديناكسي طرح بھي جائز نبيس-

(بری سفارش گناه ہے:

دوسری بات بیہ ہے کہ سفارش ایسے کام کے لئے ہونی چاہئے جو کام شرعاً جائز ہو، البذا ناجائز کام کرانے کے لئے سفارش کرنا کسی حال میں جائز نہیں۔ مثلاً آپ کا دوست کیس افسر لگا ہوا ہے۔ اور اس کے ہاتھ میں اختیارات ہیں۔ اور آپ نے اس سے ناجائز فا کمدہ اٹھاتے ہوئے کسی ناالل کو بحرتی کرا دیا تو بیہ جائز نہیں، بل کہ حرام ہے۔ اس لئے قرآن کریم میں جہاں اچھی سفارش کو باعث اجرقر اردیا گیا ہے وہاں بری سفارش کو باعث گناہ قرار دیا گیا ہے۔

بين والعبالي أوات

۵ سفارش ایک مشوره ہے:

تیسری بات بیہ بے کہ سفارش ایک مشورہ بھی ہے، دباؤ ڈالنا نہیں ہے۔ آئ کل لوگ مشورہ کوئیں جھتے کہ مشورہ کیا چیز ہے؟ اس کی حقیقت کیا ہے؟ حضور الذی خال الگائے نے مشورہ کے بارے میں فرمایا:

"اَلْمُسْتَشَارُ مُؤْتَمَنَّ"

تَكَرِيحَكُمُ: "جِس فَخص ع مشوره لياجائ وه امانت دار ب-"

لیعنی اس کا فرض ہے کہ اپنی دیانت اور امانت کے لخاظ ہے جس بات کو بہتر ہے بہتر سمجھتا ہو، وہ مشورہ لینے والے کو بتا وے، بیہ ہے مشورہ کا حق، اور چرجس کو مشورہ دیا گیا ہے، وہ اس بات کا پابند نہیں ہے کہ آپ کے مشورے کو ضرور قبول کرے، اگر وہ ردیجی کر دے تو اس کو اختیار ہے، کیوں کہ مشورہ کے معنی بھی یہی ہیں کہ دوسرے کو توجہ دلا دینا، گذشتہ حدیث میں آپ نے دیکھا کہ حضور اقدی شیف انتہائی کے قبل کے نے فربایا کہتم مجھ سے سفارش کرو، اور بیضروری نہیں کہ میں تمہاری سفارش قبول بھی کر اوں، بل کہ فیصلہ میں وہی کروں گا جو اللہ تعالی کی منشا کے مطابق ہوگا۔

اس سے معلوم ہوا کہ اگر سفارش کے خلاف بھی عمل کر لیا جائے تو اس سے سفارش کی ناقد ری نہیں ہوتی، آج لوگ ہے بھتے ہیں کہ صاحب اہم نے سفارش بھی کی، اور با قاعدہ بات بھی کی لیکن فائدہ بھی حاصل نہ ہوا۔ حقیقت جس سے بات نہیں اس لئے کہ سفارش کا مقصد تو صرف سے تھا کہ ایک بھائی کی مدد جس میرا حصد لگ جائے ، اور اللہ جارک و تعالی اس سے راضی ہو جائے۔ اب وہ مقصد حاصل ہوگیا یا جائے ، اور اللہ جارک و تعالی اس سے راضی ہو جائے۔ اب وہ مقصد حاصل ہوگیا یا کی سفارش نہیں ، قواء اور اس نے آپ کی سفارش نہیں مائی، تو اس کی وجہ سے کوئی جھڑا اور ناراضگی نہیں ہوئی چاہئے۔ اور اس کی سفارش نہیں مونی چاہئے۔ اور اس کی وجہ سے کوئی جھڑا اور ناراضگی نہیں ہوئی چاہئے۔ اور اس کو برا باننا بھی درست نہیں۔ اس کے کہ یہ مشورہ تھا اور مشورہ کے اندر دونوں اس کو برا باننا بھی درست نہیں۔ اس لئے کہ یہ مشورہ تھا اور مشورہ کے اندر دونوں اس کو برا باننا بھی درست نہیں۔ اس لئے کہ یہ مشورہ تھا اور مشورہ کے اندر دونوں

الله تعالى كارشاد ب:

اسفارش كامقصدصرف توجه دلانا:

بدیات تو اہم ہے ہی، اور لوگ اعتقادی طور پر اس کو جائے بھی ہیں کہ ناجائز مفادش نیس کرنی جائے لیکن اس سے مجی آ کے ایک اور مسلا ہے۔ جس کی طرف عموماً وحیان نبیس جاتا۔ اور آج کل لوگ اس کا بالکل خیال نبیس کرتے۔ وہ سے ہے کہ لوگ آج کل سفارش کی حقیقت تبین سجھتے، سفارش کی حقیقت یہ ہے کہ جس ك ياس سفارش كى جارى باس كوصرف توجد دلانا ب_ يعنى اس كعلم اور ذين يس ايك بات نيس ب، آپ نے ايل سفارش كے ذريع بياتوج والا دى كديد بھى ایک موقع ہے۔ اگر تم کرنا جا ہوتو کر او، سفارش کا مقصد بیٹیں ہے کہ اس پر دباؤ اور پریشرڈالا جائے کہ وہ بیکام ضرور کر لے، اس لئے کہ ہرانسان کے اپنے پکھ حالات ہوتے ہیں، اور اس کے گھر قواعد اور ضوابط اور اصول ہوتے ہیں، اور وہ آدی ان اصولوں کے تحت رہ کر کام کرنا چاہتا ہے۔ اب آپ نے سفارش کر کے اس پر دباؤ والناشروع كرويا، اور وباؤ والكراس عكام كرانا جابا، توبيه سفارش فيس، زبروي ہے، اور کسی مجی مسلمان کے اوپر زبروی کرنا جائز جیس، اس کا عام طور پر لوگ خیال - Z / UZ

ایسے آدی کی سفارش لے کر جائیں گے جس کے بارے میں میہ خیال ہو کہ جب اس کی سفارش جائے گی تو وہ انکار نہ کر سکے گا، میتو دباؤ ڈالا جا رہا ہے، اور شخصیت کا وزن ڈالا جارہاہے۔ بیسفارش نہیں ہے۔

النساء: ٥٨.

(بَيْنَ (لِيسَامِ أَرِيثُ)

بيك والعيالي أويث

باغين موتي بين-

تکلیف سے بچاؤ کا دسواں راستہ معاملات کی صفائی

﴿ لِنَا لَيْهِ اللَّذِيْنَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمُوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ الَّهِ أَنْ تَكُونَ يَجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِنْكُمْ الله

معاملات كى صفائى --- دين كااجم ركن:

ب آیت دین کے ایک بہت اہم رکن ے متعلق ہے، وہ دین کا اہم رکن "معاملات كى درئتي اوراس كى صفائي" ب_ يعنى انسان كا معاملات بيس احيها بونا اور خوش معاملہ ہونا، بدرین کا بہت اہم باب ہے۔لیکن افسوس بیر ہے کہ بدرین کا جتنا اہم باب ہے،ہم اوگوں نے اتنائل اس کوائی زعدگی سے خارج کررکھا ہے۔ہم نے وين كوصرف چند عبادات مثلًا غماز، روزه، حج، زكوة، عمره، وطاكف اور اوراد بيل منحصر كرليا ب، ليكن روي يسي ك لين دين كاجوباب باس كوجم في بالكل آزاد چھوڑا ہوا ہے، گویا کہ دین سے اس کا کوئی تعلق بی شیس۔ حالان کہ اسلامی شریعت كاحكام كاجائز ولياجائ تو نظرآئ كاكر عبادات عضعلق جواحكام إلى وواليك چوتھائی ہیں، اور تین چوتھائی احکام معاملات اور معاشرت سے متعلق ہیں۔

تين چوتھاني دين معاملات ميں ہے:

فقد کی ایک مشہور کتاب ہے جو ہمارے تمام مدارس میں بڑھائی جاتی ہے، اور اس كتاب كو يده كراوك عالم في يس-اس كا نام ب "هدايد"اس كتاب يس

طبارت سے لے رمیراث تک شریعت کے جتنے احکام میں وہ سب اس کتاب میں جع میں۔اس کتاب کی حارجادیں ہیں، پہلی جادعبادات معلق ہے جس میں طہارت کے احکام، نماز کے احکام، زالوق، روزے اور عج کے احکام بیان کے گے وں۔ اور باتی تمن جلدیں معاملات یا معاشرت کے احکام معلق ہیں۔اس سے اتدازہ لگائیں کردین کے احکام کا ایک چوتھائی حصد عبادات سے متعلق ہے اور عمن چوتھائی حصد معاملات سے متعلق ہے۔

معاملات کی خرانی کا عبادت پراثر:

پھر اللہ تعالی نے ان معاملات کا بیرمقام رکھا ہے کداگر انسان روپے پیے کے معاملات مين حلال وحرام كا، اور جائز و ناجائز كالتياز ندر كحاتو عبادات يرجى اس كا ائريدواقع ہوتا ہے كہ جاہد وہ عبادات ادا ہو جائيں ليكن ان كا اجر واواب اور ان كى تبوليت موقوف موجاتى ب، دعائي قبول فين موتس - ايك حديث مين حضور اقدى بدى عاجزى كا مظاہرہ كر رہے ہوتے ہيں اس حال ميں كدان كے بال بلحرے ہوے ہیں، گوگڑا کراور دورو کر بھارتے ہیں کہ بااللہ! میرابیہ مقصد پورا کر دیجے، فلال مقصد بودا كرديجي، يوى عاجزي عن، الحاح وزاري كے ساتھ يدوعاكيس كر رہے ہوتے ہیں، لیکن کھانا ان کا حرام، پینا ان کا حرام، لباس ان کا حرام، اور ان کا جم حرام آمدنی سے پرورش بایا ہوا، فَأَتَنَّى يُسْتَجَابُ لَهُ الدُّعَاءُ ايس آدى كى دعا كيے تول موج ك ايے آدى كى دعا تول فيس موتى۔

معاملات کی تلافی بہت مشکل ہے:

دوسری جتنی عبادات ہیں، اگر ان میں کوتائی ہوجائے تو ان کی علاقی آسان

ك مسلم، زكوة باب بيان ان اسم الصدقة: ٢٢٦/١

ہے مثلاً نمازیں چھوٹ گئیں، تو اب اپنی زندگی میں قضا نمازیں ادا کر لو، اوراگر زندگی میں قضا نمازیں ادا کر لو، اوراگر زندگی میں ادا نہ جوئی میں ادا نہ جوئی ہیں ادا نہ جوئی ہوں اور میری نمازیں ادا نہ جوئی ہوں تو میرے مال میں سے اس کا فدیدادا کر دیا جائے اور توبہ کر لو۔ ان شاء اللّٰه۔ الله تعالیٰ کے بہاں تلافی ہوجائے گی۔لیکن اگر کسی دومرے کا مال ناجائز طریقے پر کھا لیا تو اس کی تلافی اس وقت تک نہیں ہوگی جب تک صاحب حق معاف نہ کھا لیا تو اس کی تلافی اس وقت تک نہیں ہوگی جب تک صاحب حق معالمات کا کرے۔ چاہے تم برار توبہ کرتے رہو، برار نفلیں پڑھتے رہو۔ اس لئے معاملات کا باب بہت اہمیت رکھتا ہے۔

حضرت تقانوى رَجْمَبِهُ اللَّالَةُ تَعَالَىٰ اور معاملات:

ای وجہ سے المحت حضرت مولا نا اشرف علی صاحب تھا نوی دَیْجَبُرُاللّٰہُ تَعْالٰتُ کَ عِبال الصّوف اور طریقت کی تعلیمات میں معاملات کو سب سے زیادہ اوّلیت عاصل تھی۔ فرمایا کرتے ہے کہ اگر بھے اپنے مریدین میں ہے کسی کے بارے میں یہ پتا چلے کہ اس نے اپنے معمولات، نوافل اور اوراد و وظائف پورے نہیں کئے تو اس کی وجہ سے رنج ہوتا ہواں مرید سے کہدویتا ہول کہ ان کو پورا کر لور لیکن اس کی وجہ سے رنج ہوتا ہواراس مرید سے کہدویتا ہول کہ ان کو پورا کر لور لیکن اگر کسی مرید کے بارے میں یہ معلوم ہو کہ اس نے روپ چیے کے معاملات میں اگر مرد کی ہارے میں مرید سے نفرت ہو جاتی ہے۔

أيكسبق آموز واقعه:

حضرت تفانوی ریختیکالدافی تکالی کے ایک مرید سے، جن کو آپ نے خلافت مجھی عطافر ما دی تھی اور ان کو بیعت اور تنقین کرنے کی اجازت وے دی تھی۔ ایک مرتبہ وہ سفر کرکے حضرت والا کی خدمت میں تشریف لائے، ان کے ساتھ ان کا پچ بھی تھا، انہوں نے آکر سلام کیا اور ملاقات کی، اور پچ کو بھی ملوایا کہ حضرت میں میرا بچے ہے، اس کے لئے دعافر ما دیجئے حضرت والا نے پیچ کے لئے دعافر مائی، اور

مجروبيے بى پوچھ ليا كداس بي كى عمركيا بي؟ انہوں نے جواب ديا كد حضرت اس ك عرسا سال ب، حضرت في يوجها كدآب في ريل كارى كا سفركيا ب تواس يج كا آ دها فكث ليا تحايا بورا فكث ليا تحا؟ أنبول في جواب ديا كدهنرت آ دها فكث لیا تخار حضرت نے فرمایا کہ آپ نے آ دھا نکٹ کیے لیاجب کہ بارہ سال سے زائد عر کے بیجے کا تو بورا مکٹ لگتا ہے۔ انہوں نے عرض کیا کہ قانون تو بھی ہے کہ بارہ سال کے بعد نکٹ پورالیتا جاہے، اور یہ بچہ آگر چہ ۱۳ سال کا بے لیکن و مکھنے میں ۱۲ سال كالكتاب، أل وجب مين في آوها لكث ك ليا حضرت في فرمايا: إنَّا لِللهِ وَإِنَّا اللَّيْهِ وَاجِعُونَ معلوم موتاب كرآب كوتضوف اورطريقت كى مواجعي تبيل لكي، آپ کواہمی تک اس بات کا احساس اور ادراک نیس کدنے کو جوسفر آپ نے کرایا، بیہ حرام كرايا_ جب قانون يرب كدا سال ي زائد عمر ك يج كافك بورالكاب اورآپ نے آ دھا تکٹ لیا تو اس کا مطلب سے کہ آپ نے ریلوے کے آ وجے نکٹ کے پیسے فصب کر لئے اور آپ نے چوری کرلی۔ اور جو محض چوری اور فصب كرے ايسامخص تصوف اور طريقت ميں كوئى مقام نہيں ركھ سكتا۔ لہذا آج سے آپ كى خلافت اور اجازت بيت واليل لى جاتى ب- چنال چه ال بات يران كى خلافت سلب فرما لى - حالال كداسيخ اوراد ووطائف مين، عبادات اور نوافل مين، تبجد اوراشراق میں، ان میں سے ہر چیز میں بالکل این طریقے پر تکمل تھے، لیکن سے طلعی کی کہ بچے کا نکٹ پورانہیں لیا، صرف اس غلطی کی بناء پر خلافت سلب فرمالی۔

حضرت تفانوى رَجْعَيْهُ اللَّهُ تَعَالَىٰ كاليك واقعه:

حضرت والا وَجِعَبُهُ الدُّدُ تَعَالَنَ كَى طرف سے اپنے سارے مریدین اور متعلقین کو سے مبارے مریدین اور متعلقین کو سے مبارت تھی کہ جب بھی ریلوے میں سفر کرو، اور تمبارا سامان اس مقدار سے زائد ہو جتنا ریلوے نے جمہیں مفت لے جانے کی اجازت دی ہے، تو اس صورت

میں اے سامان کا وزن کراؤ اور زائد سامان کا کرابیادا کرو، پھرسفر کرو۔خود حضرت والا كا اپنا واقعه ب كدايك مرتبدر ملوے ميں سفر كے ارادے سے استيشن بينيے، كاڑى ك آن كا وقت قريب تفاء آب اينا سامان في كراس وفتريس ينفي جبال يرسامان كاوزن كرايا جاتا تفااور جاكر لائن من لك كئے۔انفاق عا كارى ميں ساتھ جانے والا گار و وبال آ كيا اور حضرت والا كو د كي كر پيچان ليا، اور يو چها كه حضرت آب يبال كيے كورے ييں؟ حضرت نے فرمايا كه يس سامان كا وزن كرائے آيا ہول- گارة نے کہا کہ آپ کوسامان وزن کرانے کی ضرورت نہیں، آپ کے لئے کوئی مسئلہ ہیں، میں آپ کے ساتھ گاڑی میں جا رہا ہوں، آپ کو زائد سامان کا کرایہ دینے کی ضرورت جيس حضرت نے يو جها كم تم مير عاته كهال تك جاؤ كے؟ كارؤ نے كها کہ میں فلاں انتیشن تک جاؤں گا۔ حضرت نے پوچھا کہ اس انتیشن کے بعد کیا جوگا؟ گارڈ نے کہا کداس اعیشن پر دوسرا گارڈ آے گا، میں اس کو بتا دول گا کہ بید حضرت کا سامان ہے، اس کے بارے میں پہلے یوچے پھے مت کرنا۔ حضرت نے یوچھا كدوه كارة ميرے ساتھ كبال تك جائے گا؟ كارة نے كہا كدوه تو اور آ كے جائے گا، اس سے پہلے ہی آپ کا اکتیشن آ جائے گا۔ حضرت نے فرمایا کہ میں تو اور آ گے جاول كالعني آخرت كى طرف جاول كا اوراين قبريس جاول كا، وبال يركونسا كارد ميرے ساتھ جائے گا؟ جب وہاں آخرت بي جھ ے سوال ہوگا كدايك سركارى گاڑی میں سامان کا کراہے اوا کئے بغیر جوسفر کیا اور جو چوری کی اس کا حساب وور تو وہاں پر کونسا گارڈ میری مدد کرے گا؟

معاملات کی خرابی سے زندگی حرام:

چناں چہ وہاں میہ بات مشہور تھی کہ جب کوئی شخص ریلوے کے دفتر میں اپنے سامان کا وزن کرا رہا ہوتا تو لوگ ججھ جاتے تھے کہ میشخص تھانہ بجون جانے والا ہے،

اور حضرت تما أوى رَجِعَيْهُ اللَّهُ تَعَالَتْ كم متعلقين من ع ب حضرت واللاكى ببت ی باتیں اوگوں نے لے مضبور کردیں، لیکن مدید پہلو کدایک بیسہ بھی شریعت کے خلاف سی ذربعدے مارے باس ندآئے مید پہلونظروں سے اوجھل ہوگیا۔ آج كتے لوگ اس مم كے معاملات كا الدرجتا بين اور ان كو خيال بھى نبين آتا كه جم سے معاملات شریعت کے خلاف اور ناجائز کررہ ہیں۔ اگر ہم نے علط کام کرکے چند ہے بچا کے تو وہ چد ہے جرام ہو گئے، اور وہ حرام مال جمارے وومرے مال کے ساتھ کمنے کے متیج میں اس کے برے اڑات امارے مال میں پھیل گئے۔ پھرای مال سے ہم کھانا کھارہے ہیں، آی سے کیڑے بنادہ ہیں، آی سے لباس تیار ہو رہا ہے،جس کے منتبع میں جاری پوری زندگی حرام ہوری ہے۔ اور جم چول کہ بے حس ہو گئے ہیں، اس لئے حرام مال اور حرام آبدنی کے برے متائج کا جمیں اوراک مجى نبين ـ بيحرام مال مارى زندگى بين كيا فساد مجار با بيساس كالهمين احساس مبس جن لوگوں کواللہ تعالی احساس عطافر ہاتے ہیں، ان کو بتا لکتا ہے کہ حرام چیز کیا

حضرت مولانا محمر يعقوب صاحب رَجِّمَبِهُ اللَّامُ تَعَالَىٰ كا چند مشكوك لقم كهانا:

لوں، فلال گناہ کراوں۔ حرام مال سے سے قلمت بیدا ہوجاتی ہے۔ حرام کی دوشتمیں:

یہ جو آج ہمارے واول سے گناہوں کی نفرت مٹتی جا رہی ہے، اور گناہ کے گناہ ہونے کا احساس ختم ہورہا ہے، اس کا آیک بہت بڑا سبب یہ ہے کہ ہمارے مال میں حرام مال کی ملاوٹ ہو چکی ہے۔ چر آیک تو وہ حرام ہے جو کھلا حرام ہے جس کو ہر شخص جاننا ہے کہ بیر تام ہے۔ چیے رشوت کا مال، سود کا مال، جو نے کا مال، وجو کے کا مال، چورک کا مال، چورک کا مال وغیرہ لیکن حرام کی دوسری قتم وہ حرام ہونے کا مال، چورک کا مال وغیرہ لیکن حرام کی دوسری قتم وہ حرام ہے جس کے حرام ہونے کا ہمار، چورک کا مال وغیرہ لیکن حرام کی دوسری قتم وہ حرام ہے جس کے حرام ہونے کا ہمیں احساس ہی نہیں ہے، حالال کہ وہ بھی حرام ہونے دوسری قتم ہمیں احساس ہی نہیں ہے، حالال کہ وہ بھی حرام ہونے دوسری قتم ہمیں احساس ہی نہیں ہے۔ اس دوسری قتم کی تفصیل سنے۔

باپ بیول کے مشترک کاروبار:

آئی جمارا سادا معاشرہ ای بات ہے جمرا ہوا ہے کہ کوئی بات صاف ہی نیس۔
اگر باپ بیٹوں کے درمیان کاروبار ہے تو وہ کاروبارہ سے ہی چل رہا ہے، اس کی کوئی وضاحت نہیں ہوتی کہ جنے باپ کے ساتھ جو کام کر رہے ہیں وہ آیا شریک گی دیثیت میں کر رہے ہیں، یا دیسے ہی باپ کی مفت مدوکر رہے ہیں، یا دیسے ہی بالازم کی حیثیت میں کر رہے ہیں، یا دیسے ہی باپ کی مفت مدوکر رہے ہیں، اس کا کچھ چانیس، گر تجارت ہورہی ہے، ملیس قائم ہورہی ہیں، دکا نیس بڑھتی جارہی ہی جائیں کہ مفت مدوکر رہے ہیں، اس کا کچھ چانیس کی گر تجارت ہورہی ہے، ملیس قائم کی وہ تی ہیں، دکا نیس بڑھتی جارہی ہیں، مال اور جائیداد بڑھتا جارہا ہے۔ تیکن یہ چانیس کہ جواب یہ دیا جاتا ہے کہ بہتو فیریت کی بات ہے۔ ہمائیوں بھائیوں میں صفائی کی گیا جراب یہ دیا جاتا ہے کہ بہتو فیریت کی بات ہے۔ ہمائیوں بھائیوں میں صفائی کی گیا ضرورت ہے؟ اس کا بہتے بیہوتا ہے کہ ضرورت ہیں گئی نے دیاورہ نوری میں کی نے دیاورہ خری گیا۔ یا ایک بھائی نے مکان بنا ایا اور وہرے نے ابھی کر لیا اور کسی نے کم خرج کیا۔ یا ایک بھائی نے مکان بنا لیا اور وہرے نے ابھی

تک مکان نیس بنایا۔ بس اب ول پس شکایتی اور ایک دوسرے کی طرف سے کیند پیدا ہونا شروع ہو گیا ، اور اب آپس ہیں جھڑے شروع ہوگئے کہ فلال زیادہ کھا گیا اور جھے کم ملاساور اگر اس دوران باپ کا انقال ہو جائے تو اس کے بعد بھائیوں کے درمیان جولڑ ائی اور جھڑے ہوتے ہیں وہ لا متناہی ہوتے ہیں، پھر ان کے حل کا کوئی راسٹرنیس ہوتا۔

باپ كانقال پرميراث كي تقسيم فورا كرين:

جب باب كا انتقال موجائ تو شريعت كالحكم يدب كدفورا ميراث تقيم كرو، میراث تقیم کرنے میں تاخیر کرنا حرام ہے۔لیکن آج کل یہ ہوتا ہے کہ باپ کے انقال پر میراث تقسیم خیس موتی، اور جو برا بینا موتا ہے وہ کاروبار پر قابض ہو جاتا ب- اور بیٹیال خاموش بیٹی رہتی ہیں، ان کو یکھ بتانبیں ہوتا کہ مارا کیا حق باور كيائيس ہے؟ يبال تك كداى حالت ميں دى سال اور بيس سال كزر كے۔ اور پھر اس دوران سی اور کا بھی انتقال ہوگیا، یا سی بھائی نے اس کاروبار میں اپنا بیسر مااویا، بحرسالها سال گزرنے کے بعد جب ان کی اولاد بری ہوئی تو اب جھڑے کھڑے ہو گئے۔ اور چھڑے ایسے وقت میں کھڑے ہوئے جب ڈور الجھی ہوئی ہے۔ اور جب وہ جھڑے انتہاء کی حد تک پہنچ تو اب مفتی صاحب کے پاس چلے آ رہے ہیں كداب آپ بتاكيل كد بم كيا كريل-مفتى صاحب ب جارے ايسے وقت يل كيا کریں گے۔اب اس وقت سی معلوم کرنا مشکل ہوتا ہے کہ جس وقت کاروبار کے اندر شركت تھى، اور بينے اپنے باپ كے ساتھ ال كركاروباركرد ب تنے، اس وقت بينے كى دينيت يل كام كررب تي

مشترك مكان كى تغمير مين حصد دارون كا حصه:

یا مثلاً ایک مکان بن رہا ہے، تعمیر کے دوران کچھ پیے باپ نے لگا دیے، کچھ ریک دلعب فرزیدی

حضرت فتى صاحب رَجِمَبِهُ اللَّالُهُ تَعَالَىٰ أورملكيت كى وضاحت: ع الاسلام مفتى محمد تقى عثاني صاحب مدظله العالى فرمات بين: "ميرے والد ماجد حضرت مفتی محمد حفيح صاحب قدس الله سرة الله تعالى ان كے درجات بلند فرمائے۔ آمین۔ان کا ایک مخصوص کمرہ تھا اس میں آرام فرمایا کرتے تھے۔ ایک جاریائی چھی ہوئی تھی، ای پر آرام کیا کرتے تھے۔ ای پر لکھنے پڑھنے کا کام کیا كرتے تھے۔وہي پرلوگ آكر ملاقات كياكرتے تھے۔ شي بيدد يكتا تھا كد جب اس كرے ميں كوئى سامان باہرے آتا تو فوراً واپس مجھوا ديتے تھے۔ مثلاً حضرت والد صاحب نے یائی معکوایا، میں گلاس میں یائی مجرکر بلانے چلا گیا۔ جب آپ یائی بی لیتے تو فورا فرماتے کہ بیگاس واپس رکھ آؤجہاں سے لائے تھے۔ جب گاس واپس لے جانے میں در ہوجاتی تو ناراض ہوجاتے۔اگر پلیٹ آ جاتی تو فورا فرماتے کہ سے پلیٹ واپس باور چی خانے میں رکھ آؤ۔ ایک ون میں نے کہا کہ حضرت! اگر سامان والیس لے جانے میں تھوڑی دیر ہو جایا کرے تو معاف فرما دیا کریں۔ فرمانے سکے تم

بات سجحة نبين مور بات وراصل يدب كديس في اين وصيت نامديس لكحا مواب

کہ اس کمرے میں جوسامان بھی ہے وہ میری ملکیت ہے، اور باقی کمرول میں اور کھر

میں چوسامان ہے وہ تمہاری والدہ کی ملکیت ہے۔ اس لئے میں اس بات سے ڈرتا

ہوں کہ بھی دوسرے کمروں کا سامان بیباں پر آ جائے ، اور اس حالت میں میرا انتقال

ہوجائے تو اس وصیت نامہ کے مطابق تم یہ مجھو سے کہ یہ میری ملکیت ہے، حالال

كدوه بيرى ملكيت جيس إ-الاوج على كوئى چيز دومرول كى ايخ كرے يى نبین رکھتا، واپس کروا دیتا ہول-" حضرت واكرعبدالحي صاحب وَخِمَبُ اللَّهُ تَعَالَ في احتياط: جب حضرت والدصاحب وتحمير الثاني القال كل وفات موكى ، تو مير عض حضرت -(````;_)\chi

بي ايك بين ن لاد ي محدور ع بين ن لادي، مح تمر ع بين ن لا ویے۔لیکن یہ پانہیں کہ کون کس صاب سے کس طرح سے کس تاسب سے لگارہا ہے، اور سے بھی بتا تیں کہ جو چیتم لگارہے ہو وہ آیا بطور قرض کے دے دہے ہواور اس کو واپس او گے، یا مکان میں حصد دار بن رہے ہو، یا بطور انداد اور تعاون کے بیے وے رہے ہو، اس کا کچھ پائیس۔اب مکان تیار ہوگیا اور اس میں رہنا شروع کر دیا۔ اب جب باپ کا انتقال ہوا یا آ کی میں دوسرے مسائل پیدا ہوئے تو اب مكان ير جھاڑے كھڑے ہو گئے۔اب مفتى صاحب كے پاس چلے آ رہے ہيں ك فلال بھائی ہے کہتا ہے کہ میراا تنا حصہ ہے، جھے اتنا ملنا جاہتے۔ دوسرا کہتا ہے جھے اتنا ملنا جائے۔ جب ان سے بوجھا جاتا ہے کہ بھائی! جب تم نے اس مکان کی تعمیر میں معيد ي سفي اس وقت تهاري كيا نيت سي كياتم في بطور قرض دي سفي ياتم مكان مين حصد دار بننا جائے تھے؟ يا باپ كى مددكرنا جائے تھے؟ اس وقت كيا بات محى؟ تويد جواب ملك ب كديم في تويي وية وقت بجهسوجا بي نبيل تقاء ندتو بم نے مدد کے بارے میں سوجا تھا، اور ند حصد داری کے بارے میں سوجا تھا، اب آپ كوئى حل تكاليس-جب دورالجه تن اور سرا باتھ نييس آربا ہے تو اب مفتى صاحب كى مصيت آئى كدوه اس كاحل نكاليس كركس كاكتنا حصد ينآب سيب اس لئے ہوا كد معاملات ك بارك بين على حضور اقدى أى كريم ظيفي التيني كالعليم يرمل نيين کیا۔ تفلیں ہورہی ہیں، تبجد کی نماز ہورہی ہے، اشراق کی نماز موری ہے، لیکن معاملات ميں سب المغلم جور ہا ہے، لسي چيز كا بچھ پائيس - سيسب كام حرام جور ہا ے۔جب سے معلوم نیس کے میراحق کتا ہے اور دوسرے کاحق کتا ہے، تو اس صورت میں جو کچیتم اس میں سے کھارہے ہو، اس کے حلال ہونے میں بھی شبہ ہے۔ جائز

دن جو جانا جائے۔ آج اس وقت ہمارے معاشرے میں جتنے جھڑے تھیلے ہوئے بین، ان جھڑوں کا ایک برا بنیادی سب حساب کتاب کا صاف ند ہونا اور معاملات کا

حقيقي مفلس كون؟

حديث شريف ين ب كدايك مرتبه حضور الذي فيلق على في صحاب كرام ي یو جھا کہ بٹلا کو مفلس کون ہے؟ صحابہ کرام نے عرض کیا یا رسول اللہ! ہم لوگ تو اس تنف کومفلس مجھتے ہیں جس کے پاس روبیہ بیسدند ہو۔ آن مفترت میلانا فاتیا کے

حقیق مفلس وہ بیں جس کے پاس روپ پیدند ہو، بل کہ قیقی مفلس وہ ہے جو قیامت کے دن اللہ تعالی کے سامنے جب حاضر ہوگا تو اس طرح حاضر ہوگا کہ اس ك اعمال نام ين بهت سار روز عدول كره بهت ك تمازي اور وظفي مول کے، تشبیحات اور نوافل کا ڈخیر ہوگا، لیکن دوسری طرف کسی کا مال کھایا ہوگا، کسی کو وحوكه ديا جوگا ، كسي كي ول آزاري كي جوڭي ، كسي كو تكليف پيجيائي جوڭي ، اوراس طرت

اس نے بہت ہے انسانوں کے حقوق غصب کتے ہوئے مول گے۔ اب اصحاب حقوق اللہ تعالیٰ سے فریاد کریں گئے کہ یا اللہ! اس مخض نے ہمارا حق غصب کیا تھا، اس سے جماراحق ولوائے۔اب دہاں پر رویے میسے تو چلیس سے جیں کدان کو دے کر حساب کتاب برابر کرلیا جائے، وہاں کی کرمی تو تیکیاں ہیں، چناں چەساحب حقوق كواس كى نىكىيال دېنى شروع كى جائيس كى،كسى كوتماز دے دى جائے گی، کسی کوروز فے دے دیئے جائیں گے، اس طرح ایک ایک صاحب حق اس كى نكيال كر چلتے جائيں مح يبان تك كدائ كى سارى تكيال ختم و جائيں كى

ك اصلاحي خطبات: ٥/٥٧ تا ٨٧

واكثر عبدالحي صاحب قدس الله مره تعزيت كے لئے تشريف لائے-حصرت والد صاحب رَجِعَبُ اللَّهُ تَقَالَقُ عَصِعَرت وْالسَّرْصاحب رَجِعَبُ اللَّهُ تَقَالَقُ كُوبِهِت مَى والبائ تعلق تھا، جس کا ہم اور آپ تصور نبیں کر کتے ، چوں کہ آپ ضعیف تھے، اس وجہ سے اس وقت آپ پر کزوری کے آثار نمایال تھے، مجھے اس وقت خیال آیا کہ حضرت والا يراس وقت بهت شعف اورهم بي والدر ع من حضرت والدصاحب ويختبر اللا الله تعالى كاخميره لے آيا جو آپ تناول فرمايا كرتے تھے۔ اور حفرت والا كى خدمت ميں چيش كرتے ہوئے كہا كە حضرت آپ خميره كا أيك چھيد تناول فرمالين _حضرت والانے ال خمیرہ کو دیکھتے ہی کہا گئم پیخمیرہ کیے لے آئے، پیخمیرہ تواب میراث کا اور ترک كا أيك حصد بن كيا ب، ابتمهار على بدجا تزنيس كداس طرح بيغيره المحاكر كى كودے دو، اگر چدوه ايك چچيد كے برابرى كيول تد بورش في كها كد حفرت! حصرت والدصاحب رَجِيتَبِهُ اللهُ اتفاكاتُ ك جنت ورثاء ين، وه سب الحدولله بالغ ين اور وه سب ميهال موجود جين - اورسب اس بات ير راضي جين كدآب سيخيره تناول فرمالیں۔ تب معزت نے دہ خمیرہ تناول فرمایا۔

حساب ای دن کرلیس:

اس کے ذریعہ حضرت والا نے سے بق دے دیا کہ بیات الی نہیں ہے کہ آدى رواردى يس كزر جائے۔فرش كريں كدا كر تمام ورثاء يس ايك وارث بھى نابالغ ہوتا یا موجود شدہوتا اور اس کی رضا مندی شامل شدہوتی تو اس خمیرہ کا ایک چھیے بھی حرام ہوجاتا۔ اس لئے شرایعت کا بیتلم ہے کہ جونبی کسی کا انقال ہوجائے تو جلدان جلداس کی میراث تقسیم کردو، یا کم از کم حساب کرے رکھ او کہ فلان کا اتنا حصہ ہے اور فلال كا اتنا حصر ب، ال لئ كربعض اوقات تقيم من يحدثا خير ووجاتى بي بعض اشیاء کی قیت نگانی پرنتی ہے اور بعض اشیاء کوفروشت کرنا پرنتا ہے، کیکن حساب اس تکلیف سے بچاؤ کا گیار ہوال راستہ

خوش اخلاقی:

"عَنْ آبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْحُمَلُ الْمُؤْمِنِيْنَ اِيْمَانًا اَحْسَنُهُمْ عُلُقًا"

تَتُوَجِعَكَ: "حضرت الوہريه رَفِحُالِقَائِقَالِقَا كَالْتَفَا عَدوايت ب: رسول الله طِلْقَائِقَائِقَا لَيْ فَر مايا: ايمان والول شي زياده كالل ايمان والى وه اوگ بين جواخلاق مين زياده التجھے بين-

مطلب یہ ہے کہ ایمان اور اخلاق میں الی نسبت ہے کہ جس کا ایمان کال بوگا، اُس کے اخلاق بہت اچھے ہوں گے، اور علیٰ بنا جس کے اخلاق بہت اچھے ہوں گے، اور علیٰ بنا جس کے اخلاق بہت اچھے ہوں گے، اور علیٰ بنا جس کے اخلاق بہت ایسے عوں گے اُس کا ایمان بھی بہت کائل ہوگا۔ واضح رہے کہ ایمان کے بغیر اخلاق بل کہ کسی عمل کاحتیٰ کہ عبادات کا بھی کوئی اعتبار نہیں ہے۔ ہر عمل اور ہر نیکی کے لئے ایمان بمنزلہ روح اور جان کے ہے، اس لئے اگر کسی شخصیت میں اللہ اور اس کے رسول پر ایمان کے بغیر ایسے اخلاق نظر آئیں، تو وہ حقیق اخلاق نہیں ہے، بل کہ اخلاق مورت ہے، اس لئے اللہ کے بہاں اس کی کوئی قیت نہیں ہے۔ بھی کے است کے سے اس کے کسورت ہے، اس لئے اللہ کے بہاں اس کی کوئی قیت نہیں ہے۔

حضرت عائشہ وَ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰ

الله الوداؤد، كتاب السنّة، باب الدليل على زيادة الايمان، وقم: ٢٦٨٦ع معارف الحديث: ١٦٥/٢ ١٦٦

اور سی تحض خالی ہاتھ رہ جائے گا، نماز روزے کے جتنے ڈ حیر لایا تھا، وہ سب ختم ہو جائیں گے، لیکن حق والے اب بھی ہاتی رہ جائیں گے۔

تواب الله تعالی علم فرمائیں کے کداب حق داوائے کا طریقہ سے کہ صاحب حق کے اعمال میں جو گناہ ہیں وہ اس شخص کے نامۂ اعمال میں ڈال دیئے جائیں۔ چنال چہ وہ شخص نیکیوں کا انبار لے کر آیا تھا، لیکن بعد میں نیکیاں تو ساری شتم ہو جائیں گی، اور دوسرے لوگوں کے گناہوں کے انبار لے کر واپس جائے گا، یہ شخص حقیقی مظس ہے۔ ا

اندازہ لگائی کرحقوق العباد کا معاملہ کتنا تھین ہے، لیکن ہم لوگوں نے اس کو دین سے بالکل خارج کر دیا ہے، قرآن کریم تو کہدرہا ہے: اے ایمان والو! اسلام میں واخل ہوجاؤہ آ دھے نیمی، بل کہ پورے کے پورے واخل ہوجاؤہ تہارا وجودہ تہاری ذیرگی، تمہاری عبادت، تہارے معاملات، تمہاری معاشرت، تہارے اظلاق، ہر چیز اسلام کے اندر داخل ہوئی چاہئے، اس کے ذریعہ تم تھی معنی میں مسلمان بن سکتے ہو۔ یمی وہ چیز تھی جس کے ذریعہ درحقیقت اسلام بھیلا ہے۔ اسلام محض تبلیغ سے نیمیں بھیلا ہے۔ اسلام محض تبلیغ سے نیمیں بھیلا، بل کہ انسانوں کی سیرت اور کردار سے پھیلا ہے، مسلمان جہاں بھی گئے انہوں نے اپنی سیرت اور کردار کا لوہا منوایا، اس سے اسلام کی طرف رغبت اور کردار دیکھ کر لوگ اسلام طرف رغبت اور کردار دیکھ کر لوگ اسلام طرف رغبت اور کردار دیکھ کر لوگ اسلام سے تعنفر ہوں سے ہیں۔

آج ہم نوگ بیوم کریں کدائی زندگی میں اسلام کو داخل کریں گے، زندگی کے ہر شعبے میں اسلام کو داخل کریں گے، عبادات بھی، معاملات بھی، معاشرت بھی، اخلاق بھی، ہر چیز اسلام کے مطابق بنانے کی کوشش کریں گے۔

اله مسلم، كتاب البر والصلة، بأب تحريم الظلم، رقم: ٢٥٨١

ك البقرة: ٢٠٨

(يَئِينَ (لِعِيلَ أَنْهِينَ

مونے میں حسن اخلاق کی دولت کوخاص وظل ہے۔

دين مين اخلاق كا درجه

رسول الله طَلِقَ عَلَيْهِ فَا فِي تَعليم مِن ايمان كے بعد جن چيزوں پر بہت زور وياہے، اور انسان كى سعادت كوان پر موقوف بتلايا ہے، ان ميں سے ايك سر بھى ہے كه آدى اخلاق حسنہ اختيار كرے، اور برے اخلاق سے اپنى حفاظت كرے۔

یعنی اصلاح اخلاق کا کام میری بعثت کے اہم مقاصد اور میرے پروگرام کے خاص اجزاء میں ہے ہے۔

ہونا بھی یمی چاہے تھا کیوں کہ انسان کی زندگی اور اس کے نتائج میں اخلاق کی بدی اہمیت ہے، اگر انسان کے اخلاق ایتھے ہوں تو اس کی اپنی زندگی بھی قلبی سکون اور خوش گواری کے ساتھ گزرے کی اور دوسروں کے لئے بھی اس کا وجود رحب اور چین کا سامان ہوگا، اور اس کے برنکس اگر آ دی کے اخلاق برے ہوں، تو خود بھی وہ زندگی سے اخلف و مسرت ہے محروم رہے گا اور جن ہے اس کا واسطہ اور تعلق ہوگا، ان کی زندگیاں بھی ہے مزو اور تلخ ہوں گی۔ بیتو خوش اخلاقی اور بداخلاقی کے وہ نقد و شوی نتیج ہیں جن کا ہم روز مرہ مشاہدہ اور تجربے مرتے رہے ہیں، لیکن مرنے کے وشوی نتیج ہیں جن کا ہم روز مرہ مشاہدہ اور تجربہ کرتے رہے ہیں، لیکن مرنے کے

ف معارف الحديث: ٢/١٢٩/١ -١٧٠

ت البقرة: ١٢٩

ت مسند احمد: ۱/۱۸۱/۱ رقم: ۲۲۲۹

مطلب ہے ہے کہ اللہ کے جس بندہ کا حال ہے ہو کہ وہ عقیدہ اور عمل کے لحاظ سے سے موقو موسی ہوتو اگر چہ وہ اور ساتھ بی اس کو حسنِ اخلاق کی دولت بھی نصیب ہوتو اگر چہ وہ رات کو زیادہ نظامیں نہ پڑھتا ہو، اور کثرت نے نظی روزے نہ رکھتا ہو، لیکن پھر بھی وہ اپنے حسن اخلاق کی وجہ ہے اُن شب بیدار عبادت گراروں کا درجہ پالے گا جو قائم اللیل اور صائم النہار ہوں لیعنی جو راتی نظاول میں کا شتے ہوں اور دن کو عموماً روز و رکھتے میں سے

حضرت عبدالله بن عمره رفع النظائل التفاص روايت ب كدرسول الله على المنظائل الله المنظائل الله المنظائل الله المنظائل الله المنظائل الله المنظائل الله المنظام ورستول على المنظام المنظام ورستول على المنظام الم

حضرت جابر وَ اللهُ اللهُ كَا أَيك صديث مِن جَس كو امام ترفدى في روايت كيا باس طرح بكد:

"إِنَّ مِنْ أَحَبَّكُمْ إِلَى وَأَقْرِيكُمْ مِينِي مَجْلِسًا يَوْمَ الْقِيلَمَةِ أَحَاسِنَكُمْ أَخُلَاقًا"

تَنْزِ جَمَدُدُ ''تم دوستوں میں مجھے زیادہ محبوب وہ میں اور قیامت کے دن اُن عی کی کشست بھی میرے زیادہ قریب ہوگی جن کے اطلاق تم میں زیادہ بہتر ہیں۔''

ا ویا رسول الله ظافی ای محبوبیت اور قیامت کے دن آپ کا قرب نصیب

ك ابوداؤد، كتاب الأدب، باب في حسن الخلق، رقم: ٤٧٩٨

العديث: ١٦٧/٢

بخارى، كتاب فضائل اضحاب النبي صلى الله عليه وسلم، باب مناقب
 عبدالله بن مسعود رضى الله عنه، رقم: ٢٧٥٩

ت تومذي، كتاب البر والصلة، باب في معالي الأخلاق، وقم: ٢٠١٨

(بایک دامیالی این

بعد بمیشہ رہنے والی زندگی میں ان دونوں کے منتبح ان سے بدر جہا زیادہ اہم لکنے والے بیں، آخرت میں خوش اخلاقی کا مقیجہ ارحم الراحمین کی رضا اور جشت ہے اور بداخلاقی کا انجام خداوند قبار کا غضب اور دوزخ کی آگ ہے۔ "اللَّفِيْمُ

اخلاق کےمراتب

اخلاق كے تين مراتب ين:

اخلاق كاايك مرتبه وه ب جويبوديول كوطاءات اخلاق حيده كيت إلى - وه يه تھا كەتم لوگوں كے ساتھ برابرى كا معامله ركھو۔ ﴿ أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ ﴾ تَنْجَمَدُ: "جان كے بدلے جان اور آكھ كے بدلے آكھے" مطلب يہ ہے کہ جتنا کوئی حمہیں تکلیف پہنچاتا ہے اپنا بدالہ لینے کے لئے تم بھی اتن ہی تکلیف كافيا كمة مورالبتداس يزيادة تكليف ندائجانار

اخلاق کا ایک مرتب عیمائیول کو بھی مار ان کو یبودیول سے بلند مرتبے کا اخلاق ملاجي اظلاق كريمانه كيت بين وواخلاق يد تح كدا كرمهين كوني تكليف پہنچائے تو تم اس کومعاف کر دو۔ ای لئے نصاری جو پیاڑی کا وعظ دہراتے ہیں اس میں وہ کہتے ہیں کداگر تمہارے ایک رخسار پر کوئی تھیٹر لگائے تو تم اپنا دوسرا رخسار بھی

اس كرسام بيش كردو-وه اے اخلاق كا برا مرتب يجھتے بيں-

اخلاق كا أيك مرتبد امت مسلمه كو بهى ملاجيه" اخلاق عظيم" كتب بين-

له معارف الحديث: ١٦٥/١ م١٦ على العائده م

چنال چداللدرت العزت في ارشاد فرمايا: ﴿ وَإِنَّكَ لَعَلَى خُلُقِ عَظِيمً ﴾ اورآپ واخلاق كالمندم تبي يرفائزي-

اخلاق عظيمه بيرين ﴿ فَاعْفُ عَنْهُمْ ﴾ احجوب! أنبين معاف كرويجة -﴿ وَاسْتَغِفُورُ لَهُمْ ﴾ اوران ك لئ الله ك حضور استغفار يجيم - ﴿ وَضَاوِدُ هُمْ لیی الْاَمْنِ ﴾ اوران کوائے مشورے میں شامل بھی کر لیجئے۔ یعنی اپنے بھائی کی تنظمی كوفقط معاف بى نبيس كرنا بل كداس كے لئے اللہ كے حضور استغفار بھى كرنى باور بمريبلے والے تعلقات كو بحال بھى ركھنا ب_اورائيس اين مشوروں ميں شامل بھى ركم: ب- اى لئے الله رب العزت نے ايمان والوں كى صفت قرآن ميس ارشاد فرمائي كر ﴿ وَالْحَاظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ * وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنِ ﴾ وه غص كو في جانے والے جوتے بيں اور وہ انسانوں كومعاف كر وية والع موت بيل-الله تعالى السي فكوكارول سيحبت فرمات بيل-

مویا ہم نے دومروں کو فقط معاف ہی نہیں کرنا بل کہ ہم نے ان کی غلطیوں ك باوجود ان كوائة قريب كرنا ب- اى لئة الله رب العزت في ارشاد فرمايا: ﴿ وَلَا تَسْتَوِى الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيْلَةُ ﴿ إِذْفَعُ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ﴾ تم يرالَي كو اجیائی کے ساتھ دھکیلو۔ جبتم برائی کا بدلدا چھائی کے ساتھے دد گے تو متیجہ یہ نکلے گا ﴿ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةً كَأَنَّهُ وَلِي حَمِيْمٌ ﴾ كرتمبارے اورجس کے درمیان دہنی ہے وہ بندہ پھر تمہارا جگری یار بن جائے گا۔ بول وشنی دوئی میں بدل جائے گی اور نفراتوں کی جائے واوں میں محبتیں پیدا ہو جائیں گی۔ اللہ تعالیٰ نے جوب ارشاد فرمايا ك ﴿ وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُتُ فِي الْأَرْضِ ﴾ اور جو انسانوں کو نفع پینیاتا ہے اللہ تعالی اے زمین میں جما دیتے ہیں۔اس کا مطلب سے

> ال عمران: 104 عمران: 104 عمران: 176 عمران: 176 ت خرالسِّجدة: ٢٤ ف الرعد: ١٧

حسنِ اطلاق كا عاصل يدتمن چزي إلى -"بَذُلُ الْمُعُرُوفِ" كى صورتيس:

بذل المعروف يعنى دومرول كو فائده كبنيائي بن بهت المريق اليه بحل بي جن مي كوئى وقت ، محنت اور چيه بحى خرج نبين موتا مثلاً آپ چلے جارے إي-داسته مي كوئى الي چيز و يكھتے إيں جس سے چلنے والوں كو تكليف بنتي سكتى ہے۔ آپ ئے چلتے چلتے اسے مثا دیا۔ اس بر كوئى وقت اور محنت خرج نبيں موكى ليكن آپ نے اپنے اس عمل سے اوگوں كے ساتھ الك حسن سلوك كردیا۔

ہ آپ بس میں بیٹھے ہیں آپ کے پاس ایک ضعیف آدمی گھڑا ہے بے جارہ تھک رہا ہے۔ آپ نے تھوڑا سا سرک کر اس کو جگہ دے دی اتو آپ نے اس کے ساتھ حسن سلوک کر دیا۔

گر گئے، دیکھا کہ کوئی ایسامخضر ساکام ہے جس کے کرنے سے بیوی کوخوشی موسکتی ہے، وہ کر دیا تو سے بھی بذل المعروف ہے۔ کسی بات سے بچے کوخوشی ہوسکتی ہے، وہ کر دی اتو سے بھی بذل المعروف ہے۔

بذل المعروف كى ايك صورت يوجى ب كرآپ كہيں بيٹے ہيں اور دوسرا فضى آپ كر برابر ميں آگيا۔ اگر چداس كے بيٹے كے لئے جگہ كافی ب كين آپ اس كے لئے جگہ كافی ب كين آپ اس كے لئے تھوڑے ہے سرك گئے تو اس كے دل بيل خوشی پيدا ہوجائے گی كدآپ نے اس كی قدركى ، اس كی اہميت كا اصاس كيا اور اس كی عزت كی۔ اور اگر سرك كی جائیں تا كدا ہے بہر ہيں ہے تو روايات بيں يہاں تك آتا ہے كہ تھوڑے سے بال جائيں تا كدا ہے معلوم ہوكد آپ نے اس كے دل بيل خوشی پيدا معلوم ہوكد آپ نے اس كے دل بيل خوشی پيدا معلوم ہوكد آپ نے اس كے دل بيل خوشی پيدا معلوم ہوكد آپ نے اس كے دل بيل خوشی پيدا معلوم ہوكد آپ نے اس كے دل بيل خوشی بيدا معلوم ہوكد آپ نے اس كے دل بيل خوشی بيدا معلوم ہوكد آپ نے اس كے دل بيل خوشی بيدا معلوم ہوكد آپ نے اس كے دل بيل خوشی بيدا معلوم ہوكد آپ نے اس كے دل بيل خوشی بيدا معلوم ہوكد آپ نے اس كے دل بيل خوشی بيدا ميں خوشی بيدا ميں خوشی بيدا ميں ہوگھوں كيا۔ اس سے اس كے دل بيل خوشی بيدا ميں معلوم ہوكد آپ نے اس كے دل بيل خوشی بيدا ميں ميں ہوگھوں كيا۔ اس سے اس كے دل بيل خوشی بيدا ميں ہوگھوں كيا۔ اس سے اس كے دل بيل خوشی بيدا ميں ميں ہوگھوں كيا۔ اس سے اس كے دل بيل خوشی بيدا ميں خوشی بيدا ميں ہوگھوں كيا۔ اس سے اس كے دل بيل خوشی بيدا ميں ہوگھوں كيا۔ اس سے اس كے دل بيل خوشی بيدا ہوگھوں كيا۔ اس سے اس كے دل بيل خوشی بيدا ہوگھوں كيا۔ اس سے اس كے دل بيل ہوگھوں كيا ہوگھوں كي

فرض بدك بلال المعووف (يعنى دوسرے كم ساتھ اچھا معالمدكرنے) كے ب شارطريق مو كتے ہيں۔ گرش بحى مو كتے ہيں اور سفر ش بحى مو كتے ہيں۔ سيشارطريق مو كتے ہيں۔ گرش بحى مو كتے ہيں اور سفر ش بحى مو كتے ہيں۔ ہے کہ اللہ تعالی اس کے قدم زمین میں جماد یا کرتے ہیں۔ بیالیک خدائی قانون ہے کہ جو بندہ دوسروں کے فائدے کے لئے زندگی گزارے گا اللہ تعالیٰ اس کے اپنے قدم زمین میں جمادے گا۔ ⁴

"حسن اخلاق" کے کہتے ہیں؟

" و مُنْلَق " اصل میں عادت کو کہتے ہیں۔ " حُسْنُ الْحُلُقُ" کا مطلب موا " اچھی عادت، اجھے اخلاق " صن اخلاق کیا ہے؟ اس کا حاصل اور لب لباب جو علاء کرام نے لکھا ہے، تین چزیں ہیں۔

- اللهُ الْمُعُرُونِ
 - كَفُّ الْأَذٰى
 - طَلاَقَةُ الْوَجْهِ
- ہذا گا الْمَعْوُوْف كا مطلب يہ ہے: آپ دومرے كے ساتھ اچھا اور خير خوانى
 كا معاملہ كريں اور رو ہے، پہنے اور زبان سے أسے جو چھے فائدہ پنچا كتے ہوں،
 ہنچانے كى كوشش كريں۔ ہرآدى بيسوتے كہ وہ دومرے كوكيا فائدہ پنچا سكتا ہے اور
 پخر جو بچھ ميں آئے اور اس كا موقع بھى ال جائے تو وہ فائدہ پنجائے۔

 ہر جو بچھ ميں آئے اور اس كا موقع بھى ال جائے تو وہ فائدہ پنجائے۔
- ک تحف الأذى كا مطلب بيت كه دومرول كو تكليف ند پنجائ اس بات كا خيال ركے كه ميرى كى بات يا كارى اور ول خيال ركے كه ميرى كى بات يا كى فعل سے دومرے كو ناحق ادفى تا كوارى اور ول آزارى ند ہو۔
- طَلَاقَةُ الْوَجْهِ كَمْعَىٰ بِن خنده بِيثانى على المنا مطلب يه بكر جب آپ كى عليس او آپ كے چرك بر بشاشت بور و يكن والا ير محسوس كرے كر جي اللہ معن خوشى بيدا بوگى۔ سے ملتے ہوئے خوش بوا براس سے اس كے ول بيس بھى خوشى بيدا بوگى۔

اله خطبان لفيو: ۱۳٤/۸ (۲۳۵)

دفتر میں بھی ہو سکتے ہیں اور مجد میں بھی ہو سکتے ہیں وغیرہ وغیرہ اور ہرموقع کے لئے آدى خودسوچ سوچ كرىيكام كرسكتا بيكن بيكام تب بى بوگا جب آدى كواس بات كاشوق موكدوه دومرول كماتهوسن سلوك كريدك

"كف الأذي" كي تفصيل:

"كف الاذلى" كامعتى ومطلب بيب كدلسى دوسر عكوآب كى وجدت ناحق تكليف شە بولى بعض اوگول كى عادت سكريث يينے كى بوتى ب، ايسے لوگ بعض مرتبه دوران سفر بھی سکریٹ یے رہتے ہیں اور برابر والوں پر دھواں چھوڑتے رہتے ہیں

بعض یان والے یان کھاتے ہیں اور قریب ہی اس کی پیک تھو کتے رہے ہیں۔ دوسرول کو اس سے طن آئی ہے بیجی تکلیف دینے والی چیز ہے۔ بعض نسوار کھانے والے بچ چ تھو کتے رہتے ہیں حالال که برابر میں دوسرے افراد موجود ہوتے ہیں۔اس سے دوسروں کو تکلیف چینجی ہے۔

بعض لوگ ریل میں پہلے سے پہنی جاتے ہیں حالال کہ ان کی ریزوریش (Reservation) نبین ہوئی کیڑا بچھا کرجگہ پر قبضہ کرلیا۔ بعض مرتبہ کوئی مخص صرف ایک مکٹ لیتا ہے لیکن دوآدمیوں کی جگہ پر قبضہ کر لیتا ہے۔ بیصرف حسن اخلاق کی بات نمیں مل کدیدتو حق کی ادائیکی اور گناموں سے بھٹے کی بات ہے۔ جینے کا تلائم نے لیا ہے، است کا دوسرول نے بھی لیا ہے۔ حمہیں بھی ایک آدی کی جگہ تھرنے کا حق ب، دومرے کو بھی اتن بی جگہ کھرنے کاحق ہے۔ تم نے دوآدمیوں کی جگہ پر قِعْد كرك دومر _ كانتن مادليا۔ اى طرح اليے طريقے سے بيٹھنا كه جس سے برابر والي كو تكلى مورى موجا ترفيس

ای طرح اگر کسی کے مند میں بدیو ہوتو اس کے لئے مجلس جانا کہ جس کی دجہ

له اصلاحی تقریویی: ٥/١٨

ے دوسروں کو تکایف ہو، جا تر میں مدیث میں ہے جس کا مفہوم ہے ہے: "جس مخص نے پکی پیاز کھائی ہو یا کیالہن کھایا ہوتو وہ مجد میں شآئے"۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ کچے پیاڑ اور لہن کے کھانے سے مند میں بدیو پیدا ہو جاتی ہے جس سے برابر والوں کو تکلیف ہوتی ہے اور سجد میں فرشتے بھی ہوتے ہیں، انہیں بھی تکلیف ہوتی ہے۔ اس کے منع کیا گیا ہے۔ اندازہ سیجئے کہسن اور بیازے تكليف بى لتنى موتى إس اس نياده تكليف لوسكريث اور بيرى سيموتى ب اوراس سے زیادہ تکلیف دہ بومند کی ہوتی ہے اگر می کے مندیس یائیریا کی بیاری ہے اور الی بی تکلیف بغلوں سے ہوتی ہے اگر کسی کی بغلیں صاف ندر بھی ہوں، سخت کری کے موسم میں پسینوں کے باوجود نبائے نہ ہول۔ اس سے کیڑول میں پینے کی بدبوآ جاتی ہے جس سے برابر والوں کو تکلیف پینیجی ہے۔ ^{سے}

كحريلوآ داب معاشرت كى رعايت ندر كھنے كى مثاليس

عام طور پر گھروں میں یانی ہے کے ملکے یا کور وغیرہ کی جگد مقرر ہوتی ہے۔ اس كے ساتھ گائل يا بيالہ وغيرہ ركھار ہتا ہے۔ اب مثلاً كھر كے ايك فرد نے وہاں ے پانی بیا، اور اس گای کومقررہ جگہ کے علاوہ سی دوسری جگدرکھ ویا۔اب جب دوسرا فرد یانی یف آئے گا اور أے مقرره جگه برگلان نہیں ملے گا تو أے تكليف ہوگی ، اور اگر اُے رات کے وقت پیاس کلی اور وہ رات تین بچے سخت اندھرے میں الله كرياني كى جكه برآيا توالى صورت مين اس جكه بركارس ند ملنے كى صورت مين بہت زیادہ تکلیف ہوگی اور جب تکلیف جو کی تو اس کے مندے کوئی نامناسب کلمد نكل حائ كا اور پيراس يرجكرا كرا توجائكا-

ای طرح اولیہ کا معاملہ ہے۔ عام طور پر تولیہ لفکانے کی ایک جگ مقرر ہوتی

مه توهذي، باب ماجاء في كواهية اكل النوم والبصل: ٣/١

ت اصلاحی تقریرین: ٥٠/٥ تا ٥٨

جس سے دومرول کو تکلیف چیچی ہے، یہ جائز نہیں۔

س کراس کا دل ٹوٹا اور پھرلڑائی جھکڑا ہوگیا۔ الفاظ کی رعایت نہ رکھنا بہت بوے

بڑے جھروں کا باعث بنتاہے۔ كفُّ الاذي كي مثالين:

عام طور ير مجدول بين وضو كرنے كے لئے چوكيال بنى ہوتى بين- أيك صاحب آئے، وضو کیا اور گیا یاؤں اس چوکی پر رکھ دیا۔ اس حدیث "الْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ ؟ عَمَامِ مِواكداس فَ الناه كاكام كيا ال النے كديد ميفنے كى عِكم تھى۔ اس كا ختك رہنا ضرورى تھا۔ جب آب نے أے بھوویا تو اب وہاں کوئی محض کیے بیٹہ سے گا،اگر بیٹے گا تو اس کے کیڑے سکیے ہو جائيں گے، سردی کا موم باتو اور زیادہ تکلیف پنجے گا۔

شرعی قاعدہ یہ ہے کہ عام جگہ جہال پر میلینے کا سب کو برابر کا حق حاصل ہے، وبال اگر کوئی محص پہلے بھی جائے تو دوسرے آدی کو بیش حاصل نیس کدوه أے اس جگہ سے افعائے۔مثلاً مسجد میں سب کا برابر حق ہے۔ جو مختص جہاں بیٹھ گیا، وہ ای کی جگہ ہوتی، اب ایک دومرامخض وہاں جھنے کیا اور أے وہاں سے ہٹا کرخوداس جگہ یر میلینے کی کوشش کی تو اس کا بیمل شرعا درست نبیں۔ اس طرح کرنے سے عام طور يرازاني جوزے بيدا ہوتے إلى-

تبسمرسول الله طَلِقِينَ عَلِيقِيلًا كَي خاص سنت

"طلاقة الوجه" (يعنى خنده بيشانى كساته ملنا) بدرسول الله عَلَقَ عَلَيْهِ كَلَ كَلَ خاص سنت ہے۔آل دھزت اللي الله كى عادت شرايد تھى كدعام طور يرآب ك جرة انور رتبهم ربتا تقار حفرت عبدالله بن حارث وخواللة تغاليف فرمات بي جس كا مفہوم یے جب بھی بھی میں رسول الله بلاق الله الله الله الله علاء آپ نے جسم ك ساتھ

له بخاری، کتاب الایمان ۱/۱

يرسى كوتكا في المريحية ب- گھر کے ایک فرد نے وضو کیا تولیہ استعال کیا اور أے اس کی مقررہ جگہ ہے والنے کے بجائے کہیں اور وال دیا، بعد میں کسی دوسرے نے وضو کیا، تولیہ علاق کیا تو وہ اپنی جگد برنہیں۔اب وہ سکیلے ہاتھوں کے ساتھ مختلف جگہوں پر تولید تلاش کرتا پررہا ہے۔ توریجی اے ایڈاء پھیانا ہے۔

رات کے وقت عام طور پر لوگ دروازوں کو بند کرکے اور کنڈی لگا کرموتے ہیں۔ اب مثلاً ایک گھریس سب اوگ ای طرح دردازہ بند کرے سوئے ہوئے يل-ايك صاحب تجدك لئے الح اور دحرام عدوازہ كحولاجى عدومرے كى نيندخراب موكى اب اس نے اٹھ كر تبجد تو يراهى ليكن اس كے ساتھ ساتھ ايك ز بردست كبيره گناه بحي كر ڈالا۔

گھرول میں جب اس طرح کی چھوٹی چھوٹی باتوں کا خیال نہیں رکھا جاتا تو پھر جھڑے کھڑے ہوجاتے ہیں، میاں بوی کے جھڑے، سال بہو کے جھڑے، بہواور نند کے جگڑے وغیرہ جتنے جھڑے گھرول میں ہوتے ہیں، زیادہ تر ای وجہ ے ہوتے ہیں کداس بات کی رعایت میں رکھی جاتی کدایک کے قعل سے دوسروں كوتكليف ندينج

بمیشه کالفظ برا خطرناک ہے

ایک صاحب نے بڑی اچھی بات کی کہ" بمیث" کا لفظ برا خطرناک لفظ ہے، اور گھر كى گفتگويش عام طور يربيلفظ استعال بوتا ہے۔مثلاً ايك روز سالن ين غلطي ے تمک زیادہ ہوگیا او شوہر زوی سے کہتا ہے کہتم تو جمیشہ ای نمک زیادہ کردین و حالاں کہ وہ جمیشہ ایسانہیں کرتی، یہ س کر اس کا دل جلا اور اس نے کہا کہتم تو میشہ ہی ایسی باتیس کرتے رہے موحالال کہ شوہر بھی بمیشہ ایسی باتیں نہیں کرتا، توب

اصلاحي تقريرين: ١٨/٥

ماناقات فرمائی م^ك

میں نے صنور ظی الکھیں کے لئے ایک کھیے تریدا تھا (تاکداس کے ساتھ فیک لگا کیس) اور اس پر کوئی تصویر تھی (اس وقت تک تصویر کی حرمت سے متعلق ادکام آئے ہی تیس سے یا حضرت عائشہ وَفَوَاللّٰہِ اَتَعَالَیٰ اَلَٰ کَتَم معلوم نہ تھا) آپ فرماتی بیں: بیس نے دیکھا کہ جب آپ تشریف لائے تو آپ کا چیرہ نا گواری کی وجہ سے میں مرخ ہوگیا، بیس نے عرض کیا: بیس اپنے گناہوں کی معانی مائٹی ہوں، مجھ سے کیا فلطی ہوئی۔ (حضرت عائشہ وَفَوَاللّٰہُ اِتَعَالَیٰ فَا اَلْہُ عَلَیْ کِیا مَا اَلْہُ مِعْلَى بَعِد بیس فلطی ہوئی۔ (حضرت عائشہ وَفَوَاللّٰہُ اِتَعَالَٰ نے معانی پہلے مائلی، فلطی بعد بیس فیلی ہوئی۔ (حضرت عائشہ وَفَوَاللّٰہُ اِتَعَالَٰ نَا نے معانی پہلے مائلی، فلطی بعد بیس فیلی ہوئی۔ اس کی بات ہے) آپ نے بیس کرتھویر کے متعلق مسئلہ بتایا، بیہ فاص حالت کی بیات ہے کی وجو ہات:

بہت سے نوگوں کو دیکھا گیا ہے کہ وہ بھی مسکراتے بی نہیں، ہر وقت ان کا چہرہ مغموم رہتا ہے، ماشچے پرشکنیں پڑی رہتی ہیں، دوسرا آ دمی دیکید دیکی کرڈرتا رہتا ہے کہ نجانے بید کب ناراض ہو جائے اور کب اے غصر آ جائے۔

اس کی مختلف وجوہات ہیں۔ آ بعض اوگوں کو یہ عادت کسی بیاری کی وجہ سے پڑ جاتی ہے۔ ہروقت بیاری کی وجہ سے پڑ جاتی ہے۔ ہروقت بیاری کی تکلیف اور شدت کی وجہ سے شمگین رہتے ہیں، الله علیه الله علیه وسلم الله علیه وسلم: صدا

ع بخاری، باب هل برجع اذا رای منکراً: ۲۷۸/۲ (بیک رایس ارسی)

جہرے پر مسکراہٹ شہیں آتی ﴿ بعض لوگوں کو زیادہ مصروفیات اور تظکرات میں گھرے رہنے کی وجہ سے بیہ عادت پڑجاتی ہے کہ کاموں اور نظرات کی وجہ سے پریشان سے رہنے ہیں، اس لئے چہرہ پر مسکراہٹ نہیں آتی۔ ﴿ بعض لوگوں میں زیادہ غموں اور صدموں کے آنے کی وجہ سے بیصورت پیدا ہوجاتی ہے۔

ریادہ موں اور صدول ہے اسے کی وجہ سے مید مورت پیدہ ، وجوں ہے۔ اگر غیر اختیاری طور پر کسی مجبوری کی وجہ سے مید حالت پیش آ جائے کہ آ دی کی عادت مسکرانے کی ندر ہے تو مید معاف ہے لیکن ہر شخص کو بیاتو مجبوریاں لاحق نہیں ہوتیں، اس لئے عام حالات میں ایسی عادت بنا تا درست نہیں۔

مسكرانے كے فوائد:

مسكرانا حضور فيلق في اليما بيارى اور بهترين سنت ب كداكركوني فخض اس كواپنا لے تو اس كواپئى زندگى بيس اتنى آسانيال ميسر آئيس كى كدان كا تصور كرنا مشكل ب اس كے ساتھ ساتھ اس عمل پر زبردست ثواب بھى ب، اس لئے كد جس فخص سے آپ مسكرا كرمليس كے، اس كے دل بيس شخندك پر جائے كى، اس طرح دوسرے مسلمان كوخوش كرنے كا ثواب بھى آپ كو بلے گا۔

اگر آپ اس عادت کو جاری رکھیں گے تو دنیا میں اس کا فائدہ یہ بھی ظاہر ہوگا کہ سب لوگ آپ سے محبت کریں گے، ہر ایک آپ کی بات توجہ سے سے گا اور آپ کی بات مانے کی کوشش کرے گا اور آپ کے ساتھ تعاون کرے گا۔

سی ہے کوئی بات بغیر مسکرائے کرے دیکھیں اور پھر وہی بات مسکرا کر کریں، آپ خود محسوس کریں گے کہ دونوں میں بہت بڑا فرق ہے۔ تجربہ کرکے دیکھ لیس دونوں میں زمین وآسان کا فرق ہوگا۔ جو بات آپ نے مسکرا کر کی اس کا اثر پچھے اور ہوگا اور جو ایغیر مسکرائے کی ، اس کا اثر اور ہوگا۔

آپ اس کی عادت بنا کر تجربہ یجے، تا برائے گا بک کے ساتھ سکرا کر بات

کرے، افسراہنے ماتحت کے ساتھ مشکرا کر بولے، ماتحت اپنے افسر کے ساتھے، اسٹاؤ شاگرد کے ساتھ اور شاگر داستاذ کے ساتھ مشکرا کر ہات کرکے ویکھے وہ خود بخو داس کا فرق محسوس کریں گے۔

ہمیں ایک دوسرے سے ملنے اور کام کان کے دوران خدہ پیشانی اور سکرانے

ک عادت بنانی ہوگی اور اس کی مشق کرنی ہوگی۔ مشق کے بغیر اس کی عادت بنتا
مشکل ہے، صرف سننے اور علم میں لانے سے بیر سئلہ حل نہیں ہوگا، بل کہ اس کی
عادت والنی پڑے گی۔ اگر کسی غم، پریشانی یا تکلیف وغیرہ کی وجہ سے چہرے پر
مسکراہٹ نہیں آ رہی تو بت کلف مسکرانے کی کوشش کریں، رفتہ رفتہ تکلف کے اخیر خود
بخود مسکراہٹ کی عادت پڑ جائے گی اور پھر آپ جب بھی کسی سے بات کریں گے تو

کسی سے خندہ پیشانی سے ملنا اور مسکرا کر بات کرنا دیکھنے میں اگرچہ یہ ایک چھوٹی تی سنت ہے، یہ دنیا و آخرت چھوٹی تی سنت ہے، یہ دنیا و آخرت بنانے والی سنت ہے۔ یہ ایک سنت ہے کہ جو خص اے اپنا لے گا، وہ انسانوں کا محبوب بن جائے گا، ونیا اُسے عزت کی افرے دیکھے گی، اس سے محبت کرے گی اور اس کی پیردی کرے گی۔ اس کی پیردی کرے گی۔

اس بات سے بہت ہی ول دکھتا ہے کہ ہمارے ہاں اس سنت پر عمل کرنے کا روان بہت ہی کم ہے۔ بہت کم لوگوں کے چہوں پر طلاقات کے وقت مسکراہٹ نظر آئی ہے، دوکان پر جائیں، دوکان دار کے چہرے پر مسکراہٹ کم نظر آئے گی، گا بک کے چہرے پر مسکراہٹ کم نظر آئے گی، دو عام ملاقاتیوں کے چہرے پر مسکراہٹ بہت کم نظر آئی ہے۔ ہمارے ہاں اس سنت پر بہت کم عمل کیا جاتا ہے۔

لیکن بہت ہی دکھے ول سے کہنا پڑتا ہے کہ بہت سے وہ انٹمال جو نبی اکرم شیفٹانگیٹا نے اپنی امت کو سکھائے تتے اور ہم نے ان پڑٹمل کرنا تقریباً مجبور دیا لیکن

یورپ کے اوگوں نے آئیں اختیار کرلیا۔ بدا عمال دو تھے جود نیاوی ترتی کے لئے بے نظیر تھے چوں کہ وہ لوگ صرف دنیا کے طالب ہیں تو انہوں نے نبی اکرم ظیفی المحقیقی کی ان تعلیمات کو لے لیا جن سے دنیاوی ترقیاں لمتی ہیں اور چوں کہ آئیں آخرت سے کوئی سروکارٹیں اور آخرت پران کا عقیدہ بھی نہ ہونے کے برابر ہے، اس لئے آخرت سے متعلق تعلیمات کو چھوڑ دیا، مسکرانے کاعمل ایک ایسا عظیم عمل ہے کہ جس کی وجہ سے زیروست دنیاوی ترقیاں ہوتی ہیں چناں چہ انہوں نے اس عمل کو اپنالیا اور اس بڑمل کرنا شروع کردیا۔

یورپ کے مختلف ممالک خصوصاً برطانیہ سوئٹڑر لینڈ اور بعض دیگر ممالک میں مسکرانے کی عادت عام ہے۔ برطانیہ ٹیل آپ جس سے بھی ملاقات کریں ہے،خواہ وہ مرد ہو یا عورت وہ سکرا کر بات کرے گا۔ آپ کسی سے راستہ پوچیس، وہ سکرا کر

جواب دے گا حالال كدوه آپ كا كام كرديا ہے۔

حتیٰ کہ وہاں پر پولیس والا سابی بھی مسکرا کر چالان کرتا ہے۔ ان کے ہاں چالان کر نا ہے۔ ان کے ہاں چالان کرنا ہے۔ ان کے ہاں چالان کرنے کا طریقہ یہ ہے کہ جب کوئی شخص قانون کی خلاف ورزی کرتا ہے تو پولیس والا آتا ہے اور ہاتھ میں ایک گلٹ شما دیتا ہے، اس کلٹ پر تکھا ہوتا ہے کہ آپ فلال تاریخ تک اتنی رقم عدالت میں جمع کرا دیں، اگر جمع نہیں کرائیں گے تو آپ کی گاڑی منبط ہوجائے گی۔

کین ککف دینے کا طریقہ یہ ہے کہ وہ آئے گا، گذیارنگ (Good Morning)
کے گا، سکرا کرائے ککف دے گا اور پھر کے گا (Very Sory) (معاف کرنا) مسکرا کر
اے رفعت کرے گا۔ جس کا متجہ یہ ہے کہ دہاں کی فض کا پولیس والوں سے جھڑا
میں ہوتا جب کہ یہاں آئے دن جھڑے ہوتے رہے ہیں۔ کیوں کہ یہاں پر
پولیس والے بدتیزی سے بات کرتے رہے ہیں حالاں کہ انہیں یہ حق حاصل نہیں
کرکس سے بدتیزی سے بات کریں، انہیں چالان کرنے کا حق ہے لیکن بدتیزی سے

رَجُه طَلْق اللَّا

تُرُجَمَدُ بر میکی صدقہ ہاور نیکیوں میں سے آیک نیکی ہے ہا کی اپنے بھائی کے ساتھ فیگفت اور مسکراتے ہوئے چیرے کے ساتھ ملو۔ جب تم کسی سے ملاقات کرو تو تم کو بیاحیاس ہوکہ تمہاری ملاقات سے اس کوخوشی ہوئی ہے اور اس ملاقات سے اس کوخوشی ہوئی ہے اور اس ملاقات سے اس کے دل میں شخندگ محسوں ہو، اس کو صدقہ کرنے میں شار فرمایا ہے۔

البرّاجولوگ دومروں سے ملاقات کے وقت اور برتاؤ کے وقت لئے دب بوتے ہیں اور وقار کے پردے میں اپنے آپ کو ریزرو رکھتے ہیں، وولوگ سنت طریقہ رحمل نہیں کرتے، سنت طریقہ یہ ہے کہ جب اپنے مسلمان بھائی سے ملے تو ووخوش خلتی کے ساتھ مطاقتی کے ساتھ کے اوراس کوخوش کرنے کی کوشش کرے۔

دوسرول كوخوش ركھنے

"قَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ آحَبِ
الْاَعْمَالِ إِلَى اللّهِ تَعَالَى إِدْخَالُ السُّرُوْدِ عَلَى الْمُسْلِمِ."

تَوْجَمَدَ: "حضور اقدى ظَلِقَ عَلَى إِدْخَالُ السُّرُوْدِ عَلَى الْمُسْلِمِ."

تَوْجَمَدَ: "حضور اقدى ظَلِقَ عَلَى اللهُ السُّرُو عَلَى المُسْلِمِ."

تَوْجَمَدَ: "حضور اقدى ظَلِقَ عَلَى اللهُ السُّرُو الله اللهُ تَعالَى كو اللهُ اللهُ تَعالَى كو الله على اللهُ على مؤمن كول على خوثى الله على الله على مؤمن كول على خوثى والله كل الله الله توثى والله كل الله الله الله على الله على

اس حدیث کا مضمون دوسری احادیث اور دلاک سے بھی ثابت ہے، حضور اقدس ﷺ کے ذریعہ سے بات واضح اقدس ﷺ کے ذریعہ سے بات واضح فرمائی ہے کہ کسی بھی صاحب ایمان کوخوش کرنا اللہ تعالی کو بہت پسند ہے۔

حضرت ڈاکٹر عبدائحی صاحب قدس الله سرہ فرماتے ہیں: جب کوئی بندہ الله تعالیٰ کی طرف رجوع کرتا ہے اور الله تعالیٰ سے اپٹی محبت کا اظہار کرتا ہے تو اللہ جل

ك ترمذي، باب ماجا، في طلاقة الوجه: ١٨/٢

ع كنزالعمال، كتاب الزكوة فسم الاقوال ١٨٤/١، رقم الحديث: ١٦٤١٠

بات كرف كاحق ندائيس قانون في ديا ب اور ندشر بعت في ديا بد برطانيه من اس بات كرف برتميزى اور سخت اس بات كرف برتميزى اور سخت اليح من مات ند كرف -

برطانیہ اور سوئٹر رلینڈ میں تقریبا سو فیصد یہ عادت پائی جاتی ہے کہ جب بھی کسی سے بات کریں گے، پوچیس کے یا کسی بات کا جواب دیں گے تو مسکرا کر بولیں کے اور دیگر بعض ممالک میں بھی بیعادت بکشرت پائی جاتی ہے۔

مسكرانے كے معاشرتی اثرات:

خندہ پیشانی سے ملنے اور مسکرانے کی عادت کو اپنانا جارے لئے بہت اہم ہے جسی جاہئے گہ ہم آن ہے اس برعمل شروع کریں اور اگر ملتے وقت کسی کو مسکرانا یاد شدر ہے تو اسے یاد دلا ویں کہ بھائی آپ مسکرائے نہیں۔ اگر آپس بیس اس کا معمول بنالیا جائے اور جو لئے کی صورت میں یاد دہائی کرائی جانے گئے تو ہمارے معاشرہ بیس شہدی شہد تی ہوئی ہوئی ہوئی ہیں، دو سب کی سب ختم ہو جائیں۔ اور ہماری زندگی جنت والی زندگی کا ضونہ بن جائے۔ اللہ تعالیٰ ہم کو اس پر شمل کرنے کی تو فیق تصیب فرمائے۔ (آبین) سل

خندہ پیشانی ہے ملاقات کرنا "صدقہ" ہے:

"كُلُّ مَغْرُوفٍ صَدَقَةٌ وَإِنَّ مِنَ الْمَعْرُوفِ أَنْ تَلْقَى أَخَاكَ

له اصلاحی تقریرین: ۱۹۹/۳ تا ۱۱۲

(بين وليسان اليات

(بين وليه المرادث

تکلیف اش کر اور قربانی دے کر دوسرول کوخوش کرو، اگرتم تھوڑی کی تکلیف اشا لو سے اور اس کے نتیج میں دوسرول کو راحت اور خوشی ل جائے گی تو و نیا میں چند کھول اور چند منٹول کی جو تکلیف اضائی ہے اس کے بدلے میں اللہ تعالی آخرت میں جو تواب تہمیں عطا فرمائیں سے وہ و نیا کی اس معمولی سی تکلیف کے مقالبے میں کہیں زیادہ عظیم ہے۔

گناه کے ذریعے دوسرول کوخوش نہ کریں:

دوسری طرف بعض لوگوں میں بیہ بے اعتدالی پائی جاتی ہے وہ بیہ کہتے ہیں کہ چوں کہ دوسرے مسلمان کوخوش کرتا ہوی عبادت ہے، لہذا ہم آو بیہ عبادت کرتے ہیں کہ دوسروں کوخوش کرتا کسی گناہ کے ذریعہ ہو یا کسی تا جائز کام کے ذریعہ ہو، جب اللہ تعالی نے کہد دیا کہ دوسروں کوخوش کروآ ہم بیہ عبادت انجام دے رہ ہیں۔ حالال کہ بیہ گراہی کی بات ہے، اس لئے کہ دوسروں کوخوش کرنے کا مطلب بیہ ہوا کہ قبل کرو، اب اگر تاجائز طریقے سے خوش کرو، اب اگر تاجائز طریقے سے خوش کرو، اب اگر تاجائز المریقے سے دوسروں کوخوش کر دیا ہو گا اس کا مطلب بیہ ہوا کہ گناہ کرکے اللہ تعالی کو تو تاراض کر دیا اور بندے کوخوش کر دیا، بیکوئی عبادت نہیں۔ لہذا اگر دوسرے کی مرقب تاراض کر دیا اور بندے کوخوش کر دیا، بیکوئی عبادت نہیں۔ لہذا اگر دوسرے کی مرقب میں آگر یا اس کے تعاقات سے مرعوب ہوکر گناہ کا ارتکاب کرلیا تو بیکوئی دین نہیں، میکوئی عبادت نہیں۔

فيضى شاعر كأواقعه

اکبر بادشاہ کے زبانے میں" فیضی" بہت بڑے ادیب اور شاعر گزرے ہیں، ایک مرجہ وہ مجام سے داؤھی منڈوا رہے تھے، ایک صاحب ان کے پاک سے گزرے، انہوں نے جب دیکھا کہ فیضی صاحب داڑھی منڈوا رہے ہیں تو ان سے

:15

جلالہ جواب میں زبان حال ہے گویا یوں فرماتے ہیں: اگر جھے ہے محبت کرتے ہوتو میں تو تمبارے ساتھ دنیا میں ملنے والانہیں ہوں کہتم کسی وقت جھے سے ملاقات کرکے اپنی محبت کا اظہار کرو لیکن اگرتم کو میرے ساتھ محبت ہے تو اس کا تقاضہ یہ ہے کہ میرے بندوں کے ساتھ محبت کرو، میری مخلوق ہے محبت کرو، اور میری مخلوق ہے محبت کرنے کا تقاضہ یہ ہے کہ اس کوحتی الا مکان خوش کرنے کی اور خوش رکھنے کی کوشش کردہ ہے۔

ال بارے میں ہمارے معاشرے میں افراط و تفریط پائی جاتی ہے، اعتدال خبیں ہے، پچولوگ تو وہ ہیں جو کسی دوسرے مسلمان کو خوش کرنے کی کوئی اہمیت ہی فہیں بچھتے اور ان کو ہیا بھی نہیں معلوم کہ بیاتنی بڑی عبادت ہے۔ کسی بھی مسلمان کو خوش کر دیا تو اللہ تبارک و تعالی اس پر کتنا اجر و ثواب عطا فرماتے ہیں، اس کا جمیں احساس ہی نہیں۔ بزرگوں نے فرمایا:

ظ ول بدست آور کہ جج اکبر است "کی مسلمان کا دل ہاتھ میں لے لینا لینی اس کے دل کوخوش کر دینا ہیں جج اکبر ہے۔"

بزرگوں نے ویسے بی اس کو تج اکبرنیس کہدویا بل کہ کسی مسلمان کے دل کو خوش کردیتا واقعی اللہ تعالی کے حجوب اعمال میں سے ہے۔

دوسرول كوخوش كرنے كانتيجه:

ذرااس بات کوسویش کداگر اس صدیث کی تعلیم پر ہم سے عمل کرنے لکیس اور ہرانسان اس بات کی فکر کرے کدیش کسی دوسرے کوخوش کروں تو بید دنیا جنت کا نمونہ بن جائے، کوئی جھکڑا باتی نہ رہے، پھر کوئی حسد باتی نہ رہے اور کسی بھی ہخض کو دوسرے سے کوئی تکلیف نہ پہنچے۔ لہٰذا اہتمام کرکے دوسرے کوخوش کرو، تحوزی س ورس اوگوں کا دل خوش کرتے ہیں، اور اب دوسروں کا دل خوش کرنے کے لئے کسی گناہ کا ارتکاب بھی کرنا پڑا تو کر گزریں ہے۔ بھائی! اللہ تعالیٰ کو ناراض کرکے، اللہ تعالیٰ کی نافر مانی کرکے اور اللہ تعالیٰ کے تھم کو پامال کرکے کسی انسان کا دل خوش کیا، تو کیا خوش کیا، تو کیا خوش کیا کیوں کہ اللہ تعالیٰ کو تو ناراض کر دیا، بیتو کوئی عبادت نہیں ہے دوسروں کو خوش رکھنے والی حدیث کا منشا ہے ہے جو جائز امور ہیں، ان ہیں مسلمانوں کو خوش کرنے کی قار کرو۔ حضرت تھانوی ویجھ بڑاندائر تھائی نے اس حدیث کی تشریح

" يمعمول صوفياء كامثل طبعي ك ب-"

یعنی صوفیاء کرام جواللہ کے دوست اور اللہ کے ولی ہوتے ہیں، ہرمسلمان کو خوش کرنے کی فکران کی طبیعت بن جاتی ہے، ان کے پاس آگر آدی بمیشہ خوش ہو کر جاتا ہے، ملول ہو کر نہیں۔ اس لئے کہ اللہ تبارک و تعالیٰ کے فضل سے ان کو اس سنت پڑھل کی نوفیق ہوتی ہے کہ وہ اللہ کے بندول کو خوش کرتے ہیں۔ پھر آ سے فرمایا: پر مل کی ایک شرط ہے ہے، وہ سے کہ دوسروں کو سرور میں داخل کرنے سے خود شرور میں داخل نہ ہوجائے۔''

یعنی دومروں کا تو دل خوش کر رہاہے اور ان کو سرور دینے کی قلر میں ہے لیکن اس کے منتیج میں خودشرور میں بینی سعاصی اور گناہ میں داخل ہوگیا، ایسانہ کرے۔

امر بالمعروف كونه جيمورات

"ابعض لوگ تو ای وجہ سے امر بالمعروف اور جی عن المنکر نہیں کرتے۔" مثلاً اگر فلاں کو نماز پڑھنے کے لئے کہیں گے تو اس کا ول برا ہوگا، اگر فلاں کو کسی گناہ پرٹوکیس کے تو اس کا دل برا ہوگا، اور ہم ہے کسی کا جی برانہ ہو۔ پھر قرمایا: ""کیاان کو قرآن پاک کا سے تھم تظرفیس آیا کہ: "آغاريشى رائى؟"

تَرَجَعَكَ: "جناب آپ يددازهي منذدارب ين؟" جواب من فيني نے كبا:

" بلیاریش می تراشم، و لے دیے سے نمی خراشم" مَتَوْجِهَدَدُ: " بمی بال! واڑھی تو منڈوا رہا ہوں لیکن سمی کا ول نہیں وکھا رہا۔"

مطلب بیر تھا کہ میراعمل میرے ساتھ ہے اور میں کی ول آزاری نہیں کر رہا، اور تم نے جو میرے اس عمل پر مجھے ٹو کا تو اس کے ذریعیہ تم نے میرا ول وکھایا۔ اس پران صاحب نے جواب میں کہا:

''ولے کے نمی خراشی، ولے دلے رسول اللہ (ﷺ) می خراشی'' لیعنی جو ریہ کہدرہے ہو کہ میں کسی کا دل نہیں دکھا رہا ہوں، ارے اس عمل کے ذریعہ تم رسول اللہ ﷺ کا دل دکھا رہے ہوں^گ

تکلیف پہنچانا صرف زبان یا ہاتھ ہے نہیں ہوتا بل کہ بسا اوقات احکام کی خلاف ورزی کر کے بھی تکلیف پہنچائی جاتی ہے۔ فیض شاعر نے آپ ینگھنگانگیا کو جو تکلیف پہنچائی وہ آپ ینگھنگانگیا کے احکام کی خلاف ورزی کر کے پہنچائی ہے۔ ہم احکام نے خلاف ورزی کر کے پہنچائی ہے۔ ہم احکام کی خلاف ورزی کر کے ماحل پر نظر ووڑا کی تو نہ جانے کتے لوگ نبی اکرم یکھنگانگیا کے احکامات کی خلاف ورزی کر کے ول آزاری کے مرتکب ہورہے ہیں، اللہ تعالی ہم سب کو نبی اکرم یکھنگانگیا کے احکامات کی تعمیل کی توفیق نصیب فرمائے۔ (آئین)

الله والے دوسرول کوخوش رکھتے ہیں لبندا بعض لوگوں نے ذہن میں بھی اور زبان پر بھی ہے بات رہتی ہے کہ ہم تو

> ا اصلاحی خطبات ص ۲۸۱ ریک (اید اراید)

توكون كالواس كادل د كے كا۔

طرح ادارے اور گھرے باہر رائے پر چلنے، گاڑی میں جینے، گاڑی چلانے کے بھی اینے اپنے آ داب ہیں-

بالكل اى طرح كوكام اليے ہوتے ہيں جن كر فے كے لئے اجماع كى صورت بن جاتى ہے كول كرئے الكال اى طرح كول كا آيك بن كام ہوتا ہے اور كام كے حل كرفے كى جگہ آيك ہوتا ہے اور كام كے حل كرفے كى جگہ آيك ہوتى ہوتى ہے، مثلاً بل جمع كرانا، پٹرول وُلوانا، فكف لينا يا كى كام كى درخواتيں وصول يا جمع كرانا، بيا يے مقامات ہوتے ہيں جہال پركن افراد جمع ہوتے ہيں اور بيك وفت سب كا كام ہونا ممكن نہيں ہوتا تو الى صورت ميں اگر آيك وور سے تعاون ندكيا جائے تو كافی مشكلات كا سامنا كرنا پڑتا ہے اور دوسرول كى حق تعلی كا گناہ بھى اور اپنا اور دوسرول كا وقت ضائع كرنے كا وبال بھى ہوتا ہے۔

مختلف جگہوں پرایے کاموں کے لئے لائن لگانی پڑتی ہے رش زیادہ ہے تو لائن لگائی جاتی ہے۔ اس کا شری تھم یہ ہے کہ جوشن آپ ہے آگے کھڑا ہے، اس کی اجازت کے بغیر اس کی جگہ پر جانا یا اس ہے آگے بردھنا حرام ہے، لائن کی پابندی کرنا بہت ضروری ہے۔ بعض لوگ اس میں بڑا فخرمحسوں کرتے ہیں کہ ہم لائن کے پابند نہیں، ہمیں کون روک سکتا ہے۔ جانور کوتو کوئی بھی نہیں روک سکتا، لیکن اگر وہ انسان

ہے تو انسان ہونے کے ناسط تو اُسے رکنا چاہئے اسلائی ادکام کا نقاضا بھی ہے۔

اکثر تجربہ یہ ہے کہ جو شخص لائن تو رکر اپنا حق وصول کرتا ہے، آگے جاکر وہ

اینے مقصد میں کامیاب نہیں ہوتا، جننے لوگوں کا حق دباکر، یا حق مارکر ان کی

بردعا کی لے کروہ آگے جاتا ہے تو کوئی ایسی ناگبانی پریشانی آ جاتی ہے کہ جفتا وقت

لائن میں لگٹ اس سے زیادہ وقت وہاں لگانا پڑتا ہے، مثلاً ہم لوگ کسی گاڑی میں بیٹھے

تتے گیس بجردانے کی لمبی لائن تھی، ڈرائیور نے لائن میں گاڑی کھڑی کرنے کے

بجائے اپنی گاڑی آگے لے جاکر کھڑی کردی، کسی نے اعتراض کیا اس کو سجھا دیا

جب گاڑی کا فہر آیا جا تھے گیس کا پریشر ختم ہوگیا اور گیس نیس بجروا سکے بسا اوقات

جب گاڑی کا فہر آیا جا تھے گیس کا پریشر ختم ہوگیا اور گیس نیس بجروا سکے بسا اوقات

﴿ وَلَا تَأْخُذُ كُمْ بِهِمَا رَأَفَةً فِیْ دِیْنِ اللّٰهِ ﴾ لله تَتَوَیَجَهَدُ: "ثَمْ كُوالله کے دین کے بارے بیں ان پرترس ندآ ہے۔" لینی ایک فخص دین کی خلاف ورزی کر رہا ہے، گناہ کا ارتکاب کر رہا ہے، اس کے بارے میں تمہارے دل میں بیشنقت پیدا ندہوکداگر میں اس کو گناہ کرنے پر

زم انداز سے نبی عن المنکر کرے

البتہ یہ ضروری ہے کہ اس کو کہنے کے لئے طریقۃ ایسا اختیار کرے جس ہے اس کا دل کم ہے کم دیکھ، ول آ زاراسلوب اختیار نہ کرے بل کہ زی کا اندازہ ہو، اس میں ہوردی ہو، جبت ہو، شفقت ہو، خیرخوابی ہو، اظلامی ہو، خصہ نکالنا مقصود نہ ہو۔ لیکن یہ سوچنا کہ اگر میں اس کونوکوں گا تو اس کا دل دیکھے گا، چاہے کتے بھی زم انداز میں کہوں تو یہ سوج درست نہیں، اس لئے کہ اللہ تعالیٰ کورامنی کرنا تمام مخلوق کورامنی کرنے ہی کہوں تو یہ سوج درست نہیں، اس لئے کہ اللہ تعالیٰ کورامنی کرنا تمام مخلوق کورامنی کرنے ہے مقدم ہے۔ لبندا دونوں انتہائیں غلط ہیں، افراط بھی اور تفریط بھی۔ بس اپنی طرف ہے ہر مسلمان کو خوش کرنے کی کوشش کرو، لیکن جہاں اللہ کی حدود آ جائیں، حرام اور ناجائز امور آ جائیں تو پیرکسی کا دل دیکھ یا خوش ہو، اس وقت بس اللہ دی کا کوش ماننا ہے، اس وقت اطاعت صرف اللہ اورائلہ کے رسول ہی کی کرتی ہے، آ اللہ دی کا اور کی پروانہیں کرتی ہے۔ اللہ کسی اور کی پروانہیں کرتی ہے۔ اللہ کسی اور کی پروانہیں کرتی ہے۔ اللہ کسی اور کی پروانہیں کرتی ہے۔ اللہ تعالیٰ ہم سب کو کمل کرنے کی تو فیق عطافر مائے۔ آ ہیں۔ سے

نظم وضبط کی پابندی تکلیف سے بیخے کا ایک حل

ہرجگداور ہرادارے کے نظم وضبط کے پھے قانون وآ داب ہوتے ہیں جن کی رعایت رکھنا ضروری ہوتا ہے، نظم وضبط انسانی شرافت کا ایک اہم خاصہ ہے۔ اس

له النور: ۲ غه اصلاحي خطبات ۲۸۱/۹

(بين البيل الين

لائن وَرْكرابنا كام كرواليا آك كارى جيجر وكن-

مجھی لائن تو وکر انسان آ کے پینی جاتا ہے، اور بھتا ہے کدلائن تو وگر میں است لوگوں ہے آ کے نکل گیا، اور میرا کام ہوگیا، حالاں کد در حقیقت اُس نے اشت اوگوں کا حق مار کر اللہ کو ناراض کیا۔ ایسے وقت میں اگر ہم لقم وضیط کی پایندی کریں تو دنیا و آ خرت میں اجر کا باعث ہوگا اور اگر جلد بازی ہے کام لیا تو دنیا میں بھی طعن و تشخیع کا خرت میں اجر کا باعث ہوگا اور اگر جلد بازی ہے کام لیا تو دنیا میں بھی طعن و تشخیع کا ختا نہ ہے گا اور آخرت میں بھی دومرول کا حق مارے کی وجہ سے بحرم تخرم سے گا۔

یورپ کے معاشرے میں اگر چہ بہت ساری خرابیاں ہیں، لیکن معاشرہ کے اواب کے سلنے میں ان میں بہت ی خوبیاں بھی پائی جاتی ہیں۔ ان میں سے ایک ہیے کہ جب بھی پائی مسات آدی کسی کام کے لئے جمع ہو جا میں تو اپنی لائن خودلگا لیے ہیں، کسی کو کہنا نہیں ہوتا کہ لائن بنا لو، خود بخو دلائن بناتے ہیں اور لائن لگا کر پھر ایک دومرے کو تکلیف نہ پہنچے۔ جب ایک دومرے کو تکلیف نہ پہنچے۔ جب کہ ہمارے ہاں اولاً تو لائن لگائے کا رواح نہیں اور اگر کمیں گئی ہوتا ہے تو عام طور پر دھم جبل ہوتی ہوار ایک طوفان برتمیزی ہر یا ہوتا ہے حالاں کہ شرایعت اسلامی کا تقاضا وہ ہوتے ہیں کہ "الکّف لیکن الل اسلام کا تقاضا المُسلِمةُ مَنْ سَلِمةً اللّٰ اسلام کا تھا لیکن اہل اسلام نے اسے وہ ہور یورپ والوں نے اختیار کر لیا۔

تكليف سے بحاؤ كابار موال راستہ

مخلوق خداے مدردی وخیرخوابی:

"وَعَنْ تَمِيْمِ إِلدَّادِيِّ أَنَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:

ال صديد كي قام تفسيل" تكليف عن يك كا يأتجال ماست عن كرد يكل ب وبال وكي لي جات ال

الدِّيْنُ النَّصِيْحَةُ قُلْنَا لِمَنْ قَالَ لِللهِ وَلِكِتَابِهِ وَلِوَسُوْلِهِ وَلاَئِمَّةِ الْمُسْلِمِيْنَ وَعَامِّتِهِمْ. ""

اس حدیث میں نصیحت اور خیر خواہی کو اعمال دین میں سے بتایا گیا ہے، اس میں چند الفاظ ذکر ہوئے ہیں ان کا مطلب ومفہوم ذکر کیا جاتا ہے تا کہ اس حدیث کو سمجھنا اور اس پر عمل کرنا آسان ہوجائے۔

الی لیگید: الله کون میں خرخوائی کا مطلب سے کداللہ تعالیٰ کی ذات وصفات پر ایمان لائے اس کی وصدانیت و حاکمیت کا اعتقاد رکھے، اُس کی صفات و کارسازی میں کسی فیر کوشریک کرنے سے اجتناب کرے اُس کی عبادت اخلاص نیت کے ساتھ کرے اُس کی عبادت و فرمانبرواری کرے اس کی نعتوں کا اقرار واعتراف کرے اور اس کا شکر کرے اُس کے نیک اور فرمانبروار کی نعتوں کا اقرار واعتراف کرے اور اس کا شکر کرے اُس کے نیک اور فرمانبروار بندوں سے وور سے۔

@ ولِكِتَابِهِ: فداك كالب كون يس فرخواى كامطلب يه بكراس باتك

ك مسلم، باب بيان أن الدين النصيحة: ١/٤٥

المين والعيام أواث

119

واضح رہے کہ بیر حدیث بھی"جوامع الکلم" میں سے ہے، اس کے مختفر الفاظ حقیقت میں دین و دنیا کی تمام بھلائیوں اور سعاوتوں پر حاوی ہیں اور تمام علوم اوّلین وآخرین اس چھوٹی کی حدیث میں درج ہیں۔

"حضرت جرر ابن عبدالله وَفَقَالَ اللّهُ اللّهِ الله مِن كَدِيل كَم بين كَد بين كَد بين كَ رسول كريم فِيلَة اللّهُ كَان بيت كى كد بابندى ك ساته فماز روس كا اور جرمسلمان كحق من خرخوانى كرول مى الله على ا

الله رجی حقوق العباد، لبندا حضرت جریر و و طاعت کا تعلق دو بی چیزوں سے ہے آ حقوق الله جس خاص طور پر الله رجی حقوق الله جس خاص طور پر ان عبادات کا ذکر کیا جو تمام بدنی اور مالی عباداتوں جس شہادتین کے بعد سب سے اعلی و افضل جیں اور ارکان اسلام جس سے اہم ترین ہیں بعنی نماز اور ذکو ہ ، جہاں تک روزہ اور جج کا تعلق ہے تو ہوسکتا ہے کہ جس وقت حضرت جریر و فوالله انتخال نے بیعت کی ہواس وقت تک بید دولوں روزہ اور جج مسلمانوں پر فرض نہ قرار و سے گئے ہوں! ای طرح حقوق العباد سے متعلق اس چیز کو ذکر کیا جس کے دائرے جس بندول کے تمام حقوق العباد سے متعلق اس چیز کو ذکر کیا جس کے دائرے جس بندول کے تمام حقوق آ جاتے ہیں یعنی خیرخواہی۔

افی حطرت جریر رفت النظائی کا ایک واقعای موقع کے نہایت مطابق ہے اور جس سے اُن کی خرکورہ بالا بیعت کا ایک علی نموند سائے آتا ہے منقول ہے کہ ایک مرجہ حضرت جریر وفت کا انگی نے ایک محوزا تمین سو درہم میں خریدا، پھر انہوں مرجہ حضرت جریر وفت کا النبی صلی الله علیه وسلم الدین النصیحة: ۱۳/۱ میں معادی، باب قول النبی صلی الله علیه وسلم الدین النصیحة: ۱۳/۱

عقیدہ رکھے کہ یہ کتاب اللہ کی طرف سے نازل ہوئی ہے اس میں جو پھی کھا ہے اس پر ہر حالت میں عمل کرے تجوید و ترتیل اورغور و فکر کے ساتھ اس کی تلاوت کرے اور اُس کی تعظیم واحترام میں کوئی کوتا ہی نہ کرے۔

و کوسور الله: الله تعالی کے رسول بیلی الی کے حق میں خیرخواہی کا مطلب یہ کہ اس بات کی ہے ول سے تصدیق کرے کہ وہ الله تعالی کے رسول اور اس کے جیجے ہوئے بیفیر ہیں اُن کی نبوت پر ایمان لائے وہ الله کی طرف سے جو پیغام پہنچائیں اور جو احکام دین ہیں اُن کو تبول کرے اور ان کی اطاعت و فرما نبرداری کرے اُن کو اپنی جان، اپنی آل اولاد، اپنے مال باپ اور تمام لوگوں سے زیادہ عزیز و محبوب رکھے ان کے اہل بیت اور ان کے صحابہ وَضَحَافَةُ اِنْتَفَا اِنْتَا اِنْتَفَا اِنْتَفَا اِنْتَفَا اِنْتَفَا اِنْتَفَا اِنْتُنَا اِنْتُنْتُ اِنْتُنَا اِنْتَفَا اِنْتَفَا اِنْتَفَا اِنْتَفَا اِنْتَفَا اِنْتَفَا اِنْتُ اِنْتُنْتُ اِنْتُنَا اِنْتَفَا اِنْتَفَا اِنْتُ اِنْتُنْتُ اِنْتَفَا اِنْتَفَا اِنْتُنَا اِنْتُنَا اِنْتَفَا اِنْتُنَا اِنْتُنَا اِنْتُنَا اِنْتُنَا اِنْتُنَا اِنْتُنَا الْتَفَا اِنْتُنَا اِنْتُنَا اِنْتُنَا اِنْتُنَا اِنْتُنَا اِنْتُلْنَا اِنْتُنَا اِنَانِ اِنْتُنَا اِنَانِ اِنْتُنَا اِنْتُنَا ا

و لأنيمية المسلمين : مسلمانوں كاموں كون هيں خرخوان يہ ب كد جو فض اسلائ حكومت كى سريرائى كررہا ہوائى كر ساتھ و فادارى كو قائم ركھ، ادكام وقوانين كى ب جاطور پر خلاف ورزى كركے أن كالظم حكومت بين خلل و ايترى بيدا نہ كرے انچى باتوں بين أن كى بيروى كرے اور برى باتوں بين ان كى ايترى بيدا نہ كرے انجى باتوں بين أن كى بيروى كرے اور برى باتوں بين ان كى اطاعت سے اجتناب كرے اگر وہ اسلام اور اپنے عوام كے حقوق كى ادائيكى بين خطات وكوتانى كا شكار ہوں تو ان كومناسب اور جائز طريقوں سے متنب كرے اور ان كے خلاف بعناوت كاملم بلند نہ كرے اگر چدوہ كوئى ظلم بى كيوں نہ كريں!

علماء کرام جومسلمانوں کے علمی و دینی رہنما ہوتے ہیں ان کی عزت واحترام کرے، شرقی احکام اور دینی مسائل جی وہ قرآن دسنت کے مطابق جو کچھے کہیں اس کو قبول کرے اور اس پڑنمل کرے، ان کی اچھی باتوں اور ان کے نیک اعمال کی دیروی کرے۔

ک وَعَامَّتِهِمُ: تَنَامِ سَلَمَانُوں کے فِنْ شِی خِرِخُوائی کا مطلب یہ ہے کہ ان کی ریکے رابع کے الیاب کے ان کی اسلامانوں کے فق شی خِرِخُوائی کا مطلب یہ ہے کہ ان کی ساتھ اچھائی کا معاملہ کریں اس کوخرخوائی کہتے ہیں۔اییا بندہ الله تعالی کو برا اپسند ہوتا ب جو دوسروں کی خرخوائی کرتا ہے۔ چناں چہ نبی غلاف کا الفاق کی نے ارشاد فرمایا الله یُن النصیف کے اسلام خرخوائی ہے۔"

جسے کہتے ہیں کہ فلاں بندے نے دولفظوں میں بات سمجھا دی۔ ای طرح میں غَالِيْجَ لَا اُوْلِا اِلْمُعَالِمَ نِيْ ان دولفظوں میں پورا دین سمجھا دیا۔

مؤمن کا تو کام بی ہے کہ ساری کلوق کی خیرخوابی کرے، ہرایک کوال سے فائدہ چنچے، بجائے کمی کو تکلیف پہنچانے کے ان کے وکھ درد میں کام آئے۔اس کا طرز زندگی ایسا ہو کہ اس کے عزیز رشتہ دار، پڑوی، محلّہ دار، دوست احباب۔سب کو یقین ہو کہ بیا بیا اخلاق انسان ہے کہ جمیں اس سے تکلیف نہیں پینچے سکتی۔

حضرت مولانا احد على لا مورى وَجِهَبُهُ اللّهُ تَعْفَاكُ فرمايا كرتے ہے: الله تعالى كو عبادت بني اكرم ظِلْوَنْ الله تعالى كو عبادت بني اكرم ظِلْوَنْ اللهِ الله عبادت سے اور مخلوق خدا كو خدمت سے رائنى كرو۔ آپ مخلوق خدا كى خدمت كواپنا نصب أحين بناليس - بزرگوں كا قول ہے:

الله تعالى كوائي مخلوق كرماته براييار ب-آباس كا تجرب كرليس كدكى في الله تعلق بالتحول عدد من كركوني جيزينائي، وه جيز پتر الله يول ند بور يكن الله بنافي وقت والكواس بنائي بوع پتر عدت موجاتى به كداس پتر كه بنافي يمل وقت والكواس بنائي بوع منت كى ب، يد ميرى دولت بداى طرح الله تعالى في الي الله عليه وسلم الله عليه وسلم الدين النصيحة ١٢/١٠ ل

نے پیچنے والے ہے کہاتمہارا گھوڑا تو تین سودرہم سے زیادہ قیمت کا ہے کیاتم اس کی قیمت ہو ہا ہے۔
قیمت پانچ سودرہم لینا پیند کرو گئ وہ ای طرح اس کی قیمت سوسودرہم برحاتے گئے اور آخر کا رانہوں نے اس گھوڑے کی قیمت میں آٹھ سودرہم اوا کئے جب لوگوں نے ان سے اس گھوڑے کی قیمت میں آٹھ سودرہم اوا کئے جب لوگوں نے ان ان سے اس گھوڑے کی قیمت برحانے کا سب پوچھا تو انہوں نے فرمایا اصل بات یہ ہے کہ میں نے رسول کریم فیلی کی سبب پوچھا تو انہوں نے فرمایا اصل بات یہ ہے کہ میں نے رسول کریم فیلی کی گئی کہ برمسلمان سے فیرخوائی کروں گا (چنال چہ میں نے دیکھا کذائی گھوڑے کا مالک وہ قیمت طلب نہیں کر رہا ہے جو حقیقت میں ہوئی جا ہے تو میں نے اس کی فیرخوائی کے فیش نظر اس کوزیادہ سے زیادہ قیمت اواکی)۔ ا

دين اور خيرخواي لازم وملزوم

ای لئے ایمان والوں کو جائے کہ ان کی سوچ بمیشہ بثبت ہو، منفی سوچ سے بخیس ۔ دوسروں کی برائیوں کو بھی نظر انداز کر دیا کریں اور اپنی طرف سے ان کے سلمہ مسلمہ باب بیان آن الدین النصیحة، حاشیة النووی ۱/۵۵

بَيْنَ وَلِعِيهِ أَوْمِنْ

25/24/25/25

جب کئی دن گزر گئے اور برتنوں کا ڈھیر لگ گیا تو دومرائظم بیددیا کہ اب سب برتنوں کو ایک ایک کرکے تو ڑو دھنرت نوح غَلِیْللِیْٹلِکِ نے عرض کیا کہ یا اللہ! میں نے بردی محنت سے اور آپ کے تھم پر بنائے تھے اب آپ ان کو تو ڑنے کا تھم دے سے الال

﴿ رَبِّ لَا تَذَرُ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِيْنَ دَيَّارًا ﴾ لله تَذَرُ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِيْنَ دَيَّارًا ﴾ لا تَرْجَعَتُكُ: "اے الله از يُن يُن لين والے سب كافروں كو بلاك كر وے، اوران يُن ہے كوئى باقى ندر ہے۔ "تہمارے اس كمنے پرہم نے اين تخلوق كو بلاك كرويا۔

اشارہ اس بات کی طرف فرمایا کہ جس مٹی ہے تم برتن بنارہ بھے، باوجود سے
کہ وومٹی تمباری بیدا کی ہوئی نہیں تھی اورا پی خواہش ہے وہ برتن نہیں بنارہ سے۔
بل کہ میرے علم سے بنارے تھے پھر بھی تمہیں ان سے محبت ہوگئی تھی تو کیا جمیں
اپنی مخلوق ہے مجبت نہیں ہوگی؟ جب محبت ہے تو پھر تمہیں بھی میری مخلوق کے ساتھ

ا سورة نوح: ١٦

مخلوق کو بنایا اور ان کو بیدا کیا، اس لئے ان کو اپنی مخلوق سے محبت ہے، لہذا اگر ان سے محبت کا دعویٰ ہے تو ان کی مخلوق سے بھی محبت کرنی ہوگ۔

مخلوق سے مدردی خالق سے محبت کی علامت

ا حضرت و اکثر عبدائی صاحب و خِتَبَبُ اللّهُ النّهُ اللّهُ اللهُ ا

للبذابية بجسنا كه بم تو الله تعالى معبت كرتے بيں۔ بيد بندے كيا چيز بيں؟ بيد مخلوق كيا چيز بيں؟ اور پخران تلوق كي طرف حقارت كى نگاہ والناء ان كو برا سجسنا اور ان كو كمتر جائنا، بيداس بات كى علامت ہے كہ آپ كو الله تعالى ہے جو محبت ہو كى، وہ جمو فى محبت ہے، اس لئے كہ جس كو الله تعالى كى ذات سے محبت ہو كى، اس كو الله تعالى كى ذات سے محبت ہو كى، اس كو الله كى قات سے محبت ہو كى، اس كو الله كى قات سے محبت ہو كى، اس كو الله كى قات سے محبت ہو كى، اس كو الله كى قات سے محبت ہو كى،

بسب حضرت اوح غلیفلانیکا کی قوم پرطوفان آچکا، ساری قوم اس طوفان کے بیتے بیں ہلاک ہوگئی تو اس کے بعد اللہ تعالی نے وقی کے ذریعہ حضرت اوح غلیفلانیکا کی کہ مثل کے برتن بناؤ، چنال چہ حضرت اوح غلیفلانیکا کے اللہ تعالیٰ کے حضرت اوح غلیفلانیکا نے اللہ تعالیٰ کے حکم کی تھیل بیں شی کے برتن بنانا شروع کردیے اور دن غلیفلانیکا نے اللہ تعالی کے حکم کی تھیل بیں شی کے برتن بنانا شروع کردیے اور دن

محبت کرنی پڑے گی اگر تنہیں میرے ساتھ محبت ہے۔

حضرت يوسف غَلَيْمُ اليَّيْمُ كُن كَي خيرخوانى

تَرَجَهَدُ: "اور داخل ہوئے قید خانہ ش اس کے ساتھ دو جوان، کہنے لگا ان میں ہے ایک میں دیکھتا ہوں کہ نچوڑتا ہوں شراب اور دوسرے نے ۔ کہا کہ میں دیکھتا ہوں کہ اٹھا رہا ہوں اپنے سر پر روٹی کہ جانور کھاتے ہیں اس میں، بتلا ہم کواس کی تعبیر، ہم ویکھتے ہیں تجھ کونیکی والا۔" اس آیت کے تحت مفتی شفیع رَخِعَبُدُاللّان مَعَالَیْ فرماتے ہیں:

قصد یوسف غلینالی کواول ے آخرتک دیکھے تواس میں سینکاروں عبرت وموعظت (نصیحت) کے مواقع اور انسانی زندگی کے مختلف اووار کے لئے اہم ہدایتیں ہیں، بیدذیلی قصد بھی بہت کی ہدایات اپنے دامن میں لئے ہوئے ہے۔

ہو یں یں بیرہ یوں سے مربان ہویا ہے ہوئے ہے۔ وہ ما یا کی بالکل واضح ہوجانے کے باجود عزیز مصراوراس کی بیوی نے برنای کا جرچاختم کرنے کے لئے بچھ عرصہ کے باجود عزیز مصراوراس کی بیوی نے برنای کا جرچاختم کرنے کے لئے بچھ عرصہ کے لئے بوسف غَلِيْلْ الْمِنْتُلُولا کو جیل میں بھیج دینے کا فیصلہ کر لیا، جو ورهیقت بوسف غَلِیْلْ الْمِنْتُلُولا کو جیل میں بھیج دینے کا فیصلہ کر لیا، جو ورهیقت بوسف غَلِیْلِ الْمِنْتُلِولا کی دعا اور خواہش کی بھیل تھی، کیوں کہ عزیز مصرے گھر میں رہ کرعصمت بیانا ایک بخت اور مشکل معاملہ ہوگیا تھا۔ ت

يسف غَلَيْ إليه جل من ينج توساته دو بحرم قيدى اور يمى داخل موع ،ان

ك اصلاحي خطبات: ۱۲۲/۸ كه يوسف: ۲۹

عه معارف القرآن: ٥/٧٠، يوسف: ٣٦

بس سے ایک بادشاہ کا ساتی اور دوسرا باور چی تھا، علامدابن کثیر رَجِعَیَمُاللّاُلَّعُنَالَٰتَ نَے بحوالہ ائر آفسیر لکھا ہے: بید دونوں اس الزام بیس گرفتار ہوئے تھے کدانہوں نے بادشاہ کو کھانے وغیرہ بیس زہر دینے کی کوشش کی تھی، مقدمد زیر تحقیق تھا، اس لئے ان دونوں کوجیل بیس رکھا گیا۔ ب

یوسف غلیفالی بیل میں وافل ہوئے تو اپنے تیفیراند اخلاق اور رحت و شفقت کے سبب سب قید یول کی دل داری اور خبر گیری کرتے ہے، جو بیار ہوگیا اس کی عیادت اور خدمت کرتے ، جس کی ملین و پریشان پایاس کو سلی دیے ، مبری تلقین اور رہائی کی امید ہے اس کا ول بردھاتے ہے، خود تکلیف اٹھا کر دومروں کو آ رام دیے کی فکر کرتے ، اور رات مجر اللہ تعالیٰ کی عبادت میں مشغول رہتے ہے، اُن کے دیا اللہ تعالیٰ کی عبادت میں مشغول رہتے ہے، اُن کے سب قیدی آپ کی بررگی کے معتقد ہوگے ، جیل کا افسر بھی متاثر ہوا، اس نے کہا کہ اگر میرے اختیار میں ہوتا تو میں آپ کو چھوڑ دیا، اب اتنا می کرسکتا ہوں کہ آپ کو بیال کوئی تکلیف نہ بینچے۔

ید دو قیدی جو بیسف غَلِیْلاَیْدِیکُو کے ساتھ جیل میں گئے تھے ایک روز انہوں نے کہا کہ آپ ہمیں نیک صالح بزرگ معلوم ہوتے ہیں، اس لئے آپ ہے ہم اپنی خواب کی تعبیر دریافت کرنا چاہتے ہیں، حضرت ابن عباس دَفِحَالِفَائِعَالَا ﷺ اور بعض دوسرے ائر آفسیر نے فرمایا کہ بیخواب انہوں نے حقیقۂ دیکھے تھے، حضرت عبدالله بن مسعود رَفِحَالِفَائِقَالِفَیْ نے فرمایا کہ خواب بیکھ نہ تھا، محض بیسف غلبیْلائِقْلِمَا کی بررگ اور چائی کی آزمائش کے لئے خواب بنایا تھا۔ سے

بہر حال اُن میں سے ایک مینی شاہی ساتی نے تو بیہ کہا: میں نے خواب میں دیکھا کہ میں انگور سے شراب تکال رہا ہوں، اور دوسرے یعنی باور چی نے کہا: میں

ك تفسيرابن كثير: ص١٦٨٥ يوسف: ٢٦

ک تفسیراین کلیز: ص۲۸۲، یوسف۲

(يَانَ العِلَمُ العِلَى العِنْ

معے، جب آپ پر کفار کی طرف سے اینٹیں برسائی جارہی تھیں، آپ کو پھر مارے جا رہے تھے، آپ کے پاؤں زخم سے لبولہان تھے، کیکن اس وقت بھی زبان پر بیدالفاظ جاری تھے کہ:

زبان پر میدالفاظ اس کئے جاری ہوئے کہ کفار کے ان اعمال سے تو نفرت اور بخص ہے۔ کینوں اور ذات بحثیت ذات کے میرے اللہ کی خلوق ہے جھے محبت ہے۔ ع

آپ ﷺ اَی اُمت کے کتے خیرخواہ تھے اس کا اندازہ اس آیت مبارکہ سے لگائے۔ اللہ تعالی کا ارشاد ہے:

﴿عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُمُ ﴾ عَ

تَكُورِ مَنْ اللهاري تكليف أن برشاق كزرتي هم-"

آیت کا مطلب سے ہے کہ جو چیز تم کو مشقت میں ڈالنے والی ہے وہ نی این این کا فران کر رتی ہے۔

یعن تنہاری تکلیف سے نبی طابق اللہ اللہ مو خرور تکلیف ہوتی ہے۔ تبہارے درو کو وہ ورد سیجھتے ہیں واضح ہوکہ نبی طابق اللہ اللہ کی سیمفت کفار اور مؤمنین وونوں کے جن میں تھی۔

• ني يُلْقِينَ الله جب كفار كو كفر وشرك مين و يجعة اور خيال فرمايا كرت كديد لوك

ك بخارى: كتاب احاديث الأنبياء: ١/١٩٥٥، رقم: ٢٤٧٧

ع اصلاحی خطبات ۱۲۷/۸ ع التوبد ۱۲۸

(بين العيل أورث

نے دیکھا کدمیرے سر پرروٹیوں کا کوئی ٹوکرا ہے، اس میں سے جانور نوج ٹوج کر کھارہے ہیں، اور درخواست کی کہ جمیس ان دونوں خوابوں کی تعبیر بتلایئے۔

علامدائن کشر رَخِعَبُاللَّهُ تَعَالَیْ نے فرمایا: اگرچدان دونوں کے خواب الگ الگ شخاور ہرایک کی تعییر تعین تھا کہ شاہی ساتی بری ہوکرا پی الگ شخاور ہرایک کی تعییر تعین تھی ،اور بید بھی تنعین تھا کہ شاہی ساتی ہوگا ،اور باور پی کومولی دی جائے گی ، تاکہ وہ ابھی سے فم شن نہ تھا نہ کہ ایک دوہ ابھی سے فم شن نہ تھا ، بل کہ اجمالی طور پر یوں فرمایا کہتم میں سے آیک دہا ہوجائے گا ،اور دومرے کو سولی دی جائے گی ۔۔

آخر میں حضرت بیسف غلیالی کی فید المؤیری الا مُو الله می الا مُو الدی وید و می منظم الدی وید و می منظم الکی اور تخیید سے نہیں میں کے تعمیل انگل اور تخیید سے نہیں میں کہ بید خدائی فیصلہ ہے جو ال نہیں سکتا، جن حضرات مضرین نے ان لوگوں کے خوابوں کو فاط اور بناوٹی کہا ہے انہوں نے بید بھی فرمایا ہے کہ جب بیسف غلی الیہ الیہ المنظم نے خوابوں کی تعمیر بتلائی تو بید دونوں بول الحص کہ ہم نے تو کوئی خواب و یکھا نہیں محض بات بنائی تھی، اس پر حضرت بیسف غلی الیہ المنظم کے کہ ہم نے تو کوئی خواب و یکھا نہیں محض بات بنائی تھی، اس پر حضرت بیسف غلی النظم کی المنظم الله فرمایا ﴿ فَضِی الاَحْمُ الله الله فَضِی الاَحْمُ الله الله الله فرمایا ﴿ فَضِی الاَحْمُ الله الله فَضِی الاَحْمُ الله الله فرمایا ﴿ فَضِی الله مُو الله الله الله فرمایا الله فرمایا ﴿ فرمایا الله فرمایا الله فرمایا الله فرمایا ہوار تکاب می بولی الله کی مزا ہی ہے ، مقصد بیا ہو توجیر خواب بنائے کے گناہ کا جوار تکاب تم نے کیا تھا اب اس کی مزا ہی ہے جوتی بیر خواب میں بیان ہوئی۔

نبی اکرم طِلِقَافِی عَلِیْنِی کی اپنی اُمت کے ساتھ خیرخواہی وشفقت

حضور الدس أي كريم في التي التي الموتمام ونياك لئ رحمة للعالمين مناكر يجيع

ا يوسف: ١١

عه تفسير ابن كثير: ص ١٨٦ ، يوسف: ١١

(بیک دلیسل ایت

س انجام بد كاشكار مونے والے بيں۔ يدلوك كيوں كرائ باتھوں اسے لئے بلاکت کا کوال کوورے ہیں، تب حضور فیلن الجینا کے ول پر نہایت صدمه گزرتا

بسا اوقات يد كيفيت اس قدر برده جاتى كدالله تعالى حضور طَلْقَيْنَ كَاتِيلِنَا كَيْسَلِي و سكون كے لئے اپنا كلام و پيغام مجيجے۔

مورة كيس من إلى الله يَخْزُنْكَ فَوْلُهُمْ الله الله الول ع آب اينا יש אובלעט-

مورة آل عمران من ب ﴿ وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ ﴾ كفريس برده برده كرحصه لين والول كى حالت س آپ مملين نه جول ـ

واقعات بدر میں فدكور ب كد جب كفار مكه قيد كر لئے محكة تو رات كو جي اكرم المنطقيل كوفيدندآني، إدهر ادهر حضور فيلفيل كرويس لية مح كرب و اضطراب نمایال تما، ایک انصاری نے عرض کیا: حضور طابق علی کو کچھ تکاف ب، فرمایا جمیس، مرعباس کے کراہنے کی آواز میرے کان میں آرہی ہے، اس کئے مجھے

انساری چیکے سے اُٹھا، اس نے جا کرعباس کی مشک بندی کھول دی، البیس آرام ل گیا، تو وہ فورا سو گئے۔ انصاری مجرحاضر خدمت ہوگیا، حضور ﷺ نے یو چھا: اب عباس کی آواز کیوں نہیں آئی۔ انصاری بولا: میں نے ان کے بندھن کھول دیتے ہیں، فرمایا: جاؤسب قیدیوں کے ساتھ ایسا بی برتاؤ کرو۔ جب حضور المنظمة المائدي كرام المنظمة المائدي كرام المنظمة المناسبة المائدي المنظمة الم كالفطراب دور بوااور حضور خواب شيري سے استراحت كزيں بوئے۔

ذرا سوچنا ہے، قیدی وہ تھے جنہوں نے ١٣ سال تك متوار الل ايمان كوستايا

له السي ال عمران: ١٧٦ ك ال عمران: ١٧٦

تھا، کسی کوآگ پرلٹایا کسی کوخون میں شہلایا، کسی کو بھاری پھروں کے بنچے د بایا، کسی کو سخت اذ جنوں کے بعد خاک وخون میں سلایا تھا اور پھر اُن پر بیزی، بیسلوک!۔

عبان حضور ﷺ کے چا تھے، اور جہاں تک معتر روایات سے معلوم موا ہ، وہ بادل ناخوات صرف قوم کے اگراہ واجبار (مجبور کرنے سے) سے بدر میں آئے تھے اس وجہ سے حضور کے عدل و انصاف نے ان میں اور دوسرے قید یول يس كونى التيازي فرق قائم كرنا يبندنه فرمايا-

ليكن حضور فطيق في المحمد ولى اورطبعي شفقت ورأفت كابيه عالم تفاكه جب تك سب قيديوں كے با آرام مونے كى ريورث ندكى اس وقت تك حضور ميك الله

كونيندتك ندآني-﴿ عَزِيْدٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُمْ ﴾ كابيجلوه اليحمله آوران ووشمنان جاني وايماني ے مقابلہ میں تھا۔

 جب نی نیسی جرت فرما کررونی افروز یدید جو یجی توالله تعالی نے اپنے فرمان ﴿ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَدِّنَهُ مْ وَأَنْتَ فِيهِمْ كَامْفِهِم ظَابِر فرمايا اور اللِّ مكه برقط شديدى آفت كوأتارا قط اس شدت كالقاكه اللي مكه كى آتكهول كى روشنى

ابوسفیان اموی جمیشه مسلمانول سے برسر پرخاش (الرائی برآماده) ربا کرتا تھا۔ وہ خود دربار مصطفوی میں ماخر ہوا اور نہایت ادب سے عرض کیا: حضور المنافظ الميداحان اور صلدرم ك تعليم دياكرت بين- بم حضور فيلق اللها ك قرائق (رشته دار) بن اور رحم ع بجى (درخوات)_احسان فرماع اور دعا عجيد كد ال قطشديد يمن تجات الح-

نى كريم والمانى عن المال مردار تجدكون جودولت ايمانى عالامال

ك التوبد ١٢٨ ك الانفال: ٢٣

ين رايد المرايد

المنازين الكانت المنظمة ہو چکا تھا" تھم بھیج دیا کہ مکہ میں فورا فلہ پہنچانے کا بندوبست کرے اس کے علاقہ میں اناج بکٹرت تھا، اُس نے غلہ صرف ای لئے روک رکھا تھا اور منفعت تجارت کو بھی نظر انداز کر دیا تھا کہ اہل مکہ دشمنان رسول ہیں، اب حکم نبوی کی حمیل ہوئی اور الل مكدكي جان شر جان آني-

يد جى وشمنول كے مقابلہ مل ﴿عَزِيْدٌ عَلَيْهِ مَا عَنِيتُمْ ﴾ كا أيك جوت تا 🤂 جنگ طائف ان حملہ آوروں کے ساتھ ہوئی جن سے حنین واوطاس میں شدید محارب (مقابله) ہوا تھا، بداوگ ان مقامات سے فلست کھا کر طاکف کے قلعہ میں جمع ہو گئے تھے اور انجمی ان کی فوتی طاقت زوروں پر تھی۔ نبی کریم ﷺ ان کی فوتی طاقت کی ا كا عاصره كر ليا_ چندروز ك بعد حضور فيك عليها كومعلوم بواكد دعمن محاصره كي شدت سے سخت الکیف میں ہے، جوک نے اُن کی ہلاکت کو بہت قریب کر دیا ب- حضور طَلِقَ عَلِينًا فَ عاصره الحادية كاحكم در ديا- چدمهاب وَفَعَلْقَالِتَعَالَ عَنْهُمْ نے جنگی اصول کو مدفظر رکھتے ہوئے عرض بھی کیا کداب تو قلعد فتح بی ہونے والا ب- سر حضور ﷺ علی علی ازراه کرم جو علم دیا تھا، اُس کی میل کرائی علم مید واقعہ ﴿عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُمْ ﴾ في كاتيرانمون ٢-

ان نظائرے واضح موجاتا ہے۔ ایسے نظائر اور مجی بہت ہیں کہ قلب رجم اور طبع كريم يرابل محارب كى حالت زيون اورانجام بدكا كيا اثر مواكرتا تقا_ الل اسلام کے متعلق حضور فیلی فیلی کی رحمت و شفقت کا بیان ب پایال

عبادات ومعاملات میں الی مثالیں بمثرت ملتی ہیں کے اُمت کو دشواری سے بیانے کے لئے یا اُمت کی آسانی کے لئے حضور کیا پھے توجہ فرمایا کرتے تھے،

> ك التوبة: ١٢٨ ت مسلم، باب غزوة طائف: ١٠١/٢

ت التوبة: ١٢٨

اینی اُمت کی تکلیف اور اُمت کی راحت کواین راحت قرار دے رکھا تھا۔ مح بخارى من حفرت ابن عباس اور الدجب انسارى وفي القائقات = روایت ب: شب معراج کو بچاس نمازی فرض کی تی تھیں۔سیدنا موی غلید الفظاف ن بى كريم عَلَيْنَ عَلَيْ اللهِ عَلَيْنَ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ ا عبادت کی طاقت نہیں) تب حضور شاہ اللہ اللہ فرمایا تخفیف مولی موی غلیال کی نے پر بھی حضور الفاقی کوون کہا جو پہلے کہا تھا اور نبی کریم والمان المرادوع الى الله فرمات رب- جس كا متيد يه واكد يا في عمازين ده

ال واقعد او نتیج صاف طور پر برآ مد بوت إلى: اقال: ني كريم واليفاعين فرمان رمن ك كتف مطيع تنه كدجب بياس تمازول كالحكم موا تو حضور نے اس بارہ یش ذرا بھی اب کشائی نمیں فرمائی۔

كَوْم: حضور عَلَيْنَ عَلَيْها إنى احت يركس قدر مهربان عقد كد جب موى كليم الله ي تجربه كارتبى في "إِنَّ أُمَّتَكَ لا تُطِينُ "كووُم إلا لو فوراً اس ياك فطرت كاظهور عوا جو ﴿عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُمْ ﴾ من بنال مى اورحضور كَالْفَاعِينَا في باربار جوع الى الله قرماما_

اس حسن ادب اور التماس والتجا كاشروبيه اكد تعداد تو بياس عيا على روالى اور ثواب وتى پياس كاركها كيا-

ميرا خيال إلى الرسيدنا مولى عَلِينا المِيْعِينَ "إنَّ أَمَّتَكَ لَا تُطِيقُ" ك جمله كا استعال ندقرمات اور مضور في في في كوكس اور دليل التماس تخفيف ير ماك كرنا عاسية تووه اين اراره بين كامياب ند وسكته- -

نی آگرم میلی المنظام کے کمال عبودیت اور شوق عبادت کے سامنے تو بھاس

ك بخارى، كتاب الصلواة، بأب كيف فرضت الصلواة في الاسواء: ١٠/١٠

(بين والعيل أويت)

حضرت الس وَ وَ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى ال

امّ المؤمن حفرت عائش مدیقد و فالشقالها نے نبی اکرم علی اللہ علی کے اللہ میں اللہ میں اللہ میں اللہ میں اللہ میں دوایت فر مایا ہے:

"إِنْ كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيَدَعُ الْعَمَلَ وَسَلَّمَ لَيَدَعُ الْعَمَلَ وَهُوَ يُحِبُّ اَنْ يَعْمَلَ بِهِ النَّاسُ فَيَفْرُضُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ النَّاسُ فَيَفْرُضُ عَلَيْهِ النَّاسُ فَيَفْرُضُ عَلَيْهِ مِنْ النَّاسُ فَيَفْرُضُ عَلَيْهِ النَّاسُ فَيَفْرُضُ عَلَيْهِ مَنْ اللهِ النَّاسُ فَيَفْرُضُ عَلَيْهِ مَنْ اللهِ النَّاسُ فَيَفْرُضُ عَلَيْهِ مَنْ اللهِ النَّاسُ فَيَفْرُضُ عَلَيْهِ مِنْ اللهِ النَّاسُ فَيَفْرُضُ اللهِ عَلَيْهِ مِنْ اللهِ النَّاسُ فَيَفْرُضُ عَلَيْهِ وَاللّهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ

تَرْجَمُنَدُ: " نَيْ كُرِيم عَلَيْقَ اللهِ السِيمُل كُوبِهِي جِهورُ ويت جس كا كُرنا حضور الفَقِينَةِ إلى كو يسند بهوتا، اس خيال سے كدلوگ بھى عمل كرتے لكيس كوركبيں ووعمل فرض ندهمرايا جائے۔"

ك مسلم، باب أمو الأثمة بتخفيف الصلوة: ١٨٨/١

ت بخارى، باب تحريض النبيّ على قيام الليل والنوافل من غير ايجاب: ١٥٢/١

ك التوبة: ١٢٨

نمازوں کی کثرت بھی کوئی اہمیت ندر کھتی تھی۔ آپ کا قلب شاکر اور وہ اسان ذاکر جو یاد الٰہی ہے ایک دم کے لئے غافل نہ ہوتے ہوں، ان کے لئے محدود وقت میں معدود رکعتوں کا اداکر لیمنا کیا دشوار ہوسکتا ہے۔

یر جمد تو سیح بخاری کی روایت عن این عباس دی النظامی کا ہے، کین ویگر روایات میں صراحت ہے کہ بی بی النظامی اللہ اور روزہ افطار فرمایا اور روزہ نہ رکھا کہ اہل الشکر کوسٹر میں روزہ کی شدت تکلیف دہ تھی اور است کی تکلیف سے حضور بیلنظامی خود تکلیف محسوس فرماتے تھے ہے۔

تَوْجَمَعَنَدُ "اس نماز کے لئے تمہارا آنا، انظار کرنا وغیرہ میں نے دیکھا، مجھے آنے میں صرف بید خیال مانع ہوا کہ کہیں بید نمازتم پر فرض ند کر دی جائے۔" جائے۔"

که نسائی، باب قیام شهر ومضان: ۱۳۸/۱

(المنافريسل المنافرين

طه بخارى، باب من أفطر في السفو ليراه الناس: ٢٦١/١

عه مسلم، باب جواز الصوم والفطر في شير رمضان: ٢٥٦/١

经过的企

حکومت کی آرزو ہے۔ میں تو رب الحالمین کا پیغام لے کرآیا ہول اور اُک کا ہرایک سننے والے کان تک پہنچا دینا میرامقصود اعلیٰ ہے۔ ا

ایک بارابوجهل تعین نے حضور ظیف فیک کومنروب کیا۔ حمز وعم رسول فیف فیک ایک بارابوجهل تعین نے حضور ظیف فیک کا کر جلایا۔ محمر تم کو کے بیدواقعہ سنا تو انہوں نے ابوجہل کو جا بیٹا اور پھر نبی فیلف فیک کو آگر بتلایا۔ محمر تم کو خوش ہونا جا ہے کہ میں نے ابوجہل سے تمہارا انتقام لے لیا۔

نی ﷺ فی المان موجاد تو بھے بری خوش ہوگی۔ مسلمان موجاد تو بھے بری خوش ہوگی۔

سیدنا محز و وَفَوَالِقَائِقَالِفَ کے دل میں بیہ بات جم گئی اور و و مسلمان ہو گئے۔ عبد ان واقعات ہے فلا بر ہے کہ نبی ظِلِقَائِقِیْ کا واص اغراض کے گرد و خبار سے بلند تر تھا۔ صفور ظِلِقَائِقِیْ کی تعلیم اور تعلم کے لئے بے حد سر گری کمی ذاتی مفاد پر منی رہتی ، انتقام اور و مگر رزائل ہے حضور ظِلِقَائِقِیْ کے اخلاق عالیہ پاک و صاف شے بعنی حضور ظِلِقَائِقِیْ کی اخلاق عالیہ پاک و صاف شے بعنی حضور ظِلِقَائِقِیْ کی آروز اپنیش کے لئے بچھ بھی نہتی ۔ حضور ظِلِقَائِقِیْنِ کی ایس کے لئے بچھ بھی نہتی ۔ حضور ظِلِقَائِقِیْنِ کی کا وجود صفعت عامداور مجود عامد کے صفات کے مشکل وجم تھا۔ صلی اللہ تعالی علیہ وآلہ وہلم۔

ے سن وہ مان کی ان اوعیہ پر نظر ڈالوجو وقاً فو قاً حضور خلی ان اوعیہ پر نظر ڈالوجو وقاً فو قاً حضور خلی ان اوعیہ کے اُست کے حق میں فرمایا:

''دسلمانو! اللہ تمہیں سلامتی ہے رکھے تمہاری حفاظت فرمائے جمہیں شرے ہوئے تمہاری حفاظت فرمائے جمہیں شرے ہوئے تمہاری دوکرے تمہاری مداکرے مہاری اور توفیق دے اپنی بناہ میں رکھے،

تا فتوں ہے بیائے تمہارے دین کرتہارے لئے محفوظ بنائے۔''

ذراان الفاظ برغور كرو، ايك ك بعد دومرى دُعا اور دومرى ك بعد تيسرى كويا

له الروض الأنف: ٢٧/٢، باب بين النبي صلّى الله عليه وسلم وبين قريش ك الروض الأنف: ٢٤٤/١ اسلام حمزة رضي الله تعالى عنه آیت بالاے بوضوح ثابت ب که نبی فیلی کی کو می نوع کے مفاد اور رفاہ وصلاح کی آرز و بدرجید کمال تھی۔

سورة الوسف ميل ب:

﴿ وَمَاۤ ٱکۡتُوُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُوْمِنِيْنَ ﴾ لله تَكُوجَهَكَ: "بهت لوگ ين جوايمان نه لاَي كَ ٱكرچه تھ كوان سے

ايمان لے آنے كى بؤى چاہت ہے۔"

اس آیت سے بھی بھی استفادہ ہوا کہ حضور طِلْقَلْ الله کامنجائے نظر اور کمال آرزو بھی تھا کہ تمام عالم کے سرایک ہی مالک وَ حُدّدُهُ لَا شَوِیْكَ لَهُ كَ سائے جھے ہوئے ہوں۔

رب واحد کا دین واحد بن تمام اصناف انسانی کو متحد و متفق بنانے والا ہو۔ قریش کے مردار منتبہ نے ایک بار نمی میلی فیکی کی سے مل کر ریم عرض کیا تھا۔

((لان) كياتم مال ودولت جائة موا

ميراذمه بكرمب سے زياده زرومال تيرے پاس جمع كرؤوں گا۔

(ب) كيائم رياست ك فوالال مو؟

ممب تحج ابناريمن تتليم كريسة جي-

(ج) كياتم تخت قائم كرنا جائي جو؟

میں سمارے عرب سے تیری فرمال روائی کی تصدیق کرا دُول گا۔ نبی میں ایک انگر ایا ، مجھے ند زر و دولت کی ضرورت ہے اور ند ریاست و

> الله الوصف ۱۰۲ - (يكنى (الإسكرانات)

حضرت عبدالله ابن معود وَفَقَالَ بَعَالِقَ عروى ب: "إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَتَخَوَّلُنَا بِالْمَوْعِظَةِ فِي الْأَيَّامِ، مُخَافَةَ السَّامَةِ عَلَيْنَا." * تَرْجَمَدُ "نِي رَمِ السَّالِينَا مِ أَو كَاه بِكَاه وهذ عالم كرتم في ال انديشے كروزاندوعظاكا سناہم بركران ندكردے۔"

ني يَكُونُ اللَّهُ كَا يه اصول ازراه شفقت ورافت تحاكد سأمعين جس قدر بحي سنين نشاط مع اور حضور قلب سے سنیں اور آئندہ کے لئے شوق تمام باقی رہے:

عادت مبارکہ تھی کہ جب بحالت نماز کی بچدے رونے کی آ وازس یاتے تو نماز بلکی فرما دیتے کہ ماں بچہ کوجلد سنجال سکے۔

عادت مباركتھى كەسوار موكركسى كو پاييادة مركاب چلنے كى اجازت ندفرمات تھے۔اگرچہ بہت سے فدائی اس خدمت کے تمنائی رہے ، یا تواسے سوار کرا لیتے تھے يا واليل لونا دية تقد

عادت مباركتهي كدجب كوئي مسلمان مقروض موجاتا تواس كاقرض بيت المال ہے قبل از تدفین ادا فرما دیتے تھے۔ گرخود کسی مردہ کا مال قبول ندفر مایا کرتے تھے۔ فرمایا کرتے تھے کی کی فیب میرے سامنے مت کرو۔ میں فیس جابتا کہ کسی کی طرف سے میری صاف ولی میں فرق آئے۔ بار ہا ایسا ہوا کد ساری ساری رات أمت ك في يس دعا كرت موس كزرجاتى تحى - چوف بحول كو بياركرت ان كو خودسلام کیا کرتے، ان کے سر پردست شفقت رکھتے ، کلی میں کھیلتے ہوئے ، کول کو انی سواری برآ مے چھے سوار کر لیتے ، غلامول کے ساتھ زمین پر بیٹھ کر کھانا کھانے میں شامل ہوجاتے۔

وعا ويركت وية تفكت بن بين بدياى صفت حويص عُلَيْكُمْ كا ظهور ب-اور يخصوصيت ذات جايوني على كى ب-

> م يَا رَبِّ صَلَّ وَسَلِّمْ دَانِمًا أَبَدًا عَلَى نَبِيْكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمْ ﴿بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُ وْكَ رَّحِيْمٌ ﴾ ك

تَرْجَهَا "وه مومول سے بہت پیار کرنے والا اور اُن پر بیشہ رقم كرتے والا ب

آیت بالا یمل نی فی الفیل کورے وف اور رحید کا اساء سے یادفر مایا کیا ب- رء وفرافت عمالفكاميدب

رُحِيْعُ رقم ع عفت مشتركا صيف ب-

لبذارء وف ع معنى كالل العطوف بين اور رَحِينُ مر كم معنى دائم الرحت بين-سورہ کے اورسورہ بقرہ میں ہے۔

﴿ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَّءُ وْفَ رَّحِيْمٌ ﴾ ك

تَكْرِيجَهُمْ: "الله تعالى انسانون يررؤف ورجيم ب"

نی فیلی این کان میں بیام نہایت شرف وعزت اور غایت محریم وحرمت کا موجب ب كد حضور فيلق عليها كى صفت من وه دونام بحالت تركيبي تجويز فرمائ گئے جوای ترکیب کے ساتھ خود ذات یاک سحانی کے لئے مستعمل ہوئے ہیں۔

بال الله تعالى كى رافت ورصت كوعوام الناس يرعام فرمايا كيا باورحضور كى رافت ورحت كو بالخضوص موشين كے ساتھ خاص كيا كيا ہے انبم معانى بين اس عموم و خصوص کا امتیاز یادر کھتے ہوئے موشین کے لئے شکر وابتباح کا مقام ہے کدان کو المضاعف (دوہری) رحمت وعطوفت كا مورد ومصداق بنايا كيا ہے۔

ل التوبة ١٢٨ ت بفره: ١٤٣

له مسلم، صفات المنافقين، وقعر: ٢٨٢١

ع بخارى، باب من أخف الصلاة عند بكاء الصبي: ١٨/١

رہا ہے۔ حضرت عمر رض الفائقة التفاف الى كو د كي كر كھڑے ہو گئے اور إو جھنے لگے " مَنْ اَذِّتَ" اَوْ كُون ہے؟ جواب ملاء ميں ابو يكر جول-

حضرت عمر وَحَوَالِقَارِ اَعَنَا اِعْنَا حَرِان موكر يو چينے گے، اے امير الموشين إرات كى اركى اور تنهائى ميں كيا آپ اس بر حيا كى خدمت كرنے جا رہ بيں اور يُحر يو چيا كد آپ كى بيان ميں تو جوتے بھى نہيں، اس طرح نظے پاؤں كيوں چل رہ بيں؟ حضرت ابو بكر وَحَوَالْقَارِ اَعْنَا الْفَظَانِ فَنَا الْفَظَانِ اَتَعَالَ الْفَظَانِ اَتَعَالَ الْفَظَانِ اَلْفَظَانِ اَتَعَالَ الْفَظَانِ اَتَعَالَ الْفَظَانِ اَتَعَالَ الْفَظَانِ الْفَظَانِ الْفَظَانِ الْفَظَانِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللْمُوالِيَّةُ اللْهُولِي اللْهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللْهُ اللَّهُ الْمُعْلَى اللَّهُ الْمُعْلَى اللْمُعْلِمُ اللَّهُ اللْمُعَلِيْمِ اللْمُعْلِمُ اللَّهُ الْمُعْلَمُ الْ

جمیں بھی جاہے کہ ہم بھی جو کام کریں خالص اللہ کی رضا کے لئے کریں۔ پھر ویجنا کہ اللہ تعالی ہم پر کس طرح میریانی فرمائیں گے۔

ای طرح آپ رفت گالی این المرح آپ رفت گالی النظاری کریوں کا دودہ کھی دوھ کردیا کرتے تھے۔ جب یہ خلیفہ ہے تو محلّہ کی ایک لڑی نے کہا (اب تو حضرت ابوبکر رفت گالی نظار کی ایک لڑی نے کہا (اب تو حضرت ابوبکر رفت گالی نظار کی ایک لڑی نے کہا (اب تو حضرت ابوبکر رفت گالی نظار کی بحریوں کا دودھ اب تو کوئی دودھ کرنہیں دے گا۔ حضرت ابوبکر رفت گالی نظار نظار کے لیے دودھ ضرور دوبا کردل گا اور جھے امید ہے کہ خلافت کی قدمہ داری جو بیں نے اشحائی ہے یہ جھے ان اخلاق کر بھانہ ہے نہیں ہٹائے گی جو بہتے ہے جھے بین ہیں۔ چنال چہ خلافت کے بعد بھی محلّہ دالوں کا دودھ دوبا کرتے اور بعض دفعہ از راہ بغداق محل کی لڑی ہے کہ خلافت کے بعد بھی محلّہ دالوں کا دودھ دوبا کرتے اور بعض دفعہ از راہ بغداق محل کی لڑی ہے کہ جاگ والا اور بھی کہتی بغیر جماگ کے اور بھی کہتی بغیر جماگ کے اور بھی کہتی بغیر جماگ کے بہر حال جسے دو کہتی و بھی کرتے ہے۔

ك سيرالصحابه: ١٩١/١

ان سب امور کا ظہور از راہ شفقت و رافت ہوا کرتا تھا اور اس بلند ترین رافت و رحمت کا ظہور حضور پُر نور کے خصائص میں ہے تھا۔ ^ک

خاموش خدمت

صدیق اکبر فرخوالفہ تغالی نے اپن دور خلافت میں غریبوں، ناداروں، اور عواق کی خدمت کرنے کے لئے آدمیوں کو مقرر کیا ہوا تھا۔ ایک دفعہ حضرت عمر درخوالفہ تغالی نے دہ فرست دیکھی تو ایک بردھیا کے نام کے سامنے اس کی خدمت کرنے کے لئے کسی کا نام نیس لکھا ہوا تھا۔ حضرت عمر درخوالفہ اتغالی نے ایک کا نام نیس لکھا ہوا تھا۔ حضرت عمر درخوالفہ اتغالی تعلق سمجھے کے شاید سیکام کسی نے ذمہ نیس لیا۔ انہوں نے دل میں سوچا کہ ان کا کام میں کر دوں گا۔ بیکام کسی نے ذمہ نیس کورت کے گھر کے تو دیکھا کہ جھاڑ و بھی دیا جنال چہا کہ دن فجر کی نماز پڑھ کر اس خورت کے گھر کے تو دیکھا کہ جھاڑ و بھی دیا ہوا ہوا ہے۔ بو جھا، اماں! میہ خدمت کون کر گیا ہے؟ کہنے لگی کہ موا ہوا ہوا ہے اور جھاڑ و بھی دے جاتا ہے، جھے آج تک کہنے اس کے نام کا پید نہیں ہے، نہیں نے بو جھا اور نہا ور بھی دے جاتا ہے، جھے آج تک

انہوں نے سوچا کہ اچھا میں اگلی دفعہ فیرے پہلے جاؤں گا، جب فیرے پہلے کے تو دیکھا کہ سب کام ہوا پڑا ہے، پیرانہوں نے سوچا کہ میں اب تبجد پڑھتے ہی آ جاؤں گا، چنال چہ تبجد کے وقت آئے تو دیکھا کہ جھاڑ و بھی دیا ہوا ہے اور پانی بھی جمرا ہوا ہے۔ دو بھی آخر عمرا بن الخطاب دَھِی الْفَائِمَةُ الْفَائِمَةُ عَنَالَ عَنَا مَنَا مَنَا الْفَائِمِ مَنَا الْفَائِمِ وَهُوَالْفَائِمَةُ الْفَائِمَةُ عَنَا الْفَائِمِ وَهُوالْفَائِمَةُ الْفَائِمِ وَهُوالْفَائِمَةُ الْفَائِمِ وَمُوالْفَائِمَ وَمُنَا لَا مِنْ اللّٰ اللّٰ مِنْ اللّٰ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ مِنْ اللّٰ مِنْ مِنْ اللّٰ مِنْ مِنْ اللّٰ مِنْ مُنْ اللّٰ مِنْ مُنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ مُنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ مُنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ مُنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ مُنْ اللّٰ مِنْ مُنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ مُنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مُنْ الْ

جب آ دھی رات کا وقت ہوا اور اعد جرا گہرا ہو گیا تو دیکھا کہ ایک آدمی جس کے پاؤل میں جوتے نہیں تھے، ننگ پاؤل آ ہت آ ہت چانا ہوااس برھیا کے گھر جا

ك رحمة للعالمين: ٢/٨٧ تا ١٨

(بين دايد المرزيات

ع كنزالعمال، كتاب الخلافة، قسم الافعال: ٥/١٤٤٠ رفم الحديث: ١٤٠٧٣ كنزالعمال، كتاب الخلافة، قسم الافعال: ٥/١٤٤٠ رفم الحديث: ١٤٠٧٣

حضرت ابوبكر صدائي وتفالق تقالظ فرمايا كرتے تے "جس طرح مال كى ذكارة ادا کرتا ضروری ہای طرح جسم کی زکوۃ ویتا بھی ضروری ہاورجسم کی زکوۃ بدہ كدوومرول كى خدمت كرے اور ال كيم كواپناهم بنا لے-"

حضرت عمر رضي الله بقع العينة كاواقعه

حضرت عمر وَفَوْلِفَالْ تَعَالَيْكُ كُ مُلام حضرت اللَّم وَفُولِفَالْتَعَالَظَ كُتِ إِن اللَّهِ آیک مرتبه حضرت عمر رَضِحُطْفَابْقَغَالْتَیْفُ کے ساتھ حرہ کی طرف جاریا تھا۔ ایک جگہ آگ جلتی مولی جنگل میں نظر آئی۔ حضرت عمر وَخَوَاللَّهُ النظاف نے فرمایا کہ شاید یہ کوئی قاقلہ ہے جورات ہوجانے کی وجہ سے شہر میں نہیں گیا، باہر ای ضمر گیا، چلواس کی خبر لیں۔رات کو حفاظت کا انتظام کریں۔

وہاں کینج تو دیکھا ایک عورت ہے جس کے ساتھ چند بچے ہیں جورورہے ہیں اور چلا رے بیں اور ایک دیگی چو لے پر رفی ہے جس میں پائی تجرا ہوا ہوا اور اس ا کے یتجے آگ جل رہی ہے۔ انہوں نے سلام کیا اور قریب آنے کی اجازت لے کر اس كے ياس كے اور يوچھا كريد يے كيول رورے ييں وعورت نے كہا كر جوك کی وجہ سے رورہے ہیں۔ دریافت فرمایا کداس دیکئی میں کیا ہے۔ عورت نے

یانی بجر کر بہلانے کے واسطے آگ پر رکھ دی ہے کہ ڈراان کو آسلی ہو جائے اور

امرالموسين عر وفقالفائتغالف كاورمرا الله الى كيال فصله موكا كدميرى ال تنكى كى خرنيس ليت حضرت عمر وتفكالة تفالغة روف لك اور فرمايا: الله تجدير رحم كرے بھلا عمر وَفَقَالِيَالِقَفَالْفَقَةُ كو تيرے حال كى كيا خبر ہے۔ كمنے كلى كدوہ بمارے امير جي اور مارے حال كى خرجى نيى ركتے۔ اسلم وَفَالْفَالِقَالِقَا كَتِ جِي ك

المال ے پچھ آٹا اور مجوری اور چرنی اور پکے کیڑے اور پکھ درہم لئے، غرض اس بوری کو بجرایا اور فرمایا کہ بد میری کر پر رکھ وے۔ بیس نے عرض کیا کہ بیل کے چاوں۔ آپ والفاقال نے فرمایا کا تھی میری کر پر رکھ دے۔ وو عن مرتبہ جب میں نے اصرار کیا تو فربایا کیا قیامت میں بھی میرے بوجے کوتو بی اضائے گا اس کویس بی افخاوں گا اس لئے کہ قیامت میں جھے بی سے اس کا سوال ہوگا۔

عی نے مجور ہوکر ہوں کو آپ فیلل بھالے کی کر پر رکھ دیا۔ آپ وَخُوالْفُالْتُقَالِقَا الْمُعَالِينَ تَيْزِي كَمَاتِحال كَ إِلَ تَشْرِيف لِ كُنَّ اللَّهِ مِن مِي ماتِح تحا، وبال پہنچ کر اس ویٹی میں آٹا اور کچھ چرنی اور تعجوریں ڈالیں اور اس کو جلانا شروع کیا اور چو لیے میں خود ہی چونک مارنے لگے۔

اسلم وَفَعَالِقَالِقَالِقَالَ كُتِ مِن كَراّب كَي تُعَجان وارْهي ع وحوال لكامّا جوامي و کیتا رہاجی کے حریرہ ساتیار ہوگیا۔ اس کے بعد آپ نے اپنے وست مبارک سے نكال كر ان كو كحلايا۔ وہ سير ہوكر خوب بلسي كھيل ميں مشغول ہو سي اور جو بيجا تھا وہ دوسرے وقت کے واسطے ان کے جوالے کر دیا۔ دہ مورت بہت خوش ہوئی اور کہنے گی الله تعالى مهيل جزائ فجروب-تم تحاس كمستن كد حفرت عمر وفع الله تعالى الله تعال کی جگہ تم ای خلیفہ بنائے جاتے۔ حصرت عمر وفع الفائق فے اس کوسلی دی اور فرمایا کہ جبتم خلیف کے پاس جاؤگ تو مجھ کو بھی وہیں یاؤگا۔

حرت عر والفائقة القال كقريب عى درابك كرزين يريي كادر تحوزی در بیضنے کے بعد علے آئے اور فرمایا: میں اس لئے بیشا تھا کہ میں نے ان کو روتے ہوئے ویکھا تھا۔میرا دل جاہا کہ تھوڑی دیران کو ہنتے ہوئے بھی دیکھوں۔

اله سيرالصحابه:١٧١/١

عه أسدالغابة في معوفة الصحابة: ١٥٥٥، فضائل عمر ابن الخطاب رضي الله عنه (يَيْنَ (لِيلِ أَنْيِثَ)

صبح کی تمازیش اکثر سورة كہف، طله وغيره بزي سورتين براہتے اور روتے كد كئي كئي صفول تک آواز جاتی۔ ایک مرتبہ کم کی نماز میں سور ہ پوسف پڑھ رہے تھے۔ ال اِنتَمَا أَشْكُواْ مَلِينَى وَحُوْنِنَى إِلَى اللَّهِ ﴾ يريخية وروت روت آواز نه تقي تجدي نماز يس بعض مرتبدوت روت كرجات اور يمار وجات

يد إلله تعالى كاخوف ال شخصيت من جس كانام س برك برك نامور بادشاہ ڈرتے تھے، کا بہتے تھے۔ آج بھی چورہ سو برس گزرنے کے باوجود ان کا دید بہ مانا ہوا ہے آج کوئی بادشاہ شیں حائم نہیں کوئی معمولی سا امیر بھی اپنی رعایا کے ساتھ

ایثار و جمدر دی کی تنین بہترین مثالیس

 حضرت الوقيم بن حديف وفعلقيقة الفظ كنت بين كدير موك كى الوائى ك دوران میں این بھیا زاد بھائی کی تلاش میں فکلا کہ وہ لڑائی میں شریک تھے اور ایک مشکیزہ یانی کا میں نے اپنے ساتھ لیا کہ ممکن ہے وہ بیاسے بول تو یاتی پلاؤں۔ القاق سے ووایک جگداس حالت میں پڑے ہوئے ملے کددم توڑ رہے تھے اور جان -はかから

میں نے یو چھا یائی کا کھونٹ دوں انہوں نے اشارے سے ہاں کی استے میں دومرے صاحب نے جو قریب ہی پڑے تھے اور دو بھی مرنے کے قریب تھے آ و کی۔میرے بھا زاد بھائی نے آواد می تو مجھے ان کے پاس جانے کا اشارہ کیا۔ میں ان کے یاس یانی کے کر گیا وہ ہشام بن الی العاص رَفِحُولِقَائِقَا الْفَطْفُ تَصَان کے یاس پہنچا ہی تھا کدأن کے قریب ایک تیسرے صاحب ای حال میں پڑے وم توڑ رہے تھے۔ انبوں نے آ ہ کی۔ ہشام رَفِعَالِقَالِقَالِقَالِ فَ مِحْد اُن کے پاس جائے کا اشارہ

ك يوسف: ٨٦

كر ديا_ ين أن ك ياس يانى ك كر بينيا تو ان كا دم نكل چكا تقار بشام رَفِيُكُلِلْ النَّفِ كَ إِلَى والْمِن آيا توده بحى جال بحق موسي تقال ك إلى = اب بھائی کے پاس لونا او است میں وہ بھی ختم ہو چکے تھے۔ إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ

اس نوع کے متعدد واقعات کتب حدیث میں ذکر کئے گئے۔ کیا انتہا ہے اس ایارکی کداینا بھائی آخری دم توڑ رہا ہواور پیاسا ہوائی حالت میں کسی دوسرے کی طرف توجد كرنا مشكل موجاتا ب چه جائ كداس كو بياسا چيور كر دوسر يكوياني پلانے چلا جائے۔ اور ان مرنے والول کی روحوں کو اللہ جل شاندائے لطف وقفل ہے نوازیں کہ مرنے کے وقت بھی جب ہوش وحواس سب عی کے جواب دے دية إلى يول الدردى يل جان دية إلى-

C معرت ابن عمر رَفِقُ النَّفَا النَّفَا فرمات مِن كرايك سحالي رَفِقَ النَّفَا كولسي محض نے بحری کی سری ہدید سے طور پر دی۔ انہوں نے خیال فرمایا: میرے فلال ساتھی زیادہ ضرورت مند ہیں، کنبدوالے ہیں وہ اور ان کے گھر والے زیادہ مختاج ہیں اس لئے ان کے پاس جیج دی ان کوایک تیسرے صاحب کے متعلق میں خیال پیدا موا اور ان کے پاس بھیج دی۔ غرض ای طرح سات گھروں میں چر کر وہ سری ب سے سیلے سحالی وَفِعَ اللَّهِ الْفِظْ كَ كُر اوٹ آئی۔

اس واقعد ان حضرات كا عام طور على اورضرورت مند بونا مجلى معلوم وتا ب اور سيمي كه برايك كودوس كى ضرورت كا زياده شيال ولحاظ ربتا تحار ことにはないのでは、いなというとのでは、これの

المحابه:١/١٧٥

ع مستدرك حاكم: كتاب التفسير: ٢٠/١٠م، الحشر: ٩

"الیک آدی نے دوسرے آدی ہے اس کی کوئی جائندادخریدی،خرید نے والے نے اس زیمی جائندادخریدی،خرید نے والے نے اس زیمی جائندادی ہی ایک مؤل مدفون پایا جس میں سونا بجرا ہوا تھا۔خریدار نے فروخت کرنے والے ہے کہا کداپنا سونا جھے ہے لے لو، میں نے تم سے زمین خریدی ہے (زمین میں مدفون) سونا تو نہیں خریدا (جو بغیر کسی موض کے یہ لے لوں)۔

جائیداد فروخت کرنے والے نے کہا: یس نے تو تمہارے ہاتھ زمین ہی تہیں ا نیچی بل کہ اس میں جو کچھ ہے وہ بھی تمہارے ہاتھ فروخت کر دیا (دونوں میں اختلاف ہوا، کوئی بھی دہ سونا لینے کے لئے تیار نہ تھا) لبندا دونوں اپنا مقدمہ ایک تیسرے شخص کے پاس لے گئے اور اے ٹالٹ متایا، اس نے کہا: کیاتم میں ہے کسی گیا اولاد ہے؟ ایک نے کہا ہاں میرا ایک لڑکا ہے۔ دوسرے نے کہا ہاں میری آیک ان کی دونوں پر فری کردواور اس سوتے میں سے ان دونوں پر فری کردواور اس سوتے میں سے ان دونوں پر فری کردواور معدقہ دونے ا

مال و دولت، سونے چاندی اور دیگر اموال ونیا کی محبت انسانی فطرت میں شامل ہے، خود قرآن کریم میں بھی حق تعالی نے ارشاد فرمایا ہے: "مرغوب چیزوں کی محبت اوگوں کے لئے مزین کردی گئی ہے، جیسے عورتیں، بیٹے اور سونے چاندی کے جع کئے ہوئے فزانے، نشان دارگھوڑے، چوپائے اورکیتی، بیونیا کی زندگی کا سامان ہے اورلوٹے کا اچھا عملانہ تو اللہ تعالی ہی کے پاس ہے۔"

فطرت انسانی تبدیل تو ہوئیں سکتی، الہذا یہ بھی ممکن نہیں کدانسان کے دل ہے۔ ان اشیاء کی محبت فتم ہو جائے اور نہ ہی میر مطلوب ہے، بل کدان اشیاء کی محبت کواللہ کی محبت پر قربان کر دینا مطلوب ہے۔ اللہ کے حکم پر ان اشیاء کو اور مال و دولت کو قربان کر دینا می مقصود ہے۔

له بخاری، کتاب الانبیاه: ۹۹٪/۱

ع آل عمران: ١٤

جناں چہ مال کمانے کے جن طریقوں سے اللہ نے متع کر دیا ان سے رک جانا خواہ ان طریقوں سے اللہ نے متع کر دیا ان سے رک جانا خواہ ان طریقوں سے کتا تی مال کیوں نہ طے ضروری ہے۔ لیکن بھی مال ہے جس کی وجہ سے اثبان اللہ سے اور اس کے احکامات سے سب سے زیاوہ خفلت کرتا ہے۔ زر، زن، زین نے دنیا میں فساد برپا کیا ہوا ہے، باہمی حسد، رقابت، کینہ پروری، بغض وعناد کی بردی وجہ بھی ہے۔ اس کی خاطر لوگوں نے حرام وحلال کی تمیز پروری، بغض وعناد کی بردی وجہ بھی ہے۔ اس کی خاطر لوگوں نے حرام وحلال کی تمیز کے ختم کر دی، اس کی وجہ سے جھڑے ہوتے جی اور بھی مال ہے جو باہمی خوز بردی مال سے جو باہمی خوز بردی کی انسان سے کروا دیتا ہے۔

مال و دولت معیت کی اس فضایی کسی انسان کا خوف اللی کی بناه پر ناجائز، حرام اور مشکوک مال سے اجتناب کرنا آیک غیر معمولی بات اور اللہ کے نزویک بوی قدر و قیت رکھنے والاعمل ہے۔

حدیث بالاش بیان کردہ واقعہ مال سے ب رغبتی اور ونیا سے عدم محبت کا عجیب واقعہ ہے۔ زر و جواہرات سے لبریز کسی کوکوئی برتن ملے اور کوئی چیز اس کے لینے سے مانع بھی ندموں تھر بھی اس شبد کی بناء پر کہ بیددوسرے کا ہے اسے لینے کے لئے تیار ندہوں آیک غیر معمولی بات ہے۔

یہ بھی عجیب اللہ کی شان ہے کہ صرف خریدار ہی نہیں وہاں تو زیمن فروخت

کرنے والا بھی اتنا ہی ویانت دار ہے۔خریدار کہتا ہے کہ مجھے زیمن کی کھدائی سے بیہ
مطا جوزر و جوابرات سے بھرا ہوا ہے ملا ہے یہ یقینا تمہارا ہے تم اسے لے لو، جواب
میں بیجے والا کہتا ہے:

میں بیر انہیں، میں نے تو زمین فروخت کردی ہاور جو پکھاس میں تھاوہ میں بیر میرانہیں، میں نے تو زمین فروخت کردی ہاور جو پکھاس میں تھاوہ مب پکھ تنہارا ہوگیا۔ دونوں اس کو لینے کے لئے تیار نہیں بالآخر ایک تیسر شخص کو تھم اور قالث بنایا گیا، اس نے سوچا کہ یوں تو جنگزافتم ہی نہ ہوگا اس کا کوئی دوسرا چنال چہائی نے ان سے اوج جما کہتم لوگوں کی کوئی اولاد ہے؟ ایک نے کہا کہ میرا ایک لڑکا ہے دوسرے نے کہا میری ایک لڑکی ہے۔ ٹالٹ نے فیصلہ کیا کہ ان ووٹوں کا باہم نکاح کر دیاجائے اور یہ سارا مال نصف نصف ان دونوں پر خرچ کر دیا جائے اور پچنے مال اللہ کی راہ میں صدقہ بھی دیا جائے۔

خالت کا بید فیصلہ بھی بہت عمدہ ہے اس اختبارے کداس نے سوچا جب بیہ دونوں است کا رہ فیصلہ بھی بہت عمدہ ہے اس اختبار سے دار اور خوف خدار کھنے والی موگا تو الن کی اولاد بھی نہایت شریف اور صالح پیدا ہوگی، موگا تو الن کی اولاد بھی نہایت شریف اور صالح پیدا ہوگی، موگا اولاد کے وجود کا ذریعہ یہ فیصلہ ہوجائے گا۔

نصيحت آموزيبلو

بلاشبداس واقعد میں حرص و ہوں کے مارے ہوئے تمارے معاشرہ کے لئے بڑے تھیجت آ موز پہلو ہیں۔

ویانت داری ایک ایسامبارک وصف ہے کداس کے بہترین نتائج اللہ تعالی و نیا
 شی انسان کونصیب فرماتے ہیں اور آخرت میں تو خوب ہی عطافر مائیں گے۔

ای دافعہ انسان کے دل میں مال کی بے رغبتی کا جذبہ پیدا ہوتا ہے۔

واک حرام سے اجتناب اور مشتبہ سے بچنا تقویل کہلاتا ہے۔ اس سے معلوم ہوا کہ دونوں معلوم ہوا کہ دونوں ایک دوسرے کے دونوں ایک دوسرے کے لئے ضد کرتے دے اور خود لینے پر رامنی شہوئے۔

اس واقعہ سے بیہ بھی معلوم ہوا کہ انسان کو ان معاملات میں جو بظاہر بڑے چھوٹے اور روز مرہ چین آنے والے جیں، اختلاف کی صورت میں کسی صاحب رائے اور دین دار شخص کو خالت بنا لیا جائے جو اپنی عقل و فراست اور علم و تجربہ کو بروے کارلائے ہوئے دونوں کے درمیان سیح فیصلہ کردے۔

﴿ غير متوقع طور پر حاصل ہونے والے مال ميں صدقد كر دينا متحب ب اوراس سے مال ميں بركتي فتم ہوجاتي ہے۔ ك

تفرت گناہ ہے ہوگناہ کرنے والے سے نہ ہو

جتنے اولیاء کرام وَحِیْدُلِوْالِیَّالِیَّالِیَّالِیَّالِیَّالِیَّالِیَّالِیَّالِیَّالِیَّالِیَّالِیَّالِیَّالِیْکَالِیُ گزرے ہیں، ان سب کا حال یہ تھا کہ وہ اگر تلوق کو برے حال ہیں و کیلئے، یافت و فجور ہیں اور گناہوں کے اندر جتنا و کیلئے تو، وہ اولیاء ان گناہوں سے نفرت کرنا واجب ہے، واجب ہے، واجب ہے، اس کے اندان کے اندال سے نفرت کرنا واجب ہے، واجب ہے، کین ول میں اس آدمی سے نفرت نہیں ہوتی تھی، اس کی حقارت ول میں نہیں ہوتی تھی، اس کی حقارت ول میں نہیں ہوتی تھی۔

حضرت جنید بغدادی وَحِیَمَهُالاَلْاَتَعَالَ وریائے وجلہ کے کنارے چہل قدی

کرتے ہوئے جا رہے تھے، قریب ہے ایک کشتی گزری، اس کشتی میں اوباش (ب

ہودہ) متم کے نوجوان بیٹے ہوئے تھے، اور گاتے ہجاتے ہوئے جارہے تھے۔ جب
گانا ہجانا ہو رہا ہواور بنسی نداق کی محفل ہو، اس موقع پر اگر کوئی وین وار پاس سے
گزرے تو اس کا نداق اُڑانا بھی تفریح کا آیک حصہ ہوتا ہے۔

چناں چدان اوباش لوگوں نے حصرت جنید بغدادی وَخِیمَبُهُاللّهُ اَتَعَالَیٰ کا غماق اُڑایا، اور آپ پر کچھ فقرے کے، حضرت کے ساتھ ایک صاحب اور تھے، انہوں نے بیصورت حال و کھے کر فرمایا کہ حضرت! آپ ان کے حق بیس بدوعا فرما دیں، کیوں کہ بیالگ استے گستان بیس کہ ایک طرف تو خودفسق و فجور اور گناموں میں جسلا ہیں۔ دوسری طرف الله والوں کا غداق اُڑا رہے ہیں۔

صرت جنید بغدادی دَجِعَبُهُ اللَّهُ تَغَالَ نَے فوراً دعا کے لئے ہاتھ اشائے ، اور فرمایا اے اللہ آپ نے ان نوجوانوں کوجس طرح بیال دنیا میں خوشیاں عطا فرمائی

ك قصص الحديث: ص٢١٢

بیں ان کے اعمال ایسے کر ویجئے کہ وہاں آخرت میں بھی ان کو خوشیال نصیب

و يكفينة: ان كى ذات من نفرت نيس فرمائى ، اس لئے كدبية مير الله كى مخلوق

حیوانات کے ساتھ خیرخواہی کی مثالیں

O معرت عرو بن عاص رَفِي النَّفَةُ النَّفَةُ معر فَعْ كرنے ك بعد جب اسے فيم میں واپس آئے تو دیکھا کرایک کبور نے گھونسلہ بنالیا ہے۔آپ نے تھم دیا کہ میرے فیمے کونداکھاڑا جائے۔آپ نے بقید سفر فیمے کے بغیر پوداکیا مگراہے آ رام کی فاطر کور کو ہے آرام کرنا بیندند کیا۔

🕜 حضرت ڈاکٹر عبدائحی صاحب قدس سرہ فرماتے ہیں: ایک بزرگ تھے جو بہت بوے عالم، فاصل محدث اورمضر تھے۔ ساری عمر درس و تدریس اور تالیف وتصنیف میں کزری اورعلوم کے دریا بہا دیتے، جب ان کا انتقال ہوا تو خواب میں کسی نے ان كود يكها تو ان سے يو چها كه معزت! آپ كے ساتھ كيسا معامله موا؟ فرمايا كه الله تعالی کا کرم ہے کہ مجھ پر اپنا فضل فرمایا۔ لیکن معاملہ برا مجیب موا، وہ بدک مارے وجن میں بیا تھا کہ جم نے الحدوللہ زعد کی میں وین کی بردی خدمت کی ہے۔ ورس و تدريس كى خدمت انجام دى، وعظ اورتقريرين كيس، تاليفات اورتصنيفات كيس-وین کی تبلیغ کی، جناب و کتاب کے وقت ان خدمات کا ذکر سامنے آئے گا۔ اور ان خدمات كے عليم على الله تعالى اپنافضل وكرم فرمائيں كے۔

ليكن موايدك جب الله تعالى ك سامن فيشى موكى تو الله تعالى ف قرمايا: يم حمين بخشة بي، لين معلوم بهي ب كركس وجد يغش رب بين؟ ذين بيل سرآيا

ك اصلاحي خطبات: ١٢١/٨

ك معجم البلدان للحموى ٢٦٣/١٤ فسطاط

كريم نے دين كى جوخدمات انجام دي تھيں، ان كى بدولت الله تعالى نے بخش ديا ب، الله تعالى نے فرمایا كرميس، بم مهمين ايك اور وجه سے بخشتے بيں۔ وو يدكه ايك دن تم چکولکورے تے اس زمانے میں لکڑی کے قلم ہوتے تھے، اس قلم کو روشنائی میں ویوكر پركساجاتا تجا تم في الصف كے لئے ابتا قلم روشنائي ميں ويويا-اس وقت ایک ملحی اس قلم پر بیٹے گی اور وہ ملحی قلم کی سیابی چوہے تھی، تم اس ملحی کو ر کھے کر کھ در کے لئے رک سے ۔ اور بیسوجا کہ بیکھی بیای ہے، اس کوروشنائی پی لينے دور ميں بعد ميں لکھ لوں گائم نے اس وقت جو قلم كوروكا تھا، وہ خالصة ميرى اور میری مخلوق کی محبت میں اخلاص کے ساتھ روکا تھا۔ اس وقت تمبارے ول میں کوئی اور جذب میں تھا۔ جاؤ، اس مل كے بدلے ميں آج جم في تمبارى مغفرت كروى يا مسلم شریف میں ایک روایت ہے: ایک طوائف اور فاحشہ عورت کھی، ساری

وعد طواقی کا کام کیا، ایک مرتبدوه کہیں سے گزرری تھی رائے میں اس نے دیکھا كدايك كما پياس كى شدت كى وجد سے زمين كى منى چاك رہا ہے، قريب ميں ايك كوال قفاء ال عورت نے اپنے ياؤں سے چڑے كاموز و اتاراء اور اس موزے على كنوي سے يانى تكالا اوراس كتے كو بلا ديا۔

الله تعالیٰ کو سیمل اتنا پیند آیا که اس کی مغفرت فرما دی که میری مخلوق کے ساتھ تم فے محبت اور رحم كا معاملہ كيا، تو جم تبيارے ساتھ رقم كا معاملہ كرنے كے زيادہ حق دار ہیں سے البدا اللہ کی مخلوق کے ساتھ رحم کا معاملہ کرنا جا ہے ، جا ہے دوجیوان ہی

حطرت مولانا منظور تعمالي ساحب وتحقيدًا الله تقالي قراح ين والعض اوقات الي معمولي عمل ول كى خاص كيفيت يا خاص حالات كى وجد

له اصلاحیخطبات: ۱۲۰/۸

ع مسلع، باب قضل سقى البيائم: ٢٢٧/٢

سخت سردی کا موسم تفا۔ رات کو ایک مسجد میں قیام ہوا جس کے دروازے کا ایک پلے۔ ٹوٹا ہوا تھا۔ آپ ساتھیوں کے سو جانے کے بعد ساری رات اس پلے کے سامنے کھڑے رہے تا کہ ساتھیوں کو سردی نہ لگے۔ ^{سان}

حضرت مولانا روم وَحَمَيْهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الله مرتبدائية شاكردول كي جمراه اليك رائة ہے شاگردول كي جمراه اليك رائة ہے گزررہ بتے، ويكھا كه وہاں كما سويا جوا ہے، راستہ اتنا چھوٹا تھا كه اگر آپ گزرتے تو كتے كو جا گنا پڑتا۔ چنال چہ آپ اپنے شاگردول كے جمراه وہيں كھڑے انظار كرتے رہے۔ كانی دير كے بعد كتے كى آئك تھلى تو وہ لوگول كو ديكھ كر ايك طرف ہوا تب آپ آگے بڑھے۔

حضرت مولانا روم وَحِيَمَةُ الدُّلُاتَةُ اللهُ مرتبه يُكُونُون پر جارب تخفي دونول طرف تحييتوں ميں پانی کی وجہ سے يُجِرُ بنا ہوا تھا۔ سامنے سے ایک کتا ای پگڈنڈی پر چانا ہوا آیا۔ جب قریب پہنچا تو کتے نے آپ سے بزبان حال ہم کلائی کی۔ آپ نے فرمایا: تو نیچ اتر اور مجھے آ کے جانے کا راستہ دے۔ کتے نے کہا: آپ نیچ اتر اور مجھے جانے کا راستہ دی۔ کتے نے کہا: آپ نیچ اتر اور مجھے جانے کا راستہ دیں۔ آپ نے فرمایا: تو غیر مکلف ہے نیچے اتر اور تیرے جسم کو گذرگی گلی تو کوئی حرج نہیں۔

کے نے جواب دیا بہیں آپ نیچ اتریں اس کئے کہ نیچ اتر نے ہے آپ

کے کپڑوں کو گذرگی گئے گی جو دھل سکتی ہے لیکن اگر آپ نے جھے نیچ اتر نے پر مجبور

کیا تو آپ کے دل میں یہ خیال ہوگا کہ میں کتے ہے بہتر ہوں اس وجہ ہے آپ

کے دل پر ایسی سیابی گئے گی جو پانی ہے بھی نہیں وُھل سکے گی۔ مولانا روم

وَخِيْمَبُولُولُولُ مُعْفَاكُ نَے نیچ اتر کر کئے کو جانے کا راست دے دیا۔ رات تبجد میں اٹھ کر

بہت روئے کہ ایک کتے کی وجہ ہے جھے اپنی اوقات معلوم ہوئی۔ الہام ہوا کہ ایک
مرتبہ آپ نے اس کتے کو راستے میں سوئے ہوئے دیکھا تھا اور نیندے نہیں جگیا تھا

ا مكتوبات فقير: ص٧٥

ے اللہ تعالی کے بہاں بری قبولیت حاصل کر لیتا ہے، اور اُس کا کرنے والا اُسی بر بخش ویا جاتا ہے، اس حدیث میں جس واقعہ كاذكر كيا گيا ہے اُس كى نوعيت بھى بى ہے۔ آپ ذرا سوچے! ایک تحفی گری کے موسم میں اپنی منزل کی طرف چلا جا رہا ہے۔ اُس کو پیاس لگی ہے، اِی حالت میں اُس کو ایک کنواں نظر پڑ گیا، نیکن پانی نکالنے کا کوئی سامان ری ڈول وغیرہ وہاں نہیں ہے اس لئے مجبوراً میخف یاتی یہنے کے لئے خود بی کنویں میں اُتر گیا، وہیں یانی پیا اور نکل آیا، اُب اُس کی نظر ایک کتے يريدى، جو پياس كى شدت سے كيچر حاث رباتها، أس كوأس كى حالت يرترس آيا، اور دل میں داعیہ پیدا ہوا کہ اس کو بھی یانی پلاؤں، اُس دفت ایک طرف اس کی اپنی حالت کا نقاضا ہے ہوگا کہ اپنا راستہ لول، اور منزل پر جلدی پہنچ کے آ رام کروں، اور ووسری طرف اُس کے جذب رحم کا داعیہ بیہ ہوگا کہ خواہ میر اراستہ کھوٹا ہو، اور خواہ کنویں ے پانی نکالنے میں مجھے کیسی ہی محت و مشقت کرنی ہڑے لیکن میں اللہ کی اس مخلوق کو بیاس کی تکلیف سے عجات دول، اس کش مکش کے بعد جب اس نے اپنی طبیعت کے آرام کے نقاضے کے خلاف جذب رحم کے نقاضے کے مطابق فیصلہ کیا اور كتوي مين أتر كرموزے ميں ياني جركر اور منديس موزا تقام كرمنت ومشقت ے یانی نکال کے لایا، اور اُس بیاے کتے کو بلایا، تو اُس بندہ کی اِس خاص حالت اور آدا پر الله تعالیٰ کی رحت کو جوش آگیا، اور ای پراس کی مغفرت کا فیصله فرما دیا گیا۔ الغرض مغفرت وبخشش کے اس فیصلہ کا تعلق صرف کتے کو پانی بلانے کے عمل بی سے نہ مجھنا چاہئے، بل کہ جس خاص حالت میں اور جس جذبہ کے ساتھ اُس نے میمل کیا تھا، وہ اللہ تعالی کو بے حدیسند آیا اور ای پراس بندہ کی مغفرت اور بخشش کا فيعلدكروبا حميارك

🔞 ایک مرتبه حضرت ابراتیم ادیم ریخهٔ بدالملاً، تغالی دوساتھیوں سیت سفر میں تھے

العديث: ٢/٧٧/١ عارف الحديث: ٢/٧٧/١

اس لئے ہم نے اس کتے کو ذریعہ بنا کرآپ کواپے نفس کی معرفت نصیب کی۔اس واقع میں ہمارے لئے بڑاسپق ہے ہمارے اسلاف جانوروں کے آرام کا اتنا خیال کرتے تھے اور آئ ہم انسانوں کے آرام کا خیال نہیں کرتے۔

عضرت خواجہ باقی باللہ وَ وَهَمَ بُهُ اللّهُ الللللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ ال

باندى كے ساتھ بھلائى وخيرخواہى

حضرت عمر بن عبدالعزیز وَخِهَبُهُ اللّهُ تَقَالَتُ آیک مرتبہ گرمیوں کی دو پہر میں سوئے ہوئے تھے آیک بائدی کو نیند آئی تو دو پیش سوئے ہوئے تھے آیک بائدی کو نیند آئی تو دو پیٹھی بیٹھی سوگی استے میں عمر بن عبدالعزیز وَخِهَبُهُ اللّهُ تَقَالَتُ کی آئے کھلی آپ نے بائدی کو جوا بائدی کو جوا بائدی کو جوا بیٹھی نے تاکہ بائدی بھی تھوڑی در سکون کی نیندسو لے۔ جب بائدی کی آئکھ کھلی اور اس نے طیفہ وقت کو پکھا کرتے دیکھا تو دہ گھبراگئ۔

حضرت عمر بن عبدالعزیز نے فرمایا ڈرنبیں میں انسان ہوں تو بھی انسان ہے گری ہم دونوں کے لئے برابر ہے۔ آئی دیرتم نے میرے لئے پٹکھا کیا ہے آگر میں نے تھوڑی دیرتمہارے لئے پٹکھا کیا تو اس میں کیا حرج ہے۔ ت

غیرمسلموں سے ہمدردی و بھلائی

تحکیم الامت حضرت تھا توی رَجِّعَبَهُ اللَّهُ تَغَالَثُ نے اپنے استاد حضرت شُخ البند رَجِّعَبَهُ اللَّهُ تَغَالَثُ کا یہ واقعہ نقل کیا کہ کوئی صاحب تکھنو سے حضرت شُخ البند

ك مكتوباتِ فقير: ٥٨٥ كه مكتوباتِ فقير: ٥٨

جوں وہیں ہیں۔

وَجِعَبُهُ اللّٰهُ تَعَالَٰنَ کَی عَدِمت مِیں دیو بند آنے کے لئے روانہ ہوئے رائے میں ایک ہندو بنیا مل گیا، اس نے بتایا کہ میں بھی دیو بند جارہا ہوں تو کہا چلوساتھ ہو لیتے ہیں ہندو بنیا مل گیا، اس نے بتایا کہ میں بھی دیو بند پنچ تو کافی ویر ہو چکی تھی ان صاحب نے حضرت شخ البند دَیجَتَبُ اللّٰهُ تَعَالَنٌ کو اطلاع کر رکھی تھی کہ ایک بنیا بھی ساتھ ہے۔

ان صاحب نے حضرت دُیجَتَبُ اللّٰهُ تَعَالَٰنٌ کے اطلاع کر رکھی تھی کہ ایک بنیا بھی ساتھ ہے۔

ان صاحب نے حضرت دُیجَتِبُ اللّٰهُ تَعَالَٰنٌ کے عرض کیا کہ انہوں نے کہیں اور جانا ہے، یہ میرے ہم سفر تھے، حضرت دَیجَتِبُ اللّٰهُ تَعَالَٰنٌ نے فرمایا 'دہنیں یہ بھی سیس جانا ہے، یہ میرے ہم سفر تھے، حضرت دَیجَتِبُ اللّٰهُ تَعَالَٰنٌ جانے تھے کہ وہ ہندو ہے اور رہیں گئے' حالاں کہ حضرت شخ البند دَیجَتِبُ اللّٰهُ تَعَالَٰنٌ جانے تھے کہ وہ ہندو ہے اور رہیں گئے' حالاں کہ حضرت شخ البند دَیجَتِبُ اللّٰهُ تَعَالَٰنٌ جانے تھے کہ وہ ہندو ہے اور اس ہے کوئی تعلق بھی نہ تھا، اس کے باوجود بنے کوانے گھر روک لیا۔

اس ہے کوئی تعلق بھی نہ تھا، اس کے باوجود بنے کوانے گھر روک لیا۔

میں دونوں مہمانوں کی چار پائیاں بچھا دی گئیں وہ جواصل مہمان تھے وہ فرماتے ہیں کہ تبجد کے وقت آنکھ کھل تو بجیب منظر دیکھا کہ وہ ہندوتو لیٹا ہوا ہے اور حضرت شیخ البند وَخِیْمَبُرُاللَّائُ تَغَالِیَّ اس کے پاؤں دہا رہے ہیں، وہ اضحنا چاہتا ہے اور حضرت اے روک دیتے ہیں، یہ ایک وم سے بے تاب ہوکر اٹھے اور کہا کہ حضرت حضرت اے روک دیتے ہیں، یہ ایک وم سے بے تاب ہوکر اٹھے اور کہا کہ حضرت آپ یہ کیا کر دہے ہیں اس کی خدمت تو میرے ذمہ ہے، حضرت وَخِیْمَبُرُاللَّاللَّاتُعَالَیٰ آپ یہ کے فرمایا 'دونہیں یہ تمہارا نہیں میرا مہمان ہے۔'' دیکھے آیک کافر ہندو کے ساتھ مارے اکابر کا یہ سلوک تھا۔

حضرت مفتی شفیع صاحب وَخِعَبَهُ اللّهُ اَنَّالُهُ اِبنَا واقعہ بیان کرتے ہیں: "ایک مرتبہ میں ہندوستان میں سفر کر رہا تھا۔ اگریزی دورِ حکومت تھا، رہل کا سفر تھا۔ رہل میں رش بہت تھا اور سفر بھی رات بھر کا تھا۔ میرے برابر میں ایک بوڑھا ہندو بنیا آگر بیٹے گیا۔ دوران سفر اس کو نیند آگئی تو میرے کندھے پر سر رکھ کرسو گیا۔ اب میرا مسئلہ بیٹے گیا۔ دوران سفر اس کو نیند آگئی تو میرے کندھے پر سر رکھ کرسو گیا۔ اب میرا مسئلہ بیٹے گیا۔ دوران سفر اس بھی باتا تو اس کی آگھ کھل جاتی۔ وہ سونے کے بعد خرائے بید ہوگیا کہ اگر میں ذرا سا بھی باتا تو اس کی آگھ کھل جاتی۔ وہ سونے کے بعد خرائے لینے لگا۔ اس کے منہ سے بدیو بھی آ رہی تھی۔ میں نے سوچا کہ ضعیف آ دی ہے اور لینے لگا۔ اس کے منہ سے بدیو بھی آ رہی تھی۔ میں نے سوچا کہ ضعیف آ دی ہے اور میں اس اس کی اس کے اور قرآ ان حکیم میر اصاحب بالحنب (عارضی طور پر ساتھ ہونے والا ساتھی) ہے اور قرآ ان حکیم میر اصاحب بالحنب (عارضی طور پر ساتھ ہونے والا ساتھی) ہے اور قرآ ان حکیم میر اصاحب بالحنب (عارضی طور پر ساتھ ہونے والا ساتھی) ہے اور قرآ ان حکیم میر اصاحب بالحنب (عارضی طور پر ساتھ ہونے والا ساتھی) ہے اور قرآ ان حکیم میر اصاحب بالحنب (عارضی طور پر ساتھ ہونے والا ساتھی) ہے اور قرآ ان حکیم

ہے، مطمئن رہتی لیکن جب سودا گر جلدی جلدی سفر پر جانے لگا اور زیادہ دنوں تک گھر سے غائب رہنے لگا تو بیوی ذرا کھنگی اور اس نے سوچا ضرور کوئی راز ہے۔ گھر میں آگ ، موجھی ملاز مہتھی سوداگر کی بیوی کو اس سر بڑا مجروسہ تھا اور اکثر

گریں آیک بوڑھی ملازمہ تھی سوداگر کی بیوی کو اس پر بڑا بجروسہ تھا اور اکثر باتوں میں وہ اس ملازمہ کو اپنا راز دار بنالیتی۔ آیک دن اس نے بڑھیا ہے اپنے شبہ کا اظہار کیا اور بتایا کہ مجھے بہت بے چینی ہے۔ بڑھیا بولی: اے بی بی ا آپ پریشان کیوں ہوتی ہیں؟ پریشان ہول آپ کے دشن، آپ نے اب کہا ہے ویکھے میں چکی کیوں ہوتی ہیں، بر بینان ہول آپ کے دشن، آپ نے اب کہا ہے ویکھے میں چکی بہانے ہول اور بڑھیا ٹوہ میں لگ گئی اب جب سوداگر کھر سے چلا تو یہ بھی چیچے لگ گئی۔ آ خرکاراس نے بعد چلا لیا کہ سوداگر صاحب نے دوسری شادی کر لی ہے اور یہ گھر سے عائب ہوکر اس نئی بیوی کے پاس عیش کرتا دوسری شادی کر لی ہے اور یہ گھر سے عائب ہوکر اس نئی بیوی کے پاس عیش کرتا

بوھیا برراز معلوم کر کے آئی اور نی بی کوسارا قصد سنایا، سنتے ہی بی بی کی حالت غیر ہوگئی، سوکن کی جلن مشہور ہی ہے۔ لیکن جلد ہی اس بی بی بی نے اپنے آپ کوسنجال لیا اور سوچا کہ جو کچھ ہونا تھا ہوہی چکا ہے اب میں پریشان ہوکرا پی زندگی کیوں اجیرن بناؤں۔ اور اس نے میاں پر قطعا ظاہر نہ ہونے دیا کہ وہ اس رازے واقف ہجرن بناؤں۔ اور اس نے میاں پر قطعا ظاہر نہ ہونے دیا کہ وہ اس رازے واقف ہے وہ ہمیشہ کی طرح سوداگر کی خدمت کرتی رہی اور اپنے برتاؤ اور خلوص و محبت میں ذرا فرق نہ آنے دیا۔

دوسری طرف شریف سوداگر نے بھی اپنی بیوی کے حقوق میں کوئی کی نہ گا۔
اپنے رویے میں کوئی تبدیلی نہ آنے دی اور بھیشہ کی طرح اسی خلوص ومجت سے
بیوی کے ساتھ سلوک کرتا رہا۔شوہر کے اس نیک برتاؤ نے بیوی کوسوچنے پر مجبور کر
دیا اور اس نے یہ طے کر لیا کہ وہ شوہر کے اس جائز حق میں ہرگز روڑا نہ بنے گا۔
اس نے سوچا کہ آخر میاں جھ سے ظاہر کر کے بھی تو دوسرا لکاح کرسکتا تھا۔ میاں نے
اس طرح چھیا کر یہ نکاح کیوں کیا۔ اس لئے تو میرے دل کو تکایف ہوگی۔ میں
اس طرح چھیا کر یہ نکاح کیوں کیا۔ اس لئے تو میرے دل کو تکایف ہوگی۔ میں

یں "صاحب بالجنب" کے ماتھ بھی حن سلوک کرنے کا تھم آیا ہے۔ اس لئے میں بڑی احتیاط سے بیٹھا کہ کہیں اس کی آنکھ نہ کھل جائے۔ کی گھٹے گزر گئے میں فی بڑی احتیاط سے بیٹھا کہ کہیں اس کی آنکھ نہ کھل جائے۔ کی تو اس کی آنکھ کس گئے۔ نے کروٹ نہیں بدلی۔ وہ خوب سویا، کسی شہر میں گاڑی رکی تو اس کی آنکھ کس گئے۔ چوں کہ میں کئی گئے۔ مجھے اونکھ آگئی تو میرا چوں کہ میں کئی گئے۔ مجھے اونکھ آگئی تو میرا مراس کے کندھے سے بلکا سائکرایا اس نے فورا مجھے دھکا دیا۔"

اس نے ایک منٹ کے لئے بھی اس کو گوارا نہ کیا کہ کی مسلمان کو ایک منٹ کے لئے بھی اس کو گوارا نہ کیا کہ کسی مسلمان کو ایک منٹ کے لئے راحت ال جائے جب کہ انہوں نے گھنٹوں آگلیف برداشت کرے اُسے راحت پہنچائی۔ حضرت مفتی شفیع صاحب وَخِيَبَهُاللَّهُ لَعَنَاكُ کے واقعہ ہوتی ہے بھی بیہ بات معلوم ہوئی اور قرآنی آیات اور احادیث سے بھی بیہ بات واضح ہوتی ہے کہ حسن سلوک کا تعلق صرف مسلمان ہی کے ساتھ خاص نہیں بل کہ کا فروں کے ساتھ بھی انچھا برتاؤ کرنا جا ہے۔ ان کے ساتھ حسنِ اخلاق سے پیش آنا اور ان کو تکلیف سے بیانا ان کاحق ہے۔ ان کے ساتھ حسنِ اخلاق سے پیش آنا اور ان کو تکلیف سے بیانا ان کاحق ہے۔ ان

دوسوکنول کی ہمدردی

بغدادیں ایک بڑا سوداگر رہتا تھا، دور دورے خریداراس کے یہاں پہنچتے اور اپنی ضرورت کا سامان خرید کے، ای کے ساتھ ساتھ خدانے اس کو گھر بلوسکھ بھی دے رکھا تھا۔ اس کی بیوی نہایت خوب صورت، نیک، ہوشیار اور سلیقہ مندتھی۔ سوداگر بھی دل و جان ہے اس کو چاہتا تھا اور بیوی بھی سوداگر بھی دل و جان ہے اس کو چاہتا تھا اور بیوی بھی سوداگر بر جان چھڑ کی تھی اور نہایت عیش و سکون اور میل و حبت کے ساتھ ان کی زندگی بسر ہور ہی تھی۔

سودا گر کار دہاری ضرورت ہے بھی بھی باہر بھی جاتا اور کئی گئی دن گھر سے باہر سفر میں گزارتا۔ بیوی میہ بچھ کر کہ مید گھر سے غائب رہنا کاروباری ضرورت سے ہوتا

> له اصلاحی تقویویں: ۱۳/۵ (بیک (ایس ارایس)

سوكن كويرداشت شكرسكول كى

کتنا بیارا ہے میرا شوہر، اس نے میرے نازک جذبات کا کیسا خیال رکھا، پھر اس نے اس تی ایمن کی محبت میں مست ہو کر میرا کوئی حق بھی تو نہیں مارا۔اس کے سلوك اور محبت ميں بھي تو كوئي فرق نہيں آيا۔ آخر جھے كياحق ہے كديس اس كواس حق ے روکوں جو خدانے اس کو دے رکھا ہے مجھ سے زیادہ ناشکرا اور نالائق کون ہوگا۔ جوایے مہربان شوہر کے جائز جذبات کا لحاظ ندکرے اوراس کے دل کو تکلیف پہنچائے بیوی بیسوچ کر بالکل بی مطمئن موگئ سوداگر بیوی کا خوش گوار سلوک اور محبت کا برتاؤ و مکھ کر میمی سمجھتا رہا کہ شاید خدا کی اس بندی کو بیدراز معلوم میں ہاور پوری احتیاط کرتا رہا کہ کی طرح معلوم نہ ہونے پاتے۔ اور دونوں ہنسی خوشی بیار ومحبت کی زندگی گزارتے رہے آخر کچھ سالوں کے بعد سودا کر کی زندگی کے دن بورے ہوئے اور اس کا انقال ہوگیا۔ سوداگر نے چوں کہ ووسری شادی شہر ہے وُور بہت خاموثی ہے کی تھی اس لئے اس کے رشتہ داروں میں بھی کسی کو بھی ہے راز معلوم ند تھا، سب يمي جھتے رہے كد سوداكركى بس يمي ايك بيوى تھى، چنال چه جب ترے کی تقسیم کا وقت آیا تو لوگوں نے بہی بچھ کر ترک تقسیم کیا اور اس نیک بیوی کواس کا حصہ وے دیا۔ سوداگر کی بیوی نے بھی اپنا حصہ لے لیا اور یہ پہندند کیا کہ اے شوہر کے اس راز کو فاش کرے جو زندگی بھر سوداگر نے لوگوں سے چھیایا۔لیکن اس نیک بی بی نے رہ بھی گوارا ند کیا کہ وہ سوداگر کی دوسری بیوی کا حق مار بیٹھے، ب شك كى كويى خبرند تقى اورنداس كى طرف سے كوئى دعوى كرنے والا تھا۔ ليكن الله تعالى کو تو سب پچومعلوم نفاجس کے حضور ہرانسان کو کھڑے ہوکر اپنے اچھے برے اعمال كاجواب ديناہے۔

موداً کر کی بیوہ یہ سوچ کر کانپ گئی اور اس نے یہ طے کرلیا کہ جس طرح بھی موگا وہ اپنے جصے بیل سے آ دھی رقم ضرور اپنی سوکن بہن کو بھوائے گی۔ اس نے ایک

نہایت معتبر آدمی کو میرساری بات بتا کراپنے تھے کی آدھی رقم اس کے حوالے کی اور اپنی سوکن بہن کے پاس روانہ کیا۔اور اس کے بیبال کہلوایا کدافسوں! آپ کے شوہر اس دنیا سے رخصت ہو گئے۔اللہ تعالی ان کی مغفرت فرمائے۔

مجھے ان کی جائیداد اور ترکے میں سے جو پچھ ملا ہے اسلامی قانون کی روسے
آپ اس میں برابر کی شریک ہیں میں اپنے جھے کی آ دھی رقم آپ کو بھیج رہی ہوں
امید ہے کہ آپ قبول فرمائیں گی۔ یہ پیغام اور رقم بھیج کر نیک کی بہت مطمئن تھیں
ان کو ایک روحانی سکون تھا۔ پچھ ہی دفون میں وہ مخفص واپس آ گیا اور اس نے وہ
ساری رقم واپس لا کرسوداگر کی بیوہ کو دی سوداگر کی بیوہ فکر مند ہوئیں اور وجہ پوچھی۔
قاصد نے جیب سے ایک خط نگالا اور کہا اس کو پڑھ لیجے اس میں سب پچھ کھھا ہے
آپ فکر مند نہ ہول۔

سوكن كاسبق آموز خط:

بياري يمن!

ہے۔ وہ استقال کے خط سے بید معلوم کر کے بڑا رہنج ہوا کہ آپ کے ایکھے شوہر کا انتقال ہوگیا اور آپ ان کی سر پرتی ہے محروم ہوگئیں۔ خدا ان کی مغفرت فرمائے اور ان پر اپنی رحمتوں اور عنایتوں کی بارش فرمائے۔ بیس کس دل سے آپ کے خلوص وایٹار کا شکر بیادا کروں کہ آپ نے ان کے ترکے بیس سے اپنے جھے کی آ دھی رقم مجھے جیجی ۔ بیس آپ کی اس نیک روش سے بہت ہی متاثر ہوئی۔

حقیقت یہ ہے کہ سوداگر کے اس راز سے کوئی واقف ندتھا۔ میرا نکاح بہت ہی وشیدہ طریقے پر ہوا تھا۔ مجھے تو یہ یقین تھا کہ آپ کو بھی اس کی خبر نہیں ہے۔ میں کیا، خود سوداگر مرحوم بھی یہی جھتے رہے کہ آپ کو اس دوسری شادی کی اطلاع نہیں ہے اب تورسوداگر مرحوم بھی یہی بھتے رہے کہ آپ کو اس دوسری شادی کی اطلاع نہیں ہے اب آپ کے اس خط سے بیراز کھلا ہے کہ آپ ہمارے راز سے واقف تھیں۔ آپ کو اب آپ بھارے راز سے واقف تھیں۔ آپ کو

(بين البارانية)

دیانت اور نیکی نے اس سے دل بیں گھر کرلیا اور پھر دونوں بیں مستقل طور پرخلوص و محبت اور رفافت کا رشتہ قائم ہوگیا۔ ک

ایثار و ہمدردی کی جیتی جاگتی تصویر

حضرت مولانا سيّد اصغر حسين صاحب رَحْحَيَّهُ اللهُ تَعْفَالَ جو كه دارالعلوم ديوبند
 مشهور محدث تقے اور سنن ابوداؤد كا درس ديا كرتے تھے۔

حضرت میال صاحب رَجِعَبُهُ اللَّهُ تَعَالَتْ كا كحر دارالعلوم سے كافى فاصلے يرتفار گھر کے قریب رائے میں ایک طوائف کا گھر پڑتا تھا، جو برسوں سے وہال رہتی تھی، جب اس كا كمر آتا تو حفرت ميال صاحب رَخِعَبَهُ اللَّهُ تَغَالَ جوت اتار ليت، جب اس كا كحر كزر جاتا تو كام جوت بهن ليتے۔ والد صاحب رَجْهَبُهُ اللَّهُ تَعَالَىٰتُ فرماتے تھے کدایک مرتبہ میں نے پوچھ ہی لیا کدیمال سے رات کو گزرتے ہوئے آپ جوتے کیوں اتار لیتے ہیں، جوابا حضرت رجمبتالللائفال نے جیب بات ارشاد فرمائی، فرمایا کہ جب بیہ جوان تھی تو اس کے بہت گا بک آتے تھے اب بوڑھی مو کئی ہے کوئی گا بک مبیس آتا، رات کو دیر تک گا بک کی منتظر رہتی ہے۔ بیس رات کو جوتے اس لئے اتار دیتا ہوں کہ کہیں میرے جوتوں کی آہٹ سے اس کو بیامیدند بندھ جائے کہ شاید کوئی گا بک آیا ہے۔ مجھے تو اس کے پاس جانائمیں میں گزرجاؤں گا تو اس کا دل ٹوٹے گا۔ فضول کسی کا دل دکھانا کون می نیکی کا کام ہے۔ ایک طوائف کے امکانی خطرے کے پیش نظر پیستفل معمول بنا رکھا تھا کہ اس کے گھر ک قریب ہے رات کو نگلے یاؤں گزرتے تھے۔ ^{علی}

حضرت مفتى تقى عثانی صاحب مظله فرماتے بین: ایک روز والدصاحب مظلیم
 حضرت مولانا مفتی محد شفیع صاحب رَجْحَبَیمُاللّهُ تَغَالَیٌ) اور میں بعد مغرب حضرت

ل صفة الصفوة: ٣٤٤/٢ رقع: ٣٧١

ت اصلاحی تقریریں: ۲٤١/٢

ضروراس واقعے سے تکلیف پیچی ہوگی۔ لیکن اللہ اکبر! آپ کا صبر وضط! حقیقت یہ بے کہ آپ نے جس صبر وضبط! حقیقت یہ بے کہ آپ نے جس صبر وضبط سے کام لیا اس کی نظیر نہیں مل سکتی۔ تبھی اشارے کنائے سے بھی آپ نے بین ظاہر نہیں ہونے دیا کہ آپ ہماری اس خفیہ شادی سے واقف ہیں۔ آپ کا بیا بیار اور صبر وقبل واقعی حیرت انگیز ہے میں تو آپ کے اس کمال سے انتہائی متاثر ہوں۔

دولت کس کوکاٹتی ہے، دولت کے لئے کیا کچونہیں کیا جاتا۔لیکن آفریں آپ
گ ایمان داری کو، یہ جانتے ہوئے کہ میرا نکاح راز میں ہے اور وہاں کوئی ایک بھی
ایمانہیں جس کواس کی خبر ہواور جو میری طرف سے وکالت کرے مگر آپ نے محض
خدا کے خوف سے میرے حق کا خیال رکھا اور اپنے جصے میں سے آ دھی رقم مجھے بھیج
دی۔خدا کے حاضر و ناظر ہونے کا یقین ہوتو ایہا ہواور خدا کے بندوں کے حقوق ادا
کرنے کا جذبہ ہوتو ایہا ہو۔

المجھی بہن! میں آپ کی اس دیانت، خلوص اور حق شنای ہے بہت متاثر ہوں خدا آپ کو خوش رکھے اور دنیا و آخرت میں سرخرو فرمائے۔ لیکن بہن! میں اب اس حصے کی مستحق نہیں رہی ہوں خدا آپ کا بید حصہ آپ ہی کومبارک کرے۔ بیسجھے ہے کہ سودا گرم حوم نے مجھے ہے نکاح کیا تھا اور بیسجی تھے ہے کہ وہ میرے پاس آگر کئی گئی دن تک رہتے تھے۔ ب شک ہم نے بہت دنول میش و مسرت کی زندگی بسر کی۔ لیکن اوھر پکھے دنوں سے بیسلسلہ ختم ہو گیا تھا۔ سودا گرم حوم نے مجھے طلاق دے دی تھی ۔ سیساس راز کی آپ کو بھی خبر نہیں ہے۔ میں اس خط کے ساتھ آپ کی اطلاع اور یقین کے لئے طلاق نامے کی افقل بھی بھیج رہی ہوں۔ آخر میں آپ کی اج مثال محبت، عنایت، ایٹار، خلوص اور ہمدردی کا بھر شکر بیادا کرتی ہوں۔

والسلام آپ کی بہن سوداگر کی بیوہ نے اس خاتون کا بید خط پڑھا تو بہت متاثر ہوئی اور اس کی سپائی ﴿ بِیکَ دلیسِ اُمِرْمِیٹی ﴾ ۔۔۔۔

بين ولعي المرث

توشاید بی کوئی آم چکھ لیتے ہوں عموم مہمانوں بی کے لئے ہوتے تھے اور محلے کے غریب بچوں کو بلا بلا کر کھلانے میں استعال ہوتے تھے اس کے باوجود جھلکے اور مھلیوں کو ایک ساتھ ڈھیر کر دینے ہے گریز فرماتے تھے کہ غریبوں کی حسرت کا بب ندبن جائيں لبعض فقہاء نے بازار کے کھانے سے اس لئے پر ہیز فرمایا کداس برغریوں کی نظریں برنی میں اور ناداری کے سب وہ ان کی حسرت کا سب بنتی ہے۔ و میصے ان الله والوں کی نظر دنیا کے کاموں میں کسی وقیق ہوتی ہے۔ اور ہر چز

كاحق كى كس طرح اداكرتے ہيں۔

😵 حضرت میاں صاحب رَجْعَبُهُ اللّهُ تَغَالَثُ کے لئے جو کھانا کھرے آتا تھا خودتو بہت كم خوراك ليتے تھے باقى كھانا محلے كے بچوں كو بلاكر كھلاتے تھے۔جو بوئى ﴿ جاتی اس کو بلی کے لئے دیوار پر رکھ دیے تھے اور جو تکڑے جاتے اس کو چھوٹا جھوٹا كرك يزيوں كے لئے اور وسترخوان كريزوں كو بھى اليى جگہ جھاڑتے تھے جہال چیونٹیوں کا بل ہوتا تھا۔ حق تعالی کی تعمقوں کی قدر پیچانتا ان کو ٹھکانے لگانا انہی صاحب بصيرت بزرگول كا حصد فقا-آج تو برگريس بچا بوا كهانا سرتا باورناليول میں جاتا ہے۔جس کا اگر اہتمام کیا جائے تو بہت سے غریبوں کا پیٹ مجرجائے۔ @ اعزاء واقرباء احباب، الل محلّم كے حفوق وجذبات كى جس قدر رعايت كرتے ہوئے اس مرد باخداکود یکھا اس کی مثال منی مشکل ہے۔میاں صاحب وَجِمَّةِ الْمُلْالَقَعُ الْنَالَاتَعُ الْنَالَاتُعُ النَّالَةِ النَّلَةُ النَّالَةِ النَّالَةِ النَّالَةِ النَّالَةِ النَّالَةِ النَّالَةِ النَّلَةِ النَّلَةُ النَّلَةُ النَّالَةِ النَّلَةُ النَّلَةُ النَّلَةُ النَّلَةُ النَّلَةُ النَّالَةِ النَّذَالِيَةِ النَّلَةُ النَّلَةُ النَّلَةُ النَّلَةُ النَّلَةُ النَّلَةُ النَّذَالِيَّةُ النَّلَةُ النَّلِيَّةُ النَّلِيِّةُ النَّلَةُ النَّلِقُ النَّلِقُ النَّلِقُ النَّلِقُ النَّلِيْلِيْ النَّلِيِّةُ النَّلِقُ النَّلِقُ النَّلِقُ النَّلِقُ النَّلِقُ النَّلِيِّةُ النَّلِقُ النَّلِقُ الْعَلْمُ الْعِلْمِ الْعِلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلِقُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعِلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعِلْمُ الْعَلْمُ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعَلْمُ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلِمُ الْعَلْمُ الْعِلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعِلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعِلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلِمُ الْعَلْمُ الْعِلْمُ الْعَلْمُ الْعَل كا أكثر مكان كيا نفا-جس ير برسال مبكل مونا ضروري تقى- أكرندكي جاتي تو مكان منہدم ہونے کا خطرہ تھا۔ برسال برسات سے پہلے اس پر مبلکل کرانے کا معمول تھا اوراس وقت کھر کا سارا سامان باہر نکالنا پڑتا تھا۔ ایسے بی ایک موقع پر والدصاحب رَجْعَبُ اللَّهُ مَعَالَ فِي عُرضَ كِيا كر حفزت! برسال آب كوية تكليف موتى إ-اور بر سال كا خرج بھى جواس ير ہوتا ہے وہ جوڑا جائے تو يائح سات سال ميں اتا ہو

ك اكارويوندكيا تحايى ١٠١٠

مولانا میاں اصغر حسین صاحب کے گھر پر حاضر ہوئے۔ فرمانے لگے، آم چوسو گے؟ والدصاحب نے عرض كيا: آم اور كيم حضرت كے عطا فرموده، نُوْدٌ عَلَى نُوْد، ضرور عطا ہوں۔میاں صاحب الشے، ایک ٹوکری میں آم لاکر رکھے۔اور ایک خالی ٹوکری محتصلی اور چھلکوں کے لئے سامنے لا کررکھ دی۔ ہم آم چوس کر فارغ ہوئے تو والد صاحب محصلی اور چھکلوں سے بحری ہوئی ٹوکری اٹھا کر باہر بھینکنے کے لئے چلے۔ پوچھا بیٹوکری کہاں لے کر چلے؟ عرض کیا تھلکے باہر چینکنے کے لئے جارہا ہوں۔ارشاد ہوا كد مجينك آتے جي يانبيں؟ والدصاحب في فرمايا كد حفرت! يد حفك مجينكا كون سا خصوصی فن ہے۔جس کوسیکھنا ضروری ہے؟

فرمایا بان! تم اس فن سے واقف نہیں، لاؤ مجھے دو، خود مکری اٹھا کر پہلے محصلی جھلکوں سے علیحدہ کی اس کے بعد یا ہرتشریف لائے اورسٹرک کے کنارے تھوڑے تحوڑے فاصلے کے ساتھ متعین جگہوں پر چھلکے رکھ دیئے۔ ایک خاص جگہ محضلیاں

والدصاحب كے استفسار يرارشاد فرمايا: مارے مكان كے قرب و جوار ميں تمام غرباء ومساكين رہتے ہيں۔ زيادہ تر وہي لوگ ہيں جن كو تان جويں بھى بمشكل بی میسر آتی ہے اگر وہ مھلوں کے چھکے ایک جگد دیکھیں گے تو ان کو اپنی غربی کا شدت سے احساس موگا۔ بے مالیکی کی وجہ سے حسرت موگی اور اس ایڈا وہی کا باعث میں بنول گا۔ اس لئے متفرق كركے والتا ہول اور وہ بھى ايسے مقامات ير جہاں جانوروں کے گلے گزرتے ہیں یہ جھلکے ان کے کام آ جاتے ہیں۔ اور محفلیال اليي جگدر كلي بين جهال بي كھيلت كودتے بين بي ان كو بھون كر كھا ليت بين- يہ چھلکے اور محضلیاں بھی بہرحال ایک تعت ہے ان کو بھی ضائع کرنا مناسب تبیں۔ ^ل يهال بدبات بھى چين نظررىنى كى بىكدميان صاحب وكيخفية اللائتفالى خود

ك اكايرويويتدكيا تق: ص ١٠١

سیرنا فاروق اعظم رَضِیَ اللَّهُ وَقَالِلَهُ وَقَعَالِیَ اللَّهِ فَے تَعَی کھانا ترک کر دیا۔ اور فرمایا: میں اس وقت تھی کھاؤں گا جب مدینہ کے عوام تھی کھانے لکیس۔

یہ واقعہ تاریخ میں پڑھا اور سنا تھا مگر ایٹار، ہمدردی اور اخوت کے اس مقام بلند کی جیتی جاگتی تصویر حضرت میاں صاحب رَجِّعَبَرُ اللّٰهُ تَعَلَّلُنَّ بَی کی زعدگی میں نظر آئی۔

حاجت مندول کے ساتھ بھلائی وخیرخواہی:

' محضرت مفتی عزیز الرحل صاحب وَدِیجَبُدُاللَّهُ مَتَعَالِنَّ کوحِق تعالی نے جو کمالات علمی اور عملی، ظاہری اور باطنی عطا فرمائے تھے، حقیقت بیہ ہے کہ ہرایک شخص کے لئے ان کا اوراک بھی آسان شہ تھا۔ اور کوئی کیے سمجھے کہ بیہ کوئی بڑے عالم یا صاحب کرامات صوفی اور صاحب نسبت شخ ہیں جب کہ غایت تواضع کا بیعالم ہو کہ بازار کا سودا سلف نہ صرف اپنے گھر کا، بل کہ محلّہ کی بیواؤں اور ضرورت مندول کا بھی خود لاتے۔ بوجھ زیادہ ہوجاتا تو بغل میں گھڑی و بالیتے۔ اور پھر ہرایک کے گھر کا سودا مع حساب کے اس کو پہنچاتے۔ کا

بیا اوقات ایسا بھی ہوتا تھا کہ جب حضرت مفتی صاحب رَخِعَبِهُاللّهُ اَتَعَالَیُّ اَسی عورت کو ساحب! میتو آپ اسی عورت کو سودا دینے کے لئے جاتے تو وہ دیکھ کر کہتی ''مولوی صاحب! میتو آپ غلط لے آئے ہیں۔ میں نے مید چیز اتنی نہیں، اتنی منگائی تھی'' چنال چہ میفرشتہ صفت برزگ دوبارہ بازار جاتے اور اس عورت کی شکایت دور کرتے۔

تواضع اورسادگی کا بیدوصف الله تعالی نے حضرت مفتی عزیز الرحمٰن وَخِتَهِ بُالدَّالَاَ تَعَالَیْ کے جانتیں مفتی شفیح صاحب وَخِتَهِ بُالدَالاً تَعَالَیٰ کو بھی خوب عطا فرمایا تھا۔ آپ بھی اپنے علمی وعملی مقام بلند کے باوصف نہ صرف اپنا بل کہ محلّہ کے بے سہارا افراد اور عزیزوں، رشتہ داروں کا کام بھی خود کیا کرتے تھے اور آپ کو کسی کام سے عار نہ تھی۔

له مقدمه فتاوى دارالعلوم ديوبند: ١١/١

جائے گا کہ اس سے پختہ اینوں کا مکان بن جائے۔

اخلاق کر بیمانہ سے کسی کی بات کا مینے کا وہاں دستور ہی نہ تھا، بروی دل داری اور حوصلہ افزائی کے ساتھ فرمایا۔ ماشاء اللہ آپ نے کیسی عقل کی بات فرمائی۔ میرا بھی اندازہ بھی ہے۔ پانچ سال میں جتنا خرج اس پر ہو جاتا ہے استے خرج سے پخت مکان بنا کراس غم سے نجات ہو سکتی ہے۔ ہم بڈھے ہوگئے اتی عقل نہ آئی کہ آیک دفعہ ایسا کر لیتے۔ یہ کہہ کر خاموش ہوگئے۔ اس کی جو اصل حقیقت تھی اس کا اظہار اس طرح فرمایا کہ:

میرے پڑوں میں جتنے مکان ہیں سب غریبوں کے ہیں اور کیے ہیں، الیمی حالت میں میاں صاحب کیا اچھا لگنا کہ اپنا مکان پختہ بنا کر بیٹھ جاتا، پڑوسیوں کو حسرت ہوتی۔ ک

اس وقت بیراز کھلا کہ بیر حضرت کس بلند مقام پر ہیں۔ ان کے اتمال وافعال کا انداز و لگانا وشوار ہے کہ ان میں کیسے کیسے اسرار پوشیدہ ہیں۔ پڑوسیوں اور غریبوں کی رعایت ان کی خدمت جو حضرت میاں صاحب وَخِشَبَدُ اللّٰهُ تَعَالَٰنٌ کی فطرت بنی موئی تھی دوسروں کا اس کی طرف وصیان جانا بھی آسان نہ تھا۔

- در دنیا بد حال پخته آیجی خام بس سخن کوتاه باید و السلام

میں نے دیکھا کہ اس کے بعد بھی جمیشہ سالانہ یہ تکلیف برداشت کرنے کا سلسلہ جاری رہا۔ یہاں تک کہ بڑوسیوں نے اپنے مکانات پختہ بنائے تب حضرت میاں صاحب رَخِمَةِ بُالدَّالُةُ تَفَالْنَ نے بھی اینے مکان کو پختہ بنوایا۔

يدهنرت بيں جن كوسلف كانمون كها جاسكتا ہے جھنرت فاروق أظلم رَضِّوَاللَّهُ اَلَّهُ اَلْهُ عَنْهُ اللَّهِ عَنِين كے عبد خلافت ميں ايك مرتبه مدينه طيبه ميں گھی مبنگا ہوگيا۔ تو حضرت امير المومنين

ك اكارولويتدكيا تقاص المارين

بوڑھے نے ان سے پوچھا: "جی اتم کہاں رہتے ہو؟" انہوں نے کہا: "جمائی! میں کا ندھلہ میں رہتا ہوں۔"

اس نے کہا: '' وہاں مولوی مظفر حمین بڑے ولی جیں'' اور میہ کہہ کر ان کی بڑی
تعریفیں کیں، گرمولانا نے فرمایا: '' اور تو اس میں کوئی بات نہیں ہے، ہاں نماز تو پڑھ
لیتے ہیں'' اس نے کہا'' واہ میاں! تم ایسے بزرگ کو ایسا کہو؟'' مولانا رَحِّجَبَۃُ اللّٰہُ تُعَنَّاكُ تَے
نے فرمایا: '' میں ٹھیک کہتا ہوں۔'' وہ بوڑھا ان کے سر پر ہوگیا، استے میں ایک اور
مخص آگیا جو مولانا رَحِّجَبَہُ اللّٰہُ تَعَنَّلُانٌ کو جانیا تھا، اس نے بوڑھے سے کہا '' بھلے
مانس! مولوی مظفر حسین بھی ہیں'' اس پر وہ بوڑھا مولانا سے لیٹ کررو نے لگا۔

انہی مولانا مظفر صین صاحب رکھ بھی الذائا تعالیٰ کی عادت یہ تھی کہ اشراق کی ماد پڑھی کہ اشراق کی ماد پڑھی کہ اشراق کی مماز پڑھ کرمجد سے لکلا کرتے تھے اور اپنے تمام رشتہ داروں کے گھر تشریف لے جاتے جس کسی کو بازار سے چھے منگانا ہوتا اس سے بوچھ کر لا دیتے لکین اس زمانے میں لوگوں کے پاس پہنے کم ہوتے تھے، عموماً چیزیں غلے کے عوض خریدی جاتی تھیں چناں چہ آپ گھروں سے غلہ باندھ کرلے جاتے اور اس سے اشیاء ضرورت خرید کر اس تر تھ کی ۔

تحكيم الامت حضرت تفانوى رَجْهَبُ اللَّهُ تَعَالَىٰ

يهال تك كدايك مرتبي في الاسلام حضرت مولانا سيدهين احمد صاحب مدنى قدى سره في عايت شفقت كى بنايرآب سے فرمايا:

"جمائی مواوی صاحب! دارالعلوم دیوبند کے مفتی ہوگئے ہیں، اس منصب کا بھی کچھ خیال کیا کریں۔اب آپ کویٹیلی ہاتھ میں لے کر بازار من نہیں کھرنا جائے۔"

مفتی شفیع صاحب رَخِیَهُاللّهُالتَفَاكُ فرماتے ہیں: "حضرت مدنی قدس سرہ کی
اس تنبیہ پر جھے خیال ہوا کہ میں واقعۃ اس منصب کی حن تلفی تو نبیس کر رہا۔ لیکن
میرے اسا تذہ بی میں ہے کسی نے حضرت مدنی قدس سرہ سے فرمایا کہ پہلے مفتی
صاحب رَخِیَهُاللّهُ اللّهُ تَفَالِنُ (یعنی مفتی عزمیز الرحمان صاحب) کا حال بھی تو بہی تھا۔"
مار جو اس پر حضرت مدنی رَخِیمَهُاللّهُ اللّهُ تَفَالُلُ نَے تبہم فرمایا گویا فرمارہ ہوں کہ سادگی
اس پر حضرت مدنی رَخِیمَهُاللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَى مِن اللّهُ عِن کہ بھول کہ سادگی

ضعفول کے ساتھ خیرخواہی:

ہیں۔اس کئے قدرے احتیاط کی ضرورت ہے۔

حضرت مولانا مظفر حسین کا ندهلوی رَجِّمَیمُالدَّالُاتَعَالِیُ کا شار بھی اکابر دیوبند یس ہوتا ہے۔ان کے علم وضل کا اندازہ اس سے لگایا جا سکتا ہے کہ وہ حضرت شاہ محمد الحق صاحب رَجِّعَیمُالدُّالَاتَعَالَٰتَ کے بلاواسط شاگرد اور حضرت شاہ عبدالغی صاحب محدث دبلوی رَجِّعَیمُالدُلَاتَعَالَٰتُ کے ہم سبق ہیں۔ وہ ایک مرتبہ کہیں تشریف لے جا رہے تھے کہ راستہ میں ایک بوڑھا ملا جو بوجھ لئے جا رہا تھا، بوجھ زیادہ تھا اور وہ ہشکل چل رہا تھا۔ حضرت مولانا مظفر حسین صاحب رَجِّعَیمُالدُلُاتُعَالَٰتُ نے بیال دیکھا تو اس سے وہ بوجھ لے لیا اور جہاں وہ لے جانا چاہتا تھا وہاں پہنچا دیا۔اس

> له الارديوندكياتة ال ١٥٠٠ - (بنك العبارات

حضرت والا خانقاه میں فجر کی سنتیں پڑھ رہے تھے ای دوران اطلاع ہوئی۔ حضرت والا نے فورا نیت توڑ دی اور گھر تشریف لے جا کر ان کی تمار داری فرمائی۔ جب سب ضروری انتظامات فرما کچکے اس وقت واپس تشریف لا کر نماز فجر ادا کی۔ الی حالت میں نیت توڑ دینا شرعاً واجب تھا۔ لا

سبحان الله! کیا ادائے حقوق اور حفظ حدود ہے ورنہ زاہدانِ خشک تو نماز تو در کنار ایسے مواقع پر وظیفہ بھی چھوڑنا خلاف زہر سجھتے ہیں جو سراسر حدود شرعیہ سے سجاوز ہے۔ سع

ایک مرتبہ یہ بھی فرمایا کہ بیں اس لئے بھی دینی کاموں کو مختلف جگہوں میں تقسیم کرتا رہتا ہوں کہ بیں حاصد مدند ہو۔ کہ است کرتا رہتا ہوں کہ میں چاہتا ہوں کہ میرے مرنے کا بھی کسی کوصد مدند ہو۔ کہ است کام ایک ساتھ بند ہوگئے۔ بیس تو مسلمانوں کی اتنی تکلیف بھی گوارا نہیں کرتا کہ کوئی میرے مرنے کا بھی افسوس کرے گوشی افسوس تو قبضہ سے باہر ہے۔

مفتى شفيع صاحب رَحِيمَبُهُ اللَّالُهُ تَعَالَكُ كَى اولاد كومشفقانه تصيحت

حضرت مولا نامفتى رفيع عثاني والمنت بركاته بالية فرمات بين:

ایک مرتبہ ہم سارے بہن بھائی اپ والدصاحب وَخِمَبُهُ اللّهُ الّهُ كاردگرو بعض اور ہم سات اور ہمی ہم۔ برا خوشگوار ماحول جمع مقاد بہن بول رہے ہے بھی وہ اطائف سناتے اور ہمی ہم۔ برا خوشگوار ماحول تھا۔ جب بنس بول چکو فرمایا کہ اب ایک کام کی بات سنواور ہم سب بھائیوں کو بعض کرکے فرمایا تہماری ماں کوتم سے ایک شکایت ہے وہ جس سے کام کو کہتی ہے وہ دوسرے پر وال دیتا ہے اور وہ ہے چاری پریشان رہتی ہے اور کہتی ہے کہم نے اپ دوسرے پر وال دیتا ہے اور وہ ہے چاری پریشان رہتی ہے اور کہتی ہے کہم نے اپ منافع ایک انتہاء کورٹ فرائع اللّه اللّه وَلَمُ اللّه وَلَمُ اللّه وَلَمُ اللّه وَلَمُ اللّه وَلَمُ اللّه اللّه وَلَمُ اللّه وَلَمُ اللّه وَلَمُ اللّه وَلَمُ وَلَمْ اللّه وَلّمُ اللّه وَلَمْ اللّه و

بیٹوں کوشنمرادہ بنا رکھا ہے۔ ان کے دماغ خراب کر دیئے ہیں، بازار سے دودھ وہ بی لانے کے لئے برتن لے جاتے ہوئے شرماتے ہیں، پہلے تو میں سجھتا تھا کہ بیتمہاری مستی کی وجہ سے ہے، مگر جب سے تمہاری مال نے بیشکایت کی تو ججھے افسوی ہوا۔ سب سے پہلے والدصاحب رَخِحَیَهُ اللّٰهُ تَعَالٰتٌ نے مال کی خدمت کے بارے میں جو احادیث وفضائل ہیں وہ بیان فرمائے۔

پھر فرمایا: میرے اور اللہ کے درمیان ایک راز تھا جو بھی بھی کسی پر ظاہر نہیں کیا۔ آج تمہاری خاطر وہ راز کھول رہا ہوں اور تمہیں اپنے دو واقعے سناتا ہوں۔

ایک واقعہ بیسنایا کہ دیوبند میں ہمارا گھر خریب جولا ہوں کے محلے کے بالکل برابر تھا۔ آگے ہندووں کا محلہ تھا پھر مبجد آتی تھی، وہاں ہندووں کا ایک کنواں تھا جس سے لوگ پانی بجر کے گھر لے جاتے تھے۔ ایک ون حضرت والد صاحب وَخِيَةِ بُاللَّا اَتَّالَٰ فَجُر کی نماز کے لئے نظارہ ویکھا کہ ایک بڑھیا پانی کا گھڑا اٹھائے آری تھی اور حضرت نماز فجر کے لئے مجد جارہ تھے۔ اس نے گھڑا زمین پر رکھا اور تھک کر اوھر اُدھر و کیھنے لگی کہ کوئی میرا یہ گھڑا اُٹھوا وے۔ فرماتے ہیں: میں نے اور تھک کر اوھر اُدھر و اچھا خاصا وزنی تھا۔ فرمایا کہ بڑی شرم ہی آئی کہ اُٹھا کہ واپس ای ضعیف بڑھیا کی کا ندھوں پر رکھوا دوں۔ وہ گھڑا میں نے اپنے کا ندھے پر رکھا اور کہا: امال مجھے اپ کا ندھے پر رکھا اور کہا: امال مجھے اپ گھر کا راستہ بناؤ میں بہنچا کرآتا ہوں۔ چناں چے وہ بڑھیا آگے اور مفتی اعظم سر پر گھڑا اُٹھائے چھے بیچے، اس کے گھر بین کر جہاں اس نے آگے اور مفتی اعظم سر پر گھڑا اُٹھائے چھے بیچے، اس کے گھر بین کر جہاں اس نے آگے اور مفتی اعظم سر پر گھڑا اُٹھائے جھے بیچے، اس کے گھر بین کر جہاں اس نے کہا حضرت نے گھڑا رکھ ویا اور واپس جلے آگے۔

فرماتے تھے کہ جب میں واپس آیا تو وہ الی زور زور ہے دل کی گرائیوں ہے دین و دنیا کی جملائی کی دعائیں دے رہی تھی کہ میں دور تک چلا آیا مگراس کی آوازیں آتی رہیں۔ میں نے سوچا کہ بیاتو بڑے نفع کا سودا ہے چند لحوں میں اتن ساری اور اتنی پرخلوس وعائیں مل جاتی ہیں۔ اگلی صبح میں پھر کنویں کے پاس پہنچا تو ساری اور اتنی پرخلوس وعائیں مل جاتی ہیں۔ اگلی صبح میں پھر کنویں کے پاس پہنچا تو ساری اور اتنی پرخلوس وعائیں مل جاتی ہیں۔ اگلی صبح میں پھر کنویں کے پاس پہنچا تو

تھا۔ اور پھر ساری عمر ان کو اسی قلی کے بارے بیں علم نہ ہوسکا۔ بیدراز اللہ کے اور میرے علاوہ کسی کومعلوم نہ تھا آج تہمیں سمجھانے کے لئے ظاہر کرنا پڑا۔ ا

رشته دارول کےساتھ صلدرمی و مدردی

تمام انسان آپس میس رشته دارین:

حقوق کی ادائیگی سکون کا ذر بعہ ہے:

جو قریب ترین رشتہ دار ہوتے ہیں۔ جن کوعرف عام میں رشتہ دار سمجھا جاتا ہے۔ جیسے بھائی، بہن، چچا، تایا، بیوی، شوہر، خالہ، مامول، باپ اور مال — ان رشتہ داروں کے کچھے خاص حقوق اللہ تعالی نے مقرر فرمائے ہیں۔ اور ان حقوق کی ایک بڑی وجہ یہ بھی ہے کہ اگوان رشتہ داروں کے حقوق صحیح طور اوا کئے جائیں آو اس کے بیٹری وجہ یہ بھی ہے کہ اگوان رشتہ داروں کے حقوق صحیح طور اوا کئے جائیں آو اس کے بیٹری اور کے بیٹری اور پرسکون ہو جاتی ہے۔ بیلا ائی اور جھرے بینفریش اور عادتیں، بیہ مقدمہ بازیاں، بیسب ان حقوق کو پامال کرنے کا بیجہ ہوتی ہیں۔ اگر ہر

ك اصلاحي تفريرين: ١٠/٣

دیکھا کہ وہ کنویں میں ڈول ڈال رہی تھی۔ میں نے سوچا کہ میں پانی مجر دول، پھر پانی مجر کرای جگہ چھوڑ آیا، پھر وہی دعائمیں ملیں۔اس کے بعدے بیعزم کرلیا کہ جب تک بید زندہ ہے یا میں زندہ ہول تو بیام روز کروں گا۔ چنال چہاس کے بعد جب تک وہ زندہ رہیں بھی ناغر نہیں ہوا۔

🕜 دوسرا وافقد میسنایا که تصاند بھون کا ریلوے آئیشن ننگ و تاریک اور بالکل ویران ساتھا۔ لے وے کر آیک ہی گاڑی آئی تھی اور میں نے تھیم الامت حضرت تھانوی رَجْهَيْهُ النَّانُ تَغَالَتْ كوايية آن كى اطلاع كرركى تقى، جب مين كارى سائيش ير اترا تو رات کی تاریکی میں قلی قلی کی آواز آئی مگر وہاں تو قلی کا سوال ہی ند تھا۔ جھے اندھرے میں کچھ سائے نظر آئے، معلوم ہوا کہ آواز لگانے والے کے ساتھ عورتیں بھی ہیں۔ انہوں نے بہت آ وازیں دیں، مگر جب کوئی قلی نہ آیا تو ان کی آ واز میں گھراہٹ محسوس ہونے لگی۔ میں نے سوچا کہ سردی کی راتیں ہیں۔سامان بھی ہے اور اہل خانہ بھی ہیں۔ میں نے جو مزید توجد کی تو معلوم ہوا کہ بیصاحب تو حضرت تفانوی رَجِهَبُدُاللَّهُ تَعَالَكُ کی خدمت میں حاضر ہوا کرتے ہیں اور ہم دونوں ایک دوسرے کو جانتے بھی ہیں۔ اگر جا کر کھوں کہ میں بیسامان اُٹھا لوں تو وہ اُٹھانے نہیں ویں گے۔ جب انہوں نے آخری مرتبدانتہائی تھبراہٹ ہے آواز لگائی تو جھے ایک ترکیب سوچھی، میرے پاس ایک جادر تھی۔ میں نے اے مند پر لپیٹ لیا اور قلیوں کا ساحلیہ بنا کر کہا کہ قلی آگیا ہے۔انہوں نے ایک صندوق اٹھایا اور میرے سر برر که دیا۔ مجھے اندیشہ ہوا کہ کہیں گردن ہی ندمر جائے، وہ دوسرا سامان بھی رکھتے لگے تو میں نے کہا صاحب بس دوسرا کوئی چھوٹا سامان میرے ہاتھ میں دے دو۔ پھر میں ان کے آ گے آ گے چلا کہوہ مجھے پہیان نہ سکیس بہاں تک کرستی آگئ۔ میں نے ان كے مطلوب كريس سامان ركھا۔ انہوں نے كہا باہر تشہرو، كيكن ميں چلا آيا۔ اسكلے دن مجلس میں ان صاحب سے ملاقات ہوئی لیکن انہیں معلوم شاتھا کدرات کا تلی کون

شخص اپنے اپنے رشتہ داروں کے حقوق ادا کرے تو پھر بھی کوئی جھڑا اور کوئی لڑائی نہ ہو، بھی مقدمہ بازی کی نوبت نہ آئے ۔۔۔ اس لئے اللہ تعالیٰ نے خاص طور پر بیہ عظم دیا کہ اگر تم ان حقوق کو ادا کرو گے تو تمہاری زندگی پرسکون ہوگئ ۔۔۔ 'خاندان' کمی بھی معاشرے کی بنیاد ہوتی ہے، اگر 'خاندان' متحد نہیں ہے اور خاندان' متحد نہیں ہے اور خاندان والوں کے درمیان آپس میں جیس نہیں ہیں، آپس کے تعلقات درست نہیں خاندان والوں کے درمیان آپس میں جیس نہیں ہیں، آپس کے تعلقات درست نہیں کی خاندان کی اندراس کی اندراس کی فیاد ہوتی ہے، اور پورے معاشرے کے اندراس کی فیاد ہوتی ہے۔ اس وجہ سے اللہ اور ساتھ اچھا کہ اللہ کے رسول بی نیاز ہوئی ہے۔ اس وجہ سے اللہ اور ساتھ اچھا کہ ساتھ داروں کے حقوق ادا کرنے اور ان کے ساتھ اچھا سلوک کرنے کا خاص طور پر حکم دیا ہے۔

الله کے لئے اچھاسلوک کرو:

ویسے تو ہر مذہب بیں اور ہر اخلاقی نظام بیں رشتہ داروں کے حقوق کی رعایت
کا سبق دیا گیا ہے، اور ہر مذہب والے یہ کہتے ہیں کہ رشتہ داروں کے ساتھ اچھا
سلوک کرو لیکن حضور اقدس نبی کریم ﷺ نے ان حقوق کے بارے ہیں ایک
ایسااصول بیان فرمایا ہے جو تمام دوسرے مذاہب اور اخلاقی نظاموں سے بالکل ممتاز
اور الگ ہے۔ اگر وہ اصول ہمارے دلوں ہیں بیٹے جائے تو پھر بھی بھی رشتہ داروں
اور الگ ہے۔ اگر وہ اصول ہمارے دلوں ہیں بیٹے جائے تو پھر بھی بھی رشتہ داروں
اور الگ ہے۔ اگر وہ اصول ہمارے دلوں ہیں بیٹے جائے تو پھر بھی ہمی رشتہ داروں
اور الگ ہے۔ اگر وہ اصول ہمارے دلوں ہیں بیٹے جائے تو پھر بھی ہمی ہمی ساتھ داروں
اوسول بیہ ہے کہ جب بھی ان کے ساتھ اچھا برتا کیا اچھا سلوک کروتو بیکام ان کوخوش
کرنے سے زیادہ اللہ تعالیٰ کوخوش کرنے کے لئے کرو۔ یعنی رشتہ داروں ہے ساتھ اچھا سلوک کر رہا ہوں ،
اچھا سلوک کرتے وقت بیزیت ہوئی چاہئے کہ بیالٹہ تعالیٰ کا حکم ہے اور اس کم لازی نمتیجہ
اللہ تعالیٰ کو راضی کرنا مقصود ہے ، اللہ تعالیٰ کی خوش نودی کی خاطر بیسلوک کر رہا ہوں ،
جب انسان اللہ تعالیٰ کی خوش نودی کی خاطر اچھا سلوک کرے گا تو اس کا لازی نمتیجہ

یہ ہوگا کہ وہ اپنے رشتہ داروں ہے کسی'' بدلے' کی تو قع نہیں رکھے گا۔ بل کہ اس کے ذہن میں یہ ہوگا کہ میں تو اللہ تعالیٰ کو راضی کرنے کے لئے ان کے ساتھ اچھا سلوک کر رہا ہوں، میرے اچھے سلوک کے متیج میں یہ رشتہ دارخوش ہو جائیں، اور میراشکر یہ اداکریں، اور کوئی بدلہ دیں تو وہ ایک نعت ہے، لیکن اگر وہ خوش نہ ہوں، اور بدلہ نہ دیں تو بھی مجھے ان کے ساتھ اچھا سلوک کرنا ہے، مجھے اپنا وہ فریضہ انجام دینا ہے جو میرے اللہ نے میرے میروکیا ہے۔

شكرىياور بدلے كا انتظارمت كرو:

رشتہ داروں کے حقوق ادا کرنے کے بارے میں برمحض بیر کہتا ہے کہ بید حقوق ادا کرنا اچھی بات ہے، میدهقوق ادا کرنے جائیس کیکن سارے جھڑے اور سارے فساديبان سے پيدا ہوتے ہيں كہ جب رشتہ دار كے ساتھ اچھا سلوك كراليا تواب آب اس امیداور انتظار میں بیٹھے ہیں کداس کی طرف سے شکر بیادا کیا جائے گا۔ اس کی طرف ہے اس حسن سلوک کا بدلد ملے گا، اور اس انتظار میں ہیں کدوہ میرے حسن سلوک کے بارے میں خاندان والول میں جرحیا کرے گا، اور میرے کن گائے گا لیکن آپ کی بیدا مید بوری ند جوئی، اس نے نداو شکر بیدادا کیا، اور ند بی بدلد دیا، تو اب آپ کے ول میں اس کی طرف سے برائی آگئی کہ ہم نے اس کے ساتھ ایسا سلوك كيا،ليكن اس في بلث كريوجها تك نبين،اس كى زبان يربهي "شكرية" كالفظ بی نہیں آیا، اس نے تو بھی بدلد بی نہیں دیا۔ اس کا متجد سد ہوا کہ آپ نے اس کے ساتھ جوسن سلوک کیا تھااس کے ثواب کو ملیامیٹ کردیا۔ آپ اپ ول میں اس کی طرف سے برائی لے کر بیٹھ گئے، اور آئندہ جب بھی حن سلوک کرنے کا موقع آئے گا تو آپ بیسوچیں گے کہ اس کے ساتھ صن سلوک کرنے سے کیا فائدہ اس کی زبان پرتو بھی مشکریے کا لفظ بھی تہیں آتا، میں اس کے ساتھ کیا اچھائی کروں۔

ہمیں رسمول نے جکڑ لیاہے:

آج جب بھی سی محض سے یو چھا جائے کدرشتہ داروں کا بھی پچھوٹ ہے؟ ہر ایک ہم میں سے یہی جواب دے گا کدرشتہ داروں کے بہت حقوق ہیں۔ کیکن کون محض ان حقوق کوئس درجے میں کس طرح ادا کررہا ہے، اگر اس کا جائزہ لے کر ویکھیں تو پہ نظر آئے گا کہ ہمارے سارے معاشرے کورسموں نے جکڑ کیا ہے، اور رشتہ داروں سے جوتعلق ہے وہ صرف رسموں کی ادائیگی کی حد تک ہے اس سے آگے کوئی تعلق نہیں۔ مثلاً اگر کسی کے گھر شادی بیاہ ہے تو اس موقع پراس کوکوئی تحذ دیے کو دل نہیں جاہ رہا ہے، یا دینے کی طاقت نہیں ہے تو اب میسوچ رہے ہیں کداگر تقريب ين خالى باته يل مح تو برا معلوم موكار چنال چداب باول ناخوات اس خیال سے تحد دیا جارہا ہے کہ اگر نہ دیا تو ناک کٹ جائے گی، اور خاندان والے کیا كہيں كے اور جس كے يہاں شادى جو ربى ہے وہ يد كھے كا كدہم في تواس كى شادی میں میتحفد دیا تھا، اور اس نے جمیں کچھ نددیا۔ چناں چدمیتحفد ول کی محبت سے نہیں دیا جارہا ہے بل کدرہم پوری کرنے کے لئے نام وخمود کے لئے دیا جا رہا ہے، جس كا نتيجه ميه بوا كه اس تخنه دينے كا ثواب تو ملائبيں، بل كه بنام ونمودكي نيت كي وجه ے اُلٹا گناہ ہوگیا۔

تقریبات میں "نیونہ" دیناحرام ہے:

ایک رسم جو ہمارے معاشرے میں پھیلی ہوئی ہے، کی علاقے میں کم اور کمی علاقے میں کم اور کمی علاقے میں زیادہ ہے، وہ ہے ''نیونڈ' کی رسم ۔ تقریبات میں لینے دینے کی رسم کو ''نیونڈ' کہا جاتا ہے، ہرایک کو یہ یاد ہوتا ہے کہ فلال شخص نے ہماری تقریب کے موقع پر کتنے ہیے دیئے تھے، اور میں کتنے دے رہا ہوں۔ بعض علاقوں میں تو تقریبات کے موقع پر با قاعدہ فہرست تیار کی جاتی ہے کہ فلال شخص نے استے ہیے تقریبات کے موقع پر با قاعدہ فہرست تیار کی جاتی ہے کہ فلال شخص نے استے ہیے

چناں چہ آئندہ کے لئے اس کے ساتھ حسن سلوک کرنا جھوڑ دیا، اوراب تک جواس کے ساتھ حسن سلوک کیا تھا، اس کا ثواب بھی اکارت گیا۔ اس لئے کہ اب تک بھی اس کے ساتھ جو حسن سلوک کیا تھا، وہ اللہ کے لئے نہیں کیا تھا بل کہ وہ تو ''شکریہ'' اس کے ساتھ جو حسن سلوک کیا تھا۔ اس لئے حضور نبی کریم شین تھا تھا نے فرمایا: جب کسی اور ''بدلہ'' لینے کے لئے کیا تھا۔ اس لئے حضور نبی کریم شین تھا تھا نے فرمایا: جب کسی کے ساتھ حسن سلوک کرو تو صرف اللہ کو راضی کرنے کے لئے کرو، اس خیال سے مت کرو کہ یہ میرے ساتھ بھی بدلے میں حسن سلوک کرے گا، یا میرا شکرید ادا کرے گا۔

صلدرمی کرنے والاکون ہے؟

ایک حدیث جو بمیشد یادر کھنی جائے۔وہ یہ کہ حضور اقدس ﷺ نے ارشاد فرمایا:

"لَيْسَ الْوَاصِلُ بِالْمُكَافِيُ لَكِنِ الْوَاصِلُ الَّذِي إِذَا قُطِعَتْ رَحْمُهُ وَصَلَهَا." لَهُ

لیعنی وہ شخص صلہ رحی کرنے والانہیں ہے جوابے کسی رشتہ دار کی صلہ رحی کا بدلہ
دے کہ دوسرا رشتہ دار میرے ساتھ جتنی صلہ رحی کرے گا ہیں بھی اتن ہی صلہ رحی
کروں گا، اور اگر وہ صلہ رحی کرے گا تو ہیں بھی کروں گا، اگر وہ نہیں کرے گا تو ہیں
بھی نہیں کروں گا، ایراشخص صلہ رحی کرنے والانہیں ہے۔ اس کوصلہ رحی کا اجروثواب
نہیں طے گا، بل کہ صلہ رحی کرنے والاحقیقت ہیں وہ شخص ہے کہ دوسرا تو اس کا حق
ضائع کر رہا ہے، اور اس کے ساتھ قطع تعلق کر رہا ہے، لیکن میشخص حقیقت ہیں صلہ
کی رضا جوئی کی خاطر اس کے ساتھ اچھا معاملہ کر رہا ہے، میشخص حقیقت ہیں صلہ
رحی کرنے والا ہے اور صلہ رحی کے اجروثواب کا مستحق ہے۔

ك بخارى، كتاب الادب، باب ليس الواصل بالمكافى، رقم: ٩٩١٥

(بایک(بیالی(ب

اندر میں بھی شریک ہوجاؤں، اور ہریددینے ہے'' بدلۂ' اور نام نمود اور دکھاوا پیش نظر نہیں ہے، بل کہ اپنی رشتہ واری کا حق اوا کرنا ہے اور اللہ کو راشی کرنا ہے تو اس صورت میں تخد دینا اور پیسہ دینا اجر وثواب کا باعث ہوگا، اور بیہ تخفے اور پیسے صلہ رحی میں لکھے جائیں گے۔ بشرطیکہ ہدید دینے ہے اللہ تعالیٰ کوراضی کرنا مقصود ہو۔ میں لکھے جائیں گے۔ بشرطیکہ ہدید دینے ہے اللہ تعالیٰ کوراضی کرنا مقصود ہو۔

مقصد جانجنے كاطريقه:

اس کی پیچان کیا ہے کہ ہدیدوے سے اللہ کوراضی کرنامقصود ہے یا "بدلہ" لینا مقصود ہے، اس کی پہچان میر ہے کہ اگر ہدید دینے کے بعد اس بات کا انتظار لگا ہوا ہے کہ سامنے والا مختص اس کاشکر میدادا کرے، اور کم از کم بلیث کراتنا تو کہدوے آپ کا بہت بہت شکر ریو، یا اس بات کا انتظار ہے کہ جب میرے گھر کوئی تقریب ہوگی تو بہ تقریب کے موقع پر کوئی بدیہ تحذ پیش کرے گا، یا اگر بالفرض تمہارے ہاں کوئی تقریب ہوتو وہ کوئی ہدیتھندلائے تو اس وقت تمہارے دل پرمیل آ جائے اوراس کی طرف ے مہیں شکایت ہو کہ ہم نے تو اتنا دیا تھا، اور اس نے تو کھے بھی نہیں ویا، یا ہم نے زیادہ دیا تھا، اور اس نے ہمیں کم دیا ہے۔ بیسب اس بات کی علامت جي كداس دين مين الله تعالى كى خوش نودى مقصود تيس تقى البندا ديا مجى ، اوراس كو ضائع بھی کر دیا،لیکن اگر ہدیہ دینے کے بعد ذہن کو فارغ کر دیا کہ چاہے میراشکریہ اداكرے ياندكرے، ميرے يهال تقريب كے موقع پر جاب دے يانددے، ليكن مجھے اللہ تعالی نے ویے کی توفیق دی تو میں نے اللہ تعالیٰ کو راضی کرنے کے لئے اینے رشتہ داروں کی خوشی کے موقع پر اس کی خدمت میں ہدیہ پیش کر دیا، نہ تو مجھے شكريهكا انظار ب، اورنه بدلے كا انظار ب، اگر ميرے كھر ميں تقريب كے موقع یر سے کچھ ندوے تو مجھی میرے ول پرمیل نہیں آئے گا، میرے دل میں شکایت بیدا تہیں ہوگی تو بیاس بات کی علامت ہے کہ بد بدیداللہ تعالیٰ کی رضا مندی کی خاطر دیا

و کے، قلال شخص نے استے پھے دیے، پھراس فبرست کو محفوظ رکھا جاتا ہے، اور پھر جس شخص نے پھے و تے ہیں، اس کے گھر جب کوئی شادی بیاہ کی تقریب ہوگی تو اب بیضروری ہے کہ جتنے پھے اس نے دیے تھے، استے پھے اس کی تقریب ہیں دینا لازم اور ضروری ہے۔ چاہے قرض لے کر دے، یا اپنا اور اپنے بچول کا پیٹ کاٹ کر دے، یا بینا اور اپنے بچول کا پیٹ کاٹ کر دے، یا چوری اور ڈاکہ ڈال کر دے، لیکن دینا ضرور ہے، اگر فیس دے گا تو بیاس معاشرے کا بدترین مجرم کہلائے گا۔ اے"نیوت' کہا جاتا ہے۔ دیکھے اس میں سے معاشرے کا بدترین مجرم کہلائے گا۔ اے"نیوت' کہا جاتا ہے۔ دیکھے اس میں سے پھے صرف اس لئے دیئے جارہے ہیں کہ میرے گھر میں جب تقریب کا موقع آئے گاتو وہ بھی دے جارہے ہیں بیر ترام تعلی پیسے مرف اس کئے دیئے جارہے ہیں بیر ترام تعلی گاتو ہیں، قرآن کریم نے اس کے لئے"ر بوا' کا لفظ استعال فرمایا ہے۔ چنال چہ فرمایا:

﴿ وَمَا اَتَنْهُ مُر مِنْ ذَیْلُو فَا فَیْ اَمُوالِ النَّاسِ فَالاَ یَوْلُولُ

ادم الوگوں کو نیونہ کے طور پر جو پچھ ہدید یا تخذ دیتے ہو (لیکن اس خیال سے دیا کہ وہ میری تقریب پریا تو اتنا ہی وے گا، یا اس سے زیادہ دے گا) تا کہ اس سے مال کے اندراضافہ ہو، تو یا در کھو کہ اللہ کے نزویک اس میں کوئی اضافہ نہیں ہوگا، اور جو زکوۃ یا صدقہ تم اللہ کی رضا مندی کی نیت سے دیتے ہوتو اللہ تعالی ایسے لوگوں کے مال میں چندور چنداضافہ فرماتے ہیں۔"

تحفد ك مقصد ك تحت ديا جائى؟

لہذا اگر کسی شخص کے ول میں خیال آیا کہ میرے ایک عزیز کے یہاں خوشی کا موقع ہے، میرا ول چاہتا ہے کہ میں اس کوکوئی ہدیہ پیش کروں، اور اس کی خوشی کے

> له سورة الروم: ٢٩ منك ألع المرامد

رشتے داروں کا معاملہ معمولی نہیں، رشتے داروں کرزبروست حقوق ہیں اور ان کی اداری کے زبروست حقوق ہیں اور ان کی ادائیگی کا اجر و اتواب بھی بہت زیادہ ہے۔ لیکن افسوس کہ آج کل اس کی طرف دھیان بہت کم دیا جاتا ہے۔ جہاد، تبلیغ، علم دین، جج اور عمرے دغیرہ کے فضائل خوب سنتے کو طبتے ہیں لیکن صلد رحمی اور رشتے داروں کے حقوق کا بیان شاذ و نادر، بی سنتے میں آتا ہے۔ نتیجہ بیہ ہے کہ اس معاطے میں بہت غفلت پائی جاتی ہے۔ سلھ

دوسروں كوتكليف سے بچانے كا اتنا أہتمام!!!

ہمارے والدِ ماجد حضرت مفتی شفیع صاحب رَجِّوبَہُالاَلُاکَتَفَاكُ اپنی زندگی کے آخری چارسال صاحب فراش رہے، دل کی تکلیف تھی، ہمارے دو بڑے بھائی شہر میں رہتے تھے۔ اس زمانے میں بھی اتوار کی چھٹی ہوتی تھی۔ ان کا معمول تھا کہ وہ اپنی بیوی بچوں کو لے کر ہراتوار کو طف آیا کرتے تھے۔ ہمارے والدین ہفتہ بجران کی انظار میں رہتے، اور اتوار کے دن تو دھیان بالکل ای طرف لگا رہتا۔ شام کے ارتظار میں رہتے، اور اتوار کے دن تو دھیان بالکل ای طرف لگا رہتا۔ شام کے قریب آیا کرتے تھے۔ عصر کے بعد والد صاحب کی نظری دروازے پر ہوتیں۔ پانچ منٹ بھی دیر ہوتو انہیں مشکل محسوں ہوتی تھی۔ جب وہ آجاتے تو ہمارے گھر میں عید کا سان ہو جاتا۔ سب خوش ہوتے، مبنتے بولئے، والد صاحب کے پاس میں عید کا سان ہو جاتا۔ سب خوش ہوتے، مبنتے بولئے، والد صاحب کے پاس میں عید کا سان ہو جاتا۔ سب خوش ہوتے، مبنتے بولئے، والد صاحب کے پاس میں عید کا سان ہو جاتا۔ سب خوش ہوتے، مبنتے بولئے، والد صاحب کے پاس میں عید کا سان ہو جاتا۔ سب خوش ہوتے، مبنتے بولئے، والد صاحب کے پاس

میمی وہ رات کورہنے کے ارادے سے آتے ، کبھی صرف رات کا کھانا کھا کر واپس جانے کے ارادے سے آتے اور کبھی کھانا کھائے بغیر ہی واپس جانے کا پروگرام ہوتا تھا۔ مگر جو پچھ بھی ہوتا تھا پہلے سے طے ہوتا تھا۔

ایک مرتبہ آئے ہوئے تھے اور پروگرام کھانا کھانے کا نہیں تھا، رہنے کا بھی نہیں تھا۔ رہنے کا بھی نہیں تھا۔ مغرب کے بعد جانے کا تھا۔ ہم دونوں بھائی، میں (مفتی رفیع عثانی

له اصلاحی تقریرین: ٥/١٠٥/٥

گیا ہے، یہ ہدیدویے والے اور لینے والے دونوں کے لئے مبارک ہے۔ اس حضرت مفتی رفیع عثانی صاحب مدظلہ فرماتے ہیں: الحمد لللہ بم فے والمدِ ماجد رَجِّحَةِ بُرَاللَّہُ تَغَالَٰنٌ کا یم لل ویکھا کہ وہ اپنے رشتہ داروں کا خاص خیال رکھتے تھے۔ ان کی دو بہنیں ہیوہ تھیں اور دونوں بہنوں کی کافی اولا دہمی ۔ ان بہنوں اور ان کی اولا دکی کفالت والد صاحب رَجِّحَةِ بُراللَّہُ تُغَالَٰنٌ کیا کرتے تھے۔ والدہ (یعنی ہماری دادی) بھی ہیوہ تھیں، ان کی کفالت بھی انہی کے ذمہ تھی اور ہم ماشاء اللہ نو بہن بھائی تھے۔ والد اور والدہ ما کر گیارہ آدی گھر کے تھے۔ بارہ ویں دادی جان تھیں۔ دو بہنوں اور ان کی اولا دکی خالت کا مسئلہ بھی تھا۔ تبخواہ کیا تھی؟ دارالعلوم ویو بندگی مازمت کے ان کی اولا دکی کا خالت کا مسئلہ بھی تھا۔ تبخواہ کیا تھی؟ دارالعلوم ویو بندگی مازمت کے آخری زمانے بیں ساٹھ رویے تنخواہ تھی۔

و حضرت مفتی شفیع صاحب رَجِنجیبالدّائر نقالی جب جعد کی نماز کے لئے جاتے تھے تو نماز سے فارغ ہوکر کھل لینے اوراس بہن کے گھر جاتے جو دیوبندیس رہتی تھیں (دوسری بہن کسی اور شہر میں رہتی تھیں) اور ان کے ہاں کھل دے کر آیا کرتے تاکہ بینم بچوں کوموسم کے کھلوں کی کی محسوس نہ ہواور دوسری بہن کے ہاں مختلف اوقات میں رقم بجواتے دہتے۔ پاکستان آنے کے بعد بھی ان کا یہ معمول جاری رہا۔ اس کے علاوہ ہندوستان میں رہائش پذیرا پے نتھیال ماموں زاد بھائی اور خالہ زاد بھائی اور خالہ نور بھی تھے۔ اور جب قانونی طور پر یہاں سے روبیہ بھینے پر پابندی لگ گئی تو دوسرے ملکوں کے در ہے۔ قالہ ذار بھائی بھور تی میاں سے روبیہ بھینے پر پابندی لگ گئی تو دوسرے ملکوں کے ذریعے جیجے تھے۔ ان میں سے بعض ایسے بھی تھے کہ ان کے بارے میں یہ معلوم ہوا در ہے گئی تو دوسرے ملکوں کے کہ ان کا گھر گر چکا ہے اور ان کے بارے میں یہ خدشہ بھی تھا کہ اگر آئیس مرمت کہ ان کا گھر گر چکا ہے اور ان کے بارے میں یہ خدشہ بھی تھا کہ اگر آئیس مرمت کہ ان کے گھر کی مرمت کرا دو۔

ك اصلاحي خطبات: ۱۷۸/۸ تا ۱۸۵

(بين البياران)

صاحب) اورمولانا تقی عثانی صاحب، اپنج بڑے بھائیوں کے سر ہوگئے کہ ہم نہیں جانے ویں گے۔ آج رات آپ بہیں رہیں یا کم از کم کھانا کھا کر جائیں۔لیکن وہ جانا جاہ رہے تھے۔

ہماری یہ باتیں والدصاحب وَ اِیْجَابُهُ اللّٰهُ تَعَالَیْ مَن رہے تھے جو برابر کے ایک کرے میں تھے۔ انہوں نے مجھے اور مولا ناتقی عثانی صاحب کوعلیحدگی میں بلایا اور فرمایا: تم تو انہیں رکنے پر اصرار کر رہے ہو۔ تم نے اپنی اپنی ہیویوں سے پوچھ لیا ہے یا نہیں کہ کیا ان کے پاس استے آدمیوں کے کھانے کا انظام ہے؟ ہم نے عرض کیا کہ ہم نے تو نہیں پوچھا۔ فرمایا کہ تمہاری تو زبان بلے گی۔ ساری مشقت تو تمہاری ہویوں پر پڑے گی۔ اگر انہوں نے پہلے سے تیاری نہیں کر رکھی تو انہیں پر بیشانی ہوگی، انہیں روکنے سے پہلے تہمیں یہ بات ویکھنی چاہئے تھی کہ آپ کی ہویاں آسانی اور خوشی سے ان کے کھانے کا انظام کر سکیں گی یا نہیں۔ ایسا سبق وے گئے کہ المحدید، اب وہ بھیت یا در بہتا ہے۔ ظاہر ہے کہ اگر وہ رکتے تو خود انہیں کتنی خوشی ہوتی الکین ہمارے اس ملل پر ناراضگی کا اظہار کیا۔ یہ ہوتی، ہم سے کہیں زیادہ خوشی ہوتی لیکن ہمارے اس ملل پر ناراضگی کا اظہار کیا۔ یہ شریعت کی رعایتیں ہیں، جنہیں اللہ والے جانے ہیں۔ اس

خدمت كاصله

رسول اکرم طَلِقَ اللَّهِ کا ارشاد ہے: "جو دنیا میں کسی کی تکلیف دور کرے گا آخرت میں اللہ تعالیٰ اس کی تکالیف کو دور فرما دے گا۔" اور صرف ای بنیاد پر اس کی تکلیف کو دور کیا جائے گا کہ اس نے دنیا میں لوگوں کی تکلیف کو دور کیا تھا۔

ایک اور حدیث میں فرمایا گیا کہ جب کوئی مؤمن اپنے مؤمن بھائی کے کام کے لئے کوشش کرتا ہے تو اللہ تعالی اس کوجہنم سے تین خندقیں دور کر دیتے ہیں اور ہر

ع مسلم، كتاب البروالصلة، باب تحريم الظلم، رقم: ٢٥٨٠

خندق کی چوڑائی زمین آسان کے درمیان میں فاصلہ کے برابر ہے۔ ک مندق کی چوڑائی زمین آسان کے درمیان میں فاصلہ کے برابر ہے۔

اور حضرت النس دَخَوَاللَّهُ الْعَنْفَ كَبِتِ بِين كه رسول كريم الْمُلِقَافِكُمَ الْمَا فَضَافِكُمُ الْمَا فَضَافِكُمُ الْمَا فَضَافِكُمُ الْمَا فَضَافِكُمُ الْمَا فَضَافِكُمُ الْمَا فَضَافِكُمُ اللَّهُ وَمَا فَا فَصَافِلُ اللَّهُ وَمُولَ كَا وَيَا وَيَا وَيَا وَيَا وَكَا حَاجِت وضرورت كو يورا كرے اور اس سے اس كا مقصد اس كو خوش كرنا ہوتو أس في جھوكو خوش كيا اس في الله كو خوش كيا أس في الله كو خوش كيا أس في الله كو خوش كيا اس في الله كو خوش كيا أس في الله كو خوش كيا اس كو الله جنت بين داخل كرے گائے "

تَشَيِّرُ يَجَ: مسلمان كى حاجت روائى كى فضيلت كو "جامع صغير" كى روايت بلى جس كوخطيب رَخِمَيُهُ النَّالُ تَعَالَىٰ في حضرت انس رَفَعَ لَلْهُ النَّفَةُ فَالْفَقَةُ فَ فَلَى كَيا ب يول بيان كيا كيا ب كه آب مَلِيلُ مسلمان كى بيان كيا كيا ب كه آب مَلِيلُ مسلمان كى بيان كيا كيا ب كه آب مَلِيلُ مسلمان كى حاجت وضرورت كو يوراكيا تو أس كو جج وعمره كرف والصحف كو تواب كى مائند تواب مائنا ب."

اور حصرت النس رَضِحَاللاً التَّفَا الْعَنْهُ كَتِ بِين كدر سول كريم مِظْلِقَ عَلَيْنَا فَ قرمايا: "جو صحف مظلوم كى فرياد رى كرتا ہے تو اللہ تعالى اُس كے لئے تہتر بخششيں لكھ ويتا ہے اور اُن ميں ہے ايك بخشش تو وہ ہے جواس كے تمام (ونياوى و اُخروى) اموركى اصلاح كى ضامن بن جاتى بين اور باتى بہتر بخششيں قيامت كے دن اس كے درجات كى ضامن بن جاتى بين اور باتى بہتر بخششيں قيامت كے دن اس كے درجات كى بلندى كا سبب بول كى ياه "

اور حضرت انس اور حضرت عبدالله وَضَالِقَا النَّهُ وَفَوَاللَّا النَّهُ وَفُول كَتِمْ الْمِن كَهُ رسول كَرِيم طَالِقَا الْمَا اللهُ عَلَالِ اللهُ عَلَالَ مِن وَ يَكِ مُحُلُولَ مِن سَكَ مَن اللهُ عَلَالَ عَمْرُ وَ يَكِ مُحُلُولَ مِن سَلَاكُ مُرْتُ اللهُ عَلَالُ اور حسن سلوك كرے "ان مهترين وه مُحْض ہے جو خدا كے كنيہ كے ساتھ احسان اور حسن سلوك كرے "ان

له اصلاحی تقریرین: ٥/١٤٥

العرائد، البروالصلة، باب فضل قضاء الحواتج: ٢٥١/٨

ع شعب الايمان، باب الشفقة: ١١٥/٦

ت شعب الايمان، باب الشفقة: ٢٠/٦

ے نوازوں گا، تو ظاہر ہے کہ جولوگ خوداس بادشاہ کے باغی ہوں یا دوسرے قابل معافی جرائم بطور پیشہ کے کرتے ہوں، (مثلاً فتل و غارت گری، ڈاکہ زنی وغیرہ) وہ اگر رعایا کے کچھ افراد کے ساتھ بڑے ہے بڑاسلوک بھی کریں تب بھی وہ اس اعلان کی بنیاد پر بادشاہ کی محبت اور انعام کے ستحق نہیں ہوں گے، اور یہی کہا جائے گا کہ اس شاہی فرمان کا تعلق ایسے باغیوں اور پیشہ ورمجرموں سے نییں ہے۔ سا

خدمت سے کیا ملتا ہے

حضرت مولانا مین احمد مدنی وَخِهَبُرُاللَّهُ تَعَالَىٰ اللهِ استاد حضرت مولانا محودالحن وَخِهَبُرُاللَّهُ تَعَالَىٰ اللهِ استاد حضرت مولانا محدودالحن وَخِهَبُرُاللَّهُ تَعَالَىٰ کَ جمراه مالنا میں نظر بند سے ، سخت سردیوں کا موہم تھا، حضرت اللهٰ المبند وَخِهَبُرُاللَّهُ تَعَالَىٰ کا معمول تبجد میں اٹھنے کا تھا۔ حضرت مدنی عشا کے بعد لوئے میں پانی بحر لیتے اورائے زمین پر رکھ کرساری رات سجدے کی حالت میں خود اس کے اوپرسوٹ رہتے تا کہ پانی مختلہ انہ ہواور تبجد میں حضرت شِنْ البند کو اس گرم بانی ہے وضو کرواتے۔

حضرت مولانا غلام رسول بونٹوی رجم براللار تعکالی کا مقام متان ہے آ کے شجاع آباد کے علاقہ میں ایک بزرگ رہے ہیں، جن کا نام معادف الحدیث: ۱۸۸۲ ت محتوبات فقیو: ص٥٥ تینوں روایتوں کو بیمی دَرِّحَمِبُالدَلْدُاتُ تَعَالَیٰ نے شعب الدیمان بیل نقل کیا ہے۔

تینوں روایتوں کو بیمی دَرِّحَمِبُالدَلْدُاتُ تَعَالَیٰ نے بیں اور کی شخص کے متعلقین کا اطلاق اُن افراد پر ہوتا ہے جن کی پرورش، جن کا کھانا پینا اور جن کی ضروریات زندگی کی بھیل اس شخص کے ذمہ ہوتی ہے اور وہ اُن کے اخراجات اپنے روپید چیے سے پورا کرتا ہے، لہذا اس معنی بیس عیال کی نسبت غیر اللہ کی طرف تو مجازی ہے اور اللہ تعالیٰ کی طرف تو مجازی ہے اور اللہ تعالیٰ کی طرف تھیتی ہے، کیوں کہ رزاتی مطلق حقیقت بیس اللہ تعالیٰ ہی ہے جیسا کہ خلاق مطلق اُسی کی ذات ہے۔ ارشاد ربانی ہے:

﴿ وَمَا مِنْ دَابَّهِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا ﴾ "

تَنْ َ الله كَ وَرِين پر چلنے والا كوئى ايسائيس ہے جس كارزق الله كے ذمه نه ہوت "
حدیث بالا كى تشریح میں حضرت مولانا منظور تعمانی صاحب رَجِعَبَهُاللَّهُ تَعْدَاكُ وَمِاتِ مِينَ عَلَى الله كَ تشریح میں حضرت مولانا منظور تعمانی صاحب رَجِعَبُهُاللَّهُ تَعْداكُ وعيال كے ماتھ احسان كرے اس حدیث میں ماتھ احسان كرے اس حدیث میں فاص جگہ ہو جاتی ہے۔ اس حدیث میں فرمایا گیا ہے كہ الله تعالیٰ كو معاملہ بھی بہی ہے كہ جوكوئی اُن كى تخلوق كے ساتھ احسان كا برتاؤ كرے (جس كى مختلف صورتیں اوپر ذكر كی جا چكی ہیں) وہ الله تعالیٰ كو مجبوب ہو جاتا ہے۔

له شعب الايمان، باب الشفقة: ٢/٦

ته هود: ٦ ته مظاهر حق: ١٠٥٥

(بين البياران)

حضرت مولانا غلام رسول بونوى رُخِعَبَهُ الدَّاهُ تَعَانَ بُوط آیک جِهونا سا گاؤں ہے وہ اس گاؤں ہے تعلق رکھتے تھے، انہوں نے شخ البند رُخِعَبَهُ الدَّاهُ تَعَانَىٰ ہے دورہ حدیث کیا، ان کوشخ البند رُخِعَبَهُ الدَّاهُ تَعَالَیٰ ہے ایک والبانہ محبت تھی کہ حضرت جس رائے ہے دارالحدیث آیا کرتے تھے بیرات کوجھپ کراس رائے کو اپنے عمامہ کے ساتھ جھاڑو کیا کرتے تھے، وہ اس لئے چھپتے تھے تاکہ دوسرے طلباء ان کو دکھے نہ لیں۔

ایک مرتبہ شخ البند رکیجہ بگالاللہ تعکالی نے ان کو مماے سے جھاڑو دیتے ہوئے دکیے لیا۔ انہوں نے پوچھاء غلام رسول! یہ کیا کر رہے ہو؟ بالآخ بتانا پڑا۔ شخ البند رکیجہ بگالاللہ تعکالی نے خوش ہوکران کو دعا دے دی۔ بس استاذکی دعا شاگرد کے کام آگئی۔

ایک ہوتا ہے دعائیں کروانا اور ایک ہوتا ہے دعائیں لینا، ان دونوں میں فرق
ہوتا ہے۔ دعائیں کروانا تو یہ ہوا کہ بیٹا کہے، امی ا میرے لئے دعا کر ویں، ابوا
میرے لئے دعا کر دیں، حضرت! میرے لئے دعا کر دیں۔ اور دعالینا یہ ہوتا ہے کہ
انسان اتنا نیک اور مؤدب ہے کہ اس کی نیکی کو دکھی کر اس کے بروں کے دل ہے
دعائیں نگل رہی ہوں۔ آج کے دور میں دعائیں کروانے والے برے ہوتے ہیں مگر
دعائیں لینے والے بہت تھوڑے ہوتے ہیں۔

الی قبول ہوئیں کران میتوں کو اللہ تعالی نے دنیا کے اندرامتیازی شان عطا کی۔ان
میں سے حضرت عبداللہ ابن مسعود وَقِعَالِقَائِمَةَ الْحَفَظُ امام الفقهاء ہے، حضرت عبداللہ
ابن عباس وَقِعَالِقَائِمَةَ المام المفسرین ہے اور حضرت عبداللہ ابن عمر وَقِعَالَقَائِمَةَ المَام المحدثين ہے۔
امام المحدثین ہے۔

حضرت مولانا غلام رسول بونؤی رَخِعَبَهُ اللّهُ تَفَاكُ فَ جَمِی شُخُ البند رَخِعَبُ اللّهُ تَفَاكُ فَ وَعَلَى م ع دعا لی اوران کا فیض چلا۔ شجاع آبادے تین کلومیٹر کے فاصلے پران کا گاؤں پوید تھا۔ انہوں نے ایک کتاب کھی جس کا نام''شرح مائۃ عامل بونؤی'' ہے۔ مکن ہے کہ پچھ علاء کی نظر ہے وہ کتاب گزری ہو۔ طلباء شجاع آباد شہر میں بس سے انز تے اور تمیں کلومیٹر پیدل جل کر اپنا بستر اور سامان اپنے سروں پر رکھ کر بون جایا کرتے تھے۔ ان کے پاس تقریباً ساڑھے تین سوشاگرد ہوتے تھے۔ ان کا بھی خوب فیض پھیلا۔

ان کے دوشاگردوں کا نام عبداللہ تھا۔ ایک عبداللہ درخوائی رَدِّحَوَیَہُاللَائُاتَعَالَیٰ جو
کہ حافظ الحدیث تھے اور دوسرے حضرت مولانا عبداللہ بہلوی رَجِّحَیَہُاللَائُاتَعَالَیٰ جو
شجاع آباد کے شخ تھے۔ وہ ہزاروں علماء کے شخ تھے۔ ان کا درس قرآن بہت
مع دف تھا

حضرت مولانا غلام رسول پونٹوی وَخِعَبَّاللَّهُ اَنْکَانَ ایک مرتبہ فیرالمداری کے مالانہ جلسہ میں تشریف لائے۔ اس وقت پاکستان کے بڑے بڑے علماء موجود سے اس وقت حضرت مولانا فیر محمد جالندھری وَخِعَبَرُاللَّهُ تَعَالَیْ نے ان کو ' مشمی النحاق'' کے لقب سے پکارا۔ اتنے علماء کی محفل میں جن کوشس النحاق کہا جائے ان کے علم کا کیا عالم ہوگا۔ وہ خود فر مالیا کرتے سے کہ اگر پوری دنیا سے شرح جائی کو صبط کر لیا جائے اور کوئی بندہ میرے پاس آکر کیے کہ حضرت! مجھے شرح جائی کی ضرورت ہے تو بیں شرح جائی کی مشرورت ہے تو بیں شرح جائی کی مشرورت ہے تو بیں شرح جائی کی مشرورت ہے تو بیں شرح جائی کی حاشیہ کے ساتھ دوبارہ لکھوا سکتا

ک یتیم خواہ اپنا ہو یا غیر ہواس کی کفالت سے سرکار نبوی قان اللہ کی معیت بہشت میں ہوگیا۔

جو کما کما کر بیواؤں اورعزیزوں کی خرگیری کرے اس کو جہاد کے برابراثواب ماتا

D خالم کی خرخوانی اس طرح کرو کہ اس کوظلم سے باز رکھواور مظلوم کی نصرت تو بہت ہی ضروری ہے۔

🐠 پانی پانا برا ثواب ہے جہال پانی کثرت سے ملتا ہے وہاں تو ایسا ہے جیسے غلام آزاد کیا اور جہاں کم ملتا ہے وہاں ایسا تواب ہے جیے کسی مردہ کو زندہ کر

اگر کھانا پکانے کو کسی کو آگ دے دی یا کھانے میں ڈالنے کو کسی کو ذرا سا نمک دے دیا توالیا تواب ہے جیسے وہ سارا کھانا اس نے دے دیا۔

🕡 ماں باپ کی خدمت کروگووہ کا فرن ہوں اوران کی اطاعت کرو^گ

خدمت کی تین شرط ہیں:

فرمایا کہ خدمت سے گوراحت تو ہوتی ہے لیکن خدمت کے لئے تین شرطیں ہیں: ایک تو یہ کہ خلوص ہو لیعنی اس وقت کوئی غرض اس خدمت سے نہ ہو تھن محبت ے ہو۔ اکثر لوگ خدمت کو ذریعہ بناتے ہیں عرض حاجت کا، یبال تک کیا ہے کہ بعد عشاء کے میں تھوڑی در لیٹ رہتا ہوں طالب علم بدن دبانے لکتے ہیں۔ چول کہ بدن دہانے سے راحت ہوتی ہے۔ میری آنکھ لگنے لکتی ہے۔ جس وقت میری آ تکھ لگنے لکی تو ایک صاحب نے جو بدن دبانے میں شریک ہو گئے تھے، مجھ سے کہا ك مجھے كھے يو جھنا ہے۔ اكبيل واقعات سے ميں دومروں ير بدكماني كرنے لگا۔ اس

ك آداب المعاشرت: ١٢٤

منى كوتكليف في

خدمت کے بارے میں حضرت تھانوی رجعم بہُاللّا اُنتاکا تعکالی اُ کے چندارشادات

مسلمانول کی خدمت:

🕕 فرمایا که بین مسلمانول کی خدمت کوطاعت اور سعادت سمجمتا مول بشرطیکه کوئی مالع شرعی نه ہو۔

6 فرمایا کہ میں بور هول، سیّدول اور ذاکرین سے خدمت نہیں لیتا۔

@ فرمایا که بین نے ندکسی کی خدمت کی ندکس سے خدمت لی۔ بزرگوں کی بھی خدمت جيس كى - بدايني ايني عادت ب جي كوكوعادت بى نبيس موتى - بال ايسول ے خدمت لے لیتا ہوں جن کو بیا بھی معلوم نہ ہو کہ ہم خدمت کردہے ہیں نہ ال کو گمان خصوصیت کا ہونہ دوسروں کو بھائی بیر مقرب ہے۔

🕜 ایک سلسار گفتگو میں فرمایا کہ کوئی طریقہ سے خدمت لے تو خدمت کے لئے آدهی رات موجود مول- بطريقد خدمت سمعدور مول-

🙆 بر محض کے رہید کے موافق اس کی قدر و مزارت کروسب کو ایک لکڑی ہے مت

🕥 كسى كونخنى بنتكي ميس مبتلا ديكھونو حتى الامكان اس كى مدوكرو_

🗗 حاجت مند کی کاربر آ ری میں حتی الامکان سعی کرو اگرخود استطاعت نه ہوکسی ے سفارش بی کر دو بشرطیکہ جس تخص سے سفارش کرتے ہواس کو کوئی ضرر یا

له خطباتِ فقير: ٧٦/٨

کے میں تحقیق کر لیتا ہوں کہ کون کون بدن دہا رہا ہے۔ سوائے دو چار طالب علموں
کے باقی سب کورخصت کر دیتا ہوں۔ دوسری شرط خدمت کی ہے کہ دل ملا ہو۔
ایک نوارد آکر بدن دہانے گئے یا پنگھا جھلنے گئے تو لحاظ بھی ہوتا ہے، شرم بھی آتی ہے۔ اب آدی تختہ مشق کیے سب کا بن جائے۔ تیسرے یہ کہ کام بھی آتا ہومثلاً بعضوں کو بدن دبانا نہیں آتا اور بعض موقعہ لحاظ کا ہوتا ہے اب ان سے کیے منہ پھوڑ کر کہہ دیا جائے کہ آپ سے بدن دبانا آتا نہیں، آپ چھوڑ دیجئے مجبوراً چپ رہنا کر کہہ دیا جائے کہ آپ سے بدن دبانا آتا نہیں، آپ چھوڑ دیجئے مجبوراً چپ رہنا پڑتا ہے۔ وہ سجھتے ہیں کہ ہم خدمت کر رہے ہیں۔ میں سجھتا ہوں کہ میں ان کی خدمت کر رہے ہیں۔ میں سجھتا ہوں کہ میں ان کی خدمت کر رہا ہوں۔ طالب علموں خدمت کر رہا ہوں۔ طالب علموں خدمت کر رہا ہوں۔ طالب علموں علموں کے بین ان کے واسطے نگلیف اٹھا رہا ہوں۔ طالب علموں سے دل کھلا ہوا ہوا ہوا ان کو طریقہ بھی آتا ہے ان سے بچھ تکلف بھی نہیں ہے، چاہاں ہو سکتے ہیں، سب جاکہاں ہو سکتے ہیں۔ ان



ا آداب المعاشوت: ۱۲۳ (بَین ُ العِلمُ رُنْ زیر نظر کتاب ''کسی کو تکلیف نہ دیجے'' کا چند مقامات سے مطالعہ کیا، ماشااللہ بہت اچھی کا وش ہے، نیز حسن ترتیب اور معتبر حوالوں ہے مزین بھی ہے، ان وجوہ تکلیف کی طرف اشارہ کیا گیا جن سے لوگ عموماً غافل ہوتے ہیں، نیز بعض مثالیس نہایت دل چسپ اور سہل انداز ہیں پیش کی گئی ہیں۔ دعا گو ہوں کہ اللہ تعالیٰ مؤلف کو بہترین صله عطا فرمائے اور ان کی اس خدمت کو قبول و مقبول فرمائے اور ان کی اس خدمت کو قبول و مقبول فرمائے زیادہ قبولیت عامہ اور تامہ سے نوازے، اور ہم سب کو حسن معاشرت نیادہ قبولیت عامہ اور تامہ سے نوازے، اور ہم سب کو حسن معاشرت کے ساتھ زندگی گزانے کی تو فیق عطا فرمائے جواللہ کو راضی کرنے کے لئے ہو، اور ہمیں دین کے تمام شعبوں پر عمل کرنے کی تو فیق عطا فرمائے۔ (آمین)

استاد حدیث محمد الور بدخشانی جامعة علوم اسلامیه علامه بنوری ثاؤن کراچی ۳۰ جاری الاولی ک^{۱۳} اچه